क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ

जिन्नात के बारे में दिलचस्प मा'लूमात और हिकायात का मज्मूआ

Kaume Jinnat aur Amire ahle Sunnat (Hindi)

जिन्नात कौन हैं ?

जिन्नात किस दिन पैदा हुए ?

जिन्नात की ताक़त

जिन्नात की ता'दाद

जिन्नात कहां रहते हैं ?

जिन्नात की मुख़्तलिफ़ शक्लें

तहज्जुद गुज़ार जिन्नात

जिन्नात के शर से बचने के तरीक़े

जिन्नात से नजात की हिकायात

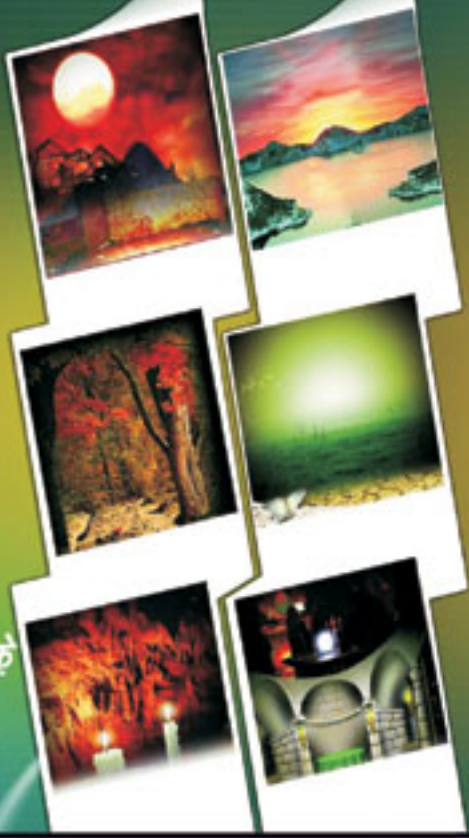

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

शो'बाए इस्लाही कुतुब

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया

Ph:91-79- 25391168 E:mail: maktabahind@gmail.com www.dawateislami.net

مکتبۃ المدینہ मक-त-बतुल मदीना

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ،
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ،

किताब पढ़ने की दुआ

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले !

(अल मुस्तत़रफ़, जि. 1, स. 40, दारुल फ़िक्र बैरूत)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना

व बक़ीअ़

व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

जिन्नात के बारे में दिल चस्प मा'लूमात और हिकायात का मजमूआ़

क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

पेशकश

शो'बए इस्लाही कुतुब

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना (अहमदआबाद)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ، اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ،

नाम किताब : क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शो'बए इस्लाह़ी कुतुब)

सिने त़बाअ़त : नवेम्बर सि. **2009** ई. / जुलक़ा'दा सि. **1430** हि.

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना अह़मदाआबाद

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

मुम्बई : 19,20 मुह़म्मद अ़ली बिल्डिंग, मुह़म्मद अ़ली रोड, फ़ोन : 022-23454429

देहली : मटिया महल, उर्दू मार्केट, जामेअ़ मस्जिद फ़ोन : 011-23284560

नागपुर (**C / 0**) जामिअ़तुल मदीना,मुह़म्मद अ़ली सराय रोड, कमाल शाहबाबा दरगाह के पास मोमिनपुरा फ़ोन : 0712 -2737290

अजमेर शरीफ : 19 / 216 फ़लाह़े दारैन मस्जिद. नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, फ़ोन :(0145)2629385

हुबली : A-J मुघल कोम्पलेक्ष A-J मुघल रोड, Nr. ब्रीज, पुरानी हुबली : PIN 580024

E.mail.maktabahind@gmail.com

www.dawateislami.net

Ph:079 25 39 11 68

तम्बीह : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ،
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ،

"क़ौमे जिन्नात में नेकी की दा'वत" के 20 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "20 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهٖ'' या'नी मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।''

(अल मो'जमुल कबीर लित्त़-बरानी, अल ह़दीस : 5942, जि. 6, स. 185 बैरूत)

दो म-दनी फूल : (1) बग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्द व (2) सलात और (3) तअ़व्वुज़ व (4) तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) (5) रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुता़-लआ़ करूंगा। (6) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और (7) क़िब्ला रू मुता़-लआ़ करूंगा। (8) क़ुर्आनी आयात और (9) अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा। (10) जहां जहां ''**अल्लाह**'' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और (11) जहां जहां ''सरकार'' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। (12) इस रिवायत ''عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِيْنَ تَنْزِلُ الرَّحْمَةُ''

या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है.'' (ह़िल्यतुल औलिया, ह़दीस : 10750, जि. 7, स. 335) पर अ़मल करते हुए इस किताब में दिये गए वाक़िआ़त दूसरों को सुना कर ज़िक्रे सालिह़ीन की बरकतें लूटूंगा । (13) (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा । (14) (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) ''याद दाश्त'' वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा । (15) किताब मुकम्मल पढ़ने के लिये रोज़ाना चन्द स-फ़ह़ात पढ़ कर इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के सवाब का ह़क़दार बनूंगा । (16) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा । (17,18) इस ह़दीसे पाक ''تَهَادَوْا تَحَابُّوْا'' एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी।''(मुअत्ता इमामे मालिक, जि. 2, स. 407, अल ह़दीस : 1731) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। (19) इस किताब के मुत़ा-लए़ का सवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगा । (20) किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा । (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता ।)

पहले इसे पढ़ लीजिये

अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें।

(पारह : 27, अज़्ज़ारियात : 56)

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस आयत के तह़्त तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान में लिखते हैं : "इस से मा'लूम हुवा कि इ़बादते इख़्तियारी जिस पर सज़ा, जज़ा मुरत्तब हो सिर्फ़ जिन्नो इन्सान के लिये है। **जिन्नात** की सज़ा दोज़ख़ है और जज़ा दोज़ख़ से नजात।"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ी ज़माना इ़ल्मे दीन की कमी और सुन्नतों भरे म-दनी माह़ोल से दूरी की वजह से अक्सर मुसल्मान, **जिन्नात** के बारे में दुरुस्त मा'लूमात से मह़रूम हैं म-सलन **जिन्नात** कौन हैं ? किस चीज़ से पैदा किये गए ? कहां रहते हैं ? येह कौन कौन से काम करने की त़ाक़त रखते हैं ? क्या इन्हें भी मौत आती है ? क्या इन्हें भी जज़ा व सज़ा का सामना होगा ? क्या येह इन्सान को तक्लीफ़ दे सकते हैं ? वग़ैरहा। लोगों की नाक़िस और मह़दूद मा'लूमात का ज़रीआ़ मुख़्तलिफ़ रसाइल व जराइद में शाएअ़ होने वाली **जिन्नात** की डराउनी कहानियां होती हैं। इन कहानियों में **जिन्नात** को इन्तिहाई ख़ौफ़नाक और ज़ालिम मख़्लूक़ के त़ौर पर मु-तआ़रिफ़ करवाया जाता है। नतीजतन इन्हें पढ़ने वालों के दिलों में **जिन्नात** का इतना ख़ौफ़ बैठ जाता है कि **जिन्नात** का नाम सुनते ही उन के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इस के बर अ़क्स कुछ लोग ऐसे भी हैं जो **जिन्नात** का वुजूद तस्लीम करने से ही इन्कारी हैं और इन्हें इन्सान का वह्म क़रार देते हैं।

ज़ेरे नज़र किताब **"क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत"**

में **जिन्नात** के बारे में जामेअ़ तरीन मा'लूमात ह़वाला जात के साथ बयान करने की कोशिश की गई है। मौज़ूअ़ की मुनासिबत से ह़िकायात भी दर्ज की गई हैं, जिन में 43 ह़िकायाते अ़त्तारिय्या भी शामिल हैं। **''अल मदीनतुल इल्मिय्या'' दा'वते इस्लामी** के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम رحمہم اللہ تعالیٰ पर मुश्तमिल ऐसा इदारा है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस किताब को इसी इदारे के ''शो'बए इस्लाह़ी कुतुब'' के म-दनी इस्लामी भाइयों ने मुरत्तब किया है। इस किताब को मुरत्तब करने के लिये क़ुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद, इस की 7 तफ़ासीर, 18 कुतुबे अह़ादीस, इन की दो[2] शुरूह़ात लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, आकामुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, किताबिल अ़-ज़मह, ह़वातिफ़ुल जिनान, फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल) और 20 दीगर कुतुब से मवाद मुन्तख़ब किया गया है। जिन की तफ़्सील इस किताब के आख़िरी स-फ़ह़ात में मआख़ज़ो मराजेअ़ की फ़ेहरिस्त में मुला-ह़ज़ा की जा सकती है। इस किताब में तक़रीबन 32 आयाते क़ुरआनिया, 49 अह़ादीसे मुबा-रका और 74 ह़िकायात शामिल हैं। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इस किताब को पढ़ने के बा'द बहुत सी ग़लत फ़हमियां दूर हो जाएंगी। इस किताब को ख़ुद पढ़िये और दूसरों को भी इस के पढ़ने की तरग़ीब दे कर सवाबे जारिया के ह़क़दार बनिये।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ है कि हमें **''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश''** करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करने और **म-दनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

शो'बए इस्लाह़ी कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ؕ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले ज़ियाए दुरूदो सलाम के सफ़ह़ा **6 पर नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान नक़्ल फ़रमाते हैं कि ''मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है।''

(मुस्नदो अबी या'ला, अल ह़दीस : 6383, जि. 5, स. 458)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जिन्नात को नेकी की दा'वत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे आक़ा, सरवरे कौनैन, हम ग़रीबों के दिल के चैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जहां इन्सानों को राहे हिदायत की त़रफ़ बुलाया वहीं जिन्नों को भी दा'वते इस्लाम पेश की। **अल्लाह तआ़ला** इर्शाद फ़रमाता है :

وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْٓا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ۝

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब कि हम ने तुम्हारी त़रफ़ कितने जिन्न फेरे कान लगा कर कु़रआन सुनते फिर जब वहां ह़ाज़िर हुए आपस में बोले ख़ामोश रहो फिर जब पढ़ना हो चुका अपनी क़ौम की त़रफ़ डर सुनाते पलटे।

(पारह : 26, अल अह़क़ाफ़ : 29)

अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन अह़मद अन्सारी क़ुरतुबी عليه رَحمَةُ اللهِ القَوى (अल मु-तवफ़्फ़ा 671 हि.) इस आयत की तफ़्सीर में लिखते हैं : एक जमाअ़त से मरवी है कि **रहमते दो आ़लम, नूरे मुजस्सम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को (**अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से) हुक्म दिया गया कि वोह **जिन्नात** को (अ़ज़ाबे आख़िरत से) डराएं और उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीन की दा'वत दें और उन को क़ुरआने मजीद पढ़ कर सुनाएं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **जिन्नात** के गुरौह को एक जगह जम्अ़ कर दिया, वोह ''नैनवा'' के रहने वाले **जिन्नात** थे। **सरवरे कौनैन,** दुखी दिलों के चैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया : ''मैं चाहता हूं कि **जिन्नात** को क़ुरआने मजीद पढ़ कर सुनाऊं, तुम में से कौन मेरे साथ आएगा ?'' तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अपने सर झुका लिये। दूसरी मर्तबा भी ऐसा ही हुवा। जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीसरी मर्तबा इर्शाद फ़रमाया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आप के साथ हो लिये।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''मेरे इ़लावा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ कोई दूसरा न था। हम चलते रहे यहां तक कि मक्कए मुकर्रमा की एक वादी ''शि'बुल ह़जून'' में दाख़िल हुए। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे लिये एक दाएरा खींचा और मुझे उस में बैठने का हुक्म फ़रमाया और ताकीद फ़रमाई कि ''मेरे वापस आने तक यहां से बाहर न निकलना।'' फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वहां से तशरीफ़ ले गए और खड़े हो कर तिलावते क़ुरआन करने लगे। मैं ने गिध की मिस्ल उड़ते हुए परिन्दों के परों की फरफराहट सुनी। मैं ने शदीद शोर भी सुना ह़त्ता कि मुझे

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मु-तअ़ल्लिक़ अन्देशा हुवा। फिर बहुत सी काली चीज़ें मेरे और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरमियान ह़ाइल हो गईं ह़त्ता कि मुझे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आवाज़े मुबारक सुनाई न देती थी फिर वोह सब बादल की त़रह़ छटना शुरूअ़ हुईं यहां तक कि ग़ाइब हो गईं।

इसी दौरान फ़ज्र का वक़्त हो चुका था। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन से फ़ारिग़ हो कर मेरे पास तशरीफ़ लाए और मुझ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''क्या सो गए थे ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! नहीं ! या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने कई मर्तबा इरादा किया कि लोगों को मदद के लिये बुलाऊं, यहां तक कि मैं ने सुना कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **जिन्नात** को अ़सा मुबा-रका से मारते हुए इर्शाद फ़रमा रहे थे : ''बैठ जाओ।'' तो सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर तुम यहां से बाहर निकल जाते तो तुम्हारी ख़ैर न थी, इन **जिन्नात** में से कोई तुम को पकड़ लेता।'' फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या तुम ने कुछ देखा ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''जी हां ! मैं ने काले रंग के कुछ आदमी देखे जिन पर सफ़ेद कपड़े थे।'' आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''वोह नसीबैन के **जिन्नात** थे।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''मैं ने शदीद क़िस्म का शोर भी सुना था।'' आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोह अपने दरमियान एक मक़्तूल के फ़ैसले में जल्दी कर रहे थे उन्हों ने मुझ से फ़ैसले के लिये कहा तो मैं ने उन के दरमियान ह़क़ फ़ैसला कर दिया।'' (अल जामिउ़ लि अह़कामिल क़ुरआन, सू-रतुल अह़क़ाफ़, तह़्तिल आयह 29, जि. 8, निस्फ़ुस्सानी, स. 153)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस से रुख़्सत होने के बा'द **जिन्नात** ने अपनी क़ौम में जा कर **दा'वते इस्लाम** पेश की, जिस का तज़्किरा क़ुरआने मजीद फ़ुरकाने ह़मीद में इन अल्फ़ाज़ में किया गया है :

قَالُوْا يٰقَوْمَنَاۤ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْۤ اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ يٰقَوْمَنَاۤ اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : बोले ऐ हमारी क़ौम हम ने एक किताब सुनी कि मूसा के बा'द उतारी गई अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती ह़क़ और सीधी राह दिखाती । ऐ हमारी क़ौम अल्लाह के मुनादी की बात मानो और उस पर ईमान लाओ कि वोह तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्श दे और तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब से बचा ले ।

(पारह : 26, अल अह़क़ाफ़ : 30,31)

हमारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ***जिन्नो इन्स के रसूल हैं***

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

दीगर अम्बिया علیہما السلام सिर्फ़ इन्सानों की त़रफ़ भेजे जाते थे जब कि हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिन्नो इन्स के रसूल हैं । (फ़त्ह़ुल बारी, जि. 6, स. 283) चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''بُعِثْتُ اِلَى الْجِنِّ وَالْاِنْسِ'' या'नी मुझे जिन्नों और इन्सानों की त़रफ़ भेजा गया है ।''

(शु-अ़बुल ईमान, बाब फ़ी हुब्बिन्नबी, अल ह़दीस : 1482, जि. 2, स. 177)

जिन्नात की बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी

अ़ल्लामा बदरुद्दीन शिब्ली عليه رحمة الله القوى (अल मु-तवफ़्फ़ा 769 हि.) फ़रमाते हैं : "**नबिय्ये करीम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास मक्कए मुकर्रमा और हिजरत के बा'द मदीनए त़य्यिबा में जिन्नों के ब कसरत वुफ़ूद आते थे।"

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, फ़स्ल बि'सतिन्नबी इलख़, स. 85)

जिन्नों का क़ासिद

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हम नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ कहीं जा रहे थे कि अचानक एक बहुत बड़ा अज़्दहा सामने आया और उस ने अपना सर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कान मुबारक के क़रीब कर लिया (और ग़ालिबन कुछ अ़र्ज़ की) फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना मुंह मुबारक उस के कान के क़रीब ले जा कर कुछ सरगोशी फ़रमाई। इस के बा'द वोह हमारी निगाहों से यूं ओझल हुवा कि गोया ज़मीन ने उसे निगल लिया हो। हम ने अपना अन्देशा ज़ाहिर करते हुए अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम आप के बारे में डर गए थे।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "येह जिन्नों के वफ़्द का क़ासिद था, **जिन्नात** क़ुरआन की एक सूरत भूल गए थे, लिहाज़ा ! उन्हों ने इसे मेरे पास भेजा। मैं ने इसे क़ुरआने करीम की वोह सूरत बता दी।"

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ज़िक्रि अ़क़ाइदुहुम व इ़बादातुहुम, स. 102)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सज्दा करने वाले जिन्नात

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक मर्तबा सू-रतुन्नज्म की तिलावत फ़रमाई और सज्दा किया तो वहां मौजूद जिन्नो इन्स ने भी आप के साथ सज्दा किया।

(ह़िल्यतुल औलिया, अल ह़दीस : 1225, जि. 8, स. 294)

जिन्नात कौन हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

क़ुरआने मजीद व अह़ादीसे करीमा से साबित है कि **जिन्न अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की एक मख़्लूक़ है** जो अपना वुजूद रखती है। **जिन्नात** को एक ख़ास इल्म ह़ासिल होता है। येह ऐसे अ़जीबो ग़रीब और मुश्किल तरीन काम करने की त़ाक़त रखते हैं जिन्हें करना आ़म इन्सान के बस की बात नहीं।

(अल ह़दी-क़तुन्नदिय्यह, जि. 1, स. 72,73, माख़ूज़न)

जिन्नात के वुजूद का इन्कार करना कैसा ?

सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्त़रीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी علیہ رَحمۃُ اللّٰہِ القوی अपनी मायानाज़ तालीफ़ "**बहारे शरीअ़त**" में लिखते हैं : "**जिन्नात** के वुजूद का इन्कार या बदी की क़ुव्वत का नाम **जिन्न** या शैत़ान रखना कुफ़्र है।"

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 1, स. 50)

जिन्न को जिन्न क्यूं कहते हैं ?

शारेहे बुख़ारी अ़ल्लामा बदरुद्दीन महमूद बिन अहमद ऐनी عليه رحمة الله الغنی (अल मु-तवफ़्फ़ा 855 हि.) लिखते हैं : लुग़त में जिन्न का मा'ना है "सित्र और ख़िफ़ा" और जिन्न को इसी लिये जिन्न कहते हैं कि वोह आ़म लोगों की निगाहों से पोशीदा होता है। ज़मानए जाहिलिय्यत में लोग फ़िरिश्तों को भी जिन्न कहा करते थे क्यूं कि वोह उन की निगाहों से पोशीदा होते थे। (उ़म्दतुल क़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, باب ذکر الجن وثوابهم وعقابهم, जि. 10, स. 644, मुलख़्ख़सन)

जिन्नात को किस से पैदा किया गया ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जिन्नात को आग से पैदा किया गया है। अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है:

وَالْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ۝ तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : और जिन्न को इस से पहले बनाया बे धूएं की आग से। (पारह : 14, अल हजर : 27)

और सू-रतुर्रहमान में इर्शाद होता है :

وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ۝ तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : और **जिन्न** को पैदा फ़रमाया आग के लूके (या'नी लपट) से। (पारह : 27, अर्रहमान : 10)

शारेहे बुख़ारी अ़ल्लामा बदरुद्दीन महमूद बिन अहमद ऐनी عليه رحمة الله الغنی (अल मु-तवफ़्फ़ा 855 हि.) लिखते हैं : हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "फ़िरिश्तों को नूर से, **जिन्नात**

को आग के शो'ले से और सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मिट्टी से पैदा किया गया है।" (सह़ीह़ मुस्लिम, अल ह़दीस : 2996, स. 1597) इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि जिन्न की अस्ल आग है जैसा कि इन्सान की अस्ल मिट्टी है। क़ुरआने पाक में ह़िकायत कर्दा इब्लीस का क़ौल خَلَقْتَنِیْ مِنْ نَّارٍ (तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : तूने मुझे आग से बनाया (पारह : 8, अल आ'राफ़ :12)) भी इस बात का सुबूत है कि जिन्न की अस्ल आग है।

(उ़म्दतुल क़ारी, باب ذکر الجن وثوابھم, जि. 10, स. 643)

जिन्नात किस दिन पैदा हुए ?

ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने फ़िरिश्तों को बुध के दिन, **जिन्नात** को जुमा'रात और सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को जुमुआ़ के दिन पैदा किया।

(जामिउ़ल बयान फ़ी तअवीलिल क़ुरआन, अल ह़दीस : 602, जि.1, स. 237)

जिन्नात को इन्सान से पहले पैदा किया गया :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि अल्लाह तआ़ला ने जन्नत को जहन्नम से पहले, अपनी रह़मत की अश्या को अपनी ग़ज़ब की चीज़ों से पहले, आस्मान को ज़मीन से पहले, सूरज व चांद को सितारों से पहले, दिन को रात से पहले, दरिया को ख़ुश्की से पहले, फ़िरिश्तों को जिन्नों से पहले, जिन्नों को इन्सानों से पहले और नर को मादा से पहले पैदा फ़रमाया।

(किताबिल अ़-ज़मह, صفۃ ابتداء الخلق, अल ह़दीस : 891, स.299)

ज़मीन पर इन्सान से पहले जिन्नात आबाद थे

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ की तख़्लीक़ से दो हज़ार साल पहले ज़मीन पर **जिन्नात** रहते थे। उन्हों ने ज़मीन पर फ़साद बरपा किया और ख़ून रेज़ी की। जब उन्हों ने ज़मीन में फ़साद फैलाने को अपना वतीरा बना लिया तो अल्लाह तआ़ला ने उन पर फ़िरिश्तों के लश्कर भेजे जिन्हों ने उन्हें मारा और समुन्दरी जज़ीरों की त़रफ़ भगा दिया।

(अद्दुर्रुल मन्शूर, जि. 1, स. 111)

इब्लीस भी जिन्नात में से है

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِیْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : तो सब ने सज्दा किया सिवा इब्लीस के क़ौमे जिन्न से था।

(पारह : 15, अल कह्फ़ :50)

ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़िश्शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (अल मु-तवफ़्फ़ा 911 हि.) नक़्ल करते हैं : शयात़ीन **जिन्नात** ही की ना फ़रमान क़िस्म का नाम है जो इब्लीस की औलाद से हैं।

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ज़िक्रे वुजूदुहुम, स. 24)

शैत़ान की दो क़िस्में :

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रत मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی (अल मु-तवफ़्फ़ा 1367 हि.) तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में लिखते हैं : शैत़ान दो क़िस्म के होते हैं एक जिन्नों

में से एक इन्सानों में से जैसा कि क़ुरआने पाक में है شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ (तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : आदमियों और जिन्नों में के शैत़ान। (पारह : 8, अल अन्आ़म : 112))

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 24, حٰمٓ السجدۃ, ज़ेरे आयत, 29)

जिन्नात का बाप

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : जिस त़रह़ ह़ज़रते आदम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ तमाम इन्सानों के बाप हैं, इसी त़रह़ इब्लीस तमाम **जिन्नात** का बाप है।

(किताबिल अ़-ज़मह, अल ह़दीस : 1140, स. 429)

जिन्नात की औलाद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जिन्नात के यहां भी औलाद पैदा होती है जिस से इन की नस्ल चलती है। अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में औलादे शैत़ान का ज़िक्र इन अल्फ़ाज़ में किया है :

اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : भला क्या उसे और उस की औलाद को मेरे सिवा दोस्त बनाते हो और वोह तुम्हारे दुश्मन हैं।

(पारह : 15, अल कह्फ़ : 50)

अ़ल्लामा मह़मूद आलोसी علیہ رحمۃ اللہ الغنی (अल मु-तवफ़्फ़ा 1270 हि.) इस आयत के तह़्त लिखते हैं : ''ज़ाहिर येह है कि ज़ुर्रिय्यत से मुराद औलाद है, पस येह आयत इस पर दलील है कि शैत़ान की भी औलाद होती है।''

(रूहुल मआ़नी, जि. 15, स. 370)

सू-रतुर्रह़मान में इर्शाद होता है :

فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ۝

तर-जमए कन्जुल ईमान : उन बिछोनों पर वोह औ़रतें हैं कि शोहर के सिवा किसी को आंख उठा कर नहीं देखतीं उन से पहले उन्हें न छुवा किसी आदमी और न जिन्न ने।

(पारह : 27, अर्रह़मान : 56)

इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी علیہ رحمۃ اللہ الھادی (अल मु-तवफ़्फ़ा 606 हि.) इस आयत के तह़्त लिखते हैं : "**जिन्नात** की भी औलाद होती है।"

(तफ़्सीरे कबीर, सू-रतुर्रह़मान, जि. 10, स. 376)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुश्शैख़ अस्बहानी علیہ رحمۃ اللہ الغنی (अल मु-तवफ़्फ़ा 396 हि.) "किताबिल अ़-ज़मह" में अल्लाह तआ़ला के फ़रमान ﴿اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗ﴾ की तफ़्सीर में ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने फ़रमाया : "**जिन्नात** की भी इसी त़रह़ औलाद पैदा होती है जिस त़रह़ इन्सानों की पैदा होती हैं और **जिन्नात** कसीर ता'दाद में पैदा होते हैं।"

(किताबिल अ़-ज़मह, ذکر الجن وخلقھم, अल ह़दीस : 1148, स. 431)

जिन्नात की त़ाक़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तआ़ला ने जिन्नों को बा'ज़ ऐसे ग़ैर मा'मूली औसाफ़ अ़त़ा किये हैं जो इन्सान में उ़मूमन नहीं पाए जाते।

तख़्ते बिल्क़ीस लाने की पेशकश

ह़ज़रते सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बारगाह में एक जिन्न ने शहरे सबा की मलिका बिल्क़ीस का तख़्त (जो कि बहुत दूर था) बहुत कम वक़्त में लाने की पेशकश की थी, चुनान्चे क़ुरआने पाक में है :

قَالَ یٰۤاَیُّهَا الْمَلَؤُا اَیُّكُمْ یَاْتِیْنِیْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ یَّاْتُوْنِیْ مُسْلِمِیْنَ ۝ قَالَ عِفْرِیْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِیْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّیْ عَلَیْهِ لَقَوِیٌّ اَمِیْنٌ

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : सुलैमान ने फ़रमाया ऐ दरबारियो तुम में कौन है कि वोह उस का तख़्त मेरे पास ले आए क़ब्ल इस के कि वोह मेरे हुज़ूर मुत़ीअ़ हो कर ह़ाज़िर हों। एक बड़ा ख़बीस जिन्न बोला मैं वोह तख़्त हुज़ूर में ह़ाज़िर कर दूंगा क़ब्ल इस के कि हुज़ूर इज्लास बरख़ास्त करें और मैं बेशक इस पर क़ुव्वत वाला अमानत दार हूं।

(पारह : 19, अन्नम्ल : 39)

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **की तशरीफ़ आ-वरी की ख़बर**

हुज़ूरे अक्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बि'सते मुबा-रका की ख़बर मदीनए मुनव्वरह में सब से पहले **जिन्नात** ने दी। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मदीनए मुनव्वरह में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आ-वरी की ख़बर सब से पहले इस त़रह़ पहुंची कि मदीनए मुनव्वरह में एक औ़रत रहती थी जिस के ताबेअ़ एक **जिन्न** था। वोह एक परिन्दे की

शक्ल में आया और उस औ़रत के घर की दीवार पर बैठ गया। औ़रत ने उस से कहा : "आओ हम तुम्हें कुछ सुनाएं और कुछ तुम हमें सुनाओ।" उस ने कहा : "अब ऐसा नहीं हो सकता क्यूं कि मक्का में एक नबी मब्ऊ़स हुए हैं जिस ने हमें दोस्ती से मन्अ़ कर दिया है और हम पर ज़िना को ह़राम कर दिया है।"

(अल मो'जमुल औसत़, अल ह़दीस : 765, जि. 1, स. 224)

ख़बर रसां जिन्न

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दुश्मनाने इस्लाम की सरकूबी के लिये एक लश्करे इस्लाम रवाना फ़रमाया। फिर (चन्द दिनों बा'द) एक शख़्स मदीनए मुनव्वरह आया और उस ने इत्तिलाअ़ दी कि मुसल्मान दुश्मनों पर फ़त्ह़ याब हो गए। येह ख़बर मदीनए मुनव्वरह में आ़म हो गई। जब ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इस बारे में इ़ल्म हुवा तो इर्शाद फ़रमाया : "येह अबुल हैसम जिन्नों के ख़बर रसां (या'नी ख़बर पहुंचाने वाले) हैं अ़न्क़रीब इन्सानों का ख़बर रसां भी पहुंचने वाला है चुनान्चे चन्द दिनों में वोह भी पहुंच गया।" (क्यूं कि जिन्न तेज़ रफ़्तार होते हैं इस लिये उस ने जल्दी ख़बर पहुंचा दी और इन्सान इतनी जल्दी नहीं पहुंच सकता इस लिये इन्सान के ज़रीए देर में इत्तिलाअ़ मिली।)

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, फ़ी जवाज़े सुवाल...., स. 192)

जिन्नात के मुख़्तलिफ़ काम

ह़ज़रते इब्ने जरीज رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है कि **जिन्नात** (समुन्दर से) ज़ेवरात लेने के लिये ग़ोता लगाते और उन्हों ने ह़ज़रते सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये पानी पर मह़ल बनाए। जब

ह़ज़रते सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन्हें हुक्म दिया कि इन्हें गिरा दो मगर तुम्हारे हाथ इन्हें न छूएं। तो उन जिन्नों ने उस पर गोपिया (या'नी रस्सी का बना हुवा आला जिस में पत्थर या मिट्टी की बनी हुई गोली रख कर मारते हैं) से पत्थर फेंके यहां तक कि उन्हें गिरा दिया। इस त़रीक़े कार का फ़ाएदा इन्सानों को भी मिला। येह जिन्नों का ही काम है कि हमें कोड़े देखने को मिले। जिस का क़िस्सा कुछ यूं है कि ह़ज़रते सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जिन्नों को लकड़ी से मारते और उन के हाथ पाउं तोड़ देते। जिन्नों ने अ़र्ज़ की : "क्या आप चाहते हैं कि हमें सज़ा तो दें मगर हमारे आ'ज़ा न तोड़ें ?" फ़रमाया : हां। तो उन्हों ने आप को चाबुक के बारे में बताया। इसी त़रह़ मल्मअ़ साज़ी भी **जिन्नात** का काम है। उन्हों ने तख़्ते इब्लीस के पायों पर पानी चढ़ाया।

(अद्दुर्रुल मन्शूर, जि. 7, स. 190)

बैतल मुक़द्दस की ता'मीर

मुल्के शाम में जिस जगह ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का ख़ैमा गाड़ा गया था ठीक उसी (ब-र-कत वाली) जगह ह़ज़रते दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **बैतुल मुक़द्दस** की बुन्याद रखी। मगर इमारत पूरी होने से क़ब्ल ही ह़ज़रते **सय्यिदुना दावूद** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वफ़ाते ज़ाहिरी का वक़्त आ गया चुनान्चे अपने फ़रज़न्दे अरजुमन्द **ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इस इमारत की तक्मील की वसिय्यत फ़रमाई। **ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **जिन्नात** के एक गुरौह को इस काम पर लगा दिया। इमारत अभी ता'मीरी मराह़िल से गुज़र रही थी कि आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वफ़ाते ज़ाहिरी का वक़्त

भी क़रीब आ गया। आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने दुआ़ मांगी : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी वफ़ात इन **जिन्नात** पर ज़ाहिर न फ़रमा और वोह बराबर इ़मारत की तक्मील में मस्रूफ़े अमल रहें और इन सभों को जो **इ़ल्मे ग़ैब** का दा'वा है वोह भी बातिल ठहर जाए। येह दुआ़ मांग कर आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मेह़राब में दाख़िल हो गए और ह़स्बे आ़दत अपना अ़सा मुबारक टेक कर इ़बादत में खड़े हो गए और इसी ह़ालत में आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की **वफ़ात** हो गई। मगर मज़दूर **जिन्नात** बराबर काम में मस्रूफ़ रहे। अ़र्सए दराज़ तक आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का इसी ह़ालत में रहना **जिन्नात** के लिये कोई नई बात नहीं थी, क्यूं कि वोह बारहा देख चुके थे कि आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام एक एक माह बल्कि कभी कभी दो दो माह बराबर इ़बादत में खड़े रहा करते थे। **अल ग़रज़ ज़ाहिरी इन्तिक़ाल के बा'द एक साल तक आप अपनी मुबारक लाठी से टेक लगाए खड़े रहे** यहां तक कि ब हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ दीमक ने आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अ़सा शरीफ़ (या'नी मुबारक लाठी) को खा लिया और यूं आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का जिस्मे नाज़नीन ज़मीन पर तशरीफ़ ले आया। अब **जिन्नात** और इन्सानों को आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की **ज़ाहिरी वफ़ात का इ़ल्म** हुवा। (मुलख़्ख़स अज़ अ़जाइबुल क़ुरआन, स. 189)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जिन्नात की ता'दाद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि चौथी ज़मीन के ऊपर और तीसरी ज़मीन के नीचे

इतने **जिन्नात** हैं कि अगर वोह तुम्हारे सामने आ जाएं तो तुम्हें सूरज की रोशनी दिखाई न दे।

(किताबिल अ़-ज़मह, अल ह़दीस : 1098, स. 417)

और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिकाली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जब इन्सान का एक बच्चा पैदा होता है तो **जिन्नात** के यहां नौ बच्चे पैदा होते हैं।" (जामिउ़ल बयान, अल ह़दीस : 24803, जि. 9, स. 85)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि इन्सानों के मुक़ाबले में **जिन्नात** की ता'दाद **9** गुना है।

जिन्नात क्या खाते हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे हुक्म फ़रमाया कि मेरे लिये पत्थर तलाश करो ताकि मैं उस से इस्तिन्जा करूं लेकिन हड्डी और लीद मत लाना। मैं ने आप की ख़िदमत में वोह पत्थर पेश कर दिये जो मैं ने पल्ले बांध रखे थे। जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़ारिग़ हो गए तो मैं ने अ़र्ज़ की : "**हड्डी** और **लीद** से मन्अ़ करने में क्या ह़िक्मत है ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**येह दोनों चीज़ें जिन्नात की ख़ूराक हैं,** मेरे पास नसीबैन (एक शहर का नाम है) के जिन्नों का एक वफ़्द आया था। वोह बहुत **नेक जिन्न** थे, उन्हों ने मुझ से ख़ूराक मांगी तो मैं ने अल्लाह तआ़ला से उन के लिये दुआ़ की के येह जिस हड्डी और लीद के पास जब भी गुज़रें उसी पर अपनी ग़िज़ा मौजूद पाएं।" (सह़ीहुल बुख़ारी, किताबिल मनाक़िबुल अन्सार, बाब ज़िक्रिल जिन्नि व क़ौल ..... इलख़, अल ह़दीस : 3860, जि. 2, स. 576)

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि हम **हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर थे कि एक सांप बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा और अपना मुंह सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कान मुबारक के क़रीब ले जा कर कुछ अ़र्ज़ की। नबिय्ये अक्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''ठीक है।'' इस के बा'द वोह लौट गया। ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि मैं ने प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस के बारे में पूछा तो फ़रमाया कि ''येह एक **जिन्न** था जिस ने मुझ से येह दर-ख़्वास्त की के आप अपनी उम्मत को हुक्म फ़रमाइये कि वोह लीद और बोसीदा हड्डियों से इस्तिन्जा न किया करें क्यूं कि अल्लाह तआ़ला ने इन में हमारा रिज़्क़ रखा है।'' (आकामुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, الباب الحادی عشر فی ان الجن یاکلون ویشربون, स. 32)

जिस हड्डी को जिन्नात लेते हैं उस पर उन्हें गोश्त मिलता है और जिस लीद (गोबर) को लेते हैं वोह दाना या फल बन जाता है। इस लिये येह इश्काल वारिद ही नहीं होता कि गोबर तो नापाक है इस का खाना जिन्नात के लिये कैसे जाइज़ है ? क्यूं कि माहियत बदलने से नापाक चीज़ पाक हो जाती है।

(माख़ूज़ अज़ नुज़्हतुल क़ारी, जि. 7, स. 201)

शैत़ान की क़ै

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मय्या बिन मख़्शी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा थे और एक शख़्स खाना खा रहा था। उस ने बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी यहां तक कि उस के खाने में से एक

लुक़्मे के सिवा कुछ भी बाक़ी न बचा। जब उस एक लुक़्मे को उस ने अपने मुंह की त़रफ़ उठाया तो कहा بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कराए और फ़रमाया : "शैत़ान इस के साथ खाना खा रहा था फिर जब इस ने अल्लाह तआ़ला का नाम लिया तो जो कुछ शैत़ान के पेट में था सब उस ने क़ै कर दिया।" (सु-ननो अबी दावूद, किताबिल अत़्अ़मह, बाबुत्तस्मिय्यह अ़लत़्आ़म, अल ह़दीस : 3768, जि. 3, स. 488)

लोबिया खाने वाले जिन्नात

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जिन्नात के चुंगल से छूट कर आने वाले एक अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से **जिन्नात की ग़िज़ाओं** के बारे में दर्याफ़्त किया तो उस अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बताया : "वोह लोबिया (नामी सब्ज़ी) खाते हैं और वोह चीज़ें जिन में अल्लाह तआ़ला का नाम नहीं लिया जाता।" (म-सलन बग़ैर बिस्मिल्लाह पढ़े खाने वाले की ग़िज़ा) फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन के पीने के बारे पूछा तो बताया : जदफ़। (ह़यातुल ह़ैवानिल कुब्रा, जि. 1, स. 295)

नोट : जदफ़ से मुराद या तो वोह य-मनी घास है जिसे खाने वाले को पानी पीने की मोह़ताजी नहीं रहती, या इस से मुराद पानी वग़ैरा का वोह बरतन है जिसे ढांप कर न रखा जाए।

(अन्निहायह फ़ी ग़रीबिल ह़दीसे वल असर, जि. 1, स 240)

मुसल्मान के दस्तर ख़्वान पर जिन्नात :

ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़िश्शाफ़ेई علیہ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوی एक ताबेई बुज़ुर्ग से नक़्ल फ़रमाते हैं : "तमाम मुसल्मानों के घरों की छतों पर मुसल्मान जिन्नात रहते हैं, जब दो पहर और रात को दस्तर ख़्वान

लाया जाता है या'नी घर के अफ़राद खाना खाते हैं तो जिन्नात भी छतों से उतर आते और साथ ही बैठ कर खाना शुरूअ़ कर देते हैं, इन के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **शरीर जिन्नात** को भगा देता है।"

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न लिस्सुयूती, बाब هل الجن يا كلون, स. 44)

मज़्कूरा रिवायात से मा'लूम हुवा कि **हड्डी, लीद, लोबिया** और **इन्सानों के खाने की दीगर चीज़ें** जिन पर बिस्मिल्लाह न पढ़ी जाए, जिन्नों की ख़ूराक है।

जिन्नात कहां रहते हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जिस ज़मीन पर हम ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं इसी पर **जिन्नात** भी रहते हैं। इमाम जलालुद्दीन सुयूती عليه رَحْمَةُ اللهِ القَوى अपनी किताब "लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न" में रक़म त़राज़ हैं : "**अक्सर व बेशतर जिन्नात** नजासत की जगहों पर होते हैं म-सलन खजूरों का झुन्ड, बैतुल ख़ला, कचरे के ढेर और गुस्ल ख़ाना, इसी वजह से गुस्ल ख़ाने और ऊंट के बैठने की जगह वग़ैरा में नमाज़ पढ़ने से मन्अ़ किया गया है कि येह शैत़ान की जगह है।"

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, मसा-कनिल जिन्न, स. 67)

बैतुल ख़ला जिन्नात के रहने की जगह है :

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत करते हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बैतुल ख़ला जिन्नों और शैत़ानों के रहने की जगह है तो जब तुम में से कोई शख़्स बैतुल ख़ला में जाए तो येह दुआ पढ़ ले :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُبِکَ مِنَ الْخُبُثِ وَ الْخَبَائِثِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं पलीदी और शैत़ानों से तेरी पनाह मांगता हूं।" (सु-ननो अबी दावूद, किताबुत्त़हारह, बाब مایقول الرجل اذا دخل الخلاء, अल ह़दीस : 6, जि. 1, स. 36)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ लिखते हैं : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 21 सफ़ह़ा 218 पर जो कुछ फ़रमाते हैं उस का ख़ुलासा है : हां जिन्न और नापाक रूहें मर्द व औ़रत, अह़ादीस से साबित हैं और वोह अक्सर नापाक मौक़ओं पर होती हैं। इन्हीं से पनाह के लिये इस्तिन्जा ख़ाने जाने से पहले येह दुआ़ पढ़ना वारिद हुवा। اَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الْخُبُثِ وَ الْخَبَائِثِ (या'नी गन्दी और नापाक चीज़ों से अल्लाह की पनाह मांगता हूं।)

(मुस्नदे इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, जि. 4, स. 203, ह़दीस : 11983)

टीलों और वादियों में रहने वाले जिन्नात

ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ड़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक सफ़र में थे तो आप क़ज़ाए ह़ाजत के लिये तशरीफ़ ले गए। मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास पानी का बरतन ले गया तो मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास लोगों के लड़ने झगड़ने की आवाज़ सुनी। इस त़रह़ की आवाज़ मैं ने पहले कभी नहीं सुनी थी। जब प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले आए तो मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने आप के पास लोगों के लड़ने झगड़ने की आवाज़ सुनी और इस से पहले मैं ने ऐसी

आवाज़ किसी की ज़बान से नहीं सुनी थी ?'' आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **''मेरे पास मुस्लिम जिन्नात और मुश्रिक जिन्नात आपस में झगड़ रहे थे उन लोगों ने मुझ से दर-ख़्वास्त की के मैं इन्हें रहने की जगह दे दूं तो मैं ने मुसल्मान जिन्नों को टीलों व चट्टानों में जगह दे दी और मुश्रिक जिन्नों को पस्त ज़मीन (या'नी गढ़ों, खाइयों और ग़ारों) में जगह दे दी ।''**

(अल मो'जमुल कबीर, अल ह़दीस : 1143, जि. 1, स. 371)

बिलों में रहने वाले जिन्नात

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सरजिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बिल (या'नी सूराख़) में पेशाब करने से मन्अ़ फ़रमाया । लोगों ने ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पूछा बिल में पेशाब करने से मुमा-न-अ़त की क्या वजह है ? ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''कहा जाता है कि **बिल जिन्नात के रहने की जगह है ।**'' (सु-ननो अबी दावूद, बिताबुत्तहारह, बाब النهی عن البول فی الجحر, अल ह़दीस : 69, जि. 1, स. 44)

वीरानों में रहने वाले जिन्नात

अ़ल्लामा बदरुद्दीन शिब्ली علیہ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوی (अल मु-तवफ़्फ़ा 769 हि.) नक़्ल करते हैं : आ'राबियों (या'नी अ़रब के रहने वाले देहातियों) का बयान है कि हम कसीर लोग होते और कहीं पड़ाव करते तो हमें बहुत से ख़ैमे और लोग दिखाई देते मगर अचानक सब कुछ ग़ाइब हो जाता, हमें यक़ीन है कि दिखाई देने वाले वोह लोग जिन्नात हैं। (आकामुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, अल बाब السادس فی تطور الجن و تشکلهم, स. 26)

इन्सानों के साथ रहने वाले जिन्नात

इन्सानों के साथ रहने वाले जिन्न को आ़मिर कहते हैं जिस की जम्अ़ अ़म्मार है।

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ज़िक्रे वुजूदुहुम, स. 25)

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है उन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि जब कोई शख़्स अपने घर में दाख़िल हो और दाख़िल होते वक़्त और खाने के वक़्त उस ने बिस्मिल्लाह पढ़ ली तो शैत़ान अपने जुर्रिय्यत से कहता है कि इस घर में न तुम्हें रहना मिलेगा न खाना और अगर दाख़िल होते वक़्त बिस्मिल्लाह न पढ़ी तो कहता है अब तुम्हें रहने की जगह मिल गई और खाने के वक़्त भी बिस्मिल्लाह न पढ़ी तो कहता है कि रहने की जगह भी मिली और खाना भी मिला। (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबिल इश्रबा, बाब आदाबित़्आ़म, अल ह़दीस : 2018, स. 1116)

चिक्नाई वाला कपड़ा जिन्न की इक़ामत गाह है

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़ह़ुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! अपने घरों से गोश्त की चिक्नाई वाला कपड़ा (दस्ती रुमाल) निकाल दो (या'नी धोया करो) इस लिये कि येह शरीर जिन्न की जगह है और उस की क़ियाम गाह है।"

(फ़िरदौसुल अख़्बार, बाबिल अलिफ़, अल ह़दीस : 343, जि. 1, स. 68)

झाड़ियों में जिन्नात का बसेरा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले अक्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को क़रअ़ में रफ़्ए ह़ाजत करने से मन्अ़ फ़रमाया। अ़र्ज़ की गई : "क़रअ़ क्या है ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कि तुम में से कोई झाड़ी वाली जगह में जाए तो गोया अपने मकान में है ह़ालां कि वोह तुम्हारे भाई जिन्नात के रहने की जगह है।

(अल कामिल फ़िज़्ज़ु-अ़फ़ा लि इब्ने उद्दी, जि. 4, स. 310)

जिन्नात की अक़्साम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

शारेह़े बुख़ारी अ़ल्लामा बदरुद्दीन मह़मूद बिन अह़मद ऐनी علیہ رحمۃ اللہ الغنی (अल मु-तवफ़्फ़ा 855 हि.) ने क़ुरआने पाक, अह़ादीसे मुबा-रका और आसार में ग़ौरो फ़िक्र कर के **जिन्नात** की चन्द अक़्साम बयान फ़रमाई हैं।

(1) **ग़ूल :** इसे इ़फ़्रीत भी कहते हैं, येह सब से ख़त़रनाक और ख़बीस जिन्न है जो किसी से मानूस नहीं होता। जंगलात में रहता है, मुख़्तलिफ़ शक्लें बदलता रहता है और रात के वक़्त दिखाई देता है और तन्हा सफ़र करने वाले मुसाफ़िर को उ़मूमन दिखाई देता है जो इसे अपने जैसा इन्सान समझ बैठता है, येह उस मुसाफ़िर को रास्ते से भटकाता है।

(2) **सि'लाह :** येह भी जंगलों में रहता है, जब किसी इन्सान को देखता है तो उस के सामने नाचना शुरूअ़ कर देता है और उस से चूहे बिल्ली का खेल खेलता है।

(3) **ग़दार :** येह मिस्र के अत़राफ़ और यमन में भी कहीं कहीं पाया

जाता है, इसे देखते ही इन्सान बेहोश हो कर गिर जाता है।

(4) **व-लहान :** येह वीरान समुन्दरी जज़ीरों में रहता है इस की शक्ल ऐसी है जैसे इन्सान शुतर मुर्ग़ पर सुवार हो। जो इन्सान जज़ीरों में जा पड़ते हैं उन्हें खा लेता है।

(5) **शक़्क़ :** येह इन्सान के आधे क़द के बराबर होता है, देखने वाले इसे बन मानस समझते हैं, सफ़र में ज़ाहिर होता है।

(6) बा'ज़ **जिन्नात** इन्सानों से मानूस होते हैं और उन्हें तक्लीफ़ नहीं पहुंचाते।

(7) बा'ज़ **जिन्नात** कंवारी लड़कियों को उठा ले जाते हैं।

(8) बा'ज़ **जिन्नात** कुत्ते की शक्ल और

(9) बा'ज़ छिपकली की शक्ल में होते हैं। (उ़म्दतुल क़ारी, जि. 10, स. 644, माख़ूज़ अज़ रिसाला : "जिन्नात की हिकायात", स. 10)

जिन्नात असली शक्ल में नज़र क्यूं नहीं आते ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जिन्नात भी हमारे साथ इस ज़मीन में रहते हैं लेकिन वोह हमें देखते हैं और हम उन्हें नहीं देख सकते। अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّهٗ یَرٰىكُمْ هُوَ وَ قَبِیْلُهٗ مِنْ حَیْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّیٰطِیْنَ اَوْلِیَآءَ لِلَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ۝

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह और उस का कुम्बा तुम्हें वहां से देखते हैं कि तुम उन्हें नहीं देखते बेशक हम ने शैत़ानों को उन का दोस्त किया है जो ईमान नहीं लाते।

(पारह : 8, अल आ'राफ़ : 27)

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عليہ رحمۃ اللہ الہادی (अल मु-तवफ़्फ़ा 1367 हि.) इस आयत के तह़्त तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में लिखते हैं : **"अल्लाह तआ़ला ने जिन्नों** को ऐसा इदराक दिया है कि वोह इन्सानों को देखते हैं और इन्सानों को ऐसा इदराक नहीं मिला कि वोह **जिन्नों** को देख सकें।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है : जब अल्लाह तआ़ला ने समूम (या'नी जहन्नम की आग के सत्तरवें ह़िस्से) से अबुल जिन्नात को पैदा फ़रमाया और उस से पूछा : "ऐ अबुल जिन्न ! तुम्हारी क्या ख़्वाहिश है ?" उस ने कहा मेरी तमन्ना येह है कि हम सब को देखें और हमें कोई न देखे और हम ज़मीन में छुप जाएं और हमारा उधेड़ उ़म्र भी न मरे यहां तक कि उस की जवानी वापस आ जाए (या'नी हमारा उधेड़ उ़म्र भी जवान हो कर मरे)। तो अल्लाह तआ़ला ने उस की येह तमन्ना पूरी फ़रमा दी इसी लिये **जिन्नात** हम सब को देखते हैं लेकिन हम लोग उन्हें नहीं देख पाते और जब वोह मरते हैं तो ज़मीन में ग़ाइब हो जाते हैं और इन का बूढ़ा भी जवान हो कर मरता है।

(आकामुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, الباب الثانی فی ابتداء خلق الجن, स. 12)

अ़ल्लामा बदरुद्दीन शिब्ली علیہ رَحْمَۃُ اللہِ القَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 769 हि.) लिखते हैं : ह़ज़रते रबीअ़ बिन सुलैमान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं कि मैं ने इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی को येह फ़रमाते हुए सुना की जो आ़दिल शख़्स येह गुमान करे कि उस ने जिन्न को देखा है तो मैं उस की गवाही बातिल

क़रार देता हूं क्यूं कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया اِنَّهٗ یَرٰىكُمْ هُوَ وَ قَبِیْلُهٗ مِنْ حَیْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّیٰطِیْنَ اَوْلِیَآءَ لِلَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ ○ (पारह : 8, अल आ'राफ़ : 27) मगर येह कि वोह नबी हो। (आकामुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, अल बाब فی احکام الجانّ،الباب السادس فی تطور الجن و تشکلهم, स. 23)

याद रहे कि आ़म इन्सान **जिन्नात** को अस्ल ह़ालत में नहीं देख पाता लेकिन अगर येह किसी और शक्ल में हों तो इन्सान का इन को देखना कसीर रिवायात से साबित है।

जिन्नात की मुख़्तलिफ़ शक्लें

अ़ल्लामा बदरुद्दीन शिब्ली ह़-नफ़ी علیه رَحمَةُ اللهِ القَوی (अल मु-तवफ़्फ़ा 769 हि.) अपनी किताब "आकामुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न" में लिखते हैं : "बिला शुबा **जिन्नात** इन्सानों और जानवरों की शक्ल इख़्तियार कर लेते हैं चुनान्चे वोह सांपों, बिच्छूओं, ऊंटों, बैलों, घोड़ों, बकरियों, ख़च्चरों, गधों और परिन्दों की शक्लों में बदलते रहते हैं।" (आकामुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, अल बाब الباب السادس فی تطور الجن و تشکلهم, स. 21)

जिन्नात की तीन क़िस्में :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सा'लबा ख़शनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**जिन्नात** की तीन क़िस्में हैं : अव्वल : जिन के पर हैं और वोह हवा में उड़ते हैं, दुवुम : सांप और कुत्ते और सिवुम : जो सफ़र और क़ियाम करते हैं।" (अल मुस्तदरक लिल ह़ाकिम, अल जिन्न सलासा अस्नाफ़, अल ह़दीस : 3754, जि. 3, स. 254)

जिन्न ऊंट की शक्ल में :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल अल मुज़्नी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़ह़ुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : "तुम ऊंटों के बैठने की जगह के क़रीब नमाज़ मत पढ़ो ! क्यूं कि ऊंट जिन्नों में से भी पैदा किये गए हैं, क्या तुम उन की आंखों और उन की फूली हुई सांसों को नहीं देखते जब वोह बिदक्ते हैं, हां ! बकरियों के बाड़े के क़रीब नमाज़ पढ़ो क्यूं कि वोह रह़मत के ज़ियादा क़रीब हैं ।" (अल मुस्नद लिल इमामे अह़मद बिन ह़म्बल, मुस्नदे अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल अल मुज़्नी, अल ह़दीस : 20580, जि. 7, स. 342)

जिन्न कुत्ते की शक्ल में :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि (बा'ज़) कुत्ते भी जिन्नात होते हैं और येही कमज़ोर क़िस्म के जिन्नात हैं लिहाज़ा जिस के खाने के वक़्त कुत्ता आ जाए तो वोह उसे भी कुछ खिला दे या उसे भगा दे । (आकामुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, अल बाब "الباب السابع ان بعض الکلاب من الجن", स. 24)

पुर असरार कुत्ता

सूबा सरह़द पाकिस्तान के मशहूर शहर कोहाट के एक इस्लामी भाई का ह़-लफ़िया बयान कुछ यूं है कि जिस मकान में हमारी रिहाइश है उस में पहले ग़ैर मुस्लिम रहते थे । हमारे साथ एक अ़जीब और **पुर असरार वाक़िआ़** पेश आया । हुवा यूं कि आधी रात के बा'द या कभी कभार दिन में हमारे घर में एक ख़ौफ़नाक काला कुत्ता दाख़िल हो जाता । हम उसे किसी न किसी त़रह़ बाहर

निकाल देते। तमाम दरवाज़े खिड़कियां एह़तियात़ से बन्द करने के बा वुजूद जब उस की आमद का सिल्सिला न रुका तो एक दिन मेरे चचा ने (जो कुत्ते के बार बार आ जाने पर उकता चुके थे) कुत्ते को गोली मार कर हलाक कर दिया। वोह उस की लाश को कचरे के ढेर पर फेंकने के लिये ले गए। लाश को फेंकने के बा'द वोह वापस हुए। चन्द क़दम चलने के बा'द उन्हों ने एक दम पलट कर देखा तो उन की ह़ैरत की इन्तिहा न रही कि कुत्ते की लाश वहां से ग़ाइब हो चुकी थी। बहर ह़ाल वोह रुके बग़ैर घर लौट आए।

पुर असरार कुत्ते से तो छुटकारा पा लिया लेकिन अब हमारे घर में कुछ **अ़जीबो ग़रीब मुआ़-मलात** होने लगे। कभी एक ख़ौफ़नाक औ़रत (जिस के बाल खुले हुए होते) रोती हुई नज़र आती तो कभी छोटे क़द के **अ़जीबुल ख़ल्क़त बच्चे** इधर उधर भागते दिखाई देते। येह मुआ़-मलात देख कर यूं लगता था कि शायद वोह पुर असरार कुत्ता कोई **जिन्न** था और येह सब मुआ़-मलात इन्तिक़ामी कारवाई के त़ौर पर थे। हमारे चचा (जिन्हों ने उस कुत्ते को मारा था) सख़्त ख़ौफ़ ज़दा रहने लगे और उन की सिह़्ह़त दिन ब दिन गिरती चली गई यहां तक कि सूख कर कांटा हो गए। उन के यहां जो भी बच्चा पैदा होता, उस की बीनाई पैदाइशी त़ौर पर तो बिल्कुल ठीक होती मगर कुछ ही अ़र्से में नज़र कमज़ोर होते होते इस क़दर कम हो जाती कि रात में तो उन बच्चों को बिल्कुल दिखाई न देता। सब घर वाले सख़्त तक्लीफ़ व परेशानी में मुब्तला थे। बहुत से आ़मिलीन को दिखाया मगर कोई ह़ल न निकल सका। बिल आख़िर हमारे घर वाले निस्बत की ब-र-कतें पाने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से बैअ़त भी हुए और उन के अ़त़ा

कर्दा ता'वीज़ात और अवराद भी इस्ति'माल किये। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दामने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से वाबस्तगी और ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या की ब-र-कत से हमारा ख़ौफ़ जाता रहा। ख़ौफ़नाक औ़रत और अ़जीबुल ख़ल्क़त बच्चों का दिखाई देना भी बन्द हो गया और हमारे चचा की औलाद भी तन्दुरुस्त हो गई।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कुत्ता था या जिन्न

कशमीर (पाकिस्तान) के शहर मीरपूर के मुक़ीम इस्लामी भाई का बयान है : ग़ालिबन सि. 2000 ई. की बात है कि हम चन्द इस्लामी भाई अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में ह़ाज़िरी की निय्यत से बाबुल मदीना (कराची) की त़रफ़ रवाना हुए। जब हम आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची पहुंचे तो वहां हमें कोई ऐसा इस्लामी भाई न मिल सका जो हमें अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के घर पर पहुंचा सके हम परेशानी के आ़लम में फ़ैज़ाने मदीना से बाहर निकल आए। सामने चन्द कुत्ते बैठे हुए थे। एक इस्लामी भाई के दिल में न जाने क्या आई कि एक कुत्ते के सामने जा कर बड़ी सन्जीदगी से कहने लगे : "हम अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दरे दौलत पर जाना चाहते हैं मगर हमें रास्ता मा'लूम नहीं क्या तुम रास्ता बता सकते हो ?"

येह देख कर हमारी ह़ैरत की इन्तिहा न रही कि वोह कुत्ता उठ खड़ा हुवा और दुम हिलाते हुए एक सम्त को चलने लगा। हम बे साख़्ता उस के पीछे हो लिये। वोह कुत्ता मुख़्तलिफ़ गलियों से होता हुवा हमें अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दरे दौलत तक ले गया

और हमें वहां छोड़ कर वापस हो लिया। हम ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में ह़ाज़िरी दी और रात कमो बेश 11:00 बजे वापस फ़ैज़ाने मदीना पहुंच गए। हमें चाय की त़लब महसूस हो रही थी मगर किसी होटल के बारे में मा'लूमात नहीं थीं। उन्ही इस्लामी भाई ने फिर कहा कि जो हमें अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के घर पहुंचा कर आया था चलो उसी से कह कर देखते हैं। येह कहते हुए वोह इस्लामी भाई उठे और उस कुत्ते के क़रीब पहुंच कर जब होटल के बारे में दर्याफ़्त किया तो ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर वोह कुत्ता (जो ग़ालिबन कोई जिन्न था) उठा और एक सम्त चल दिया। हम उस के पीछे पीछे एक गली में पहुंचे तो सामने चाय का होटल नज़र आ गया। واللہ اعلم بحقیقۃ الحال

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जिन्न इन्सान की शक्ल में

ह़ज़रते यह़या बिन साबित رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते ह़फ़्स त़ाइफ़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के साथ मिना में था कि (हम ने देखा) एक शैख़ जो सफ़ेद सर वाला और सफ़ेद दाढ़ी वाला था (या'नी सर और दाढ़ी के बाल सफ़ेद थे) लोगों को फ़तवा दे रहा है। ह़ज़रते ह़फ़्स رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझ से फ़रमाया : "ऐ अबू अय्यूब ! क्या तुम इस बूढ़े को देख रहे हो जो लोगों को फ़तवे दे रहा है, येह इफ़रीत जिन्न है।" येह फ़रमाने के बा'द ह़ज़रते ह़फ़्स رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस के क़रीब गए और मैं भी उन के साथ था। जब ह़ज़रते ह़फ़्स رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस की त़रफ़ ग़ौर से देखना शुरूअ़ किया तो उस ने अपने जूते उठाए और भागना शुरूअ़ कर दिया, लोग भी उस के पीछे

भागने लगे । ह़ज़रते ह़फ़्स رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहने लगे : "ऐ लोगो ! येह इफ़्रीत जिन्न है ।" (आकामुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, अल बाब الثامن و الثلاثون فی تحمل الجن العلم, स. 80)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शैत़ान सुराक़ा बिन जा'सम की सूरत में

जब क़ुरैश ने बद्र में जाने पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया तो उन्हें याद आया कि उन के और क़बीला बनी बक्र के दरमियान अ़दावत है मुम्किन था कि वोह येह ख़याल कर के वापसी का क़स्द करते, येह शैत़ान को मन्ज़ूर न था इस लिये उस ने येह फ़रेब किया कि वोह सुराक़ा बिन मालिक बिन जा'सम बनी किनाना के सरदार की सूरत में नुमूदार हुवा और एक लश्कर और एक झन्डा साथ ले कर मुश्रिकीन से आ मिला और उन से कहने लगा कि मैं तुम्हारा ज़िम्मादार हूं, आज तुम पर कोई ग़ालिब आने वाला नहीं । जब मुसल्मानों और काफ़िरों के दोनों लश्कर सफ़ आरा हुए और रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मुश्ते ख़ाक मुश्रिकीन के मुंह पर मारी और वोह पीठ फैर कर भागे और ह़ज़रते जिब्रील, इब्लीसे लईन की त़रफ़ बढ़े जो सुराक़ा की शक्ल में ह़ारिस बिन हश्शाम का हाथ पकड़े हुए था । वोह हाथ छुड़ा कर मअ़ अपने गुरौह के भागा । ह़ारिस पुकारता रह गया : "सुराक़ा ! सुराक़ा तुम तो हमारे ज़ामिन हुए थे कहां जाते हो ?" कहने लगा मुझे वोह नज़र आता है जो तुम्हें नज़र नहीं आता ।

जब कुफ़्फ़ार को हज़ीमत हुई और वोह शिकस्त खा कर मक्कए मुकर्रमा पहुंचे तो उन्हों ने येह मशहूर किया कि हमारी शिकस्त व हज़ीमत का बाइस सुराक़ा हुवा । सुराक़ा को येह ख़बर पहुंची तो उसे

हैरत हुई और उस ने कहा येह लोग क्या कहते हैं न मुझे उन के आने की ख़बर, न जाने की, हज़ीमत हो गई जब मैं ने सुना है तो कुरैश ने कहा कि तू फ़ुलां फ़ुलां रोज़ हमारे पास आया था उस ने क़सम खाई कि येह ग़लत़ है तब उन्हें मा'लूम हुवा कि वोह शैतान था।

(माख़ूज़ अज़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, अल अन्फ़ाल, तह़ूतिल आयह : 48)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जिन्न शैख़े नज्दी की शक्ल में

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने ज़िक्र फ़रमाया कि कुफ़्फ़ारे कुरैश दारुन्नदवा (कमेटी घर) में **रसूले करीम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निस्बत मश्वरा करने के लिये जम्अ़ हुए और इब्लीसे लईन एक बुड्ढे की सूरत में आया और कहने लगा कि मैं शैख़े नज्द हूं, मुझे तुम्हारे इस इज्तिमाअ़ की इत्तिलाअ़ हुई तो मैं आया मुझ से तुम कुछ न छुपाना, मैं तुम्हारा रफ़ीक़ हूं और इस मुआ-मले में बेहतर राय से तुम्हारी मदद करूंगा। उन्हों ने उस को शामिल कर लिया और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मु-तअ़ल्लिक़ राय ज़नी शुरूअ़ हुई, अबुल बख़्तरी ने कहा कि मेरी राय येह है कि मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पकड़ कर एक मकान में क़ैद कर दो और मज़्बूत़ बन्दिशों से बांध दो, दरवाज़ा बन्द कर दो, सिर्फ़ एक सूराख़ छोड़ दो जिस से कभी कभी खाना पानी दिया जाए और वहीं वोह हलाक हो कर रह जाएं। इस पर शैत़ाने लईन जो शैख़े नज्दी बना हुवा था बहुत ना ख़ुश हुवा और कहा निहायत नाक़िस राय है, येह ख़बर मशहूर होगी और उन के अस्ह़ाब आएंगे और तुम से मुक़ाबला करेंगे और उन को तुम्हारे हाथ से छुड़ा लेंगे। लोगों ने कहा : शैख़े

नज्दी ठीक कहता है। फिर हश्शाम बिन अ़म्र खड़ा हुवा उस ने कहा मेरी राय येह है कि उन को (या'नी मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को) ऊंट पर सुवार कर के अपने शहर से निकाल दो फिर वोह जो कुछ भी करें इस से तुम्हें कुछ ज़रर नहीं। इब्लीस ने इस राय को भी ना पसन्द किया और कहा जिस शख़्स ने तुम्हारे होश उड़ा दिये और तुम्हारे दानिश मन्दों को ह़ैरान बना दिया उस को तुम दूसरों की त़रफ़ भेजते हो, तुम ने उस की शीरीं कलामी, सैफ़े ज़बानी, दिल कशी नहीं देखी है अगर तुम ने ऐसा किया तो वोह दूसरी क़ौम के क़ुलूब तस्ख़ीर कर के उन लोगों के साथ तुम पर चढ़ाई करेंगे।

अहले मज्मअ़ ने कहा शैख़े नज्दी की राय ठीक है इस पर अबू जह्ल खड़ा हुवा और उस ने येह राय दी कि क़ुरैश के हर हर ख़ानदान से एक एक आ़ली नसब जवान मुन्तख़ब किया जाए और उन को तेज़ तलवारें दी जाएं, वोह सब यक्बारगी ह़ज़रत पर ह़म्ला आवर हो कर क़त्ल कर दें तो बनी हाशिम क़ुरैश के तमाम क़बाइल से न लड़ सकेंगे। ग़ायत येह है कि ख़ून का मुआ़-वज़ा देना पड़े वोह दे दिया जाएगा। इब्लीसे लईन ने इस तज्वीज़ को पसन्द किया और अबू जह्ल की बहुत ता'रीफ़ की और इसी पर सब का इत्तिफ़ाक़ हो गया।

ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर वाक़िआ़ गुज़ारिश किया और अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अपनी ख़्वाब गाह में शब को न रहें, अल्लाह तआ़ला ने इज़्न दिया है मदीनए त़य्यिबा का अ़ज़्म फ़रमाएं। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को शब में अपनी ख़्वाब गाह में रहने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि

हमारी चादर शरीफ़ ओढ़ो तुम्हें कोई ना गवार बात पेश न आएगी और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दौलत सराए अक़्दस से बाहर तशरीफ़ लाए और एक मुश्ते ख़ाक दस्ते मुबारक में ली और आयत (اِنَّا جَعَلْنَا فِیْ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا) पढ़ कर मुहा-सरा करने वालों पर मारी, सब की आंखों और सरों पर पहुंची, सब अन्धे हो गए और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को न देख सके और हुज़ूर मअ़ सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के ग़ारे सौर में तशरीफ़ ले गए और हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को लोगों को अमानतें पहुंचाने के लिये मक्कए मुकर्रमा छोड़ा। मुश्रिकीन रात भर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दौलत सराए का पहरा देते रहे, सुब्ह़ को जब क़त्ल के इरादे से ह़म्ला आवर हुए तो देखा कि ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم हैं। उन से हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दर्याफ़्त किया गया कि कहां है उन्हों ने फ़रमाया कि हमें मा'लूम नहीं तो तलाश के लिये निकले जब ग़ार पर पहुंचे तो मकड़ी के जाले देख कर कहने लगे कि अगर इस में दाख़िल होते तो येह जाले बाक़ी न रहते। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस ग़ार में तीन रोज़ ठहरे फिर मदीनए त़य्यिबा रवाना हुए।

(माख़ूज़ अज़ ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, अल अन्फ़ाल : तह़्तिल आयह : 30)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जिन्न परस्त क़द इन्सान की सूरत में

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने एक शख़्स को उस के कजावे के कम्बल पर देखा जो दो बालिश्त लम्बा था तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने उस से

पूछा तू क्या चीज़ है ? तो उस ने कहा मैं इज़्ब (या'नी पस्त क़द) हूं। उन्हों ने फिर पूछा : इज़्ब क्या होता है ? उस ने जवाब दिया : ''जिन्नों में से एक मर्द।'' तो आप ने उस के सर पर कोड़ा मारा तो वोह भाग गया । (आकामुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, अल बाब السادس فی تطور الجن و تشکلهم, स. 22)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अ़ल्लामा मह़मूद आलोसी علیه رحمة الله الغنی (अल मु-तवफ़्फ़ा 1270 हि.) लिखते हैं : जिन्नात अज्सामे हवाइया हैं जिन में से बा'ज़ या सब मुख़्तलिफ़ शक्ले इख़्तियार कर सकते हैं। उन की ख़ासियत येह है कि वोह मख़्फ़ी रहते हैं और बसा अवक़ात अपनी अस्ली शक्ल के इ़लावा किसी और शक्ल में नज़र आते हैं बल्कि बा'ज़ मर्तबा अपनी ख़ल्क़ी सूरत में भी नज़र आ जाते हैं, लेकिन उन को अस्ली शक्ल में देखना अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام और बा'ज़ औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ के साथ ख़ास है।

(रूहुल मआ़नी, जि. 29, स. 130)

तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी में है : ''अह़ादीस से मा'लूम होता है कि इन की शक्लों में बहुत इख़्तिलाफ़ है या'नी इन की एक मुअ़य्यन शक्ल नहीं है बा'ज़ के पर होते हैं वोह तेज़ हवा में उड़ते हैं। बा'ज़ सांप और कुत्ते की शक्ल बन कर फिरते हैं। बा'ज़ आदमियों की सूरत में होते हैं और इन के घर बार होते हैं कि कूच और क़ियाम भी करते हैं लेकिन इन के घर और ठहरने की जगह अक्सर वीराना, जंगल और पहाड़ होते हैं।''

(तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी, पारह : 29)

जिन्नात अपनी शक्लें किस त़रह़ तब्दील करते हैं?

अ़ल्लामा बदरुद्दीन मह़मूद बिन अह़मद ऐनी علیہ رحمۃ اللہ الغنی (अल मु-तवफ़्फ़ा 855 हि.) लिखते हैं : क़ाज़ी अबू या'ला ने फ़रमाया कि शयात़ीन को अपनी ख़ल्क़त या शक्ल तब्दील करने पर कोई क़ुदरत नहीं है, हां येह उस वक़्त मुम्किन है कि **अल्लाह** तआ़ला इन को ऐसे कलिमात या अफ़्आ़ल सिखा दे कि जिन्हें वोह पढ़ें या करें तो एक शक्ल से दूसरी शक्ल में मुन्तक़िल हो जाएं।

(उ़म्दतुल क़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, जि. 10, स. 644)

सांप से लड़ाई

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू साइब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास बैठा हुवा था कि अचानक मैं ने उन के बिस्तर के नीचे किसी शै के ह़-र-कत करने की आवाज़ सुनी। जब मैं ने ग़ौर से देखा तो मुझे एक सांप दिखाई दिया, मैं एक दम से खड़ा हो गया। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या हुवा ?" मैं ने उन्हें सांप की मौजूदगी के बारे में बताया तो वोह कहने लगे : "तुम्हारा क्या इरादा है ?" मैं ने कहा : "इस को मारना चाहता हूं." तो उन्हों ने साथ वाले मकान की त़रफ़ इशारा करते हुए बताया कि मेरे चचा ज़ाद भाई ने (जो इस मकान में रहते थे) ग़ज़्वए अह़ज़ाब के दिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अपने अहले ख़ाना के पास जाने की इजाज़त ली क्यूं कि उन की नई नई शादी हुई थी। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को इजाज़त दे दी और अपना हथियार साथ ले जाने की भी ताकीद

फ़रमाई। जब वोह अपने घर पहुंचे तो अपनी बीवी को घर के दरवाज़े पर खड़े देखा। बीवी को इस त़रह़ देख कर उन से न रहा गया और वोह नेज़ा तान कर अपनी दुल्हन की त़रफ़ लपके। वोह रो कर पुकारी, मेरे सरताज मैं बे क़ुसूर हूं, ज़रा घर के अन्दर चल कर तो देखो कि किस चीज़ ने मुझे बाहर निकाला है। वोह सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अन्दर तशरीफ़ ले गए। क्या देखते हैं कि एक ख़तरनाक ज़हरीला सांप कुंडली मारे बैठा है। बे क़रार हो कर उस पर नेज़े के साथ ह़म्ला कर दिया और उस को नेज़ा में पिरो लिया तो ज़ख़्मी सांप ने उन को डस लिया।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि मैं नहीं जानता कि वोह सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ या सांप उन में से कौन जल्दी जां ब ह़क़ हुवा ? फिर उन की क़ौम के अफ़राद ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बे कस पनाह में ह़ाज़िर हो कर इल्तिजा की के आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह तआ़ला से दुआ़ कीजिये कि वोह हमारे भाई को लौटा दे। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम अपने इस्लामी भाई के लिये तीन मर्तबा इस्तिग़फ़ार करो, फिर इर्शाद फ़रमाया : जिन्नों में से एक गुरौह ईमान ले आया है, जब तुम इन में से किसी एक को देखो तो तुम तीन मर्तबा उस को तम्बीह करो, अगर इस के बा'द भी वोह दिखाई दे तो तुम उस को क़त्ल कर सको तो कर दो। (मुस्नदो लिल इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, मुस्नदो अबी सईदुल ख़ुदरी, अल ह़दीस : 11369, जि. 4, स. 82)

छिपकली थी या...... ?

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़िदमत में रहने वाले इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ से बयान है कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तस्नीफ़ व तालीफ़ के काम के लिये बैरूने मुल्क जल्वा फ़िगन थे। मैं किसी काम से बावर्ची ख़ाने में गया तो वहां मेरी नज़र ग़ैर मा'मूली क़द व क़ामत की एक **ख़ौफ़नाक छिपकली** पर पड़ी। ऐसी **छिपकली** मैं ने पहली बार देखी थी, मुझे ऐसा लगा जैसे वोह कोई जिन्न हो। कुछ देर तो हिम्मत कर के काम करता रहा, लेकिन जब ज़ियादा डर लगने लगा तो बारगाहे मुर्शिदी में सारा मुआ़-मला अ़र्ज़ किया। ग़ैर मु-तवक़्क़ेअ़ त़ौर पर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه जवाब देने के बजाए बावर्ची ख़ाना की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए। उस **छिपकली** को देखा और फ़रमाने लगे इसे मारियेगा मत, बल्कि इसे किसी त़रह़ पकड़ लें। मैं ने आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बताए हुए त़रीक़े से उसे पकड़ लिया तो **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया इसे किसी वीरान जगह में छोड़ आओ।

मैं उस **ख़ौफ़नाक छिपकली** को कहीं दूर छोड़ आया। दूसरी सुब्ह़ मैं बावर्ची ख़ाना में दाख़िल हुवा तो मेरी नज़र खिड़की पर पड़ी। मैं चोंक गया कि जिस **ख़ौफ़नाक छिपकली** को वीराने में छोड़ने की तरकीब बना दी गई थी वोह खिड़की से झांक रही है। मैं ने ग़ौर से देखा तो येह वोह **छिपकली** नहीं थी बल्कि उस से मिलती जुलती दूसरी **छिपकली** थी। शायद उस की तलाश में आई थी। मगर उसे अन्दर आने की हिम्मत नहीं

हो रही थी। बस सर उठा कर अन्दर झांक रही थी। जब **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से अ़र्ज़ की गई तो आप ने फ़रमाया : ''फुलां ता'वीज़ बना कर खिड़की में लगा दीजिये।'' ऐसा ही किया गया जिस की ब-र-कत से वोह दूसरी **छिपकली** भी वहां से चली गई।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

छिपकली अचानक ग़ाइब हो गई

शहज़ादए अ़त्तार अलहाज मौलाना अबू उसैद अहमद उ़बैद रज़ा अल अ़त्तारिय्युल म-दनी مدظله العالی ने एक बार इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने एक दिन कमरे में **छिपकली** देखी और उसे मारना चाहा तो एक दम वोह **ग़ाइब** हो गई। सारा कमरा ख़ाली था। ऐसी कोई जगह नहीं थी जहां वोह छुप सकती हो। इतने में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तशरीफ़ ले आए। मैं ने उन से सारा मुआ़-मला अ़र्ज़ किया तो आप ने फ़रमाया : ''हो सकता है कोई **जिन्न** हो, लिहाज़ा उसे नहीं मारना।'' चुनान्चे मैं ने उसे मारने का इरादा तर्क कर दिया। अभी मैं ने उसे न मारने का सोचा ही था कि वोह सामने दीवार पर नज़र आ गई।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वोह कौन था ?

एक इस्लामी भाई ने बताया कि ग़ालिबन सि. 1990 ई. की बात है कि सख़्त सर्दी के दिनों में एक बार **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में ह़ाज़िरी की सआ़दत मिली। ठन्ड इतनी थी कि क़मीस के नीचे स्वेटर व मोज़े वग़ैरा पहनने के बा वुजूद भी सर्दी गोया हड्डियों में सरायत कर रही थी। मैं ने देखा की एक और इस्लामी भाई भी बारगाहे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه में ह़ाज़िर थे।

लम्बा क़द, सिह़्ह़त मन्द जिस्म और सर पर सब्ज़ इ़मामे का ताज भी सजा हुवा था। वोह बड़े मुअद्दबाना अन्दाज़ में बारगाहे मुर्शिद में कुछ अ़र्ज़ कर रहे थे। मैं बड़ा ह़ैरान हुवा कि इतनी ठन्ड के बा वुजूद उन के जिस्म पर लॉन का कुर्ता था। ब ज़ाहिर ऐसा लगता था कि इन्हें सर्दी की परवाह नहीं। उन के चेहरे पर छाई हुई सन्जीदगी और हैबत के बाइ़स मुझे उन से अ़जीब सा ख़ौफ़ महसूस हुवा जिस की वजह से मैं उन से मानूस नहीं हो पा रहा था।

इसी अस्ना में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मुझे मुख़ातब करते हुए फ़रमाया : "आप इन के साथ गाड़ी पर चले जाइये और फ़ुलां को बुला लाइये।" मेरा दिल उन के साथ जाने के लिये नहीं मान रहा था मगर मुझ में इन्कार करने की हिम्मत नहीं थी। जैसे ही गाड़ी में उन के साथ बैठा तो मुझे उन के जिस्म से शदीद ह़रारत निकलती हुई महसूस हुई। ऐसा लगता था कि मेरे क़रीब अंगेठी रखी हुई हो। जब गाड़ी क़ब्रिस्तान से गुज़री और मैं ने क़ब्रिस्तान वालों को सलाम किया तो वोह इस्लामी भाई मेरी त़रफ़ रुख़ कर के बैठ गए और गाड़ी भी चलाते रहे। मुस्करा कर बड़े ही पुर असरार अन्दाज़ में फ़रमाने लगे कि अगर मैं तुम से येह कहूं कि **मैं जिन्न हूं तो तुम्हारा क्या ह़ाल होगा ?** मैं पहले ही उन के बारे में सोच सोच कर परेशान हो रहा था, येह सुन कर डर के मारे मेरी ह़ालत ख़राब हो गई। मैं घबराहट के आ़लम में सिर्फ़ इतना कह सका कि हुज़ूर ! अभी तो ऐसी बातें न करें। फिर वापसी तक उन्हों ने मुझ से कोई गुफ़्त-गू नहीं फ़रमाई और मैं भी बात करने की हिम्मत न कर सका।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क्या जिन्नात शरीअ़त के मुकल्लफ़ हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जिस त़रह़ इन्सानों पर शर-ई अह़कामात लागू होते हैं इसी त़रह़ **जिन्नात** भी शरीअ़ते मुत़ह्हरा के पाबन्द हैं। **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ○

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें।

(पारह : 27, अज़्ज़ारिया : 56)

अ़ल्लामा फ़ख़रुद्दीन राज़ी علیہ رحمۃ اللہ الھادی (अल मु-तवफ़्फ़ा 606 हि.) लिखते हैं : "बिला शुबा **जिन्नात** भी इन्सानों की त़रह़ शरीअ़त के मुकल्लफ़ हैं।" (अत्तफ़्सीरिल कबीर, पारह : 29, अल जिन्न, तह़्तिल आयह : 1, जि. 10, स. 665)

अ़ल्लामा इब्ने ह़जर मक्की علیہ رَحْمَۃُ اللہِ القَوِی (अल मु-तवफ़्फ़ा 974 हि.) फ़रमाते हैं : अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुबकी अपने फ़तावा में तह़रीर फ़रमाते हैं : **जिन्नात** हर चीज़ में नबी عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की शरीअ़त के मुकल्लफ़ हैं। अख़्बार व आसार में वारिद है कि **मुअमिनीन जिन्नात** नमाज़ पढ़ते हैं, रोज़ा रखते हैं, ह़ज करते हैं, तिलावते क़ुरआन करते हैं, उ़लूमे दीनिया और रिवायते ह़दीस इन्सानों से ह़ासिल करते हैं अगर्चे इन्सानों को इस का पता न चले।

(अल फ़तावा अल ह़दीसियह, स. 99)

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी علیہ رحمۃ اللہ الھادی (अल मु-तवफ़्फ़ा 1367 हि.) तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल

इ़रफ़ान मे लिखते हैं : ''उ़-लमाए मुह़क़्क़िक़ीन का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि **जिन्न सब के सब मुकल्लफ़ हैं ।**''

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह : 26, अल अह़क़ाफ़, ज़ेरे आयत : 29)

जिन्नात में मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ इन्सानों में मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब के लोग होते हैं इसी त़रह़ **जिन्नात** में भी दीने इस्लाम के मानने और न मानने वाले दोनों क़िस्म के गुरौह मौजूद हैं । ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं: **जिन्नात** में मोमिन भी होते हैं और काफ़िर भी ।

(किताबिल अ़-ज़मह, अल ह़दीस : 1137, स. 429)

अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबल्सी علیہ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوی (अल मु-तवफ़्फ़ा 1143 हि.) लिखते हैं : हमारे नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिन्नो इन्स की त़रफ़ मब्ऊ़स हुए हैं तो जो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीन में दाख़िल हुवा वोह गुरौह मुअमिनीन में है और दुन्या व आख़िरत और जन्नत में उन का साथ होगा और जिस ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को झुटलाया वोह शैत़ान है और मुअमिनीन के गुरौह से दूर और उस का ठिकाना जहन्नम है ।

(अल ह़दी-क़तुन्नदिय्यह, जि. 1, स. 73)

ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन अ़ब्दुर्रह़मान सुद्दी (ताबेई) رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि **जिन्नों** के भी तुम्हारी त़रह़ फ़िर्क़े होते हैं जैसे राफ़िज़ी, मरजिया और क़दरिया वग़ैरा ।

(किताबिल अ़-ज़मह, अल ह़दीस : 1152, स. 432)

इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह मौलाना

अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن (अल मु-तवफ़्फ़ा 1340 हि.) से पूछा गया : ''हुज़ूर ! क्या **जिन्न व परी** भी मुसल्मान होते हैं ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''हां (और इसी तज़्किरे में फ़रमाया) एक परी मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुई और अक्सर ख़िदमते अक़्दस में रहा करती थी । एक बार अ़र्सा तक ह़ाज़िर न हुई सबब दर्याफ़्त फ़रमाया. अ़र्ज़ की हुज़ूर मेरे अ़ज़ीज़ का हिन्दुस्तान में इन्तिक़ाल हो गया था मैं वहां गई थी। राह में मैं ने देखा कि एक पहाड़ पर इब्लीस नमाज़ पढ़ रहा है। मैं ने उस की येह नई बात देख कर कहा कि तेरा काम तो नमाज़ से ग़ाफ़िल कर देना है तू ख़ुद कैसे नमाज़ पढ़ता है । उस ने कहा कि शायद रब्बुल इ़ज़्ज़त तआ़ला मेरी नमाज़ क़बूल फ़रमाए और मुझे बख़्श दे ।''

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه, जि. 1, स. 15)

इब्लीस के पड़पोते की तौबा

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है एक दिन हम नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह कोहे तमामा पर बैठे थे । अचानक एक बूढ़ा हाथ में अ़सा लिये ज़ाहिर हुवा और उस ने **रसूलुस्स-क़लैन, रह़मते कौनैन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलाम अ़र्ज़ किया । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब मर्ह़मत फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया : ''**इस की आवाज़ जिन्नात जैसी है ।**''आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस्तिफ़्सार पर उस ने बताया कि मेरा नाम हामा बिन हैम बिन लाकैस बिन इब्लीस है । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''तो गोया तेरे और इब्लीस के दरमियान सिर्फ़ दो पुश्तें हैं।'' सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ने उस की उ़म्र पूछी तो अ़र्ज़ की : "जितनी दुन्या की उ़म्र है इतनी या इस से थोड़ी सी कम है, या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जिन दिनो क़ाबील ने ह़ज़रते हाबील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को शहीद किया था उस वक़्त मैं चन्द बरस का बच्चा ही था मगर बात समझता था। पहाड़ों में दौड़ता फिरता था और लोगों का खाना और ग़ल्ला चोरी कर लिया करता था। लोगों के दिलों में वस्वसे भी डालता था ताकि वोह अक़ारिब के साथ बद सुलूकी करें। आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ के हाथों तौबा कर ली है और उन के साथ उन की मस्जिद में एक साल तक रहा हूं। मैं ह़ज़रते सय्यिदुना हूद, ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब और ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ की मुक़द्दस सोह़बतों से मुस्तफ़ीज़ हो चुका हूं और उन से तौरात सीखी है और उन का सलाम ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ की ख़िदमत में पहुंचाने का शरफ़ ह़ासिल किया है। या सय्यिदल अम्बिया عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ ! ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ ने फ़रमाया था कि अगर तुझे नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत का शरफ़ ह़ासिल हो तो मेरा सलाम उन से अ़र्ज़ करना, सो सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अब इस अमानत से सुबुक दोश होने का शरफ़ ह़ासिल हो रहा है और येह भी आरज़ू है कि मुझे आप अपनी ज़बाने ह़क़्क़े तरजुमान से कुछ कलामे इलाही عَزَّوَجَلَّ ता'लीम फ़रमाइये।" सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को मुरसिलात, **عم یتسآءلون**, इख़्लास, मुअ़व्विज़तैन (या'नी फ़लक़ व नास) और **اذالشمس** येह सूरतें ता'लीम फ़रमाईं और येह

भी फ़रमाया कि ऐ हामा ! जब तुम्हें कोई ह़ाजत हो मेरे पास आ जाना और मेरी मुलाक़ात न छोड़ना। (लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, फ़ी ज़िक्रे अख़्बारिल जिन्न, स. 216, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जिन्न मुसल्मान हो गया

7 जून **2004** बरोज़ पीर शरीफ़ बहावल पूर (सूबा पंजाब) के मुक़ीम इस्लामी भाई अपने बेटे के हमराह बाबुल मदीना (कराची) **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में ह़ाज़िर हुए तो अपना माजरा कुछ इस त़रह़ से बयान किया :

''हमारा आमों का बाग़ है। एक दिन मेरे बेटे ने दरख़्त पर चढ़ कर आम तोड़े। इस के बा'द इस की त़बीअ़त बिगड़ गई। आंखें बड़ी बड़ी और ख़ौफ़नाक हो गईं। फिर इस में एक **जिन्न** ज़ाहिर हुवा जो अपने आप को ग़ैर मुस्लिम बता रहा था। उस ने मेरे बेटे को त़रह़ त़रह़ की तक्लीफ़ें देना शुरूअ़ कर दीं फिर मुग़ल्लज़ात बकते हुए इल्ज़ाम लगाया कि ''तुम्हारे बेटे ने हमारे बच्चे पर पाउं रख कर उसे तक्लीफ़ दी है हम भी इस को इसी त़रह़ अज़िय्यत में मुब्तला रखेंगे।'' हम ने इ़लाज के लिये कई आ़मिलों वग़ैरा को दिखाया मगर ख़ातिर ख़्वाह फ़ाएदा न हुवा, कभी येह **सरकश जिन्न** चला जाता तो कभी दोबारा ज़ाहिर हो जाता। इसी परेशानी में काफ़ी अ़र्सा गुज़र गया। एक दिन घर में **आप** (या'नी अमीरे अहले सुन्नत) دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के **म-दनी मुज़ा-करे**[1] की केसेट चल रही थी कि मेरे बेटे की त़बीअ़त ख़राब होने लगी और

1. वोह इज्तिमाअ़ जिस में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अ़क़ाइद व आ'माल, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, त़िबाबत व रूह़ानियत वग़ैरा मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर पूछे गए सुवालात के जवाबात देते हैं।)

वोह ग़ैर मुस्लिम जिन्न ज़ाहिर हो गया मगर ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर आज उस का लहजा कुछ नर्म था। वोह टेप रेकॉर्डर की त़रफ़ देख कर पूछने लगा : "येह मसाइल बयान फ़रमाने वाले कौन हैं ?" हम ने बताया : "येह हमारे मुर्शिद शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हैं।" इस पर जिन्न बोला : "मुझे इन के पास ले चलो, मैं इन से मुलाक़ात करना चाहता हूं।" हम ने आपस में मश्वरा किया तो त़ै पाया कि बेटे को बाबुल मदीना (कराची) ले जाना चाहिये (शायद इ़लाज की कोई सूरत बन जाए), यूं हमारे कराची आने की सूरत बनी।"

इस गुफ़्त-गू के दौरान वोह जिन्न भी (उन के बेटे पर) ज़ाहिर हो चुका था। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उस पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए दा'वते इस्लाम पेश की। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में **वोह जिन्न मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गया** और सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में बैअ़त कर के **अ़त्तारी** भी बन गया। उस ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से इन्तिहाई मुअद्बाना अन्दाज़ में परेशानियों के ह़ल के लिये दुआ़ओं की दर-ख़्वास्त भी की। **फिर** वोह नौ मुस्लिम जिन्न अ़र्ज़ करने लगा कि मैं मुसल्मान तो हो गया हूं और आप का मुरीद भी बन गया हूं लेकिन इस (नौ जवान) को नहीं छोड़ूंगा। क्यूं कि इस ने अपने आम के बाग़ में काम करने के दौरान मेरे बच्चे पर पाउं रख दिया, मेरा बच्चा रात भर दर्द के मारे सो नहीं सका, मैं अपने बच्चे से बहुत प्यार करता हूं, मेरी बीवी सख़्त ग़ुस्से में है वोह तो कहती है कि इस को ख़त्म कर दो। इस पर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने बड़ी महब्बत

और शफ़्क़त से उसे समझाया कि اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप अब मुसल्मान हो चुके हैं और **ग़ौसे पाक** के सिल्सिले में भी दाख़िल हो चुके हैं येह नौ जवान आप का इस्लामी भाई भी है और पीर भाई भी, लिहाज़ा इस को छोड़ दीजिये। आप काफ़ी देर तक उसे इसी त़रह़ प्यार से समझाते रहे मगर वोह अपनी ज़िद पर क़ाइम था और कह रहा था मैं इसे नहीं छोड़ सकता। फिर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने ज़रा सख़्त लहजे में फ़रमाया कि देखो मान जाओ, वरना अगर मेरे ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जलाल आ गया तो तुम्हारा क्या बनेगा ?

येह सुन कर वोह नौ जवान जिस पर **जिन्न** ज़ाहिर हुवा था उस पर कपकपी त़ारी हो गई और जब **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उस पर कुछ पढ़ कर दम किया तो वोह अपनी ज़िद से बाज़ आते हुए कहने लगा कि बस ! हुज़ूर मेरा वा'दा है कि मैं चला जाऊंगा और फिर दोबारा नहीं आऊंगा। फिर अ़र्ज़ करने लगा। अब चूंकि मैं आप के ज़रीए इस्लाम क़बूल कर चुका हूं, लिहाज़ा आप मेरा इस्लामी नाम रख दीजिये। इस पर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उस अ़त्त़ारी नौ मुस्लिम जिन्न का इस्लामी नाम "**गुलामे ग़ौस**" रखा। उस नौ मुस्लिम अ़त्त़ारी जिन्न ने जाते जाते येह भी इरादा किया कि اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं अपने (जिन्न) बीवी बच्चों को **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में लाऊंगा और मुसल्मान करवा कर उन सब को भी अ़त्त़ारी बनवाऊंगा। दा'वते इस्लामी का म-दनी काम भी करूंगा और आ़शिक़ाने रसूल के हमराह म-दनी क़ाफ़िलों में शामिल हो कर राहे ख़ुदा में सफ़र भी करूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अच्छे और बुरे जिन्नात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जिस त़रह़ हमें इन्सानों में अच्छे और बुरे हर दो त़रह़ के लोगों से वासित़ा पड़ता है इसी त़रह़ **जिन्नात** में भी नेक व बद दोनों त़रह़ के जिन्नात होते हैं । **अल्लाह तआ़ला** क़ुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में जिन्नात का क़ौल ह़िकायत फ़रमाता है :

وَاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ؕ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًاۙ۝

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह कि हम में कुछ नेक हैं और कुछ दूसरी त़रह़ के हैं हम कहीं राहें फटे हुए हैं ।

(पारह : 29, अल जिन्न, 11)

मख़्लूक़ की दो क़िस्में :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़लीमी عليه رَحْمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं : बा'ज़ लोगों का कहना है कि ज़िन्दा, आ़क़िल और बोलने वाली मख़्लूक़ की दो ही क़िस्में हैं : इन्सान और जिन्न, और इन में हर गुरौह की फिर दो क़िस्में हैं, नेक और बद । नेक इन्सानों को अबरार कहा जाता है फिर इन में रसूल भी होते हैं और आ़म इन्सान भी, जब कि बुरे लोगों को अशरार कहा जाता है फिर इन में कुछ काफ़िर होते हैं और कुछ नहीं, बुरे जिन्नात को शयात़ीन कहा जाता है । (शु-अ़बुल ईमान, फ़स्ल फ़ी मा'रिफ़तिल मलाएका, अल ह़दीस : 40, जि. 1, स.163, 164, मुलख़्ख़सन)

ह़ज की दा'वते इब्राहीमी पर जिन्नात ने भी लब्बैक कहा :

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर ताबेई رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बैतुल्लाह शरीफ़ की ता'मीर से फ़ारिग़ हुए तो अल्लाह तआ़ला ने उन की त़रफ़

वह्य फ़रमाई कि लोगों में ह़ज का ए'लान कर दो । आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام लोगों में ए'लान के लिये निकले और ए'लान फ़रमाया कि ऐ लोगो ! तुम्हारे परवर्द गार ने एक घर बनाया है लिहाज़ा तुम इस का ह़ज करो तो आप के इस ए'लान को हर **मुसल्मान जिन्नो इन्स** ने सुना और कहा لَبَّیْک اَللّٰھُمَّ لَبَّیْک या'नी हम ह़ाज़िर हैं, हम ह़ाज़िर हैं । (जामिउ़ल बयान फ़ी तअवीलिल क़ुरआन, तह़्तिल आयत : 27, अल ह़दीस : 25043, जि. 9, स. 134)

जिन्नात भी मुअज़्ज़िन के ह़क़ में गवाही देंगे :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मुअज़्ज़िन की जहां तक आवाज़ पहुंचेगी **जिन्नात व इन्सान और तमाम चीज़ें** क़ियामत के दिन उस की गवाही देंगे । (सह़ीहुल बुख़ारी, किताबिल आज़ान, बाब रफ़्इस्सौति बिन्निदाअ, अल ह़दीस : 609, जि. 1, स. 222)

तिलावत सुनने वाले जिन्नात

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के सामने सूरए रह़मान की तिलावत फ़रमाई तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ख़ामोश रहे । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया क्या बात है कि मैं **जिन्नों** से उन के परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ के बारे में तुम से अच्छा जवाब सुनता हूं, जब भी मैं अल्लाह तआ़ला के इस इर्शाद पर पहुंचता हूं :

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ○

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : तो तुम दोनों अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे । (पारह : 27, अर्रह़मान : 16)

तो वोह कहते हैं : لَا بِشَیْءٍ مِنْ آلَائِکَ رَبَّنَا نُکَذِّبُ فَلَکَ الْحَمْدُ या'नी ऐ हमारे परवर्द गार ! तेरी ने'मतों से कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है जिस को हम झुटलाएं तेरे ही लिये तमाम ता'रीफ़ें हैं।

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, फ़स्ल बि'सतिन्नबी इलख़...., स. 90)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की वजह से जां से गुज़रने वाले जिन्नात

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुलैद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं मैं खड़े हो कर नमाज़ अदा कर रहा था और मैं ने येह आयते करीमा तिलावत की :

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ط

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : हर जान को मौत चखनी है।

(पारह : 4, आले इमरान : 185)

और बार बार इसी को दोहराता रहा। घर के एक कोने से किसी पुकारने वाले ने पुकार कर कहा : "इस आयत को बार बार क्यूं दोहराते हो ? तुम ने हमारे **चार जिन्नों** को क़त्ल कर दिया है और इस आयत को दोहराने की वजह से जिन्न अपने सर भी आस्मान की त़रफ़ नहीं उठा सके यहां तक कि फ़ौत हो गए।"

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, (221), स. 221)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तहज्जुद गुज़ार जिन्नात

(**1**) ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम में से जो

शख़्स रात में नमाज़ (तहज्जुद) पढ़े तो चाहिये कि वोह बुलन्द आवाज़ से क़िराअत करे क्यूं कि फ़िरिश्ते भी उस के साथ नमाज़ पढ़ते हैं और उस की क़िराअत को सुनते हैं और वोह **मुसल्मान जिन्न** जो फ़ज़ा में होते हैं या उस के पड़ोस में उस के साथ उस के घर में होते हैं वोह भी उस के साथ नमाज़ पढ़ते हैं और उस की क़िराअत को सुनते हैं और उस शख़्स का बुलन्द आवाज़ से क़िराअत करना उस के अपने घर और उस के गिर्दो नवाह के घरों से **शरीर जिन्नों** और सरकश शयातीन को भगा देता है।''

(मुस्नदुल बज़्ज़ार, अल ह़दीस : 2655, जि. 7, स. 97)

(**2**) ह़ज़रते सफ़्वान बिन मह़रज़ माज़नी علیہ رحمۃ اللہ الغنی रात में नमाज़े तहज्जुद के लिये उठते तो उन के साथ उन के घर में रहने वाले **जिन्नात** भी उठते और उन के साथ नमाज़ पढ़ते और उन की तिलावते क़ुरआन को सुनते। ह़ज़रते सय्यिदुना सरी علیہ رَحمَۃُ اللہِ القَوی कहते हैं मैं ने ह़ज़रते यज़ीद रक़्क़ाशी علیہ رحمۃ اللہ الھادی से पूछा कि ह़ज़रते सफ़्वान عَلَیہِ رَحمَۃُ اللہِ الحَنّان को इस बात का इ़ल्म कैसे हुवा ? तो ह़ज़रते यज़ीद रक़्क़ाशी علیہ رحمۃ اللہ الھادی ने जवाब दिया कि जब सफ़्वान عَلَیہِ رَحمَۃُ اللہِ الحَنّان चीख़ो पुकार की आवाज़ सुनते तो घबरा जाते तो उन्हें आवाज़ दी जाती : ''ऐ अल्लाह के बन्दे ! घबराओ मत क्यूं कि हम तुम्हारे भाई हैं हम भी तुम्हारे साथ नमाज़े तहज्जुद के लिये उठते हैं और तुम्हारे साथ हम भी नमाज़ पढ़ते हैं।'' चुनान्चे उन की वह़शत ख़त्म हो जाती और अमान हो जाता।

(किताबिल हवातिफ़ लि इब्ने अबिद्दुन्या, जि. 2, स. 497)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जिन्नों के नमाज़ पढ़ने की जगह :

ह़दीस में है कि तुम लोग घास पर क़ज़ाए ह़ाजत न करो इस लिये कि येह जिन्नों के नमाज़ पढ़ने की जगह है। (लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ज़िक्रे अ़क़ाइदुहुम व इ़बादातुहुम, स. 102)

उ़म्रह की अदाएगी करने वाले जिन्नात

(**1**) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन अबी रबाह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मस्जिदे ह़रम में मौजूद थे कि एक सफ़ेद और सियाह चमकदार रंग का सांप आया और बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ किया। फिर वोह मक़ामे इब्राहीम के पास आया और गोया नमाज़ अदा कर रहा था तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उस के पास आ कर खड़े हो गए और फ़रमाया : ''ऐ सांप ! शायद तुम ने उ़म्रह के अरकान पूरे कर लिये हैं और अब मैं तुम्हारे बारे में यहां के ना समझ लोगों से डरता हूं (कहीं वोह तुम्हें मार न डालें लिहाज़ा तुम यहां से जल्दी चले जाओ)।'' चुनान्चे वोह घूमा और आस्मान की त़रफ़ उड़ गया।

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ज़िक्रे अ़क़ाइदुहुम व इ़बादातुहुम, स. 101)

(**2**) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सफ़्वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बैतुल्लाह शरीफ़ के क़रीब बैठे थे की अचानक एक सांप इराक़ी दरवाज़े से दाख़िल हुवा और बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ किया फिर ह़-जरे अस्वद के पास आया और उस को बोसा दिया। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सफ़्वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उसे देख कर फ़रमाया : ''**ऐ जिन्न** ! अब तूने अपना उ़म्रह अदा कर लिया है और हमारे बच्चे तुम से डर रहे हैं लिहाज़ा

तुम वापस चले जाओ।'' चुनान्चे जिधर से वोह आया था वहीं से वापस चला गया।

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ज़िक्रे अ़क़ाइदुहुम व इ़बादातुहुम, स. 100)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

का'बए मुशर्रफ़ा का त़वाफ़ करने वाली जिन्न औ़रतें

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं एक रात ह़रम शरीफ़ में दाख़िल हुवा तो देखा कि चन्द औ़रतें बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ कर रही हैं। उन्हों ने मुझे तअ़ज्जुब व ह़ैरानी में डाल दिया (क्यूं कि वोह आ़म औ़रतों की त़रह़ नहीं थीं)। जब वोह औ़रतें त़वाफ़ से फ़ारिग़ हुईं तो बाहर निकल गईं। मैं ने दिल में कहा मैं इन के पीछे जाऊं ताकि मैं इन के घर देख लूं। वोह चलती रहीं यहां तक कि एक दुश्वार गुज़ार (मुश्किल तरीन) घाटी में पहुंची फिर उस घाटी पर चढ़ गईं। मैं भी उन के पीछे पीछे उस पर चढ़ गया फिर वोह उस से उतरीं तो मैं भी नीचे उतर गया फिर वोह एक वीरान जंगल में दाख़िल हुईं तो मैं भी उन के पीछे दाख़िल हो गया। क्या देखता हूं कि वहां कुछ मुअ़म्मर अफ़राद बैठे हुए हैं उन्हों ने मुझ से पूछा : ''ऐ इब्ने ज़ुबैर! आप यहां कैसे आ गए?'' मैं ने जवाब देने के बजाए उन से सुवाल कर दिया : ''और आप लोग कौन हैं?'' उन्हों ने कहा : **''हम जिन्नात हैं।''**

मैं ने कहा मैं ने चन्द औ़रतों को बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ करते देखा तो उन्हों ने मुझे तअ़ज्जुब में डाल दिया या'नी वोह मुझे इन्सान के सिवा कोई और मख़्लूक़ मा'लूम हुईं चुनान्चे मैं उन के पीछे चल पड़ा यहां तक कि इस जगह पहुंच गया। उन्हों ने कहा : ''येह

हमारी औ़रतें (या'नी जिन्नात में से) थीं, ऐ इब्ने ज़ुबैर ! आप क्या पसन्द करेंगे ?'' मैं ने कहा : ''पकी हुई ताज़ा खजूरें खाने को दिल चाह रहा है।'' ह़ालां कि उस वक़्त मक्कए मुकर्रमा में ताज़ा खजूर का कहीं नामो निशान न था। लेकिन वोह मेरे पास पकी हुई ताज़ा खजूर ले आए। जब मैं खा चुका तो उन्हों ने मुझ से कहा : ''जो बाक़ी बच गई हैं उन को आप अपने साथ ले जाएं।'' ह़ज़रते इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने वोह बची हुई खजूरें उठाईं और घर वापस आ गया।

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, फ़ी ज़िक्रे अख़्बारिल जिन्न....,स. 247)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नेक जिन्नात बद मज़्हबों के घर में नहीं रहते

ह़ज़रते स-लमह बिन शबीब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने मक्कए मुकर्रमा मुन्तक़िल होने का इरादा किया और अपना घर बेच दिया। जब मैं ने उस को ख़ाली कर के ख़रीदार के सिपुर्द कर दिया और उस के दरवाज़े पर खड़े हो कर (जिन्नों को मुख़ातब कर के) कहा ऐ घर वालो ! हम तुम्हारे पड़ोसी रहे तो तुम ने हमें अच्छा पड़ोस मुहय्या किया (या'नी जिन्न हो कर भी न सताया) अल्लाह तआ़ला तुम्हें बेहतरीन बदला अ़ता फ़रमाए। हम ने तुम से भलाई ही देखी अब हम ने अपना घर बेच दिया है और मक्कए मुकर्रमा मुन्तक़िल हो रहे हैं فَعَلَیْکُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہ या'नी लिहाज़ा तुम पर सलामती हो और अल्लाह की रह़मत और उस की ब-र-कतें। तो घर में से किसी जवाब देने वाले ने जवाब दिया : ''अल्लाह तुम्हें भी जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए, हम ने भी तुम से भलाई ही देखी और हम भी यहां से जा रहे हैं इस लिये

कि जिस ने येह घर ख़रीदा है वोह राफ़िज़ी है जो ह़ज़रते अबू बक्र और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बुरा भला कहता है।''

(सि-फ़तिस्सफ़्वह, ذکر المصطفین من عباد الجن, जि. 4, स.358)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जिन्न की तौबा

ह़ुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के साह़िब जादे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे गिरामी सय्यिदुना शैख़ मुह़्युद्दीन **अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं कि ''मैं एक रात जामेअ़ मन्सूर में नमाज़ पढ़ रहा था कि मैं ने सुतूनों पर किसी शै की ह़-र-कत की आवाज़ सुनी फिर एक बड़ा सांप आया और उस ने अपना मुंह मेरे सज्दे की जगह में खोल दिया। मैं ने जब सज्दे का इरादा किया तो अपने हाथ से उस को हटा दिया और सज्दा किया फिर जब मैं अत्तह़िय्यात के लिये बैठा तो वोह मेरी रान पर चलते हुए मेरी गरदन पर चढ़ कर इस से लिपट गया, जब मैं ने सलाम फैरा तो उस को न देखा।

दूसरे दिन मैं जामेअ़ मस्जिद से बाहर मैदान में गया तो एक शख़्स को देखा जिस की आंखें बिल्ली की त़रह़ थीं और क़द लम्बा था। मैं ने जान लिया कि ये जिन्न है उस ने मुझ से कहा : ''मैं वोही जिन्न हूं जिस को आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कल रात देखा था मैं ने बहुत से औलियाए किराम رحمہم اللہ تعالٰی علیہم اجمعین को इस त़रह़ आज़माया है जिस त़रह़ आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को आज़माया मगर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की त़रह़ उन में से कोई भी साबित क़दम नहीं रहा, उन में बा'ज़ वोह थे जो ज़ाहिर व बात़िन से घबरा गए, बा'ज़ वोह थे जिन के दिल में इज़्त़िराब

हुवा और ज़ाहिर में साबित क़दम रहे, बा'ज़ वोह थे कि ज़ाहिर में मुज़्तरिब हुए और बातिन में साबित क़दम रहे लेकिन मैं ने आप رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ को देखा कि आप न ज़ाहिर में घबराए और न ही बातिन में।" फिर उस ने मुझ से दर-ख़्वास्त की के "आप मुझे अपने हाथ पर तौबा करवाएं।" चुनान्चे मैं ने उसे **तौबा** करवाई।

(बह्जतुल असरार, ज़िक्रे त़रीक़ह رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ, स. 168)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जिन्नात में म-दनी काम की बहारें

एक इस्लामी भाई अपने छोटे भाई के हमराह सिन्ध के मशहूर बुज़ुर्ग **शाह अ़क़ीक़** رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ के मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िर हुए। उन के छोटे भाई पर जिन्नात के अ-सरात थे जिस की वजह से वोह काफ़ी परेशान थे। उन्हों ने साहिबे मज़ार से कुछ इस त़रह़ इस्तिग़ासा किया कि **दा'वते इस्लामी** के म-दनी काम की मस्रूफ़िय्यत की वजह से आप की बारगाह में ज़ियादा देर ह़ाज़िर नहीं रह सकता, अगर आप घर पर ही इ़लाज की कोई तरकीब फ़रमा दें तो एह़साने अ़ज़ीम होगा। येह अ़र्ज़ करने के बा'द वोह वापस बाबुल मदीना लौट आए। ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर घर पर ही उन के छोटे भाई का इ़लाज होना शुरूअ़ हो गया। उन के भाई पर क़ाबिज़ जिन्न की कोई दूसरा जिन्न ख़ूब पिटाई करता (जिसे ग़ालिबन **शाह अ़क़ीक़** رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ की त़रफ़ से भेजा गया था)। जब उस इस्लामी भाई ने मुआ़लिज जिन्न से उस का नाम दर्याफ़्त किया तो उस ने अपना नाम **अ़ब्दुर्रहमान अ़त्तारी** बताया। इस्लामी भाई ने ह़ैरान होते हुए तस्दीक़ की ग़रज़ से पूछा : "क्या आप **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ से बैअ़त हैं ?" जिन्न ने कहा : "जी हां,

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुरीद हूं।'' इस्लामी भाई ने सुवाल किया : ''तो क्या आप दा'वते इस्लामी के म-दनी काम भी करते हैं ?'' जिन्न ने बताया : ''اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **हज़ारों जिन्नात दा'वते इस्लामी के म-दनी माहौल से वाबस्ता हैं, वोह भी अपने क़बीलों में इन्फ़िरादी कोशिश करते हैं, फ़ैज़ाने मदीना में हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत, म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र, म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करते और दर्स भी देते हैं। इज्तिमाअ़ में हमारे भी बा क़ाइदा हल्क़े लगते हैं और हाज़िरी ली जाती है।''**

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अ़त्तारी जिन्नात

न्यू कराची (बाबुल मदीना) के एक इस्लामी भाई का (जो एक मस्जिद में इमामत करवाते हैं) तह़रीरी बयान कुछ इस त़रह़ से है :

हमारे अ़लाक़े के सय्यिद साहिब ने मुझे ह़-लफ़िया बताया कि हमारा म-दनी क़ाफ़िला फ़ारूक़ नगर (लाड़काना) की एक मस्जिद में ठहरा हुवा था। म-दनी मर्कज़ के दिये गए जदवल के मुत़ाबिक़ इ़शा की नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ने के बा'द दो घन्टे के अन्दर अन्दर सो जाना होता है ताकि **तहज्जुद** और **सदाए मदीना** वग़ैरा की तरकीब आसानी से बन सके। मगर जदवल की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करते हुए हम ने रात गए तक इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त का सिल्सिला जारी रखा। ना'त ख़्वानी से फ़ारिग़ होने के बा'द शु-रकाए क़ाफ़िला मस्जिद के अन्दर आराम के लिये लैट गए और मैं बाहर सेहून में सो गया। हमें सोए हुए थोड़ी ही देर

गुज़री थी कि मस्जिद के अन्दर से चीख़ने चिल्लाने की आवाज़ें आने लगीं। सूरते ह़ाल का जाएज़ा लिया तो मा'लूम हुवा कि मस्जिद के अन्दर सोने वाले इस्लामी भाइयों को अचानक किसी ने मारना पीटना शुरूअ़ कर दिया था। उन को लातें और थप्पड़ लग रहे थे मगर मारने वाला नज़र नहीं आ रहा था। कुछ देर बा'द मार पीट का सिल्सिला रुक गया। तमाम शु-रकाए क़ाफ़िला सुब्ह़ तक जागते रहे, वोह इन्तिहाई ख़ौफ़ज़दा थे। दूसरी रात मार पीट का सिल्सिला फिर से शुरूअ़ हो गया। एक ह़ैरान कुन बात येह थी कि मैं दोनों रातें पिटाई से मह़फ़ूज़ रहा।

तीसरी रात येह त़ै हुवा कि तमाम शु-रकाए क़ाफ़िला मस्जिद के सेह़न में सोएंगे और मैं (या'नी सय्यिद साह़िब) मस्जिद के अन्दर। मगर उस रात बाहर सोने वालों की पिटाई शुरूअ़ हो गई और मैं अन्दर सोने के बा वुजूद एक बार फिर मह़फ़ूज़ रहा। इतने में मुझे एक चेहरा दिखाई दिया और एक आवाज़ सुनाई दी, कोई कहने वाला कह रहा था : हम **जिन्नात** हैं और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुरीद (या'नी अ़त्त़ारी) हैं। हमें इस लिये ग़ुस्सा आया कि तुम ने म-दनी मर्कज़ के दिये हुए म-दनी क़ाफ़िले के जदवल पर अ़मल क्यूं नहीं किया और इसी लिये हम ने शु-रकाए क़ाफ़िला की पिटाई की (न कि इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त की वजह से)। आप चूंकि सय्यिद हैं और हमारे पीरो मुर्शिद **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه सय्यिद ज़ादों का बहुत एह़तिराम करते हैं। लिहाज़ा इस लिये आप को छोड़ दिया गया, आइन्दा ऐसा न कीजियेगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जिन्नात की उ़म्रें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

इन्सानों की निस्बत जिन्नात की उ़म्रें ख़ासी त़वील होती हैं। इस बारे में चन्द रिवायात मुला-ह़ज़ा कीजिये :

त़वील अ़र्सा ज़िन्दा रहने वाले सह़ाबी जिन्न :

ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عليه رحمة الله الغنى "**अल इसाबह फ़ी तमीज़िस्सह़ाबह**" में फ़रमाते हैं : सह़ाबी जिन्न ह़ज़रते सय्यिदुना उस्मान बिन सालेह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ का 219 हिजरी में इन्तिक़ाल हुवा।

(अल इसाबह फ़ी मीज़िस्सह़ाबह, रक़म : 5806, जि. 4, स. 504)

लम्बी उ़म्र पाने वाले जिन्न :

ह़ज़रते ईसा बिन अबू ईसा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيه फ़रमाते हैं कि ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ को येह ख़बर पहुंची की सर ज़मीने चीन में एक मकान ऐसा है कि अगर लोग रास्ता भूल जाएं तो वोह येह आवाज़ सुनते हैं कि "रास्ता इधर है" लेकिन कोई दिखाई नहीं देता। उस ने कुछ लोगों को भेजा और ताकीद की के जान बूझ कर रास्ता भटक जाना फिर जब तुम्हें येह आवाज़ सुनाई दे तो तुम उन पर धावा बोल देना और देखना कि येह लोग कौन हैं। उन लोगों ने ऐसा ही किया और जब उन्हें आवाज़ सुनाई दी तो ह़म्ला कर दिया। उन्हों ने कहा तुम लोग हमें हरगिज़ नहीं देख सकते। ह़ज्जाज के आदमियों ने पूछा तुम लोग यहां कितने अ़र्से से रहते हो ? उन लोगों ने बताया कि हम सालों का शुमार नहीं करते अलबत्ता येह मा'लूम है कि मुल्के चीन 8 मर्तबा वीरान हुवा और 8 मर्तबा आबाद हुवा और हम उसी वक़्त से इस जगह आबाद हैं।

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ज़िक्रे मौतिहिम, स. 123)

जिन्नात की मौत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जिस त़रह़ इन्सान अपनी मुद्दते ह़यात पूरी करने के बा'द इस दुन्याए फ़ानी से रुख़्सत हो जाता है इसी त़रह़ जिन्नात को भी मौत के घाट उतरना पड़ता है। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि म-लकुल मौत के ज़िम्मे इन्सानों की रूह़ क़ब्ज़ करने का काम लगाया गया है। वोही इन की रूहें क़ब्ज़ करते हैं। एक फ़िरिश्ता जिन्नों की रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये है, एक फ़िरिश्ता शयात़ीन की रूहें क़ब्ज़ करने के लिये जब कि एक फ़िरिश्ता परिन्दों, वह़शियों, दरिन्दों, मछलियों और च्यूंटियों को वफ़ात देने पर मामूर है, इस त़रह़ येह चार फ़िरिश्ते हैं।

(अद्दुर्रुल मन्शूर, जि. 6, स. 542)

एक जिन्न सह़ाबिये रसूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात:

कुछ लोग ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रजा अ़त़ारिदी علیہ رحمۃ اللہ الھادی की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और उन से पूछा कि क्या आप उन जिन्नों के बारे में जानते हैं जिन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़ह़ुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक पर बैअ़त की थी। वोह मुस्कराए और फ़रमाया : मैं तुम्हें वोह बात बताता हूं जो मैं ने ख़ुद देखी और सुनी है। एक सफ़र के दौरान हम ने पानी के ज़ख़ीरे के पास पड़ाव किया और अपने ख़ैमे गाड़ लिये। मैं अपने ख़ैमे में क़ैलूला (या'नी दो पहर के आराम) के लिये गया तो मैं ने देखा कि एक सांप ख़ैमे में दाख़िल हुवा और लौट पोट होने लगा। मैं ने उस पर पानी छिड़का तो वोह पुर सुकून हो गया। जब मैं नमाज़े

अ़स्र से फ़ारिग हुवा तो वोह मर चुका था। मैं ने अपने थैले से एक सफ़ेद रंग का कपड़ा निकाला और उस सांप को उस में लपेटा और एक गढ़ा खोद कर उस में दफ़्न कर दिया। फिर रात भर हम ने अपना सफ़र जारी रखा, जब सुब्ह़ हुई तो हम पानी के पास उतरे और फिर से अपना ख़ैमा नस्ब किया और मैं क़ैलूला के लिये (ख़ैमे में) चला गया तो मैं ने दो मर्तबा अस्सलामु अ़लय कुम की आवाज़ सुनी। वोह लोग एक या दस या सो या हज़ार नहीं बल्कि इस से भी ज़ियादा ता'दाद में थे। मैं ने उन से पूछा : "तुम लोग कौन हो ?" कहने लगे : "हम जिन्नात हैं अल्लाह तआ़ला तुम्हें ब-र-कत अ़ता फ़रमाए तुम ने हमारा ऐसा काम कर दिया है जिस का हम तुम्हें बदला नहीं दे सकते।" मैं ने पूछा : "मैं ने तुम्हारा कौन सा काम किया है ?" उन्हों ने कहा : "जो सांप तुम्हारे पास मर गया वोह उन जिन्नों में से आख़री यादगार जिन्न था जिन्हों ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बैअ़त की थी।"

(किताबिल हवातिफ़ लि इब्ने अबिद्दुन्या, रक़म : 35, जि. 2, स. 451)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सह़ाबी जिन्न رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का क़त्ल

ह़ज़रते ह़बीब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अपने घर में सांप देखा। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने उसे मारने का हुक्म दिया चुनान्चे उसे क़त्ल कर दिया गया। रात को वोह आप को ख़्वाब में दिखाई दिया और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से अ़र्ज़ की गई : "उस का तअ़ल्लुक़ उस गुरौह से था जो नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से वह्य

सुना करते थे।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने यमन से चालीस गुलाम मंगवाए और उन सब को आज़ाद कर दिया।

(आकामुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, अल बाबित्तासेअ़ वल इ़श्रून, स. 63)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मक़्तूल जिन्न

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन नो'मान अन्सारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی अपनी क़ियाम गाह में आराम फ़रमा रहे थे कि अचानक उन के सामने एक होलनाक क़िस्म का अज़्दहा ज़ाहिर हुवा। जिस से वोह ख़ौफ़ज़दा हो गए और उस को मार डाला तो उन्हें उसी वक़्त वहां से उठा लिया गया और वोह अपने घर वालों से गुम हो गए। उन को जिन्नात के साथ रखा गया यहां तक कि उन्हें जिन्नों के क़ाज़ी के सामने पेश किया गया और मक़्तूल के वारिस ने क़त्ल का दा'वा किया तो उन्हों ने इस का इन्कार कर दिया कि मैं ने किसी जिन्न को क़त्ल नहीं किया है। तो क़ाज़ी ने उस वारिस से सुवाल किया : "मक़्तूल किस सूरत पर था ?" बताया गया कि वोह अज़्दहे की शक्ल में था तो क़ाज़ी अपने पहलू में बैठे हुए शख़्स की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुवा तो उस ने बताया : "मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : "जो तुम्हारे सामने अपनी शक्ल बदल कर आए तो तुम उस को क़त्ल कर दो।" तो जिन्न क़ाज़ी ने ह़ज़रते मुह़म्मद बिन नो'मान अन्सारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی को रिहा कर देने का हुक्म दे दिया और यूं येह अपने घर लौट आए।

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ज़िक्रे रिवायतुहुम लिल ह़दीस, स. 114)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

उ़म्रह अदा करने वाले जिन्न का क़त्ल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू तुफ़ैल رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : ''ज़मानए जाहिलिय्यत में एक जिन्निया (या'नी जिन्न औ़रत) वादिये ज़ी तुवा में रहती थी। उस का सिर्फ़ एक ही बेटा था जिस से वोह बहुत मह़ब्बत करती थी। वोह अपनी क़ौम का शरीफ़ तरीन नौ जवान था। उस की शादी कर दी गई। जब उस की शादी का सातवां दिन था तो उस ने मां से कहा : ''ऐ अम्मी जान ! मैं दिन के वक़्त का'बे का त़वाफ़ करना चाहता हूं।'' मां ने उसे समझाया : ''बेटा ! मुझे तुम पर क़ुरैश के सु-फ़हा (या'नी ना समझ लोगों) का ख़ौफ़ है।'' उस ने कहा : ''मैं सलामती की उम्मीद रखता हूं।'' मां ने उस को इजाज़त दे दी तो उस ने सांप की सूरत इख़्तियार की और का'बे की त़रफ़ चल पड़ा। उस ने त़वाफ़ के सात चक्कर लगाए और मक़ामे इब्राहीम के पीछे दो नफ़्ल अदा किये। फिर जब वोह वापस आ रहा था तो उस के सामने क़बीला बनी सहम का एक जवान आया जिस ने उसे क़त्ल कर दिया। उस के क़त्ल होने के बा'द मक्का में गोया जंग छिड़ गई और ऐसा गुबार उड़ा कि पहाड़ भी दिखाई न देते थे। जब सुब्ह़ हुई तो क़बीला बनू सहम के बहुत से लोग अपने अपने बिस्तरों पर जिन्नों के हाथों मरे पड़े थे और इस लड़ाई में **70** जिन्नात भी काम आए।

(अद्दुरुल मन्शूर, जि. 1, स. 294)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

गुरुत्तारव़ जिन्न का अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि हम इब्तिदाए इस्लाम में नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो

जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ मक्का में थे कि अचानक हातिफ़ (ग़ैब से पुकारने वाले) ने मक्का के एक पहाड़ से आवाज़ दी और मुसल्मानों के ख़िलाफ़ कुफ़्फ़ार को भड़काया तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "येह शैत़ान है और किसी शैत़ान ने किसी नबी के क़त्ल पर लोगों को नहीं भड़काया मगर उस को अल्लाह तआ़ला ने क़त्ल कर दिया।" फिर कुछ देर के बा'द नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अल्लाह तआ़ला ने उस को एक इफ़रीत (सरकश) जिन्न के हाथों क़त्ल करा दिया है जिस को **सम्ह़ज** के नाम से पुकारा जाता है।"

(अल इसाबह फ़ी तमीज़िस्सह़ाबह, रक़म : 3485, जि. 3, स. 148)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जिन्नात के दफ़्न की ह़िकायात

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन उ़बैदुल्लाह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के पास बैठा हुवा था कि एक शख़्स ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा और कहने लगा : "या अमीरल मुअमिनीन ! क्या मैं आप को एक दिल चस्प बात न बताऊं ?" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की त़रफ़ से इजाज़त मिलने पर वोह गो या हुवा : "मैं एक वसीअ़ बियाबान में था कि हवा के दो बगोले आए, जो आपस में गुथ्थम गुथ्था हुए और फिर जुदा हो गए। मैं उन के गुथ्थम गुथ्था होने वाली जगह पर गया तो वहां मैं ने ऐसे सांप देखे कि इस से पहले कभी नहीं देखे थे। अचानक मुझे उन से कस्तूरी की ख़ुश्बू मह़सूस हुई तो मैं उन सांपों को उलट पलट करने लगा कि इतनी प्यारी और पाकीज़ा ख़ुश्बू किस सांप से

आ रही है ? बिल आख़िर मा'लूम हुवा कि येह एक छोटे से पीले सांप से आ रही है जो मर चुका था। मैं ने गुमान किया कि येह इन में से बेहतर है। चुनान्चे मैं ने उसे पकड़ा और अपने इ़मामे में लपेट कर दफ़्न कर दिया। दफ़्न से फ़ारिग़ होने के बा'द अभी मैं थोड़ी दूर ही गया था कि एक मुनादी ने मुझे आवाज़ दी कि तू हिदायत याफ़्ता है, येह सांप दर ह़क़ीक़त जिन्न थे जो आपस में झगड़े थे और जिस को तुम ने पकड़ा और दफ़्न किया था वोह शहीद था और येह उन सआ़दत मन्द जिन्नों में से था जिन्हों ने ह़ुज़ूरे अक्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से क़ुरआन सुना था।''

(किताबिल अ़-ज़मह, ذکر الجن و خلقهم, अल ह़दीस : 1112, स. 422)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَرِيْم मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ जा रहे थे। एक चटियल मैदान में उन्हों ने एक मरा हुवा सांप देखा। उन्हों ने कहा कि इस को दफ़्न करना मुझ पर लाज़िम है और जिन्नों ने कहा हम तुम्हारे लिये काफ़ी हैं (हम आप को इस से मन्अ़ करते हैं अल्लाह तआ़ला आप की इस्लाह़ फ़रमाए) अल्लाह तआ़ला तुम्हारी भलाई फ़रमाए या'नी बेहतर बदला दे। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''नहीं ऐसा नहीं हो सकता।'' फिर सांप को उठाया और एक गढ़ा खोदा फिर एक कपड़े में उसे लपेट कर उसे दफ़्न कर दिया। अचानक एक अ़जीब सी आवाज़ देने वाले ने आवाज़ दी जो नज़र नहीं आ रहा था : ''ऐ सुर्रक़ ! तुम पर अल्लाह की रह़मत है मैं गवाही देता हूं कि मैं ने अल्लाह के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना है ऐ सुर्रक़ ! तुम एक चटियल मैदान में मरोगे और तुम

को मेरी उम्मत का बेहतरीन आदमी दफ़्न करेगा।''

येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस से पूछा : ''तुम कौन हो ? अल्लाह तआ़ला तुम पर रह़्म फ़रमाए।'' उस ने कहा : ''मैं एक जिन्न हूं और येह सुर्रक़ है और उन जिन्नों में से हम दोनों के सिवा कोई बाक़ी न रहा जिस ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बैअ़त की है और मैं गवाही देता हूं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना है : ''ऐ सुर्रक़! तू चटियल मैदान बियाबान में मरेगा और तुझे मेरा बेहतरीन उम्मती दफ़्न करेगा।''

(دلائل النبوۃ لابی نعیم, باب ماجاء فی اخبارہ ﷺ بالشر الذی...الخ, جز. 6, ص. 494)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित

फ़ैज़ाने मदीना (ह़ैदरआबाद बाबुल इस्लाम सिन्ध) के ख़ादिम का ह़-लफ़िया बयान कुछ इस त़रह़ से है कि एक रोज़ मेरे पास एक साह़िब आए। उन्हों ने सफ़ेद म-दनी लिबास पहन रखा था और सर पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ ज़ुल्फ़ें जल्वा नुमा थीं। मुझ से फ़रमाने लगे कि हमारे वालिद साह़िब का इन्तिक़ाल हो गया है उन्हें ग़ुस्ल देना है। मैं उन के साथ गाड़ी में सुवार हो गया। जब हम उन के घर पहुंचे तो मुझे घर के बाहर किसी की फ़ौतगी के कोई आसार दिखाई नहीं दे रहे थे। जब मैं उन साह़िब के पीछे पीछे घर में दाख़िल हुवा तो वहां भी मुझे कोई दिखाई न दिया। येह मेरे लिये एक नई बात थी क्यूं कि उ़मूमन मय्यित वाले घर में लोगों का रश होता है मुझे एक कमरे में ले जाया गया तो वहां भी बिल्कुल सन्नाटा था और एक जैसे हुल्ये के पांच अफ़राद मौजूद थे।

उन्हों ने बे दाग़ सफ़ेद लिबास ज़ैबे तन कर रखा था, सर पर ज़ुल्फ़ें सजा रखी थीं और उन की पेशानियां कस्रते सुजूद की अ़लामत से मुज़य्यन थीं। घर की वीरानी और उन लोगों के एक जैसे हुल्ये और इन्तिहाई सफ़ेद बे दाग़ लिबास को देख कर न जाने क्यूं मेरे दिल में ख़याल आया कि कहीं मैं **जिन्नात** के दरमियान तो नहीं ! लेकिन मैं ज़बान से कुछ न बोला। जब मैं ने ग़ुस्ल देने के लिये मय्यित के चेहरे से चादर हटाई तो देखा कि येह कोई ज़ईफ़ुल उ़म्र बुज़ुर्ग थे जिन के चेहरे पर सुन्नत के मुताबिक़ दाढ़ी और सर पर ज़ुल्फ़ें थीं। उन पांचों में से एक के हाथ में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुरत्तब कर्दा रिसाला "**म-दनी वसिय्यत नामा**" था। वोह मुझ से कहने लगे : "मैं अपने **पीरो मुर्शिद** (अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه) के रिसाले से मुर्दे को ग़ुस्ल देने की सुन्नतें और आदाब बताता हूं, आप इस के मुताबिक़ ग़ुस्ल दीजिये।" उन में से एक साहिब दूसरे कमरे से मय्यित पर बतौ़रे पर्दा डालने के लिये सफ़ेद मोटा तोलिया ले आए। मैं ने उन के कहने के मुताबिक़ मय्यित को ग़ुस्ल दिया। ग़ुस्ल देने के बा'द उन्हों ने एक डिब्या दी ग़ालिबन उस में ज़ा'फ़रान था और कहा : इस से जिस्म पर "**या अ़त्तार अल मदद**" लिखिये। फिर एक सब्ज़ कपड़ा लाया गया, जिस पर सुनहरी तारों से **या ग़ौसल आ'ज़म दस्त गीर** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) और **या अ़त्तार** (دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه) लिखा हुवा था। उस को मय्यित पर डाल दिया गया।

जब मैं फ़ारिग़ हुवा तो उन में से एक ने मेरी कमर पर थपकी दी और कहा : "नमाज़े ज़ोहर के बा'द नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत के लिये मुम्किन हो तो ज़रूर आइयेगा।" मेरी ह़ालत अ़जीब थी लिहाज़ा सर हिला कर रह गया। दमे रुख़्सत भी मुझे घर में या घर के बाहर कोई और

दिखाई न दिया। जो साहिब मुझे लाए थे उन्ही के साथ गाड़ी में सुवार हो कर वापस रवाना हुवा। कुछ दूर जा कर वोह मुझ से कहने लगे : "यहां से आप ख़ुद चले जाएं।" और मुझे गाड़ी से उतार कर वोह वापस लौट गए। मैं ने सुकून का सांस लिया क्यूं कि मेरी घबराहट बढ़ती चली जा रही थी। इसी कैफ़िय्यत में चलता हुवा मैं अपनी मस्जिद (फ़ैज़ाने मदीना) तक पहुंच गया।

बा'द में जब मैं उस अ़लाक़े की मस्जिद के ज़िम्मादारान से नमाज़े जनाज़ा और तदफ़ीन वग़ैरा के बारे में मा'लूमात करने पहुंचा तो उन सब ने अपने अ़लाक़े के किसी घर में फ़ौतगी होने से ला इल्मी का इज़्हार किया। मैं वर्तए ह़ैरत में पड़ गया और ज़िम्मादारान के हमराह उस घर की तलाश में निकला तो तलाशे बिस्यार के बा वुजूद न तो मुझे वोह घर मिला और न वोह अफ़राद। मैं अंगुश्त ब दन्दान वापस हो लिया। बा'द में उस अ़लाक़े के दीगर इस्लामी भाइयों से भी मा'लूमात की गईं, उस अ़लाक़े के नमाज़ियों से भी पूछा गया मगर सभी ने ला इल्मी का इज़्हार किया। ह़ालां कि मेरी बेहतरीन याद दाश्त के मुत़ाबिक़ मय्यित वाला घर मस्जिद के क़रीब ही की किसी गली में था। न जाने उस घर और उन अफ़राद को आस्मान खा गया या ज़मीन निगल गई। इन तमाम ह़क़ाइक़ की बिना पर मुझे तो ऐसा लगता है जिस **मर्ह़ूम** को मैं ने ग़ुस्ल दिया शायद वोह कोई जिन्नों के अ़त्तारी ख़ानदान के "**अ़त्तारी जिन्न**" थे, क्यूं कि दौराने ग़ुस्ल हिदायात देने वाले ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को अपना पीरो मुर्शिद क़रार दिया था और फिर मय्यित के जिस्म पर "**या अ़त्तार अल मदद**" लिखवाया फिर कफ़न के ऊपर डाली जाने वाली चादर पर सुनहरी

तारों से **या ग़ौसल आ'ज़म दस्त गीर** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) और **या अ़त्तार** (دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ) लिखा हुवा था। وَاللّٰہ تعالٰی اَعْلَمُ بِالصَّوَاب

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जिन्नात मैदाने महशर में

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

महशर के मैदान में जहां इन्सान अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हिसाबे आ'माल के लिये खड़े होंगे वहीं **जिन्नात** भी अपने आ'माल के जवाब देह होंगे, **फ़रमाने रब्बे** लम यज़ल है :

یٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْاؕ لَاتَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ 0 فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ 0یُرْسَلُ عَلَیْکُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ जिन्न व इन्सान के गुरौह अगर तुम से हो सके कि आस्मानों और ज़मीन के किनारों से निकल जाओ तो निकल जाओ जहां निकल कर जाओगे उसी की सल्तनत है। तो अपने रब की कौन सी ने'मत को झुटलाओगे। तुम पर छोड़ दी जाएगी बे धुवें की आग की लपट और बे लपट का काला धुवां तो फिर बदला न ले सकोगे। (पारह : 27, अर्रहमान, 33 ता 35)

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रत मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी علیہ رحمۃ اللہ الھادی (अल मु-तवफ़्फ़ा 1367 हि.) इस आयत के तहत तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में लिखते हैं : "(या'नी तुम) उस अ़ज़ाब से न बच सकोगे और आपस में एक दूसरे की मदद न कर सकोगे बल्कि येह लपट और धुवां तुम्हें महशर की तरफ़ ले जाएंगे, पहले से इस की ख़बर दे देना

येह भी अल्लाह तआला का लुत्फ़ो करम है ताकि उस की ना फ़रमानी से बाज़ रह कर अपने आप को उस बला से बचा सको।''

जिन्नात को सवाब व अज़ाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जिस त़रह़ इन्सानों को ह़िसाबे मह़शर के बा'द बारगाहे रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ से परवानए बख़्शिश जारी होगा या (مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) दुख़ूले जहन्नम का हुक्म मिलेगा। इसी त़रह़ जिन्नात को भी उन के अच्छे कामों पर सवाब और बुरे कामों पर इ़ताब का सामना होगा। सू-रतुल जिन्न में है :

وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : और रहे वोह ज़ालिम वोह जहन्नम के ईंधन हुए। (पारह : 29, अल जिन्न : 15)

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रत मौलाना सय्यिद नईमुद्दीन मुरादआबादी علیہ رحمۃ اللہ الھادی (अल मु-तवफ़्फ़ा 1367 हि.) इस आयत के तह़्त तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में लिखते हैं : ''इस आयत से साबित होता है कि काफ़िर जिन्न आतशे जहन्नम के अ़ज़ाब में गरिफ़्तार किये जाएंगे।''

अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है :

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ۝ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۚ وَلِيُوَفِّيَهُمْ اَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : येह वोह हैं जिन पर साबित हो चुकी उन गुरौहों में से जो इन से पहले गुज़रे जिन्न और आदमी बेशक वोह ज़ियांकार थे और हर एक के लिये अपने अपने अ़मल के द-रजे हैं और ताकि **अल्लाह** इन के काम इन्हें पूरे भर दे और इन पर ज़ुल्म न होगा। (पारह : 26, अल अह़क़ाफ़ : 28)

शारेह़े बुख़ारी अ़ल्लामा बदरुद्दीन मह़मूद बिन अह़मद ऐनी عليه رحمة الله الغنى (अल मु-तवफ़्फ़ा 855 हि.) उ़म्दतुल क़ारी, जिल्द 10, सफ़ह़ा 645 पर लिखते हैं :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से **जिन्नात** की जज़ा व सज़ा के बारे में पूछा गया तो आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इर्शाद फ़रमाया : ''हां ! इन के लिये सवाब भी है और अ़ज़ाब भी है।'' उ़-लमाए किराम का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि काफ़िर जिन्नात को आख़िरत में अ़ज़ाब होगा क्यूं कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है :

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّ بَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ؕ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : और जिस दिन इन सब को उठाएगा और फ़रमाएगा ऐ जिन्न के गुरौह तुम ने बहुत आदमी घेर लिये और इन के दोस्त आदमी अ़र्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब हम में एक ने दूसरे से फ़ाएदा उठाया और हम अपनी उस मीआ़द को पहुंच गए जो तूने हमारे लिये मुक़र्रर फ़रमाई थी फ़रमाएगा आग तुम्हारा ठिकाना है हमेशा इस में रहो मगर जिसे ख़ुदा चाहे ऐ मह़बूब बेशक तुम्हारा रब ह़िक्मत वाला इ़ल्म वाला है।

(पारह : 8, अल अन्आ़म : 128)

अलबत्ता मुसल्मान जिन्नात की जज़ा इख़्तिलाफ़ है कि आया इन्हें जन्नत में दाख़िला मिलेगा या नहीं ? इस बारे में उ़-लमाए किराम की **चार आरा** हैं :

(1) जम्हूर उ़-लमा के नज़्दीक मुसल्मान जिन्नात जन्नत में जाएंगे। **ह़ज़रते** सय्यिदुना ज़ह़ाक عليه رحمة الله الوهاب फ़रमाते हैं कि जिन्न जन्नत में दाख़िल होंगे और खाएंगे पियेंगे। (किताबिल अ़-ज़्मह, अल ह़दीस : 1160, स. 435) **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है की मख़्लूक़ की चार अक़्साम हैं। पहली : वोह मख़्लूक़ जो तमाम की तमाम जन्नत में जाएगी। दूसरी : वोह मख़्लूक़ जो तमाम की तमाम जहन्नम में जाएगी। जब कि बक़िय्या दो अक़्साम में से बा'ज़ जन्नत और बा'ज़ जहन्नम में जाएंगे। तमाम के तमाम जन्नत में जाने वाले फ़िरिश्ते होंगे और जो तमाम के तमाम जहन्नम में जाएंगे वोह शयात़ीन होंगे, रहे वोह जो जन्नत में भी जाएंगे और जहन्नम में भी तो वोह जिन्न व इन्स हैं, इन्हें (नेकियां करने पर) अज्रो सवाब भी मिलेगा और वोह (कुफ़्र और गुनाह पर) सज़ा भी पाएंगे। (किताबिल अ़-ज़्मह, अल ह़दीस : 1160, स. 435) और जन्नत में जाने के बा'द वोह खाएंगे पियेंगे या नहीं तो बा'ज़ उ़-लमा के नज़्दीक वोह खाएंगे पियेंगे जब कि बा'ज़ के नज़्दीक वोह खाएंगे न पियेंगे बल्कि उन्हें ऐसी तस्बीह़ात और अज़्कार इल्हाम किये जाएंगे जिन से वोह ऐसी लज़्ज़त पाएंगे जैसी लज़्ज़त अहले जन्नत को खाने पीने से ह़ासिल होगी।

(2) वोह जन्नत में दाख़िल नहीं होंगे बल्कि जन्नत के गिर्दो नवाह़ में रहेंगे इन्सान इन को देखेंगे मगर वोह इन्सानों को नहीं देख पाएंगे।

(3) वोह आ'राफ़ में रहेंगे। **ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मोमिन जिन्नों के लिये सवाब भी है

और इन पर इ़क़ाब (सज़ा) भी है। तो हम ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इन के सवाब के बारे में पूछा तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आ'राफ़ पर होंगे और वोह उम्मते मुह़म्मदिय्यह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ जन्नत में नहीं होंगे। फिर हम ने पूछा, आ'राफ़ क्या है ? तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जन्नत की दीवार है जिस में नहरें जारी हैं और इस में दरख़्त और फल उगते हैं।

(अद्दुर्रुल मन्शूर, जि. 3, स. 465)

(4) चौथा क़ौल तवक़्क़ुफ़ का है या'नी इस बारे में ख़ामोशी इख़्तियार की जाए। (उ़म्दतुल क़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, जि. 10, स. 645, व किताबिल अ़-ज़मह)

इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن (अल मु-तवफ़्फ़ा 1340 हि.) से पूछा गया : "हुज़ूर जन्नत में जिन्नात जाएंगे या नहीं ?" इर्शाद फ़रमाया : "एक क़ौल येह भी है कि जन्नत के आस पास मकानों में रहेंगे। जन्नत में सैर को आया करेंगे (फिर फ़रमाया) जन्नत तो जागीर है ह़ज़रते आदम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की, उन की औलाद में तक़्सीम होगी।"

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه, जि. 4, स. 423)

क्या जिन्नात को जन्नत में हूरें मिलेंगी ?

अ़ल्लामा सय्यिद मह़मूद आलोसी बग़दादी علیہ رحمۃ اللہ الہادی (अल मु-तवफ़्फ़ा 1270 हि.) तफ़्सीरे रूहुल मआ़नी में लिखते हैं : मुझ को जो ज़न ग़ालिब है वोह येह है कि इन्सानों को इन्सान की बीवियां मिलेंगी और हूरें भी मिलेंगी और जिन्नात को जिन्नियात बीवियां मिलेंगी और हूरें भी मिलेंगी और किसी इन्सान को जिन्निया नहीं मिलेगी और न

किसी जिन्न को इन्सिया मिलेगी और मोमिन ख़्वाह इन्सान हो ख़्वाह जिन्न हो उस को वोही मिलेगी जो उस की नौअ़ के लाइक़ हो और उस का नफ़्स उस की ख़्वाहिश करे।

(रूहुल मआ़नी, सू-रतुर्रहमान, तहूतिल आयह : 56, जि. 27, स. 169)

जिन्नात और इन्सान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

ज़िन्दगी के इस सफ़र में जिन्नात और इन्सान का एक दूसरे से वासिता पड़ता ही रहता है। येह मुख़्तलिफ़ मुआ़-मलात में एक दूसरे की मदद भी करते हैं चाहे इन्सान को इस का इ़ल्म हो या न हो। जिन्नात इन्सानों से इ़ल्मे दीन भी ह़ासिल करते हैं, सह़ीहुल अ़क़ीदा जिन्नात बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين से बे ह़द अ़क़ीदत व मह़ब्बत रखते हैं और उन की बारगाहों में ह़ाज़िरियां भी देते हैं, इन के हाथों पर गुनाहो से ताइब भी होते हैं, इन के मुरीद भी होते हैं, जब कि बा'ज़ जिन्नात ऐसे भी होते हैं जो इन्सानो को नुक़्सान भी पहुंचा बैठते हैं, इन की आपस में लड़ाइयां भी होती हैं, बा'ज़ अवक़ात जिन्नात इन्सान को इग़वा भी कर के ले जाते हैं बल्कि बसा अवक़ात तो क़त्ल भी कर डालते हैं।

जिन्नात इन्सानों की चीज़ें इस्ति'माल करते हैं :

ह़ज़रते सफ़्वान बिन सलीम علیہ رحمۃ اللہ العلیم फ़रमाते हैं कि **जिन्नात** इन्सानों के सामान और कपड़ों से फ़ाएदा उठाते हैं। लिहाज़ा तुम में से कोई अगर कपड़ा पहने या उतारे तो उसे चाहिये कि बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ ले क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नामे मुबारक मोहर की मानिन्द है।

(किताबिल अ़-ज़्मह, अल ह़दीस : 1123, स. 326)

हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: जब आदमी कपड़े उतारते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ लेता है तो उस के जिस्म के पोशीदा हिस्सों और जिन्नात की आंखों के दरमियान पर्दा हाइल हो जाता है।

(किताबिल अ़-ज़्मह, अल ह़दीस : 1119, स. 425)

इन्सान और जिन्न का आपस में निकाह़ :

इन्सान और जिन्न का आपस में निकाह़ नहीं हो सकता। **सदरुश्शरीअ़ह** बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी علیہ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی अपनी मायानाज़ तालीफ़ **बहारे शरीअ़त** में लिखते हैं : ''मर्द का परी से या औ़रत का जिन्न से निकाह़ नहीं हो सकता।''

(बहारे शरीअ़त, निकाह़ का बयान, हि़स्सा हफ़्तुम, स. 5)

जिन्नात अपनी हक़ त-लफ़ी पर पत्थर मारते थे

ह़ज़रते अबू मैसरह ह़िरानी علیہ رحمۃ اللہ الغنی फ़रमाते हैं कि **जिन्नात** और इन्सान क़ाज़ी मुह़म्मद बिन अ़लासा के पास मदीनए मुनव्वरह के एक कुंएं का झगड़ा ले कर गए। ह़ज़रते अबू मैसरह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से सुवाल किया गया कि क्या जिन्नात आप के सामने ज़ाहिर भी हुए ? आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : ''मेरे सामने ज़ाहिर तो नहीं हुए लेकिन मैं ने उन की गुफ़्त-गू सुनी है। क़ाज़ी साहि़ब ने इन्सानों के लिये येह फ़ैसला किया कि वोह तुलूए आफ़्ताब से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक इस कूंएं से पानी ले लिया करें और जिन्नों के लिये येह फ़ैसला किया कि वोह ग़ुरूबे आफ़्ताब से तुलूए फ़ज्र तक इस कूंएं से पानी ले लिया करें। इस ह़िकायत के रावी कहते हैं : ''इन्सानों में से जब कोई उस कूंएं से ग़ुरूबे

आफ़्ताब के बा'द पानी लेता तो उसे पत्थर मारा जाता।" (आकामुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, الباب الثانی و الاربعون فی اختصام الجن..الخ, فِیْ اَحْکَامِ الْجَانِ, स. 86)

जिन्नात का इन्सान को क़ाबू कर लेना :

अ़ल्लामा सय्यिद मह़मूद आलोसी बग़दादी علیہ رحمۃ اللہ الھادی (अल मु-तवफ़्फ़ा 1270 हि.) इस मस्अले पर इज़्हारे ख़याल फ़रमाते हुए तफ़्सीरे रूहुल मआ़नी में लिखते हैं : "बा'ज़ अज्साम में एक बदबू दाख़िल होती है और उस के मुनासिब एक ख़बीस रूह़ उस पर क़ाबू पा लेती है और उस इन्सान पर मुकम्मल जुनून त़ारी हो जाता है। बसा अवक़ात येह बुख़ारात इन्सान के ह़वास पर ग़ालिब हो कर ह़वास मुअ़त्त़ल कर देते हैं और वोह ख़बीस रूह़ इन्सान के जिस्म पर तसर्रुफ़ करती है और उस के आ'ज़ा से कलाम करती है, चीज़ों को पकड़ती है और दौड़ती है ह़ालां कि इस शख़्स को बिल्कुल पता नहीं चलता और येह बात आ़म मुशा-हदात से है जिस का इन्कार कोई ज़िद्दी शख़्स ही कर सकता है।"

(रूहुल मआ़नी, जि. 3, स. 67)

जिन्न की जान बचाने का सिला

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन अबरस رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ और उन के साथी सफ़र में थे कि येह एक सांप के पास से गुज़रे जो गर्मी की शिद्दत और प्यास से तड़प रहा था। उन में से एक शख़्स ने उस को क़त्ल करना चाहा लेकिन आप ने उसे मन्अ़ करते हुए कहा : "येह इस वक़्त एक क़त़रा पानी का ज़ियादा मोह़ताज है।" चुनान्चे वोह शख़्स उतरा और उस पर पानी डाल दिया। फिर वोह लोग वहां से चल दिये। अचानक येह लोग बहुत बुरी त़रह़ से रास्ता भटक गए। येह इसी परेशानी के आ़लम में थे कि एक हातिफ़

(या'नी ग़ैब से आवाज़ देने वाले) ने आवाज़ दी :

"**ऐ** अपने रास्ते से भटके हुए मुसाफ़िरो ! येह जवान ऊंट लो और इस पर सुवार हो जाओ । यहां तक कि रात डूबने की जगह फिर जाए और सुब्ह़ रोशन हो जाए और सुब्ह़ के सितारे चमकने लगें । तो इस को छोड़ देना और इस से उतर जाना ।"

चुनान्चे वोह लोग रात ही को वहां से चल पड़े जब दस दिन और दस रात की मुसाफ़त के बराबर चले तो सुब्ह़ तुलूअ़ हुई । उ़बैद ने उस हातिफ़ से कहा :

"**ऐ** नौ जवान ! तूने हमें जहालत व बे ख़बरी और जंगल व बियाबान से नजात दी जिस जंगल में वाक़िफ़ कार सुवार भी गुम हो जाते हैं । तो क्या तुम हमें ह़क़ बात से आगाह न करोगे ताकि हमें मा'लूम हो जाए कि वोह कौन है जिस ने इस वादी में ने'मतों की सख़ावत की है ?" तो उस जिन्न ने उ़बैद को जवाब देते हुए कहा :

"**मैं** वोही बहादुर हूं जिस को तुम ने तपती हुई रैत पर तड़पते हुए देखा था जिस की वजह से मेरा शिकार आसान हो गया था (या'नी मुझे बा आसानी क़त्ल किया जा सकता था) । तुम ने पानी की सख़ावत व एहतिमाम उस वक़्त किया जब कि इस का पीने वाला बुख़्ल करता है तुम ने उस से मुझे सैराब किया और कम होने के ख़ौफ़ से बुख़्ल से काम न लिया । नेकी बाक़ी रहती है अगर्चे अ़र्सए दराज़ गुज़र जाए और बुराई बद तरीन चीज़ है जिसे कोई तोशए सफ़र न बनाए ।" (किताबिल हवातिफ़ लि इब्ने अबिदुन्या, रक़म : 92, जि. 2, स. 484)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नरगिस का फूल :

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी علیہ رحمۃ اللہ الھادی फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सरी सक़ती علیہ رَحمَۃُ اللہِ القَوی को फ़रमाते हुए सुना कि मैं एक दिन सफ़र में निकला और मैं एक पहाड़ के दामन में था कि रात हो गई। वहां मुझ से कोई उन्स व मह़ब्बत करने वाला न था कि अचानक बीच रात में किसी पुकारने वाले ने पुकारा कि तारीकियों में दिल नहीं पिघलने चाहिएं बल्कि मह़बूब (या'नी अल्लाह तआ़ला) की रिजा ह़ासिल न होने के ख़ौफ़ से नुफ़ूस पिघलने चाहिएं। ह़ज़रते सरी सक़ती علیہ رَحمَۃُ اللہِ القَوی फ़रमाते हैं कि येह आवाज़ सुन कर मैं ह़ैरान रह गया चुनान्चे मैं ने पूछा : "मुझे जिन्न ने पुकारा है या इन्सान ने ?" उस ने कहा : "अल्लाह तआ़ला पर ईमान रखने वाले मोमिन जिन्न ने पुकारा है और मेरे साथ मेरे दूसरे भाई भी हैं।" मैं ने पूछा : "क्या वोह भी मोमिन हैं ?" वोह कहने लगा : "जी हां।" फिर उन में से दूसरे (जिन्न) ने मुझे आवाज़ दी : "बदन से ख़ुदा का ग़ैर उस वक़्त तक नहीं जाता जब तक कि दाइमी मुसाफ़िर (बे घर) न हो जाए।" मैं ने अपने दिल में कहा : "इन की बातें कितनी आ'ला हैं।" फिर उन में से तीसरे (जिन्न) ने मुझे पुकारा : "जो तारीकियों में अल्लाह तआ़ला से उन्स रखता है उसे किसी क़िस्म की फ़िक्र लाह़िक़ नहीं होती। तो मेरी चीख़ निकल गई और ग़शी त़ारी हो गई। फिर मुझे किसी ख़ुश्बू सूंघने से इफ़ाक़ा हुवा तो मैं ने देखा तो मेरे सीने पर नरगिस का एक फूल रखा हुवा है। मैं ने कहा अल्लाह तआ़ला तुम पर रह़म फ़रमाए कोई वसिय्यत भी करो तो उन सब ने कहा : "अल्लाह तआ़ला मुत्तक़ियों (डरने वालों) ही के दिलों को जिला व ह़यात अ़त़ा फ़रमाता है लिहाज़ा जिस ने ग़ैरे ख़ुदा की त़म्अ़ की है बेशक उस ने ऐसी

जगह त़म्अ़ की जो त़म्अ़ के क़ाबिल नहीं और जो शख़्स मुआ़लिज के चक्कर में रहेगा तो उस की बीमारी हमेशा रहेगी।'' इस के बा'द उन्हों ने मुझे अल वदाअ़ कहा और चले गए मैं उस वक़्त से हमेशा कलाम की ब-र-कत अपने दिल में पाता रहा। (लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, فی احکام الجان، فی ذکر المصطفین...الخ, ص. 221)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जिन्न ने शैत़ानों से बचाया

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि एक साह़िब ख़ैबर से चले तो दो आदमियों ने उन का पीछा किया। एक दूसरे शख़्स ने उन दोनों का पीछा किया जो कह रहा था : ''तुम दोनों वापस हो जाओ, वापस हो जाओ।'' यहां तक कि उस ने उन दोनों को पकड़ लिया और उन दोनों को वापस लौटा दिया। फिर वोह पहले आदमी से जा मिला और उन से कहा : ''येह दोनों शैत़ान हैं और मैं इन दोनों के पीछे लगा रहा यहां तक कि मैं ने उन दोनों को तुम से वापस लौटा दिया।'' जब आप शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हों तो उन की ख़िदमत में मेरा सलाम पहुंचा दीजियेगा और अ़र्ज़ कीजियेगा : ''हम सदक़ात जम्अ़ कर रहे हैं जैसे ही जम्अ़ हो जाएंगे, हम आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में भेज देंगे।'' जब वोह साह़िब मदीनए मुनव्वरह आए तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए। उन्हों ने येह वाक़िआ़ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस के बा'द अकेले सफ़र करने से

मन्अ़ फ़रमा दिया। (मुस्नदो अबू या'ला अल मूसिली, मुस्नदो इब्ने अ़ब्बास, अल ह़दीस : 2581, जि. 2, स. 501)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रास्ता बताने वाला जिन्न

ह़ज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक जमाअ़त मक्कए मुकर्रमा के सफ़र के लिये रवाना हुई और रास्ता भटक गई। जब उन्हें मौत का यक़ीन हो गया तो उन्हों ने कफ़न पहन लिये और मौत के इन्तिज़ार में लैट गए। उन के सामने एक जिन्न दरख़्त के दरमियान से नुमूदार हुवा और कहने लगा : मैं उन जिन्नों में से बाक़ी रह गया हूं जिन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से क़ुरआन सुना है और मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना है : "मुसल्मान मुसल्मान का भाई है और उस की रहनुमाई करता है और उसे बे यारो मददगार व बे सहारा नहीं छोड़ता बल्कि बताता है कि येह पानी है और येह रास्ता है।" फिर उस जिन्न ने उन लोगों को पानी पर आगाह किया और उन की रहनुमाई की।

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ذکر روایتھم, स. 109)

पानी की त़रफ़ रहनुमाई करने वाला जिन्न

(1) ह़ज़रते इब्ने ह़यान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि यमन की एक जमाअ़त किसी अ़लाक़े के लिये निकली तो उन लोगों को प्यास लगी। उन्हों ने एक पुकारने वाले को सुना जो कह रहा है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम से ह़दीस बयान

फ़रमाई : "मुसल्मान मुसल्मान का भाई और उस का निगहबान व निगरान है।" फिर उस पुकारने वाले ने कहा : "फ़ुलां जगह ह़ौज़ है लिहाज़ा तुम लोग वहां जा कर पानी पी लो।"

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ذکر روایتهم, स. 109)

(2) एक क़ाफ़िला ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त में ह़ज के इरादे से निकला तो उन्हें रास्ते में प्यास लगी, लिहाज़ा वोह खारे पानी के पास पहुंचे। उन में बा'ज़ ह़ज़रात ने कहा अगर तुम लोग यहां से निकल चलो तो अच्छा है क्यूं कि हमें डर है कि कहीं येह पानी हमें हलाक न कर दे। चुनान्चे वोह लोग चल पड़े यहां तक कि शाम हो गई लेकिन पानी न मिला। वोह एक दूसरे से कहने लगे : "काश! तुम उस खारे पानी ही की त़रफ़ वापस चलते तो बेहतर होता।" फिर येह लोग रात भर चलते रहे यहां तक कि एक खजूर के दरख़्त के पास पहुंचे तो उन के सामने एक इन्तिहाई काला मोटा आदमी नुमूदार हुवा। उस ने कहा : "ऐ क़ाफ़िले वालो! मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना है : "जो शख़्स अल्लाह तआ़ला और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि वोह मुसल्मान भाइयों के लिये वोही पसन्द करे जो अपने लिये पसन्द करता है और मुसल्मान भाइयों के लिये वोह चीज़ ना पसन्द करे जो अपने लिये ना पसन्द करता है।" लिहाज़ा तुम लोग यहां से चले जाओ और जब तुम टीले तक पहुंचो तो अपनी दाईं जानिब मुड़ जाना वहां तुम्हें पानी मिल जाएगा।" उन में से किसी ने कहा कि अल्लाह की क़सम हमारा ख़याल है कि येह शैत़ान है और दूसरे शख़्स ने उस की तरदीद की : "शैत़ान इस क़िस्म की बातें नहीं करता, येह कोई मुसल्मान जिन्न है।" बहर ह़ाल

वोह लोग चल पड़े और जिस जगह के मु-तअ़ल्लिक़ उस ने निशान देही की थी वहां पहुंच गए, देखा तो पानी मौजूद था।

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ذکر روایتھم, स. 109)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जिन्नात ने ग़म ख़्वारी की

ह़ज़रते अबू ख़लीफ़ा अ़ब्दी علیہ رحمۃ اللہ الھادی फ़रमाते हैं कि मेरा छोटा सा बच्चा फ़ौत हो गया जिस का मुझे बहुत सदमा हुवा और मेरी नींद उचाट हो गई। ख़ुदा की क़सम ! मैं एक रात अपने घर में अपने बिस्तर पर था। मेरे इ़लावा घर में कोई न था। मैं अपने बेटे की सोचों में गुम था कि अचानक घर के एक कोने से किसी ने बड़े प्यार से कहा : اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ یَا اَبَا خَلِیْفَة मैं ने घबराहट के आ़लम में कहा : وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ फिर उस ने सूरए आले इमरान की आख़िरी आयतें तिलावत कीं जब वोह इस आयत पर पहुंचा :

وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ۝

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह के पास है वोह नेकों के लिये सब से भला। (पारह : 4, आले इमरान : 198)

तो उस ने मुझे पुकारा : "ऐ अबू ख़लीफ़ा !" मैं ने कहा : "लब्बैक।" उस ने पूछा : "क्या तुम येह चाहते हो कि सिर्फ़ तुम्हारे बेटे ही के लिये ज़िन्दगी मख़्सूस रहे और दूसरे के लिये नहीं ? क्या तुम अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक ज़ियादा शान वाले हो या ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ? हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साहि़ब ज़ादे ह़ज़रते इब्राहीम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ भी तो फ़ौत हुए तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया आंखें आंसू बहा रही हैं दिल ग़मगीन है हमें कोई ऐसी बात नहीं कहनी

चाहिये जो अल्लाह तआ़ला को नाराज़ कर दे। क्या तुम अपने बेटे को मौत से महफ़ूज़ रखना चाहते हो ? जब कि तमाम मख़्लूक़ के लिये मौत लिखी जा चुकी है, या तुम चाहते हो कि तुम मख़्लूक़ के मु-तअ़ल्लिक़ अल्लाह तआ़ला की तदबीर को रद कर दो। अल्लाह की क़सम ! अगर मौत न होती तो ज़मीन इतनी वसीअ़ न होती अगर दुख और ग़म न होते तो मख़्लूक़ किसी ऐ़श से फ़ाएदा नहीं उठा सकती।" फिर उस ने कहा : "तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत है ?" मैं ने पूछा : "तुम कौन हो ? अल्लाह तआ़ला तुम पर रह़्म फ़रमाए।" उस ने इन्किशाफ़ किया : "मैं तेरे पड़ोसी जिन्नों में से एक हूं।"

(किताबिल हवातिफ़ लि इब्ने अबिद्दुन्या, रक़म : 40, जि. 2, स. 453)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नेक जिन्न की नसीह़त

ह़ज़रते अस्मई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه कहते हैं कि ह़ज़रते अबू अ़म्र बिन अल उ़ला رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की अंगूठी पर येह इबारत नक़्श थी।

وان امرأ دنياه اكبر من همه لمستمسك منها بحبل غرور

या'नी वोह आदमी जिस की मुराद दुन्या ही हो तो वोह ग़ुरूर की रस्सी थामे हुए है।

मैं ने उन से इस नक़्श के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा तो उन्हों ने बताया कि मैं दो पहर को अपने मालो अस्बाब में घूम रहा था कि एक कहने वाले को येह शे'र कहते हुए सुना (जिस का मफ़्हूम येह है कि मालो अस्बाब सिर्फ़ यहीं काम आएगा)। फिर जब मैं ने देखा तो कोई नज़र नहीं आया। मैं ने पूछा : "तुम इन्सान हो या जिन्न ?" उस ने कहा : "इन्सान नहीं बल्कि मैं जिन्न हूं।" फिर मैं ने अपनी अंगूठी पर इस शे'र

को नक़्श करा लिया।

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, فی ذکر اخبار الجن...الخ, ص. 243)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जिन्नात ने नेकी की दा'वत दी

ह़ज़रते बराअ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते सवाद बिन क़ारिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया : "हमें अपनी इब्तिदाए इस्लाम की बात सुनाओ वोह कैसा था ?" उन्हों ने फ़रमाया : "मैं हिन्दुस्तान से आया था और मेरा एक मुशीर जिन्न था जिस की मैं सारी बातें माना करता था। मैं एक रात सो रहा था कि अचानक मेरे पास कोई आया और कहा : "उठो अगर तुम अ़क़्ल रखते हो तो ग़ौरो फ़िक्र करो और समझो कि एक रसूल की बि'सत हुई है फिर उस ने येह अश्आ़र कहे :

عجبت للجن وأنجاسها وشدها العیس بأحلاسها

या'नी मैं जिन्नों और उन की नजासतों से और भूरे रंग के (क़ीमती) ऊंट को बे क़ीमत टाट से बांधने पर ह़ैरान व मु-तअ़ज्जिब हूं।

تھوی الی مکة تبغی الھدی مامؤمنوھا مثل أرجاسھا

तुम हिदायत की तलाश में मक्का जाओ आप पर ईमान लाने वाले वहां के मोमिन वहां के पलीदों (काफ़िरों) की त़रह़ नहीं हैं।

فانھض الی الصفوة من ھاشم واسم بعینیك الی رأسھا

बनू हाशिम की पूंजी (نبی صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के पास ह़ाज़िरी दो और उस पूंजी (نبی صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के सर को अपनी आंखों से चूम लो।"

फिर उस ने मुझे बेदार कर के परेशान किया और कहा : "ऐ

सवाद बिन क़ारिब ! बेशक अल्लाह तआ़ला عَزَّوَجَلَّ ने एक नबी मब्ऊ़स फ़रमाया है तुम उन के पास जाओ और रुश्दो हिदायत ह़ासिल करो ।" फिर जब दूसरी रात आई तो वोह फिर मेरे पास आया और जगा कर येह अश्आ़र कहे :

عجبت للجن وتطلابها وشدها العيس بأقتابها

मैं जिन्नों से और उन की सरगर्दानी से और उन के भूरे ऊंट को कजावे से बांधने से मु-तअ़ज्जिब व ह़ैरान हूं ।

تهوى الى مكة تبغى الهدى ماصادق الجن ككذابها

तुम हिदायत की तलाश करने मक्का जाओ जिन्नों की सच्चाई इन के झूटों की मिस्ल नहीं है ।

فانهض الى الصفوة من هاشم واسم بعينيك الى بابها

तुम बनू हाशिम के सरदार (मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के पास जाओ और उन के दरवाज़े को अपनी आंखों से बोसा दो ।

फिर जब तीसरी रात हुई तो फिर मेरे पास आया और बेदार कर के कहा

عجبت للجن وتخبارها وشدها العيس بأكوارها

मैं जिन्नों से और उन के ख़बर देने और भूरे ऊंट को इमामा के पेचों के साथ बांधने से मु-तअ़ज्जिब व ह़ैरान हूं ।

تهوى الى مكة تبغى الهدى ليس ذو والشر كأخيارها

तुम हिदायत ह़ासिल करने के लिये मक्का जाओ शरीर जिन्न नेकूकार जिन्न की त़रह़ नहीं हैं ।

فانهض الى صفوة من هاشم مامؤمنوالجن ككفارها

बनू हाशिम के अ़ज़ीमुश्शान नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में जल्दी जाओ ईमान लाने वाले ख़ुश बख़्त जिन्न (जिन्नात) हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इन्कार करने वाले काफ़िरों की त़रह़ बद बख़्त नहीं हैं।

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ह़ज़रते सवाद बिन क़ारिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से पूछा : "क्या अब भी वोह तुम्हारा मुशीर जिन्न तुम्हारे पास आता है ?" ह़ज़रते सवाद बिन क़ारिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "जब से मैं ने कुरआने पाक पढ़ना शुरूअ़ किया है वोह मेरे पास नहीं आता और अल्लाह तआ़ला की किताब कुरआने करीम उस जिन्न का बेहतरीन इ़वज़ (बदला) है।"

(अल मो'जमुल औसत़, अल ह़दीस : 765, जि. 1, स. 224)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पथ्थर का मह़ल

ह़ज़रते सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं क़ौमे आ़द के अ़लाक़े में था कि मैं ने कुन्दा (ख़ुदाई किये हुए) पत्थर का एक ग़ार देखा। जिस में पथ्थर का मह़ल था जिस में जिन्नात रहते थे। जब मैं उस में दाख़िल हुवा तो उस में एक बहुत भारी भरकम जिस्म का बूढ़ा आदमी था जो का'बा की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ रहा था। उस के ऊपर एक ऊनी जुब्बा था जिस में ताज़गी थी। मुझे उस के मोटापे से इतना तअ़ज्जुब नहीं हुवा जितना उस के जुब्बे की ताज़गी पर हुवा। मैं ने उस को सलाम किया तो उस ने मेरे सलाम का जवाब देते हुए कहा : "ऐ सह्ल ! जिस्म कपड़ों को पुराना नहीं करते बल्कि गुनाहों की बदबू और ह़राम खाने कपड़ों को पुराना कर देते हैं, येह जुब्बा मेरे जिस्म पर

सात सो साल से है इस जुब्बे में मैं ने ह़ज़रते ईसा और ह़ज़रते मुह़म्मद عَلَيۡهِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से मुलाक़ात की और उन पर ईमान लाया।" मैं ने उस से पूछा : "आप कौन हैं ?" उन्हों ने जवाब दिया कि मैं उन में से हूं जिन के मु-तअ़ल्लिक़ येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

قُلۡ اُوۡحِیَ اِلَیَّ اَنَّهُ اسۡتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الۡجِنِّ ۝

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ मुझे वह़्य हुई कि कुछ जिन्नों ने मेरा पढ़ना कान लगा कर सुना।

(पारह : 29, अल जिन्न : 1)

(सि-फ़तिस्सफ़्वह, ذکر المصطفين من عباد الجن, जि. 4, स. 357)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जिन्नात का ह़ल्क़ा

एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि मैं सि. 1427 हि. र-मज़ानुल मुबारक दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (बाबुल मदीना कराची) में मो'तकिफ़ था। 26 वीं शब **निगराने शूरा** مدظله العالی का रिक़्क़त अंगेज़ बयान हो रहा था (इस बयान का केसेट "मुरीदे कामिल" के नाम से मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ हो चुका है)। मगर मैं अपने दोस्तों के हमराह सेह़ने मस्जिद में बातों में मसरूफ़ था। अचानक हमें किसी के रोने की आवाज़ आई। हम समझे कुछ इस्लामी भाई बयान से मु-तअस्सिर हो कर ग़मे मुर्शिद में रो रहे होंगे। रोने की आवाज़ें बुलन्द होना शुरूअ़ हुईं तो मैं ने इधर उधर निगाह दौड़ाई कि आख़िर येह आवाज़ें कहां से आ रही हैं। कुछ फ़ासिले पर चन्द इस्लामी भाई बैठ कर सर झुकाए रोते हुए दिखाई दिये। मैं उन के क़रीब गया और दिलासा दिया। कुछ देर बा'द मैं वापस हुवा।

थोड़ी दूर आ कर मैं ने जूंही मुड़ कर देखा तो ख़ौफ़ के मारे मेरे रोंगटे खड़े हो गए कि **रोने वाले इस्लामी भाइयों की जसामत अचानक बढ़ना शुरूअ़ हो गई ।** येह देख कर मुझे ग़ालिब गुमान हुवा कि हो न हो येह जिन्नात का ह़ल्क़ा है । दा'वते इस्लामी वालों के साथ ए'तिकाफ़ करने का मेरा पहला मौक़अ़ था । मैं बड़ा मु-तअस्सिर हुवा कि इन के इज्तिमाआ़त और ए'तिकाफ़ में जिन्नात भी शरीक होते हैं । واللّٰہ تعالٰی اَعْلَمُ بِحَقِیْقَۃِ الْحَال

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जिन्नात की बुज़ुर्गाने दीन से अ़क़ीदत व मह़ब्बत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जिस त़रह़ मुसल्मान बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से वालिहाना अ़क़ीदत रखते हैं, इन की बारगाहों में ह़ाज़िर होते हैं और इन की सोह़बत में गुज़रे हुए लम्ह़ात को सरमायए ह़यात तसव्वुर करते हैं, इसी त़रह़ सह़ीहुल अ़क़ीदा जिन्नात भी बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर इन से अ़क़ीदत व महब्बत का इज़्हार करते हैं और इन के मल्फ़ूज़ात से फ़ैज़याब होते हैं ।

विलादते सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुशी मनाने वाले जिन्नात

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत शरीफ़ हुई तो ज-बले अबू क़ुबैस और ह़ुज़ून के पहाड़ों पर चढ़ कर जिन्नात ने निदा की । **ह़ुज़ून पहाड़ के जिन्न ने येह निदा की :** "मैं क़सम खाता हूं इन्सानों में से कोई औ़रत मर्तबा वाली नहीं हुई और न इन्सानों में से

किसी औ़रत ने कोई (ऐसा) बच्चा जना जैसा फ़ख़्र व सिफ़ात वाला बच्चा ह़ज़रते आमिना ज़हरिया (या'नी बनू ज़हरा क़बीला से तअ़ल्लुक़ रखने वाली) رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने जना है येह शान व शौकत वाली क़बाइल की मलामत से दूर रहने वाली है। ह़ज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने तमाम क़बीलों से बेहतरीन और बढ़ कर बेटा ह़ज़रते अह़मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जना है तो बड़ी अ़-ज़मत और शान व शौकत वाला बेटा है और बड़ी ही मुकर्रम व मुअ़ज़्ज़म शान वाली मां है।''

और वोह जिन्न जो ज-बले अबू क़ुबैस पर था उस ने यूं निदा की : ऐ बत़्ह़ा (या'नी मक्कए मुकर्रमा) के रहने वालो ! ग़-लत़ी न करो मुआ़-मले को रोशन अ़क़्ल के ज़रीए़ मुम्ताज़ व जुदागाना कर लो। क़बीला बनू ज़हरा तुम्हारी नस्ल में से हैं ज़मानए क़दीम में भी और इस ज़माने में भी। लोगों में से जो गुज़र चुके या जो मौजूद हैं उन में से एक ख़ातून ऐसी हो तो उसे हमारे सामने लाओ। एक ऐसी ख़ातून ग़ैरों ही में से ला कर दिखा दो जिस ने नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जैसा पाकबाज़ जना हो।

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, निदाइल जिन्न...., स. 176)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के हमराह ह़ज को जाने वाला जिन्न

एक मर्तबा जब हुज़ूर सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ह़ज के इरादे से निकले तो चन्द मुरीदीन भी आप के साथ हो लिये। जब येह लोग किसी मन्ज़िल पर उतरते तो इन के पास सफ़ेद कपड़े में मल्बूस एक जवान आ जाता। मगर वोह इन के साथ खाता

पीता नहीं था । ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने मुरीदों को वसिय्यत फ़रमाई कि वोह इस नौ जवान से बात चीत न करें। येह लोग मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुए और एक घर में क़ियाम पज़ीर हो गए । जब येह ह़ज़रात घर से निकलते तो वोह नौ जवान दाख़िल हो जाता और जब येह ह़ज़रात दाख़िल होते तो बाहर निकल जाता । एक मर्तबा सब लोग निकल गए लेकिन एक साह़िब बैतुल ख़ला में रह गए । इसी दौरान वोह नौ जवान दाख़िल हुवा तो उसे कोई नज़र नहीं आया । उस ने थैली खोली और एक गदर खजूर (जो खजूर पकने के क़रीब हो) निकाल कर खाने लगा । जब वोह साह़िब बैतुल ख़ला से निकले और उन की नज़र उस नौ जवान पर पड़ी तो वोह नौ जवान वहां से चला गया । इस के बा'द फिर कभी इन ह़ज़रात के पास नहीं आया । जब उन साह़िब ने ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इस बात की ख़बर दी तो आप ने फ़रमाया येह शख़्स उन जिन्नों में से है जिन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से क़ुरआने मजीद सुना है ।

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, فی ذکر المصطفین من عباد الجن, स. 239)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान सुनने वाले जिन्नात

शैख़ अबू ज़-करिया बिन अबी नस्र सह़रावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिद फ़रमाते हैं कि ''मैं ने एक दफ़्आ अ़मल के ज़रीए जिन्नात को बुलाया तो उन्हों ने कुछ ज़ियादा देर कर दी फिर वोह मेरे पास आए और कहने लगे कि ''जब शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, क़ुत्बे रब्बानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान फ़रमा रहे हों तो उस वक़्त हमें बुलाने की कोशिश न

किया करो।'' मैं ने कहा : ''वोह क्यूं ?'' उन्हों ने कहा कि ''हम हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मजलिस में हाज़िर होते हैं।'' मैं ने कहा : ''तुम भी उन की मजलिस में जाते हो ?'' उन्हों ने कहा : ''हां ! हम मर्दों में कसीर ता'दाद में होते हैं, हमारे बहुत से गुरौह हैं जिन्हों ने इस्लाम क़बूल किया है और उन सब ने हुज़ूर ग़ौसे पाक (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के हाथ पर तौबा की है।''

(बह्जतुल असरार, ज़िक्रे वा'ज़ुहू رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ, स. 180)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हज़रते इब्राहीम रवव्वास رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और क़ौमे जिन्नात

हज़रते इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि एक साल मैं अपने साथियों के साथ ह़ज के लिये गया। क़ाफ़िला रवां दवां था कि अचानक मेरे दिल में ख़याल आया कि मैं सब लोगों से अलग हो कर शारेए़ आ़म से हट कर किसी दूसरे रास्ते पर चलूं। चुनान्चे मैं ने आ़म रास्ता छोड़ कर दूसरा रास्ता इख़्तियार कर लिया। मैं तीन दिन और रात मुसल्सल चलता रहा। इस दौरान मुझे भूक लगी न प्यास महसूस हुई और न कोई दूसरी ह़ाजत पेश आई। आख़िरे कार मैं एक हरे भरे जंगल में पहुंचा जहां फलदार दरख़्त और ख़ुश्बूदार फूल थे। उस बाग़ के दरमियान में एक छोटा सा तालाब था। मैं ने अपने दिल में कहा येह तो गोया जन्नत है। मैं ह़ैरान व परेशान था कि अचानक लोगों की एक जमाअ़त मेरे सामने आ गई जिन के चेहरे आदमियों की त़रह़ थे। वोह नफ़ीस पोशाक ख़ूब सूरत इ़मामे से आरास्ता व पैरास्ता थे।

उन लोगों ने आते ही मुझे घेरे में ले लिया और मुझे सलाम

किया। मैं ने जवाब में وعلیکم السلام ورحمۃ اللہ وبرکاتہ कहा और उन से दर्याफ़्त किया कि आप लोग यहां कैसे ? इस सुवाल के पूछते ही मेरे दिल में ख़याल गुज़रा कि येह लोग जिन्न हैं और येह अ़जीबो ग़रीब सर ज़मीन है। इतने में उन में से एक शख़्स बोला : "हम लोगों को एक मस्अला दरपेश है, इस में हमारा बाहम इख़्तिलाफ़ है और हम लोग जिन्नों में से हैं। हम ने लै-लतुल जिन्न में अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला का मुक़द्दस कलाम नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की ज़बाने मुबारक से सुनने का शरफ़ ह़ासिल किया है और अल्लाह तआ़ला के मुक़द्दस कलाम की वजह से तमाम दुन्यावी काम हम से छीन लिये गए और अल्लाह तआ़ला ने हमें इस जंगल में येह तालाब मुक़द्दर फ़रमा दिया है। मैं ने दर्याफ़्त किया कि जिस मक़ाम पर मैं ने अपने साथियों को छोड़ा है, वोह यहां से कितनी दूर है ? येह सुन कर उन में से एक मुस्कराया और कहने लगा : "ऐ अबू इस्ह़ाक़ ! अल्लाह عزوجل ही के लिये असरार व अ़जाइबात हैं येह जगह जहां इस वक़्त आप हैं, एक नौ जवान के सिवा आज तक कोई नहीं आया और वोह भी यहीं वफ़ात पा गया।" और एक त़रफ़ इशारा कर के कहने लगा : "वोह रही उस की क़ब्र।" वोह क़ब्र तालाब के किनारे थी। जिस के इर्द गिर्द ऐसे ख़ुश नुमा बाग़ व ख़ुश्बूदार फूल थे जो इस से पहले मैं ने कभी न देखे। फिर उस जिन्न ने मेरे सुवाल का जवाब देते हुए कहा : "आप के साथियों और आप के दरमियान इतने महीने की मुसाफ़त का फ़ासिला है।"

ह़ज़रते इब्राहीम رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : "मैं ने उन जिन्नों से कहा : "मुझे इस नौ जवान के बारे में कुछ बताओ।" तो उन में से एक ने कहा : "हम यहां तालाब के किनारे बैठे हुए मह़ब्बत का ज़िक्र

कर रहे थे। हमारी गुफ़्त-गू जारी थी कि अचानक एक शख़्स हमारे पास आया और हमें सलाम किया। हम ने जवाब दिया और उस से दर्याफ़्त किया : "ऐ नौ जवान ! तुम कहां से आए हो ?" उस ने जवाब दिया : "नैशापूर के एक शहर से।" हम ने पूछा : "तुम वहां से कब निकले थे ?" उस ने जवाब दिया : "सात दिन हुए।" फिर हम ने पूछा : " अपने वत़न से निकलने की वजह ?" उस ने कहा : "अल्लाह तआ़ला का येह फ़रमान :

وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ۝

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने रब की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ और उस के हुज़ूर गरदन रखो क़ब्ल इस के कि तुम पर अ़ज़ाब आए फिर तुम्हारी मदद न हो।" (पारह : 24, अज़्ज़ुमर : 54)

हम ने उस से कुछ और भी सुवालात किये। उन सुवालात के जवाबात देते देते उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और उस की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। हम लोगों ने उसे यहां दफ़्न कर दिया और येह उस की क़ब्र है (अल्लाह उस से राज़ी हो)।

ह़ज़रते इब्राहीम ख़व्वास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं उस नौ जवान के औसाफ़ सुन कर बहुत मु-तअस्सिर हुवा। मैं उस की क़ब्र के क़रीब गया तो उस के सिरहाने नरगिस के फूलों का एक बहुत बड़ा गुलदस्ता रखा हुवा था और येह इबारत लिखी हुई थी هٰذَا قَبْرُ حَبِيْبِ اللّٰهِ قَتِيْلِ الْغَيْرَةِ या'नी येह **अल्लाह** तआ़ला के दोस्त की क़ब्र है इसे ग़ैरत ने मारा है। और एक वरक़ पर "اَلْاِنَابَة" का मा'नी लिखा था। फिर जिन्नों ने मुझ से इस की तफ़्सीर के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल किया

तो मैं ने उस की तफ़्सीर बयान कर दी। वोह बहुत ख़ुश हुए और उन का इख़्तिलाफ़ व इज़्तिराब जाता रहा। वोह मुझ से कहने लगे। हमें हमारे मस्अले का काफ़ी व शाफ़ी जवाब मिल गया। ह़ज़रते इब्राहीम ख़व्वास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं फिर मुझे नींद आ गई जब मुझे होश आया और नींद से बेदार हुवा तो (मक्कए मुकर्रमा में) ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की मस्जिद (तन्ईम) के पास अपने आप को देखा और मेरे पास फूलों का गुलदस्ता था जो साल भर इसी त़रह़ बाक़ी रहा फिर कुछ अ़र्सा बा'द वोह ख़ुद ब ख़ुद गुम हो गया।

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, فی ذکر المصطفین من عباد الجن, स. 240)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जिन्नात का नौह़ा :

ह़ज़रते उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं ने जिन्नों को ह़ुसैन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर नौह़ा करते हुए सुना। मज्मउ़ज़्ज़वाइद, किताबिल मनाक़िब, बाब : 16, अल ह़दीस : 15179, जि. 9, स. 321)

जिन्नात का इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के विसाल पर रोना:

जिस रात इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का विसाल हुवा तो जिन्नात उन पर रो रहे थे। उन के रोने की आवाज़ तो आ रही थी लेकिन वोह ख़ुद नज़र नहीं आ रहे थे वोह कह रहे थे :

1. फ़क़ीह चला गया तो अब तुम्हारे लिये कोई फ़क़ीह न रहा लिहाज़ा तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो और इन के पैरूकार और जा नशीन बनो।

2. ह़ज़रते इमामे आ'ज़म नो'मान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का विसाल हो गया तो अब कौन है जो रातों को क़ियाम करे जब रात की तारीकी हो। (लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल

जान्न, فی احکام الجان،فی بکاء الجن, स. 200)

ह़ज़रते वकीअ़ बिन जराह़ رَضِیَ اللّٰہتَعَالٰی عَنْہُ पर जिन्नों का नौह़ा :

ह़ज़रते वकीअ़ رَضِیَ اللّٰہتَعَالٰی عَنْہُ एक मर्तबा मक्कए मुकर्रमा के लिये निकले तो उन के घर वालों को घर में उन का नौह़ा सुनाई देने लगा फिर जब लोग ह़ज से वापस आए तो ह़ज़रते वकीअ़ رَضِیَ اللّٰہتَعَالٰی عَنْہُ के घर वालों ने उन लोगों से पूछा कि ह़ज़रते वकीअ़ رَضِیَ اللّٰہتَعَالٰی عَنْہُ का विसाल कब हुवा ? तो लोगों ने कहा कि फ़ुलां फ़ुलां रात में । तो वोह वोही रात थी जिस में ह़ज़रते वकीअ़ رَضِیَ اللّٰہتَعَالٰی عَنْہُ के घर वालों ने नौह़ा सुना था ।

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, فی نوح الجن, स. 200)

एक मुह़द्दिस की बारगाह में ह़ाज़िर होने वाला जिन्न

ह़ज़रते वह्ब और ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَۃُاللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُم हर साल ह़ज के ज़माने में मस्जिदे ख़ैफ़ में मिला करते थे । एक रात जब कि लोगों की भीड़ कम हो चुकी थी और अक्सर लोग सो चुके थे तो इन दोनों ह़ज़रात के साथ कुछ लोग बातें कर रहे थे कि अचानक एक छोटा सा परिन्दा आया और ह़ज़रते वह्ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की एक जानिब ह़ल्क़े में बैठ गया और सलाम किया । ह़ज़रते वह्ब ने उस के सलाम का जवाब दिया । उन्हों ने जान लिया था कि वोह **जिन्न** है । वोह उस की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और पूछा : "तुम कौन हो ?" उस ने जवाब दिया कि "मैं एक **मुसल्मान जिन्न** हूं ।" उन्हों ने उस के आने का मक़्सद दर्याफ़्त किया तो उस ने कहा : "क्या आप येह नहीं पसन्द करते कि हम आप की मजलिस में बैठें और इल्म ह़ासिल करें । हम में आप से रिवायत करने वाले बहुत से जिन्नात हैं, हम लोग आप लोगों के साथ बहुत से

कामों में शरीक होते हैं म-सलन नमाज़, जिहाद, बीमारों की इ़यादत, नमाज़े जनाज़ा और ह़ज व उ़म्रह वग़ैरहा और आप से इ़ल्म ह़ासिल करते हैं और आप से क़ुरआने करीम की तिलावत सुनते हैं।''

(किताबिल हवातिफ़ लि इब्ने अबिदुन्या, रक़म : 177, जि. 2, स. 526)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जिन्नात भी वा'ज़ व नसीह़त सुनते हैं

ह़ज़रते अबू अ़ली दक़्क़ाक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''मैं नैशापूर में वा'ज़ो तक़रीर के लिया गया तो मुझे आशोबे चश्म हो गया। मुझे अपनी औलाद से मुलाक़ात का शौक़ हुवा। मैं ने एक रात ख़्वाब देखा गोया कि एक शख़्स मेरे पास आ कर कहता है : ''ऐ शैख़ ! आप इतनी जल्दी वापस नहीं जा सकते क्यूं कि नौ जवान जिन्नों की एक जमाअ़त भी आप की मजलिस में ह़ाज़िर हो कर रोज़ाना आप का वा'ज़ सुनती है और वोह वा'ज़ को किसी दूसरे मौक़अ़ पर सुनने को तय्यार नहीं जब तक वोह अपने मक़्सद तक नहीं पहुंच जाते (या'नी वा'ज़ नहीं सुन लेते) आप उन को छोड़ कर नहीं जा सकते, शायद अल्लाह तआ़ला उन को जिला बख़्श दे।'' फिर जब सुब्ह़ हुई तो मेरी आंखें बिल्कुल ठीक थीं गोया मुझे कभी आशोबे चश्म था ही नहीं।

(सि-फ़तिस्सफ़्वह, ذكر المصطفين من عباد الجن, जि. 4, स. 360)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वा'ज़ में शिर्कत

एक मर्तबा ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه रात के वक़्त ह़ज़रते ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की मस्जिद में तशरीफ़ ले गए तो अन्दर से दरवाज़ा बन्द था आप मश्ग़ूले दुआ थे। कुछ लोगों के आमीन

कहने की सदाएं आ रही थीं। चुनान्चे मैं येह ख़याल कर के कि शायद आप के इरादत मन्द होंगे बाहर ही ठहर गया। जब सुब्ह़ के वक़्त दरवाज़ा खुला और मैं ने अन्दर जा कर देखा तो आप तन्हा थे। नमाज़ के बा'द जब सूरते ह़ाल दर्याफ़्त की तो फ़रमाया : "पहले किसी को न बताने का वा'दा करो।" फिर बताने लगे कि यहां जिन्नात वग़ैरा आते हैं और मैं उन के सामने वा'ज़ कह कर दुआ मांगता हूं जिस पर वोह सब आमीन आमीन कहते रहते हैं। (तज़्किरतुल औलिया, बाब : सिवुम, ज़िक्रे ह़सन बसरी, नीमए अव्वल, स. 40, इन्तिशाराते गन्जीना तहरान)

जिन्नों ने "इल्मे नह़्व" सैबूया से पढ़ा :

ह़ज़रते अबुल ह़सन बिन कैसान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان फ़रमाते है कि मैं एक रात सबक़ याद करने के लिये देर तक जागता रहा। फिर मैं सो गया तो मैं ने ख़्वाब में जिन्नों की एक जमाअ़त देखी जो फ़िक़्ह, ह़दीस, ह़िसाब, नह़्व और शे'रो शाइरी में मुज़ा-करा कर रही थी। मैं ने पूछा : "क्या तुम में भी उ़-लमा होते हैं ?" उन्हों ने कहा : "जी हां हम में उ़-लमा भी होते हैं।" मैं ने पूछा : "फिर तुम नह़्व के मसाइल में किन उ़-लमाए नह़्व के पास जाते हो ?" उन्हों ने कहा : "सैबूया के पास।"

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ذکر المصطفین من عباد الجن, स. 244)

शहन्शाहे जिन्नात

एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि ग़ालिबन सि. 1999 हि. मैं जुमा'रात के दिन सिन्ध के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग शहबाज़ क़लन्दर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार पर अपने दोस्तों के हमराह

ह़ाज़िर था। मैं आंखें बन्द किये इस्तिग़ासिया कलाम पढ़ रहा था कि अचानक मेरे शाने पर किसी ने हाथ रख कर दबाया। मैं ने आंखें खोलीं और पीछे मुड़ के देखा तो मेरी नज़र एक सफ़ेद रीश बुज़ुर्ग पर पड़ी जिन के सर पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा सजा हुवा था। उन्हों ने पूछा : "येह कलाम जो तुम पढ़ रहे थे ﴿ऐ काश मैं बन जाऊं मदीने का मुसाफ़िर﴾ किस ने लिखा है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "येह मेरे पीरो मुर्शिद शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का कलाम है।" दर्याफ़्त फ़रमाने लगे : "तुम्हारे पीरो मुर्शिद इल्यास क़ादिरी साहिब دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हैं ?" मैं ने इस्बात में सर हिला दिया। उन्हों ने दूसरा कलाम सुनाने की फ़रमाइश की तो मैं ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का एक और पुरसोज़ कलाम सुनाया। जिसे सुन कर उन पर रिक़्क़त त़ारी हो गई। मैं ने उन से दुआ़ की दर-ख़्वास्त की तो उन्हों ने फ़रमाया : "तुम बड़े ख़ुश नसीब हो कि तुम्हें ज़माने के मक़्बूल वली का दामन मिला है, इल्यास क़ादिरी साहिब अपने मुरीदों के लिये बहुत दुआ़एं फ़रमाते हैं। अपने पीरो मुर्शिद की बारगाह से कभी नज़र हटा कर इधर उधर मत देखना, उन की नज़रे करम तुम पर हो गई तो तुम्हारी बिगड़ी बन जाएगी।" मैं ने बे साख़्ता उन के हाथ चूम लिये और पूछा : "आप कौन हैं ?" पहले तो उन्हों ने टाला मगर मेरे बे ह़द इसरार पर उन्हों ने फ़रमाया : "मैं शहन्शाहे जिन्नात हूं, हमारा क़ाफ़िला उड़ता हुवा जा रहा था, यहां कुछ देर ह़ाज़िरी के लिये आना हुवा तो तुम्हारे पढ़े गए कलाम की कशिश ने रोक लिया। येह कहते हुए वोह बुज़ुर्ग नज़रों से ओझल हो गए।" وَاللّٰہ تعالٰی اَعْلَمُ بِحَقِیْقَۃِ الْحَال

उन के जाने के बा'द मैं अपने साथियों की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुवा तो उन्हें ह़ैरान व परेशान पाया। उन्हों ने मुझे बताया कि हम परेशान

थे कि ना'तें पढ़ते पढ़ते अचानक तुम ने किस से गुफ़्तुगू शुरूअ़ कर दी जब कि हमें दूसरा कोई नज़र नहीं आ रहा था। जब मैं ने उन्हें सारी सूरते ह़ाल बताई कि मेरी मुलाक़ात अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़क़ीदत मन्द जिन्नात से हुई है तो वोह बहुत ह़ैरान हुए।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ाज़िरात की ह़क़ीक़त

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई (دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه) अपने रिसाले ''**जिन्नात की ह़िकायात**'' में कुछ यूं लिखते हैं :

शरीर जिन्नात मुख़्तलिफ़ रूप में आ कर मुसल्मानों को सताते हैं। बल्कि बसा अवक़ात तो इन्सानी जिस्म में ज़ाहिर हो कर ख़ुद को किसी बुज़ुर्ग के नाम से भी मन्सूब करते हैं और फिर लोगों के सुवालात के उल्टे सीधे जवाबात देते हैं, बीमारियों का इ़लाज बताते हैं वग़ैरा, इसी को फ़ी ज़माना ''ह़ाज़िरी'' का नाम दिया जाता है। चुनान्चे हमारे मुआ़शरे में आजकल जगह ब जगह ''**ह़ाज़िरात**'' का सिल्सिला ज़ोरों पर है। बा'ज़ मक़ामात पर मर्द या औ़रत को ''**ह़ाज़िरी**'' और फिर किसी बुज़ुर्ग की ''**सुवारी**'' आती है ह़त्ता कि مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ''**ग़ौसे पाक** رَضِیَ اللّٰہ عَنْہُ'' की सुवारी का भी दा'वा किया जाता है। म-सलन ''**ह़ाज़िरी**'' में मुब्तला औ़रत अब इस त़रह़ हम कलाम होती है कि ''**हम ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہ عَنْہُ हैं, हम से पूछो क्या पूछना चाहते हो !**'' फिर मज्मअ़ में से लोग सुवालात करते हैं और जवाबात दिये जाते हैं, इ़लाज तज्वीज़ होते हैं वग़ैरा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

येह बात अच्छी तरह ज़ेह्न नशीन कर लें कि "**इन्सान**" किसी दूसरे "**इन्सान**" के जिस्म में हुलूल नहीं करता, ज़रा सोचिये तो सही ! वोह बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ जिन्हों ने उ़म्र भर "**पर्दा**" की ता'लीम दी और अब बा'दे वफ़ात कैसे मुम्किन है कि वोही बुज़ुर्ग बे पर्दा औ़रतों के जिस्म में दाख़िल हो कर तमाशा दिखाने लगें।

झूटा जिन्न

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मज़ीद लिखते हैं कि "मुझे किसी ने बताया कि फ़ुलां साहिब पर "**एक बाबा**" की "**सुवारी**" आती है और वोह "**बाबा**" आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बारे में बहुत हुस्ने अ़क़ीदत का इज़्हार करते हैं आप भी कभी चलें। मगर उ़-लमाए अहले सुन्नत की ना'लैन के सदक़े मुझे इन "**हाज़िरियों**" का राज़ अच्छी त़रह़ मा'लूम था। ख़ैर मैं वहां गया। "**बाबा**" ने वहां बड़ी रोनक़ जमा रखी थी। ख़ूब दुरूद ख़्वानी और मह़फ़िले मीलाद के सिल्सिले थे, जिस की वजह से **ज़ईफ़ुल ए'तिक़ाद** लोगों की "**समझ**" में आ जाता है कि वाक़ेई येह कोई बुज़ुर्ग ही हैं जभी तो नेकियां करवा रहे हैं। वोह "**बाबा**" की ह़ाज़िरी का वक़्त नहीं था मगर मुझ पर चूंकि ख़ुसूसी "**नज़रे करम**" थी इस लिये जिन साहिब पर सुवारी आती थी वोह मुझे एक अलग कमरे में ले गए। "**बाबा**" की तशरीफ़ आ-वरी का अन्दाज़ भी ख़ूब था जिन साहिब पर "**सुवारी**" आती थी उन्हों ने एक दम अपना बदन थिरकाना और फड़काना शुरूअ़ कर दिया। चेहरा अ़जीब डराउना सा हो गया। अ़जीब अ़जीब आवाज़ें निकलनी शुरूअ़ हुईं कि अगर कोई कमज़ोर दिल का आदमी हो तो बाबा की आमद की तन्हाई में "**तजल्लियात**"

देख कर शायद चीख़ मार कर बेहोश हो जाए या सर पर पैर रख कर भाग खड़ा हो। ख़ैर मैं हिम्मत कर के बैठा रहा जब "**बाबा**" की सुवारी "**मुसल्लत़**" हो चुकी तो "**बाबा**" ने अपना तआ़रुफ़ कुछ इस त़रह़ करवाया कि "**हम बग़दाद शरीफ़ से आते हैं और जनाबे ग़ौसे आ'ज़म** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ **के क़दमों में हमारा मज़ार है**" मैं ने पूछा आप इन्सान हैं या जिन्न ? तो कहा : "**बशर**" (या'नी इन्सान) उन्हों ने अपने आप को **अ़-रबिय्युल्लिसान** बुज़ुर्ग ज़ाहिर किया लेकिन ह़ालत येह थी, दो तीन बार एक "**अ़-रबी दुआ़**" पढ़ी और मुझे भी पढ़ने की तल्क़ीन फ़रमाई, दुआ़ तो मैं भूल गया हूं मगर येह अच्छी त़रह़ याद रह गया है कि वोह '**اَغِثْنِی**" को बार बार "**اَغِثْنِی**' कहते थे। बहर ह़ाल इख़्तिताम पर मैं ने उन को दा'वत दी कि आप इन साहि़ब की वसात़त से नहीं तन्हा कभी तशरीफ़ लाएं फिर बात होगी। तो उन्हों ने मुझ से वा'दा फ़रमाया, हम आएंगे...... हम आएंगे...... मैं ने कहा, कब तशरीफ़ लाएंगे ? तो फिर वोह, हम आएंगे...... हम आएंगे...... कहते हुए तशरीफ़ ले गए। रुख़्सत का अन्दाज़ भी निराला था या'नी उन साहि़ब ने कुछ झटके खाए और फिर "**नोर्मल**" हो गए। जब में कमरे से बाहर आया तो मुझ से लोगों ने राय दर्याफ़्त की तो मैं ने अ़र्ज़ कर दिया कि "**येह जिन्न था, जो जाहिल और झूटा था।**"

बहर ह़ाल जो मुसल्मान बुज़ुर्गों की "**सुवारी**" के दा'वे करते हैं बा'ज़ अवक़ात बे क़ुसूर भी होते हैं कि उन पर **जिन्न** मुसल्लत़ हो जाते हैं और वोह **जिन्न** बुज़ुर्ग और बाबा होने का दा'वा करते हैं।

वस्वसा : वोह "**बाबा**" तो नमाज़, रोज़ा और अवराद व वज़ाइफ़ के मश्वरे देते हैं फिर ग़लत़ कैसे हो सकते हैं ?

जवाबे वस्वसा : जिस त़रह़ बा'ज़ इन्सानों को भीड़ करने में लुत़्फ़ आता है इसी त़रह़ बा'ज़ **जिन्नात** को भी मज्मअ़ करने में मज़ा आता है और वोह नेकी के काम बता कर लोगों की भीड़ जमाते हैं। तफ़्सीरे ''फ़त्हुल अ़ज़ीज़'' में है : **मुनाफ़िक़ जिन्नात** अपने आप को किसी बुज़ुर्ग के नाम से मशहूर कर के अपनी ता'ज़ीम व तक्रीम करवाते और अपने पोशीदा मक्रो फ़रेब से लोगों की ख़राबी के दर पै रहते हैं। बा'ज़ मक़ामात पर ''**बुज़ुर्ग की ह़ाज़िरी**'' का दा'वा नहीं होता बल्कि ''**ह़ाज़िरात**'' में बराहे रास्त जिन्न ही कलाम करता है और लोग उन से सुवालात पूछते हैं और जिन्नात जवाबात देते हैं।

(मुलख़्ख़स अज़ रिसाला : ''जिन्नात की ह़िकायात'', स. 17)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ाज़िरात से मुस्तक़्बिल का ह़ाल मा'लूम करना ?

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान (عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن) फ़रमाते हैं :

''**ह़ाज़िरात** कर के मुवक्कलान जिन्न से पूछते हैं फ़ुलां मुक़द्दमा में क्या होगा ? फ़ुलां काम का अन्जाम क्या होगा ? **येह ह़राम है**।'' (मज़ीद फ़रमाते हैं) ''तो अब **जिन्न** ग़ैब से निरे जाहिल हैं इन से आइन्दा की बात पूछनी अ़क़्लन ह़माक़त और शरअ़न ह़राम और उन की ग़ैबदानी का ए'तिक़ाद हो तो कुफ़्र है।''

(फ़तावा अफ़्रीक़ा, स. 177)

आ़मिल और साइल दोनों मु-तवज्जेह हों

आ'ला ह़ज़रत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इसी ''फ़तावा अफ़्रीक़ा'' के सुवाल नम्बर 102 के जवाब के दौरान फ़रमाते हैं, ''ग़ैब का इ़ल्मे

यक़ीनी बे वसात़ते रसूल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام किसी को मिलने का ए'तिक़ाद (या'नी अ़क़ीदा रखना) कुफ़्र है।" (फ़तावा अफ़्रीक़ा, स. 179)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है,

عٰلِمُ الْغَیْبِ فَلَا یُظْهِرُ عَلٰی غَیْبِهٖۤ اَحَدًا ۝ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰی مِنْ رَّسُوْلٍ ۝

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : ग़ैब का जान्ने वाला तो अपने ग़ैब पर किसी को मुसल्लत़ नहीं करता सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के।

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान** नई़मी علیہ رحمۃ اللہ الغنی इस आयत के तह़्त तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान में लिखते हैं : इन्हें (या'नी पसन्दीदा रसूलों को) ख़ास ग़ुयूब पर पूरी इत्तिलाअ़ देता है और आ'ला द-रजा का कश्फ़ देता है, अगर्चे बा'ज़ औलियाउल्लाह को भी उ़लूमे ग़ैबिया बख़्शे जाते हैं मगर नबी के वासित़ा से, फिर भी नबी का इ़ल्म उन के इ़ल्म से आ'ला होता है।

जिन्नात गुज़श्ता ह़ालात कैसे बता देते हैं ?

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबु बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ इस सुवाल का जवाब देते हुए लिखते हैं :

यक़ीनन बसा अवक़ात जिन्नात गुज़श्ता ह़ालात की दुरुस्त इत्तिलाआ़त देने में काम्याब हो जाते हैं म-सलन आप को दस साल क़ब्ल सख़्त बुख़ार आ गया था या आप 15 साल क़ब्ल फ़ुलां क़ब्रिस्तान में डर गए थे या आप के बच्चे को सर पर चोट आ गई थी वग़ैरा वग़ैरा। गुज़श्ता ह़ालात बताने की वजह येह है कि येह बातें वोह "ह़ाज़िरी का जिन्न" आप के **हमज़ाद** से पूछ लेता है। तो हमज़ाद के ज़रीए मिली

हुई इत्तिलाअ़ को "इल्मे ग़ैब" नहीं कहते। हर शख़्स के साथ एक हमज़ाद भी पैदा होता है जो कि काफ़िर जिन्न होता है और वोह हर वक़्त साथ रहने की वजह से इस त़रह़ की बातें देखता रहता है।

ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ के पास एक ऐसे शख़्स को पेश किया गया जिस की त़रफ़ जादूगरी की निस्बत की गई थी। ह़ज्जाज ने उस से पूछा : "क्या तुम जादूगर हो ?" उस ने कहा : "नहीं।" तो ह़ज्जाज ने कुछ कंकरियां लीं और उन को गिनने के बा'द मुठ्ठी बन्द कर ली और पूछा : "मेरे हाथ में कितनी कंकरियां हैं ?" उस ने कहा : "इतनी और इतनी।" तो ह़ज्जाज ने उन को फेंक दिया फिर एक दूसरी मुठ्ठी भरी और उन को शुमार न किया फिर पूछा : "येह मेरे हाथ में कितनी हैं ?" उस ने कहा : "मैं नहीं जानता।" ह़ज्जाज ने कहा : "तुझे पहली ता'दाद कैसे मा'लूम हुई और दूसरी ता'दाद क्यूं नहीं मा'लूम हुई ?" तो वोह कहने लगा : "इन की ता'दाद आप जानते थे तो आप के वस्वास (वस्वसा डालने वाले) को इ़ल्म हो गया फिर आप के वस्वास ने मेरे वस्वास को बता दिया और येह (दूसरी मुठ्ठी की) ता'दाद आप को नहीं मा'लूम थी तो आप के वस्वास को भी इस का इ़ल्म न हुवा, इस लिये उस ने मेरे वस्वास को ख़बर नहीं दी तो मुझे भी इस का इ़ल्म न हो सका।"

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ज़िक्रिल वस्वसा, स. 133)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हमज़ाद कौन होता है ?

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 21 सफ़ह़ा 216

ता 217 पर फ़रमाते हैं : **हमज़ाद** अज़ क़िस्मे शयातीन है, वोह शैतान कि हर वक़्त आदमी के साथ रहता है वोह मुत्लक़न काफ़िर मल्ऊ़ने अ-बदी है सिवा उस के जो **हुज़ूरे अक़्दस** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर था वोह ब-र-कते सोहबते अक़्दस से मुसल्मान हो गया । **सहीह़ मुस्लिम** में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : लोगो ! तुम में कोई शख़्स नहीं कि जिस के साथ **हमज़ाद जिन्न** और **हमज़ाद फिरिश्ता** न हो । लोगों ने अ़र्ज़ की, **ऐ अल्लाह तआ़ला के रसूल !** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या आप के साथ भी है ? इर्शाद फ़रमाया कि हां मेरे साथ भी है लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने मेरी मदद फ़रमाई कि वोह **मुसल्मान** हो गया लिहाज़ा वोह मुझे सिवाए भलाई के कुछ नहीं कहता । (सह़ीह़ मुस्लिम, अल ह़दीस : 2814, स. 1512) मज़ीद मा'लूमात के लिये **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 21 सफ़ह़ा 216 ता 219 का मुत़ा-लआ़ फ़रमा लीजिये ।

ह़ज़रते वह्ब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हर इन्सान के साथ शैतान होता है जो उस के साथ मुक़र्रर है । काफ़िर का शैतान काफ़िर के साथ उस के खाने से खाता है उस के साथ उस के पानी से पीता है और उस के साथ उस के बिस्तर पर सोता भी है लेकिन मोमिन का शैतान मोमिन से छुपा रहता है और उस की ताक में लगा रहता है कि मोमिन अपनी अ़क़्ल से कब ग़ाफ़िल होता है कि वोह इस से फ़ाएदा उठाए । शैतान ज़ियादा खाने वाले और ज़ियादा सोने वाले आदमियों को ज़ियादा पसन्द करता है ।

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ज़िक्रिल क़रीन, स. 126)

हमज़ाद जिन्न की तस्ख़ीर के लिये अ़मल करना कैसा?

इस बारे में हुक्मे शर-ई बयान करते हुए आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن जिल्द 21 सफ़ह़ा 216 पर लिखते हैं :

इस की तस्ख़ीर जो सिफ़्लियात (या'नी जादू) से हो वोह तो ह़रामे क़त़ई बल्कि अक्सर सुवर (या'नी सूरतों) में कुफ़्र है कि बे इन के ख़ुशामद और मदाएह़ व मरज़ियात के नहीं होती, और जो उ़लूयात से हो तो अगर्चे ब सौलत व सत्वत (या'नी दबदबा) है मगर इस का समरा ग़ालिबन अपने कामों में शैत़ान से एक नौअ़ इस्तिआ़नत (या'नी मदद त़लब करने) से ख़ाली नहीं होता।

मज़ीद लिखते हैं : काफ़िर शैत़ान की मुख़ा-लत़त ज़रूर मूरिसे तग़य्युरे अह़वाल व हुदूसे ज़ुल्मत (या'नी सोह़बते शैत़ान, अह़वाल की तब्दीली और गुमराही पैदा होने का सबब है), ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि कम अज़ कम वोह ज़रर (या'नी नुक़्सान) कि सोह़बते जिन्न से होता है येह कि आदमी मु-तकब्बिर हो जाता है والعیا ذ باللہ, तो राहे सलामत उस से बुअ़्द व मुजा-नबत (या'नी दूर रहने) ही में है। **والعیا ذ باللہ تعالٰی واللہ تعالٰی اعلم**

दस्ते ग़ैब और मुसल्ला के नीचे से अशरफ़ी निकलना :

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن जिल्द 21 सफ़ह़ा 218 पर लिखते हैं :

हां (दस्ते ग़ैब और मुसल्ला के नीचे से अशरफ़ी निकलना) सह़ीह़ है मगर इस अ़मल दारी में कम्याब बल्कि नायाब है। दस्ते ग़ैब के

निहायत द-रजा का ह़ासिल अब सिर्फ़ फ़ुतूहे ज़ाहिरा व वुस्अ़ते रिज़्क़ होना है। फिर अगर दस्ते ग़ैब इस त़रह़ हो कि **जिन्न को ताबेअ़** कर के उस के ज़रीए़ से लोगों के माले मा'सूम मंगवाए जाएं तो **अशद सख़्त ह़राम कबीरा** है और अगर **सिफ़्लियात** से हो तो **क़रीब ब कुफ़्र** और **उ़लूयात** से हो तो ख़ुद येह शख़्स मारा जाएगा या कम अज़ कम पागल हो जाएगा या सख़्त अमराज़ व बलाया में गरिफ़्तार हुवा **आ'माले उ़लूया को जरीअ़ए ह़राम बनाना हमेशा ऐसे समरे लाता है**। और इस के ह़रामे क़त़ई होने में क्या शुबा है।

قال اللہ تعالٰی (या'नी **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया)

وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ

तर-जमए कन्जुल ईमान : और आपस में एक दूसरे का माले ना ह़क़ न खाओ। (पारह: 2, अल ब-क़रह : 188)

और अगर किसी दूसरे की मिल्के मा'सूम न लाई जाती हो बल्कि ख़ज़ानए ग़ैब से इस को कुछ पहुंचाया जाए या माले मुबाह़ ग़ैर मा'सूम और वोह जिन्न कि मुसख़्ख़र किया जाए मुसल्मान हो न कि शैत़ान, और आ'माले उ़लूया से हो न कि सिफ़्लिया से और उसे मंगा कर मुसारिफ़े मह़मूदा या मुबाह़ा में सर्फ़ करे, न कि مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ ह़राम व इस्राफ़ में, तो येह अ़मल जाइज़ है, और जो इस त़रीक़े से मिले उस का सर्फ़ करना भी जाइज़ कि जिस त़रह़ कस्बे ह़लाल के और तुरुक़ (त़रीक़े) हैं इसी त़रह़ एक त़रीक़ा येह भी है।

जिन्न की दी हुई रक़म का हुक्म :

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से पूछा गया कि एक

औरत के ऊपर जिन्न आता है और वोह अ़लानिया उस को देखती है और वोह उस के पास आ कर रुपै वग़ैरा नोट दे कर जाता है तो आया उस नोट और रुपै को सर्फ़ करना चाहिये या नहीं ? और इस्ति'माल में लाना शरअ़न जाइज़ है या नहीं ?

आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : वोह जिन्न जो कुछ उस औ़रत को देता है उस का लेना ह़राम है कि वोह ज़िना की रिश्वत है। दुर्रे मुख़्तार में है : مايدفعه متعاشقان رشوة या'नी आपस में मुआ़शक़ा करने वाले जो कुछ दें वोह रिश्वत में शुमार है। अगर वोह लेने पर मजबूर करे ले कर फु-क़रा पर तसद्दुक़ कर दिया जाए अपने सर्फ़ में लाना ह़राम है। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَمُ

(फ़तावा र-ज़विय्या तख़्रीज शुदा, जि. 23, स. 566)

जिन्नात को क़ाबू करना

सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिन्न को क़ाबू कर लिया :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ बयान करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "गुज़श्ता शब एक ज़बर दस्त जिन्न मेरी त़रफ़ बढ़ा ताकि मेरी नमाज़ तोड़ दे लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उसे मेरे क़ाबू में कर दिया। मैं ने उस का गला घोंट दिया और इरादा किया कि इसे मस्जिद के सुतूनों में से किसी सुतून के साथ बांध दूं ह़त्ता कि कल सुब्ह़ होते ही तुम सब इसे देख लो। फिर मुझे अपने भाई ह़ज़रते सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की येह दुआ़ याद आई : "ऐ अल्लाह ! मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे और मुझे ऐसी सल्त़नत दे जो मेरे बा'द किसी और को न मिले।" फिर अल्लाह तआ़ला ने उस

जिन्न को ना काम व ना मुराद लौटा दिया । (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबिल मसाजिद, व मौज़िइस्सलाह, अल ह़दीस : 541, स. 274)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने शयात़ीन को घड़ों में बन्द कर दिया :

ह़ज़रते मूसा बिन नसीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि वोह जिहाद के लिये समुन्दर के रास्ते से चले यहां तक कि वोह समुन्दर की तारीकी में पहुंचे और किश्तियों को उन के रुख़ पर चलता हुवा छोड़ दिया । अचानक उन्हों ने किश्तियों में खट-खटाने की आवाज़ सुनी जब देखा तो सब्ज़ रंग के मोहर लगे हुए घड़े नज़र आए । उन में से एक घड़ा उठा लिया तो उस की मोहर तोड़ने से डर गए । फ़रमाया : इस को नीचे से सूराख़ करो जब घड़े का मुंह एक पियाले के बराबर हो गया तो एक चीख़ने वाले ने चीख़ मारी : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ऐ अल्लाह के नबी ! मैं वापस नहीं आऊंगा ।'' येह सुन कर ह़ज़रते मूसा बिन नसीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा : ''येह तो शैत़ानों में से है जिन को ह़ज़रते सुलैमान बिन दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने क़ैद किया है ।'' फिर हुक्म दिया कि घड़े के सूराख़ को बन्द कर दिया जाए । फिर अचानक किश्ती पर एक आदमी दिखाई दिया जो घूर रहा था और उन को देख कर कह रहा था अल्लाह की क़सम तुम लोग वोही हो अगर तुम्हारा मुझ पर एह़सान न होता तो मैं तुम सब को ग़र्क़ कर देता ।

(लुक़्तुल मरजान, फ़ी ख़ौफ़िल जिन्ने मिनल इन्स, स. 185)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क्या जिन्नात इन्सान को तक्लीफ़ दे सकते हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जिन्नात इन्सान को दो त़रह़ से तक्लीफ़ देते हैं :

(1) उस के जिस्म से बाहर रहते हुए ।

(2) उस के जिस्म में दाख़िल हो कर ।

(1) जिस्म से बाहर रह कर तक्लीफ़ देना

पैदाइश के वक़्त बच्चे के रोने की वजह :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना है : ''इब्ने आदम का जो बच्चा पैदा होता है उस की पैदाइश के वक़्त शैत़ान उस को मस करता (या'नी छूता) है और शैत़ान के मस करने से वोह बच्चा चीख़ मार कर रोता है मा सिवा ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और उन के बेटे के।'' (सह़ीहुल बुख़ारी, किताबिल अह़ादीसिल अम्बियाअ, अल ह़दीस:3431, जि.2, स.453)

त़ाऊ़न क्या है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरी उम्मत त़ा'न और त़ाऊ़न से हलाक होगी ।'' अ़र्ज़ की गई : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! त़ा'न के बारे में तो हम ने जान लिया मगर येह त़ाऊ़न क्या है ?'' फ़रमाया : ''येह तुम्हारे दुश्मन जिन्नात के नेज़ों की चुभन है, इन का मारा हुवा शहीद है ।'' (अल मुस्नदो लिल इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, मुस्नदो अबी मूसा अल अश्अ़री, अल ह़दीस : 19545, जि. 7, स. 131)

फ़ैज़ुल क़दीर में है : "येह इस लिये है कि (मुह़सन के लिये) ज़िना की ह़द रजम (या'नी पत्थर मार मार कर क़त्ल कर डालना) है लिहाज़ा जब ह़द क़ाइम न हो तो अल्लाह तआ़ला उन लोगों पर जिन्नात को मुसल्लत़ कर देता है जो इन को क़त्ल कर देते हैं।"

(फ़ैज़ुल क़दीर, حرف الهمزه, अल ह़दीस : 402, जि. 1, स. 343)

(2) जिन्नात का जिस्म में दाख़िल हो कर नुक़्सान पहुंचाना

जिन्न का इन्सान के बदन में दाख़िल होना भी कुरआनो अह़ादीस से साबित है, सू-रतुल ब-क़रह में है :

لَا یَقُوۡمُوۡنَ اِلَّا کَمَا یَقُوۡمُ الَّذِیۡ یَتَخَبَّطُہُ الشَّیۡطٰنُ مِنَ الۡمَسِّ ؕ

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : क़ियामत के दिन न खड़े होंगे मगर जैसे खड़ा होता है वोह जिसे आसेब ने छू कर मख़्बूत़ बना दिया हो।

(पारह : 3, अल ब-क़रह : 275)

अ़ल्लामा मुह़म्मद अह़मद अन्सारी क़ुरतुबी عليه رَحمَةُ اللهِ القَوى (अल मु-तवफ़्फ़ा 671 हि.) इस आयत के तह़्त लिखते हैं : "येह आयत उस शख़्स के इन्कार के फ़साद पर दलील है जो येह कहता है कि इन्सान को पड़ने वाला दौरा जिन्न की त़रफ़ से नहीं और गुमान करता है कि येह त़बीअ़तों का फ़े'ल है और शैत़ान इन्सान के न तो अन्दर चलता है और न उसे छूता है।" (अल जामिउ़ल अह़कामिल कुरआन, सू-रतुल ब-क़रह, तह़्तिल आयह : 275, जि. 2, स. 269)

पेट से जिन्न निकला

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बयान करते हैं कि एक औ़रत शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास अपने बेटे को लाई और अ़र्ज़ गुज़ार हुई : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे बेटे को जुनून आ़रिज़ होता है और येह हम को तंग करता है।'' आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के सीने पर हाथ फैरा और दुआ़ की। उस ने क़ै की और उस के पेट से सियाह कुत्ते के पिल्ले की त़रह़ कोई चीज़ निकली।

(मुस्नदुद्दारिमी, अल ह़दीस : 19, जि. 1, स. 24)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ऐ दुश्मने खुदा निकल जा

ह़ज़रते सय्यिदुना या'ला बिन मुर्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि एक औ़रत नबिय्ये अक्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास अपने बेटे को ले कर आई और कहा : ''इस को कुछ जुनून है।'' आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''ऐ दुश्मने ख़ुदा निकल जा, मैं अल्लाह का रसूल हूं।'' फिर वोह बच्चा ठीक हो गया।

(मुस्नदो अह़मद, मुस्नदो शामिय्यीन, अल ह़दीस : 17574, जि.6, स. 178)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ज़िन्दगी भर दोबारा न आया

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबिल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि जब नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे त़ाइफ़ का आ़मिल

बनाया तो कोई चीज़ आ कर मुझे नमाज़ में सताती थी ह़त्ता कि मुझे पता नहीं चलता था कि मैं नमाज़ में क्या पढ़ रहा हूं। मैं म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बे कस पनाह में ह़ाज़िर हुवा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आने का मक़्सद दर्याफ़्त फ़रमाया तो मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! नमाज़ में मुझे कोई चीज़ आ कर सताती है ह़त्ता कि मुझे पता नहीं चलता कि मैं नमाज़ में क्या पढ़ रहा हूं।" आप ने फ़रमाया : "येह शैत़ान है, क़रीब आओ।" मैं आप के क़रीब गया और अपने क़दमों के बल बैठ गया। आप ने मेरे सीने पर हाथ मारा और मेरे मुंह में अपना लुआ़बे अक़्दस डाला और फ़रमाया : "ऐ अल्लाह के दुश्मन निकल जा।" आप ने तीन बार येह अ़मल किया और फ़रमाया : "अब तुम अपने काम पर जाओ।" ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "मुझे अपनी ज़िन्दगी की क़सम इस के बा'द वोह मुझ में नहीं आया।"

(सु-ननो इब्ने माजह, किताबुत्तिब, अल ह़दीस : 3548, जि. 4, स. 137)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तन्दुरुस्त हो गया

ह़ज़रते सय्यिदुना वज़ाअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि जब हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे साथ मेरा मज्नून बेटा या भान्जा है, मैं उस को आप के पास लाऊंगा ताकि आप उस के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करें।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इजाज़त अ़ता कर दी। मैं उस के पास गया वोह उस वक़्त ऊंटों के पास था, मैं ने उस के सफ़र

के कपड़े उतारे और उस को अच्छे कपड़े पहनाए और उस का हाथ पकड़ कर उस को रसूले अक्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ले आया। आप ने फ़रमाया इस को मेरे क़रीब करो और इस की पुश्त मेरी त़रफ़ कर दो। फिर आप ने ऊपर और नीचे उस के कपड़ों को उठाया ह़त्ता कि मैं ने उस की बग़ल की सफ़ेदी देखी और आप उस की पुश्त पर मारते रहे और फ़रमाया : ''अल्लाह के दुश्मन निकल !'' तब वोह लड़का तन्दुरुस्त आदमी की त़रह़ देखने लगा, जब कि पहले इस त़रह़ नहीं देखता था। फिर प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को अपने सामने बिठा कर दुआ़ की और उस के चेहरे पर दस्ते शफ़्क़त फैरा। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस दुआ़ के बा'द कोई शख़्स ख़ुद को उस पर फ़ज़ीलत नहीं देता था। (मज्मउ़ज़्ज़वाइद, अल ह़दीस : 14149, जि. 8, स. 554)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कभी कोई चीज़ नहीं भूला

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबिल आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बयान करते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से क़ुरआने मजीद भूलने की शिकायत की तो आप ने मेरे सीने पर दस्ते पुर अन्वर से ज़र्ब लगाई और फ़रमाया : ''ऐ शैत़ान ! उ़स्मान के सीने से निकल जा।'' इस के बा'द मैं कभी उस चीज़ को नहीं भूला जिस को मैं याद रखना चाहता था।

(अल मो'जमुल कबीर, अल ह़दीस : 8347, जि. 9, स. 47)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जिन्नात इन्सान को इग़्वा भी करते हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

कसीर रिवायात से साबित है कि जिन्नात इन्सान को इग़्वा भी करते हैं। चन्द हिकायात मुला-हज़ा हों :

एक यहूदिया का बच्चा इग़्वा हो गया

एक मर्तबा नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के झुरमट में तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक यहूदी औरत आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में रोती हुई हाज़िर हुई और येह अश्आर पढ़ने लगी।

بِـاَبِیْ اَفْـدِیْکَ یَـانُوْرَ الْفَلَکِ لَیْـتَ شَـعْـرِیْ اَیُّ شَیْـئٍ قَتَـلَکْ

غِبْـتَ عَـنِّـیْ غَیْبَۃً مُّـوْحِشَۃً اَتُـرٰی ذِئْـبٌ یَھُـوْدِیٌّ اَکَـلَکْ

اِنْ تَـکُـنْ مَیْتًـا فَـمَـا اَسْرَعَ مَا کَـانَ فِـیْ اَمْـرِ الـلَّیَـالِیْ اَجَـلَکْ

اَوْ تَـکُـنْ حَیًّـا فَلا بُـدَّ لِـمَـنْ عَـاشَ اَنْ یَّـرْجِعَ مِنْ حَیْـثُ سَلَکْ

तरजमा : (1) ऐ मेरे चांद (या'नी मेरे बेटे) मेरा बाप तुम पर फ़िदा, काश ! मुझे तेरे क़ातिल का इ़ल्म होता।

(2) तेरा मुझ से यूं ओझल होना वहूशत नाक है, क्या तुझे यहूदी भेड़िया खा गया है।

(3) अगर तू फ़ौत हो चुका है तो रातों रात तेरा येह मर जाना किसी क़दर जल्द हुवा है, अगर तू फ़ौत हो चुका है तो तेरी ख़ातिर मेरी रातें किस भयानक त़रीक़े से कटेंगी।

(4) अगर तू ज़िन्दा है तो तुझ पर लाज़िम है कि जहां से चला था जीते जी वहीं पलट आ।

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से पूछा ऐ औरत ! तुझे क्या

सदमा पहुंचा है ? अ़र्ज़ करने लगी : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरा बच्चा मेरे सामने खेल रहा था कि अचानक ग़ाइब हो गया, उस के बग़ैर मेरा घर वीरान हो गया है।''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे ज़रीए तुम्हारे बच्चे को लौटा दे तो क्या तुम मुझ पर ईमान ले आओगी ?'' औ़रत बोली : ''जी हां ! मुझे अम्बियाए किराम हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम, हज़रते सय्यिदुना इस्हाक़ और हज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के हक़ होने की क़सम ! मैं ज़रूर ईमान ले आऊंगी।''

रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उठे और दो रक्अ़तें अदा फ़रमाईं फिर देर तक दुआ़ मांगते रहे। जब दुआ़ मुकम्मल हुई तो बच्चा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने मौजूद था। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बच्चे से पूछा कि ''तुम कहां थे ?'' बोला कि ''मैं अपनी मां के सामने खेल रहा था कि अचानक एक काफ़िर जिन्न मेरे सामने आया और मुझे उठा कर समुन्दर की त़रफ़ ले गया। जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने एक मोमिन जिन्न को उस पर मुसल्लत़ कर दिया जो जसामत में उस से बड़ा और त़ाक़त वर था। उस ने मुझे काफ़िर जिन्न से छीन कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पहुंचा दिया और अब मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने ह़ाज़िर हूं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर रह़मत नाज़िल फ़रमाए।'' वोह औ़रत येह वाक़िआ़ सुनते ही कलिमए शहादत पढ़ कर मुसल्मान हो गई।

(बह़रुद्दुमूअ़, الفصل السادس والعشرون صفات التائبين والعباد الصالحين, स. 162)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़दीसे ख़ुराफ़ा

ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं की एक रात सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात को एक (अ़जीब) वाक़िआ़ सुनाया तो उन में से एक ने अ़र्ज़ की : ''गोया येह बात ह़दीसे ख़ुराफ़ा है ।'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दर्याफ़्त फ़रमाया : ''क्या तुम जानती हो कि ख़ुराफ़ा कौन था ?'' फिर ख़ुद ही फ़रमाने लगे : ''ख़ुराफ़ा क़बीला उ़ज़्रह का एक शख़्स था जिसे ज़मानए जाहिलिय्यत में जिन्नात ने क़ैद कर लिया । वोह त़वील अ़र्सा उन में रहा । फिर उन्हों ने उसे आज़ाद कर के इन्सानों की त़रफ़ रवाना कर दिया । उस ने वोह तमाम अ़जाइबात लोगों को सुनाए जो उस ने जिन्नों में देखे थे । फिर लोग हर अ़जीब बात के बारे में येह (मुह़ावरतन) कहने लगे : ''येह तो ह़दीसे ख़ुराफ़ा है ।'' (अश्शमाइलुल मुह़म्मदिय्यह वल ख़साइसिल मुस-त-फ़विय्यह लित्तिरमिज़ी, स. 150)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कई साल तक ग़ाइब रहे

एक अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इ़शा की नमाज़ के लिये घर से निकले तो उन को **जिन्नात** ने **इग़्वा** कर लिया और कई साल तक ग़ाइब रखा । फिर वोह मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعۡظِیۡمًا तशरीफ़ लाए तो अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) ने उन से इस सिल्सिले में दर्याफ़्त किया तो उन्हों ने बताया कि मुझे जिन्नात पकड़ कर ले गए थे और मैं एक ज़माना तक उन के पास रहा । इस के बा'द **मुसल्मान जिन्नात** ने (उन जिन्नात से) जिहाद किया और उन में से बहुत से अफ़्राद के साथ मुझे भी क़ैद कर

लिया। उन्हों ने मुझ से मेरा दीन दर्याफ़्त किया। मैं ने कहा : "इस्लाम।" **मुसल्मान जिन्नात** आपस में कहने लगे कि येह हमारे दीन पर है इस को क़ैद करना मुनासिब नहीं। फिर उन्हों ने मुझे इख़्तियार दिया कि चाहे मैं उन के पास क़ियाम करूं या अपने अहलो इयाल के पास चला जाऊं। मैं ने घर आने को इख़्तियार कर लिया तो वोह **जिन्नात** मुझे मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيْماً ले आए। (लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, अल बाबिल ख़ामिस वस्सलासून, स. 76, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इग़वा होने वाली लड़की

ह़ज़रते सय्यिदुना नज़र बिन अ़म्र ह़ारिसी (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) रिवायत करते हैं कि जाहिलिय्यत के ज़माने में हमारा एक कूंआं था। मैं ने अपनी बेटी को एक पियाला दे कर पानी लेने के लिये भेजा। बहुत देर गुज़र गई मगर वोह लौट कर न आई। हम ने उस को बहुत तलाशा मगर ना काम रहे यहां तक कि हमें उस के मिलने की उम्मीद न रही। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं एक रात अपने साएबान के नीचे बैठा था कि मुझे दूर से एक साया नज़र आया। जब वोह साया थोड़ा क़रीब हुवा तो मैं ने देखा कि वोह मेरी ही बेटी थी। मैं ने ह़ैरत और ख़ुशी के मिले जुले लहजे में पूछा : "तुम मेरी ही बेटी हो ?" उस ने कहा : "जी हां ! मैं आप की बेटी हूं।" मैं ने पूछा : "बेटी ! तुम कहां थी ?" उस ने कहा : "आप को याद है कि आप ने मुझे एक रात कूंएं पर भेजा था, वहां से मुझे एक जिन्न ने पकड़ लिया और मुझे उड़ा कर ले गया। मैं उस के पास उस वक़्त तक रही कि उस के और जिन्नों की एक जमाअ़त के दरमियान जंग वाक़ेअ़ हुई तो उस जिन्न ने मेरे साथ

अ़हद किया कि अगर वोह इन पर ग़-लबा पाने में काम्याब हो गया तो वोह मुझे आप के पास वापस लौटा देगा। चुनान्चे वोह काम्याब हुवा और मुझे आप के पास लौटा दिया।'' मैं ने अपनी बेटी को ज़रा ग़ौर से देखा तो उस का रंग सांवला हो चुका था और उस के बाल कम हो गए और इन्तिहाई कमज़ोर दिखाई दे रही थी। कुछ अ़र्सा बा'द उस की सिह़्ह़त बह़ाल हो गई। उस के चचाज़ाद भाई ने उस से निकाह़ का पैग़ाम भेजा तो हम ने उस का निकाह़ कर दिया। उस जिन्न ने अपने और उस लड़की के दरमियान एक अ़लामत मुक़र्रर कर रखी थी कि जब उसे ज़रूरत पड़े तो उस जिन्न को बुला ले जब उस का शोहर उस लड़की को देखता तो वोह शक करता कि वोह किसी को इशारा कर रही है और उसे बुरा भला कहता। एक मर्तबा उस ने अपनी बीवी से कहा : ''तू शैत़ान जिन्न है इन्सान नहीं है।''उस लड़की ने उस मुक़र्ररा अ़लामत के ज़रीए़ इशारा किया तो उस के शोहर को एक पुकारने वाले ने आवाज़ दी : ''इस ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? अगर तू इस की त़रफ़ बढ़ा तो मैं तेरी आंखें फोड़ दूंगा मैं ने ज़मानए जाहिलिय्यत में अपने मक़ाम व मर्तबा की वजह से इस की ह़िफ़ाज़त की है और मुसल्मान होने के बा'द भी अपने दीन के ए'तिबार से इस की ह़िफ़ाज़त करता रहूंगा।'' तो उस जवान ने कहा तू हमारे सामने क्यूं नहीं आता हम भी तो तुम्हें देखें। उस ने कहा येह हमारे लिये मुनासिब नहीं क्यूं कि हमारे बाप दादा ने हमारे लिये तीन चीज़ों का सुवाल किया था :

1. हम ख़ुद तो देख सकें लेकिन कोई हमें न देखे।
2. हम सत़्ह़े ज़मीन के नीचे रहें।

3. हमारा हर एक बुढ़ापे से अपने घुटनों तक पहुंच कर दोबारा जवान हो जाए ।

(किताबिल हवातिफ़ लि इब्ने अबिद्दुन्या, रक़म : 110, जि. 2, स. 499)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आ़शिक़ जिन्न ने इग़्वा कर लिया

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सा'द अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद बग़दादी अज़्जी عليه رَحْمَةُ اللهِ القوى फ़रमाते हैं कि मेरी 16 सालह बेटी जिस का नाम फ़ाति़मा था । एक मर्तबा वोह किसी काम से छत पर चढ़ी तो उस को कोई उठा कर ले गया । मैं हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म शैख़ मुह़्यूद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और सारा माजरा बयान कर के मदद चाही । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيه ने फ़रमाया : "आज की रात तुम कर्ख़ के जंगल की त़रफ़ जाओ । पांचवें टीले के पास जा कर ज़मीन पर अपने गिर्द एक दाएरा खींच कर बैठ जाओ और ख़त़ खींचने के वक़्त येह कहना بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى نِيَّةِ عَبْدِالْقَادِر رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيه फिर जब थोड़ी रात आ जाएगी तो तुम्हारे पास जिन्नों का गुरौह आएगा । जिन की सूरत मुख़्तलिफ़ होंगी, तुम उन से मत डरना । जब सुब्ह़ हो जाएगी तो उस वक़्त उन का बादशाह तुम्हारे पास एक लश्कर के साथ आएगा तुम से तुम्हारा मत़्लब पूछेगा तुम उन्हें कह देना कि मुझे अ़ब्दुल क़ादिर (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيه) ने तुम्हारी त़रफ़ भेजा है और उस से अपनी लड़की का ह़ाल बयान करना ।"

चुनान्चे मैं मज़्कूरा मक़ाम पर गया और जो कुछ मुझे आप ने हुक्म दिया था उस के मुवाफ़िक़ अ़मल किया । मुझ पर डराउनी शक्ल वाली सूरतें गुज़रीं लेकिन किसी को मजाल न थी कि उस दाएरे के क़रीब

आए जो मैं ने अपने गिर्द खींच रखा था। रात भर जिन्नात के आने जाने का सिल्सिला जारी रहा ह़त्ता कि उन का बादशाह घोड़े पर सुवार हो कर आया उस के साथ भी जिन्नात का एक गुरौह था। वोह आ कर दाएरे के पास खड़ा हो गया और कहने लगा : "ऐ इन्सान तुम्हारी क्या ह़ाजत है ?" मैं ने कहा : "मुझे शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने तुम्हारी त़रफ़ भेजा है।" तब वोह घोड़े से उतर पड़ा और दाएरे से बाहर बैठ गया। उस के साथी भी बैठ गए और कहा : "तुम्हारा क्या मस्अला है ?" तब मैं ने अपनी लड़की का ह़ाल बयान किया। उस ने अपने साथियों से पूछा : "येह काम किस ने किया है ?" उन्हों ने ला इ़ल्मी का इज़्हार किया और थोड़ी देर के बा'द एक जिन्न को पकड़ कर लाए। जिस के साथ वोह लड़की थी और बताया गया कि येह चीन का जिन्न है। उस से पूछा गया कि तुम्हें किस चीज़ ने इस पर उभारा कि क़ुत़्ब की रिकाब के नीचे चोरी करो। उस ने ह़क़ीक़ते ह़ाल बताते हुए कहा : "मैं ने इस को देखा और इस की मह़ब्बत मेरे दिल में आई।" बादशाह ने हुक्म दिया कि इस की गरदन उड़ा दी जाए। मेरी बेटी मेरे ह़वाले कर दी गई। मैं ने उस से कहा कि मैं ने आज की रात का सा मुआ़-मला कभी नहीं देखा, फिर उस से पूछा : "तुम ग़ौसुल आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की इस क़दर फ़रमां बरदारी करते हो ?" उस ने कहा : "हां बेशक वोह अपने घर बैठे हमारे जिन्नों को देखते हैं ह़ालां कि वोह जिन्नात बहुत दूर के रहने वाले होते हैं। और ख़ुदा तआ़ला जब किसी क़ुत़्ब को मुक़र्रर करता है तो उस को जिन्न व इन्स पर ग़-लबा देता है।"

(बहजतुल असरार, ذكر فصول من كلامه مرصعا...الخ, स. 140)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़त्ल का बदला लेने के लिये इग़्वा कर लिया

हज़रते सय्यिदुना **शाह वलिय्युल्लाह** मुहृद्दिसे देहलवी عليه رَحْمَةُ اللهِ القوی एक बार मश्ग़ूले तिलावते कुरआन थे कि एक सांप नज़र आया आप ने उसे मार डाला। दर अस्ल वोह **सांप** नहीं बल्कि **जिन्न** था चुनान्चे थोड़ी देर के बा'द **जिन्न** आए और शाह साहिब को उठा कर ले गए और उन को **जिन्नात** के बादशाह के सामने पेश कर दिया। मुद्दई ने बादशाह के रू बरू फ़रियाद की के शाह साहिब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيه ने मेरे बेटे को क़त्ल कर दिया है। हम ख़ून का बदला ख़ून चाहते हैं। बादशाह ने जब तस्दीक़ कर ली कि वाक़ेई शाह साहिब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيه ने **सांप** की शक्ल में गुज़रने वाले **जिन्न** को मार दिया है तो वोह शाह साहिब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيه के क़त्ल का हुक्म सादिर करने वाला ही था कि वहां मौजूद एक बूढ़े **जिन्न** ने कहा, "मैं ने **ताजदारे मदीना**, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना है, "जिस का क़त्ल करना जाइज़ न हो मगर वोह ऐसी क़ौम की वज़्अ़ में हो जिस का क़त्ल किया जाना जाइज़ है तो उसे अगर कोई क़त्ल कर दे तो उस का ख़ून मुआफ़ है।" चूंकि मुद्दई जिन्न साहिब का फ़रज़न्द **सांप** की शक्ल में था और **सांप** को मार देना जाइज़ है इस लिये **शाह साहिब** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيه ने उस को **सांप** समझ कर मार दिया है लिहाज़ा ब मूजिबे हदीस शाह साहिब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيه पर क़िसास नहीं।" येह हदीसे पाक सुन कर **जिन्नात** के बादशाह ने शाह साहिब को बा इज़्ज़त बरी कर दिया और उन दोनों **जिन्नात** ने शाह साहिब को उन की जगह पर पहुंचा दिया। (जिन्नात की हिकायात, स. 29, ब हवाला अत्तहरीरिल अफ़्ख़म)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जिन्नात इन्सानों को क़त्ल भी करते हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जिस त़रह़ इन्सान के हाथों इन्सान क़त्ल हो जाता है इसी त़रह़ **बा'ज़ अवक़ात** जिन्नात भी इन्सानों को क़त्ल कर डालते हैं, चन्द रिवायात मुला-ह़ज़ा हों :

ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जिन्नों ने क़त्ल किया

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सीरीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है : ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस्तिन्जा के दौरान जब पहलू पर सहारा लिया तो इन्तिक़ाल कर गए। दर अस्ल उन्हें जिन्नों ने क़त्ल किया और यूं कहा : "हम ने आले ख़ज़रज के सरदार सा'द बिन उ़बादा को क़त्ल किया, हम ने उसे दिल की त़रफ़ तीर मारा, हमारा निशाना ख़ता न हुवा।"

(अल मो'जमुल कबीर, अल ह़दीस : 5359, जि. 6, स. 16)

बदकार इन्सानों को क़त्ल करने वाले जिन्नात

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ **फ़ैज़ाने सुन्नत** के बाब "आदाबे त़आ़म" में सफ़ह़ा नम्बर **161** पर तह़रीर फ़रमाते हैं कि बा'ज़ अवक़ात मुसल्मान जिन्नात बदकार इन्सानों को सज़ाएं भी देते हैं चुनान्चे इब्ने अ़क़ील "किताबिल फ़ुनून" में फ़रमाते हैं, हमारा एक मकान था जो भी उस में रहता और रात क़ियाम करता तो सुब्ह़ को उस की **लाश** ही मिलती ! एक मर्तबा एक मग़्रिबी मुसल्मान आया और उस ने इस मकान को पसन्द कर के ख़रीद लिया। वहां रात बसर की और सुब्ह़ को बिल्कुल सह़ीह़ व सलामत रहा। इस बात से पड़ोसियों को तअ़ज्जुब

हुवा । वोह शख़्स उस घर में काफ़ी अ़र्सा तक मुक़ीम रहा फिर कहीं चला गया । जब उस से (इस घर में सलामत रहने का सबब) पूछा गया तो उस ने जवाब दिया, जब मैं इस घर में रात गुज़ारता तो इ़शा की नमाज़ के बा'द क़ुरआने करीम की तिलावत किया करता । एक बार एक पुर असरार नौ जवान ने कूंएं से बाहर निकल कर मुझे सलाम किया । मैं डर गया । वोह कहने लगा, डरिये मत मुझे भी कुछ क़ुरआने करीम सिखाइये । चुनान्चे मैं उसे क़ुरआने करीम सिखाने लगा । मैं ने उस से पूछा, इस घर का क्या क़िस्सा है ? उस ने बताया, हम **मुसल्मान जिन्नात** हैं हम क़ुरआने पाक की तिलावत भी करते हैं और नमाज़ भी पढ़ते हैं **। इस घर में अक्सर व बेशतर शराबी और बदकार लोग रहने के लिये आए इस लिये हम ने गला घोंट कर उन को मार डाला ।** मैं ने उस से कहा, रात में आप से डर लगता है, बराए करम ! दिन में तशरीफ़ लाया करें, उस ने कहा, ठीक है ।

चुनान्चे वोह दिन में कूंएं से बाहर आता और मैं उसे पढ़ाता । एक मर्तबा ऐसा हुवा कि वोह जिन्न मुझ से क़ुरआन सीख रहा था कि एक अ़-मलिय्यात करने वाला महल्ले में आया और सदाएं लगाने लगा । "मैं सांप के डसने, नज़रे बद और आसेब का दम करता हूं ।" उस **जिन्न** ने कहा, येह कौन है ? मैं ने कहा, येह झाड़ फूंक करने वाला है । **जिन्न** बोला, उसे मेरे पास बुलाओ, लिहाज़ा मैं गया और उसे बुला लाया । **यकायक वोह जिन्न छत पर एक बहुत बड़ा अज़्दहा बन गया !** उस आ़मिल ने दम किया तो वोह अज़्दहा तड़पने लगा यहां तक कि घर के दरमियानी हिस्से में गिर पड़ा । उस **आ़मिल** ने (सांप समझ कर) उसे पकड़ कर अपनी ज़म्बील (टोकरी) में बन्द कर दिया मैं ने उसे मन्अ़

किया तो कहने लगा, येह मेरा शिकार है मैं इस को ले जाऊंगा। मैं ने उसे एक अश्रफ़ी दी तो वोह छोड़ कर चला गया। उस के जाने के बा'द उस अज़्दहे ने ह़-र-कत की और पहली वाली शक्ल में ज़ाहिर हुवा लेकिन वोह कमज़ोर हो कर पीला पड़ गया था! मैं ने उस से पूछा, तुम्हें क्या हो गया? **जिन्न** ने जवाब दिया **आ़मिल** ने अस्माए मुबा-रका पढ़ कर दम किया जिस से मेरी येह ह़ालत हुई, मुझे ज़िन्दा बचने की उम्मीद न थी। जब तुम कूंएं में चीख़ की आवाज़ सुनो तो यहां से चले जाना। मग़्रिबी मुसल्मान का कहना है, मैं ने रात में **चीख़** की आवाज़ सुनी तो मैं घर छोड़ कर दूर चला गया। (लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, تحمل الجن العلم عن الانس...الخ, स. 105)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस सन्सनी ख़ेज़ ह़िकायत से येह सीखने को मिला कि बसा अवक़ात मज़ाक़ महंगा पड़ जाता है। ग़ालिबन उस जिन्न ने अज़्दहा बन कर उस आ़मिल को छेड़ने की कोशिश की थी कि देखुं येह क्या करता है मगर वोह आ़मिल अपने फ़न में कामिल निकला और उस ने अस्माए मुबा-रका पढ़ कर ऐसा दम किया कि उस बेचारे **जिन्न** को जान के लाले पड़ गए। लिहाज़ा किसी को कमज़ोर समझ कर छेड़ना नहीं चाहिये। नीज़ पता चला कि **गुनाहों की नुहूसत के सबब दुन्या में** भी **बलाएं और आफ़तें आ सकती हैं** जैसा कि उस आसेब ज़दा मकान में आने वाले शराबियों और बदकारों को जिन्नात गला घोंट कर मार देते थे इस से घरों में फ़िल्में डिरामे देखने वालों और त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में मश्ग़ूल रहने वालों को इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये कि कहीं दुन्या में भी गुनाहों की पादाश में कोई **जिन्न**

मुसल्लत़ न हो जाए ! नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि **इबादत व तिलावत से बलाएं टलती हैं ।** जैसा कि उस **पुर असरार मकान** के जिन्न ने नमाज़ व तिलावत करने वाले मुसल्मान की शागिर्दी इख़्तियार कर ली । लिहाज़ा अपने घर को नमाज़ों, तिलावतों और ना'तों से आबाद रखिये और फ़िल्मों, डिरामों, गाने बाजों की नुहूसतों से दूर रहिये, اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ ब-र-कतें ही ब-र-कतें होंगी । गुनाहों की आ़दतों से नजात और इबादत की तरबिय्यत के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी क़ाफ़िलों में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये । आख़िरत के अ़ज़ीम सवाबात के साथ साथ اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ दुन्यवी आफ़ात व बलिय्यात से नजात का भी सामान होगा ।

ख़ुदकुशी या क़त्ल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की **मजलिसे** मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या के एक इस्लामी भाई का कहना है कि हमें एक मक्तूब मौसूल हुवा जिस में एक मां की त़रफ़ से कुछ यूं तह़रीर था :

''**मेरा** एक बेटा था जो पन्ज वक़्ता नमाज़ का पाबन्द और उस के चेहरे पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ दाढ़ी भी थी । उसे **अ़-मलिय्यात** वग़ैरा का बहुत शौक़ था । वोह मुख़्तलिफ़ वज़ाइफ़ पढ़ता रहता । बारहा ऐसा हुवा कि वोह रात के वक्त कब्रिस्तान चला जाता और सारी रात कोई अमल करता रहता । एक रोज़ सुब्ह़ जब हम सो कर उठे तो येह देख कर मेरी आंखों के आगे अंधेरा छा गया कि मेरा बेटा अपने बिस्तर पर ही मौत से हम किनार हो चुका था । उस के गले में चादर का **फन्दा** था जिस से लगता था कि उस ने **ख़ुदकुशी** कर ली है । ह़ालां कि ब ज़ाहिर उसे कोई परेशानी न थी ।

उस की तदफ़ीन के बा'द से कुछ **हैरत अंगेज़ वाक़िआ़त** देखने में आ रहे हैं कि मेरा वोह मर्हूम बेटा कभी बिस्तर पर लैटे हुए, तो कभी स्कूटर पर बैठे हुए तो कभी घर में खड़े हुए नज़र आता है। लेकिन जब हम उसे आवाज़ देते हैं तो वोह ग़ाइब हो जाता है। हम सब इन्तिहाई परेशान हैं कि आख़िर येह क्या मुआ़-मला है ? क्या मेरा बेटा ज़िन्दा है ? और अगर मर चुका है तो **दोबारा नज़र आने की क्या ह़क़ीक़त है ?**''

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने कुछ इस त़रह़ जवाब इर्शाद फ़रमाया कि आप के मक्तूब से लगता है, (कि आप के बेटे ने) किसी **जिन्न** को क़ाबू करने के लिये अ़-मलियात व वज़ाइफ़ किये होंगे और ताबेअ़ करने में ना काम रहे होंगे या क़ाबू कर लेने के बा'द कोई ख़त़ा हो गई होगी और वोह **जिन्न** आज़ाद हो गया फिर मुश्तइ़ल हो कर उस **जिन्न** ने आप के बेटे को क़त्ल कर दिया। अब वोह जिन्न बेटे के रूप में आ कर आप को परेशान कर रहा है। **واللہ تعالٰی اعلمُ وَ رسولُہ اعلم** عزوجل وصلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इन्सानों के हाथों क़त्ल होने वाले जिन्नात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जिस त़रह़ जिन्नात इन्सान को क़त्ल करते हैं इसी त़रह़ बा'ज़ अवक़ात **जिन्नात** को ख़ुद इन्सान के हाथों जामे मौत पीना पड़ता है, चन्द हिकायात मुला-ह़ज़ा हों :

त़ालिबे इ़ल्म के हाथों क़त्ल होने वाला जिन्न

एक त़ालिबे इ़ल्म सफ़र कर रहा था कि रास्ते में एक शख़्स उस

के साथ हो गया। जब वोह अपनी मन्ज़िल के क़रीब पहुंचा तो उस शख़्स ने त़ालिबे इ़ल्म से कहा : "मेरा तुझ पर एक ह़क़ और ज़िम्मा है, मैं एक जिन्न हूं मुझे तुम से एक काम है।" त़ालिबे इ़ल्म ने पूछा : "क्या काम है ?" जिन्न ने कहा : "जब तू फुलां घर में जाएगा तो वहां तुम्हें एक सफ़ेद मुर्ग़ मिलेगा उस के मालिक से पूछ कर उस को ख़रीद लेना और उसे ज़ब्ह़ कर देना।" त़ालिबे इ़ल्म ने कहा : "ऐ भाई ! मुझे भी तुम से एक काम है।" जिन्न ने पूछा : "वोह क्या ?" त़ालिबे इ़ल्म ने कहा : "जब शैत़ान सरकश हो जाए और झाड़ फूंक वग़ैरा कुछ फ़ाएदा न दे और आदमी को परेशान कर दे तो इस का क्या इ़लाज है ?" जिन्न ने इ़लाज बताया : "छोटी दुम वाले बारह सिंगे की खाल उतारी जाए और जिन्न के असर वाले आदमी के हाथों के दोनों अंगूठों पर मज़्बूत़ी से बांध दी जाए फिर सदाब बरी (एक क़िस्म का काला दाना जिस को औ़रतें नज़रे बद उतारने के लिये जलाती हैं) का तेल ले कर उस की नाक के दाहिने नथने में चार मर्तबा और बाएं नथने में तीन मर्तबा डाल दिया जाए तो उस का जिन्न मर जाएगा, फिर कोई दूसरा जिन्न भी उस के पास नहीं आएगा।"

वोह त़ालिबे इ़ल्म कहता है कि जब मैं उस शहर में दाख़िल हुवा तो उस मकान में आया। वहां मुझे मा'लूम हुवा कि बुढ़िया के पास वाक़ेई एक मुर्ग़ है। मैं ने उस से बेचने के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा तो उस ने इन्कार कर दिया। बहर कैफ़ मैं ने उस को कई गुना क़ीमत में ख़रीद लिया। जब मैं ख़रीद चुका तो जिन्न ने दूर से मुझे शक्ल दिखाई और इशारे से कहा, इस को ज़ब्ह़ कर दे। मैं ने वोह मुर्ग़ ज़ब्ह़ कर दिया। देखते ही देखते बहुत से मर्द और औ़रतें बाहर निकल आए और मुझे

मारने लगे और मुझे जादूगर क़रार देने लगे। मैं ने उन्हें समझाते हुए कहा : ''नहीं ! मैं जादूगर नहीं हूं।'' उन्हों ने मुझ से शिक्वा किया कि जब से तुम ने उस मुर्ग़ को ज़ब्ह़ किया है हमारी लड़की पर जिन्न ने ह़म्ला कर दिया है। येह सुन कर मैं ने उन से छोटी दुम वाले बारह सिंगे की एक खाल और सदाब बरी का तेल मंगवाया। जब मैं ने जिन्न का बताया हुवा वोही अ़मल किया तो वोह जिन्न चीख़ पड़ा : ''क्या मैं ने तुम्हें येह अ़मल अपने ख़िलाफ़ बताया था।'' जब उस लड़की की नाक में तेल के क़त़रे डाले गए तो वोह जिन्न उसी वक़्त मर गया और अल्लाह तआ़ला ने उस लड़की को शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाई। (लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, فی احکام الجان،ما یعتصم به منهم, स. 165)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रव़ौफ़नाक जिन्न की हलाकत

लियाक़त आबाद (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई का बयान कुछ इस त़रह़ से है कि हमारे अ़लाक़े में एक कश्मीरी इस्लामी भाई रहते थे। उन लोगों के ख़ानदान में जाएदाद के मुआ़-मलात की वजह से आपस में ख़ूब ठनी हुई थी। किसी आ़मिल की फ़राहम कर्दा मा'लूमात की बिना पर उन का कहना कुछ यूं था कि **हमारे** किसी मुख़ालिफ़ ने काला जादू (ऐसा जादू या मन्तर जो शैत़ान की मदद से किसी को नुक़्सान पहुंचाने के लिये इस्ति'माल किया जाए।) करवा कर चन्द ग़ैर मुस्लिम **सरकश जिन्नात** हम पर मुसल्लत़ करवा दिये थे। वोह हमें त़रह़ त़रह़ से सताते रहते। हम ने इ़लाज की बहुत कोशिशें कीं मगर ना काम रहे। बिल आख़िर तंग आ कर हम अपना आबाई शहर छोड़ कर लियाक़त आबाद बाबुल मदीना कराची में आन बसे। मगर अ़-मलिय्यात

के ज़रीए़ होने वाले परेशान कुन सिल्सिले यूं ही जारी रहे।

हमें कड़ी आज़माइश का सामना था। बिल ख़ुसूस सब से छोटे भाई पर **ग़ैर मुस्लिम जिन्न** ज़ाहिर होता और तकालीफ़ देने के साथ साथ धम्कियां भी देता। हम माली और जानी दोनों क़िस्म के नुक़्सानात से दो चार हुए। म-सलन एक दिन हमारे ख़ालू फ़ेक्टरी में काम कर रहे थे कि अचानक ऊपर से कोई तेज़ धारदार चीज़ उन पर आ गिरी और उन का जिस्म दो हिस्सों में तक़्सीम हो गया। इसी त़रह़ बग़ैर किसी बीमारी और ज़ाहिरी सबब के वालिद साहिब का भी इन्तिक़ाल हो गया और वालिदा भी दुन्या से रुख़्सत हो गईं। इन्ही परेशानियों में **8** साल का त़वील अ़र्सा गुज़र गया। एक ख़ुश आइन्द बात येह हुई कि इस दौरान हमारा घराना **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गया और तमाम अहले ख़ाना **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद हो कर **अ़त्तारी** भी बन गए।

एक दिन घर वालों में से कोई छोटे भाई के इ़लाज के लिये एक आ़मिल को लाए। उस ने जैसे ही छोटे भाई के सामने इ़लाज की ग़रज़ से फ़तीला (या'नी धूनी का धागा) जलाया **एक जिन्न** इन्तिहाई ग़ुस्से के आ़लम में मेरे भाई पर ज़ाहिर हुवा और उस आ़मिल को उठा कर ज़ोर से दीवार पर मारा। वोह काफ़ी देर तक बेहोश रहा। जब उसे होश आया तो उस ने फ़ौरन वापसी की राह ली। आ़मिल से दो दो हाथ करने के बा'द अब वोह **जिन्न** हैबत नाक अन्दाज़ में घर वालों की त़रफ़ बढ़ा तो घर वालों की ख़ौफ़ के मारे चीख़ें निकल गईं। अचानक वोह जिन्न रुक गया और दरवाज़े की त़रफ़ देखने लगा (रोशनी की वजह से) उस की आंखें चुंधिया गईं। फिर उस ने किसी से बात चीत शुरूअ़ कर दी। कोई दिखाई

न दे रहा था। घर वाले आंखें फाड़ फाड़ कर देख रहे थे कि आख़िर येह किस से बातें कर रहा है ? **जिन्न** बोला कौन हो तुम ? **इल्यास क़ादिरी** (مدظلہ العالی)...... **अच्छा......** **''पीर''** हो इन के ! हां हां ! मुझे इन के फुलां रिश्तेदार ने भेजा है...... हां इन के ख़ालू को मैं ने क़त्ल किया है, वग़ैरा वग़ैरा। इस त़रह़ वोह **सरकश जिन्न** अपने सियाह कारनामों की रूदाद सुना रहा था। उस की बातों से हमें लगा कि शायद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه रूह़ानी तौ़र पर हमारी मदद के लिये तशरीफ़ ले आए थे और उस जिन्न से कुछ सुवालात कर रहे थे जिन के वोह जवाबात दे रहा था। फिर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने ग़ालिबन उस से उस का मज़्हब दर्याफ़्त फ़रमाया जिस पर उस ने बताया कि मैं ग़ैर मुस्लिम हूं।

फिर ऐसा मह़सूस हुवा जैसे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उसे समझा रहे हों क्यूं कि वोह ख़ामोशी से सर हिला रहा था। रफ़्ता रफ़्ता उस के अन्दाज़ में नर्मी आती गई और बिल आख़िर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की म-दनी मिठास से तर बतर दा'वते इस्लाम से मु-तअस्सिर हो कर वोह **जिन्न कलिमा** पढ़ कर मुसल्मान हो गया और कहने लगा : मुझे अपना मुरीद भी बना लें। यूं वोह हाथों हाथ **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद हो कर **अ़त्तारी** भी बन गया और वहां से चले जाने का वा'दा भी कर लिया।

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ यूं हमें उस ख़ौफ़नाक सूरते ह़ाल से नजात मिली और भाई की त़बीअ़त भी बिल्कुल ठीक हो गई। इस ख़ुश कुन तब्दीली पर अहले ख़ाना ने सुख का सांस लिया। अगली रात का आख़िरी पहर था कि एक इन्तिहाई **ख़ौफ़नाक चीख़** की आवाज़ से सब घर वालों की आंख खुल गई। देखा तो बड़े भाई बिस्तर पर बैठे थे ख़ौफ़ के मारे उन का

पूरा जिस्म बुरी त़रह़ कांप रहा था। उन्हों ने बताया कि अभी मैं ने बहुत ही **भयानक ख़्वाब** देखा कि ख़ौफ़नाक शक्लों वाले **जिन्नात** का एक टोला ग़ज़ब नाक ह़ालत में बड़ी तेज़ी के साथ चला आ रहा है। उन की पेशवाई करने वाला जिन्न तो मुग़ल्लज़ात भी बक रहा था और कह रहा था कि तुम्हारे सारे घर वालों को ख़त्म कर दूंगा। तुम्हारे इल्यास क़ादिरी (مدظلہ العالی) को भी देख लूंगा, बुध को अ़स्र के बा'द मैं पहुंचूंगा और तुम में से किसी को भी नहीं छोड़ूंगा।

येह सुन कर तमाम अहले ख़ाना ख़ौफ़ज़दा हो गए। मंगल का दिन जैसे तैसे गुज़र गया। घर वाले इन्तिहाई परेशान थे कि क्या करें। बुध की सुब्ह़ बड़े भाई ने बताया कि اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ रात ख़्वाब में मुझे **ग़ौसे पाक** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ियारत हुई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "घबराओ मत اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कुछ नहीं होगा, वोह जिन्नात तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ख़ुद आऊंगा।" येह ख़्वाब सुन कर घर वालों की ढारस बंधी और ख़ुशी ख़ुशी सारे घर को सजाया और ख़ुश्बूओं से भी महका दिया गया।

नमाज़े **अ़स्र** के बा'द हम सब एक जगह जम्अ़ हो गए। हम ने देखा कि छोटा भाई अचानक बे सुध हो कर गिर पड़ा। फिर उस में **जिन्न** ज़ाहिर हुवा और वोह उठ खड़ा हुवा। ख़ौफ़नाक आवाज़ में मुग़ल्लज़ात बकता हुवा ख़त़रनाक तेवर के साथ हमारी त़रफ़ बढ़ा। ख़ौफ़ के मारे हमारा बुरा ह़ाल था मगर फ़िरार की राहें मस्दूद थीं, क्यूं कि बाहर जाने के रास्ते पर जिन्न क़ाबिज़ था। अचानक उस **ग़ज़ब नाक जिन्न** का रुख़ बैरूनी दरवाज़े की त़रफ़ हो गया, ऐसा मह़सूस हुवा कि कोई आ रहा है। **जिन्न** गरजा, अच्छा तुम हो इल्यास क़ादिरी, तुम ही ने

मेरे भाई को मुसल्मान किया है ? येह कह कर वोह ग़ैज़ो ग़ज़ब के आ़लम में दरवाज़े की त़रफ़ लपका मगर एक दम रुक गया और कहने लगा : "येह तुम ने हाथ क्यूं बांध लिये ! क्या तुम्हारा "**ग़ौस**" (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) आने वाला है, देख लूंगा उसे भी।" येह कह कर वोह दांत पीसता हुवा जैसे ही आगे बढ़ा तो एक दम हवा में उछला और बुरी त़रह़ से ज़मीन पर आ गिरा। लगता था जैसे उस ख़ौफ़नाक जिन्न को किसी ने उठा कर पछाड़ दिया हो। अब वोह ज़मीन पर चित पड़ा कराह रहा था। उस ने अपनी आंखों पर इस अन्दाज़ में हाथ रखे हुए थे जैसे बहुत तेज़ रोशनियां उस पर पड़ रही हों। वोह बड़ा बे चैन और अज़िय्यत में लग रहा था। फिर वोह बुरी त़रह़ उछल्ने और तड़पने लगा, ऐसा मह़सूस होता था कि उस के जिस्म में आग लगी हुई हो। सारे घर के अफ़राद मिल कर बारगाहे ग़ौसिय्यत में या ग़ौस अल मदद, **या ग़ौस अल मदद** की सदाएं बुलन्द करने लगे। ग़ैर मुस्लिम जिन्न की ख़ौफ़नाक चीख़ें बुलन्द होती चली जा रही थीं। जो जिन्न कुछ देर पहले गरज बरस रहा था, अब फ़रियादें कर रहा था, मुआ़फ़ियां मांग रहा था, मुझे **मुआ़फ़ कर दो,** मुझे **छोड़ दो,** मुझे **मत जलाओ**, मैं **चला जाऊंगा,** आइन्दा कभी नहीं आऊंगा, मैं जल रहा हूं मुझे छोड़ दो। कुछ देर वोह जिन्न इसी त़रह़ तड़पता रहा फिर उस की उछल कूद में कमी आने लगी और ऐसा लगा जैसे उस सरकश **ग़ैर मुस्लिम जिन्न** को ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जला दिया हो। इस के बा'द छोटा भाई (जिस में वोह जिन्न ज़ाहिर हुवा था) बे सुध हो गया और कुछ देर के बा'द उस की त़बीअ़त ख़ुद ब ख़ुद सह़ीह़ हो गई। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ता दमे बयान हमारे घर में अम्न है और कभी किसी जिन्न ने हमें तंग नहीं किया।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फूंक मारने से जिन्न मर गया

एक दिन **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه आ़म मुलाक़ात फ़रमा रहे थे। मुलाक़ात के लिये आने वाले एक परेशान ह़ाल इस्लामी भाई ने आप की बारगाह में कुछ यूं अ़र्ज़ की : "हुज़ूर पिछले दिनों मैं एक इस्लामी भाई को आप के पास ले कर आया था जिस पर **जिन्नात** के अ-सरात थे आप ने उस पर दम फ़रमाया तो वोह हाथों हाथ ठीक हो गए थे। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह इस्लामी भाई तो ठीक हो गए मगर उस **जिन्न** के क़बीले के **जिन्नात** मुझे त़रह़ त़रह़ से तंग कर रहे हैं, वोह मुझे बा क़ाइ़दा नज़र आते हैं और कहते हैं कि तुम हमारे भाई को **इल्यास क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के पास क्यूं ले गए थे ? उन के दम करने से हमारा **भाई मर गया** है लिहाज़ा अब हम तुम्हें नहीं छोड़ेंगे।" येह सुन कर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उस इस्लामी भाई पर भी दम किया और तसल्ली दी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की आ़जिज़ी :

एक बार जब किसी ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में आप की दुआ़ की ब-र-कत से **जिन्न** से नजात की बहार सुनाई तो आप ने बुज़ुर्गाने दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن के त़रीक़े पर अ़मल करते हुए आ़जिज़ी करते हुए कुछ यूं इर्शाद फ़रमाया : "येह सब **रब** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से है वरना अगर कोई "**सरकश जिन्न**" सामने आ कर खड़ा हो जाए और अड़ जाए कि कर लो मेरा जो करना है। तो मैं क्या कर लूंगा ! बस भाई ! **रब** عَزَّوَجَلَّ राज़ी हो जाए, राज़ी रहे, उस का करम चाहिये।"

सर कटे जिन्नात

सूबए पंजाब के एक इस्लामी भाई जो **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुरीद हैं और अपने पीरो मुर्शिद से वालिहाना अ़क़ीदत रखते हैं, उन का ह़-लफ़िया बयान कुछ यूं है :

मेरी एक शख़्स से जान पहचान थी। एक दिन वोह इसरार कर के मुझे एक आदमी से मिलवाने के लिये ले गया जिसे वोह अपना पीरो मुर्शिद कहता था ह़ालां कि मज़्कूरा शख़्स नमाज़ तक नहीं पढ़ता था। उस के नाम निहाद अ़क़ीदत मन्दों ने उस के बारे येह मशहूर कर रखा था कि येह मदीने में नमाज़ पढ़ते हैं। बहर ह़ाल जब हमारी उस शख़्स से मुलाक़ात हुई तो मैं ने देखा कि येह शख़्स नंगे सर था, चेहरे पर (ख़िलाफ़े शर-अ़) ख़शख़शी दाढ़ी थी। उस की बड़ी बड़ी मूंछें थीं और हाथों के नाख़ुन भी ग़ैर मा'मूली ह़द तक बढ़े हुए थे कमरे में अ़जीब सी बदबू फैली हुई थी जिस से मुझे वह़शत सी होने लगी।

वोह ख़ुद अपने ही मुंह से अपने फ़ज़ाइल बताने लगा कि मेरे पास बड़ी त़ाक़त है, मेरा मक़ाम लोग नहीं जानते, अगर मैं ख़ुद को ज़ाहिर कर दूं तो लोग अपने मुर्शिदों को छोड़ कर मेरे पास जम्अ़ हो जाएं। इसी त़रह़ तकब्बुराना अन्दाज़ में न जाने वोह क्या क्या बोलता रहा। फिर मुझ से कहने लगा कि "तुम ख़ुश नसीब हो जो मेरे पास आने की सआ़दत मिल गई, मुझ से मुरीद हो जाओ, हवा में उड़ोगे और पानी पर चलोगे।"

मैं उस की ख़िलाफ़े शर-अ़ वज़्अ़ क़त़्अ़ और मु-तकब्बिराना अन्दाज़े गुफ़्त-गू से पहले ही बेज़ार बैठा था। उस की येह पेशकश मुझे सख़्त ना गवार गुज़री मगर मैं ने अपने जज़्बात को क़ाबू में रखते हुए जवाब

दिया : ''اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं एक **पीरे कामिल** का मुरीद हूं।'' इस पर वोह बुलन्द आवाज़ से कहने लगा : ''मेरे हाथ पर मुरीद हो कर देखो तो पता चलेगा कि कामिल पीर किसे कहते हैं ?'' अब तो मेरे तन बदन में गोया आग सी लग गई कि येह जाहिल व बे अ़मल आदमी जो शरअ़न पीर बनने का ही अहल नहीं इतना बढ़ चढ़ कर बोल रहा है। लिहाज़ा मैं ने उसे खरी खरी सुना दीं। इस पर वोह ग़ुस्से के मारे खड़ा हो गया और गरजदार आवाज़ में कहने लगा : ''तुम ने हमारी बे अ-दबी की है, तुम हमें नहीं जानते, अब अपना अन्जाम ख़ुद ही देख लोगे, निकल जाओ इस दरबार से, हमारी नाराज़गी तुम्हें बहुत महंगी पड़ेगी।'' मैं भी येह कहते हुए वहां से निकल आया कि जो तेरा जी चाहे कर लेना, اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मेरा पीर कामिल है।**

उस रात थकन के बाइ़स मैं जल्दी सो गया। मैं गहरी नींद में था कि अचानक किसी ने मुझे झन्झोड़ डाला, मैं घबरा कर उठ बैठा। उस वक़्त रात के शायद साढ़े तीन बज चुके थे। अचानक मेरी निगाह कमरे के दरवाज़े की त़रफ़ उठी तो ख़ौफ़ के मारे मेरी चीख़ निकल गई। मेरे सामने **2** ख़ौफ़नाक शक्लों वाली **बलाएं** मौजूद थीं। उन के सर छत को छू रहे थे। काले काले **लम्बे बाल** पैरों तक लटक रहे थे और **लम्बे लम्बे दांत** सीने तक बाहर निकले हुए थे। वोह बलाएं बड़ी बड़ी सुर्ख़ आंखों से मुझे ग़ुस्से में घूर रही थीं। यकायक दोनों बलाएं मेरी त़रफ़ बढ़ीं और संभलने का मौक़अ़ दिये बग़ैर उन्हों ने मेरी गरदन दबोच कर मुझे ज़मीन पर पटख़ दिया। उन के जिस्म से मुरदार की सी सड़ांद और शदीद **बदबू** आ रही थी। फिर वोह दोनों पूरी क़ुव्वत से मेरा गला दबाने लगीं, मेरा दम घुटने लगा। मैं ने घर वालों को मदद के लिये पुकारा। न

जाने क्यूं कमरे में मौजूद घर वाले मज़े से सो रहे थे। लगता ऐसा था कि वोह मेरी आवाज़ नहीं सुन पा रहे।

मुझे अपने ज़िन्दा बचने की कोई उम्मीद न रही तो मैं ने कलिमए तय्यिबा पढ़ना शुरूअ़ कर दिया। इसी दौरान अपने पीरो मुर्शिद **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को याद करते हुए उन की बारगाह में इस्तिग़ासा भी पेश किया। ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) की क़सम ! मैं ने जागती आंखों से देखा कि मेरे पीरो मुर्शिद, शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه वहां तशरीफ़ ले आए। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हाथ में तलवार थी। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को देख कर वोह ख़ौफ़नाक बलाएं जो ग़ालिबन उसी नाम निहाद पीर ने अ़-मलिय्यात के ज़रीए़ मुझ पर मुसल्लत़ की थीं, घबरा कर मुझ से दूर हो गईं। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने जलाल के आ़लम में तलवार के एक ही वार में दोनों बलाओं के सर क़लम कर दिये और वोह नीचे गिर कर तड़पने लगीं, ज़मीन उन के ख़ून से रंगीन हो गई। फिर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मेरे क़रीब आए और मेरे कन्धे पर हाथ रखते हुए तसल्ली दी : "बेटा घबराओ मत, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ कुछ नहीं होगा।" इस के बा'द आप तशरीफ़ ले गए। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के जाने के बा'द देखते ही देखते ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर उन ख़ौफ़नाक बलाओं की लाशें और ख़ून भी ग़ाइब हो गया।

सुब्ह उस नाम निहाद पीर के दो अ़क़ीदत मन्द मेरे पास आए और इधर उधर की बातें करते हुए मेरा ह़ाल मा'लूम करने लगे। शायद उन के पीर ने उन्हें मेरे मु-तअ़ल्लिक़ मा'लूमात करने भेजा होगा और येह मुझे सह़ीह़ व सलामत देख कर ह़ैरान थे। उधर वोह नक़्ली पीर अपनी ख़ौफ़नाक बलाओं की वापसी का इन्तिज़ार कर रहा होगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़ार के जिन्नात

एक इस्लामी भाई का ह़-लफ़िया तह़रीरी बयान कुछ यूं है कि हम तमाम घर वाले तकरीबन **18** साल से अपने भाई की बीमारी से परेशान थे। कभी सर में दर्द, कभी पेट में दर्द तो कभी सर चकराना अल ग़रज़ उन्हें कोई न कोई बीमारी लाह़िक़ रहती। कभी कभी तो ऐसा लगता था कि भाई पर आसेब का साया है। भाई ने बेज़ार हो कर कई बार **ख़ुदकुशी** करने का इरादा किया مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ मगर येह सोच कर वोह रुक जाते कि वालिदैन और बच्चों का क्या होगा ? हम ने उन के इ़लाज के लिये कोई कसर न उठा रखी, कई डॉक्टरों, प्रोफ़ेसरों और आ़मिलों को दिखाया मगर सिवाए पैसे गंवाने के कुछ न हुवा। इसी चक्कर में हम माली त़ौर पर भी बरबाद हो गए। एक आ़मिल के कहने पर हम ने भाई को इ़लाज के लिये "**मरी**" भी भेजा मगर कुछ ह़ासिल न हुवा। इस त़रह़ तक़रीबन 18 साल का त़वील अ़र्सा गुज़र गया। भाई पर जो **जिन्न** था वोह हमें सोना और लाखों रुपै देने की ऑफ़र करता कि जो तुम्हें चाहिये वोह ले लो मगर अपना येह भाई हमें दे दो।

हम तक़रीबन मायूस हो चुके थे कि एक दिन भाई ने ख़ुद ही कहा कि मेरा इ़लाज मेरे मुर्शिद के पास है। उस का येह कहना था कि हम ने बाबुल मदीना (कराची) के लिये रख्ते सफ़र बांध लिया। जब हम फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना (कराची) पहुंचे तो सीढ़ियां चढ़ते हुए उसी **आसेब** ने भाई को धक्का दे कर नीचे गिरा दिया। जिस की वजह से भाई बेहोश हो गया।

मग़्रिब की नमाज़ के बा'द हम अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़िदमत में भाई को जैसे तैसे ले कर ह़ाज़िर हुए और मुलाक़ात के लिये क़ित़ार में लग गए। क़रीब पहुंचने पर मैं ने मुर्शिदे

करीम की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! हम 18 साल से परेशान हैं, भाई पर **आसेब** है, आप दुआ़ फ़रमा दीजिये ।" **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने बड़ी शफ़्क़त फ़रमाई और दुआ़ की । इस के बा'द हम वापस लौट आए । वोह आसेब चार रोज़ ग़ाइब रहा । हम येह समझे कि अब उस से जान छूट गई है लेकिन पांचवें रोज़ वोह फिर ज़ाहिर हो गया । उस वक़्त मैं दोस्तों में बैठा था कि मेरा बेटा मुझे बुलाने आया कि अब्बू ! चचा की त़बीअ़त ख़राब हो रही है । मैं घर की त़रफ़ आते हुए सोचने लगा कि शायद कराची जाने का भी कोई फ़ाएदा नहीं हुवा । बहर ह़ाल जब मैं घर पहुंचा तो **जिन्न** ने भाई की ज़बान और पेशाब बन्द किया हुवा था । और वोह तक्लीफ़ से तड़प रहा था । मैं ने आ-यतुल कुरसी पढ़ा हुवा तेल भाई के कानों में लगाया जिस से भाई को कुछ इफ़ाक़ा हुवा ।

कुछ ही देर के बा'द भाई ने आसेब को बुरा भला कहना शुरूअ़ कर दिया और मुझ से कहा कि मुझे मुर्शिदे करीम ने जो तोह़फ़े दिये हैं वोह ला कर दो । मैं ने उस के कहने के मुत़ाबिक़ वोह तबर्रुकात उसे दे दिये । भाई ने वोह **तबर्रुकात** हाथ में लिये और कहने लगा : "सब घर वाले हट जाओ, अब इस **जिन्न** की और मेरी जंग है ।" चन्द ही लम्ह़ों बा'द भाई कहने लगा "**जल तू ऐसे ही जलेगा**" उस का येह कहना था कि हमें ऐसा लगा जैसे **जिन्न** ने भाई पर वार किया है । जिस बिना पर भाई झटके से नीचे आन गिरा मगर फ़ौरन उठ कर **जिन्न** से कहने लगा : "अब मैं अपने पीर को बुलाता हूं, 18 साल से तू मुझे अज़िय्यत देता रहा है, आज मैं रहूंगा या तू !" फिर भाई जोश के आ़लम में चीख़ने लगा : "लो मेरे मुर्शिद अ़त्तार आ गए,..... क्यूं भाग रहा है ?..... अब बोल क्या हुवा ?..... क्यूं चिल्लाता है ?..... हां अब जलने के लिये

तय्यार हो जा, हां ''**जल तू ऐसे ही जलेगा**'' कुछ देर भाई इस त़रह़ जोश में बोलता रहा। फिर भाई की त़बीअ़त बिल्कुल सह़ीह़ हो गई।

उस ने ख़ुशी के आ़लम में बताया कि ''मेरी धम्कियों के बाइ़स उस जिन्न की ह़िमायत में सेंकड़ों **जिन्नात** एक ग़ार से निकल निकल कर बड़े ख़ौफ़नाक अन्दाज़ में मेरी त़रफ़ बढ़ने लगे। ऐसा लगता था कि वोह मेरे टुकड़े टुकड़े कर देंगे। इतने में, मैं ने जागती आंखों से देखा कि मेरे मुर्शिद **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तशरीफ़ ले आए और मेरे सर पर दस्ते शफ़्क़त रखा, और जलाल के आ़लम में दूसरे हाथ का रुख़ रोकने के अन्दाज़ में जैसे ही उन ग़ज़ब नाक जिन्नात के ग़ौल की त़रफ़ किया तो तमाम **जिन्नात** ख़ौफ़ज़दा हो कर दौड़ते हुए ग़ार की त़रफ़ पलटे और ग़ार में दाख़िल हो गए। जैसे ही तमाम **जिन्नात** उस ग़ार में दाख़िल हुए तो ग़ार में ख़ौफ़नाक आग भड़क उठी और ग़ार से भयानक चीख़ें बुलन्द होने लगीं और कुछ ही देर में ग़ार के तमाम जिन्नात जल कर राख हो गए। फिर **मुर्शिदी अ़त्त़ार** येह कहते हुए तशरीफ़ ले गए कि **बेटा घबराना नहीं मैं तुम्हारे साथ हूं।**''

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जिन्नात भी इन्सानों से डरते हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

इन्सान तो जिन्नात से डरते ही हैं लेकिन आप ह़ैरान होंगे कि जिन्नात भी इन्सान से डरते हैं।

छलांग मार कर भाग निकला

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं एक रात नमाज़ पढ़ रहा था कि अचानक मेरे सामने एक लड़का आ

कर खड़ा हो गया। मैं उसे पकड़ने के लिये बढ़ा तो उस ने छलांग मारी और दीवार के पीछे जा पड़ा। मैं ने उस के गिरने की आवाज़ सुनी। इस के बा'द वोह फिर कभी मेरे पास नहीं आया। फिर फ़रमाया : ''**जिन्नात** तुम (इन्सानों) से इसी त़रह़ डरते हैं जिस त़रह़ तुम जिन्नात से डरते हो।'' (लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, फ़ी ख़ौफ़िल जिन्ने मिनल इन्स, स. 184)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शैत़ान हम से घबराता है :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से ही मरवी है कि जितना तुम (इन्सानों) में से कोई शैत़ान से घबराता है शैत़ान इस से भी ज़ियादा तुम से घबराता है लिहाज़ा जब वोह तुम्हारे सामने आए तो तुम उस से घबराया न करो वरना वोह तुम पर सुवार हो जाएगा अलबत्ता तुम उस के मुक़ाबले के लिये तय्यार हो जाया करो तो वोह भाग जाएगा।

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, फ़ी ख़ौफ़िल जिन्ने मिनल इन्स, स. 184)

वोह तुम से ज़ियादा डरता है :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू शराआ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं कि मुझे ह़ज़रते यह़या जज़ार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने देखा कि मैं रात के वक़्त गलियों में जाने से डर रहा हूं तो मुझ से फ़रमाया : ''जिस से तुम डर रहे हो वोह इस से ज़ियादा तुम से डरता है।'' (लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, फ़ी ख़ौफ़िल जिन्ने मिनल इन्स, स. 184)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुश्शैख़ अस्बहानी علیہ رحمۃ اللہ الغنی ''**किताबिल अ़-ज़मह**'' में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रावी हैं कि तुम में से जिस के सामने शैत़ान ज़ाहिर हो

जाए तो वोह शैत़ान से मुंह न मोड़े बल्कि उस की त़रफ़ नज़र जमाए रहे इस लिये कि तुम्हारे उन (शैत़ान) से डरने से ज़ियादा वोह तुम से डरते हैं क्यूं कि अगर कोई उस से डर जाएगा तो वोह उस पर सुवार हो जाएगा और अगर डट जाएगा तो वोह भाग जाएगा।

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि येह वाक़िआ़ मेरे साथ भी पेश आया यहां तक कि मैं ने शैत़ान को देखा तो मुझे सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا का फ़रमान याद आया, चुनान्चे मैं डट गया और वोह मुझ से डर कर भाग गया।

(किताबिल अ़-ज़मह, ذکر الجن وخلقھم, अल ह़दीस: 1150, स. 431)

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ को देख कर शैत़ान मुंह के बल गिर जाते :

ह़ज़रते सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُم फ़रमाते हैं कि बसरा के गवर्नर ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के पास ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़बर पहुंचने में देर हो गई। वहां एक औ़रत थी जिस के पहलू में शैत़ान बोलता था। ह़ज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस औ़रत के पास एक क़ासिद भेजा। उस ने औ़रत से जा कर कहा : अपने शैत़ान से कहो कि वोह जा कर अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़बर हमें ला कर दे क्यूं कि वोही हमारे सरदार और हमारे मुआ़-मलात दुरुस्त करने वाले हैं। उस ने जवाब दिया कि वोह (जिन्न) इस वक़्त यमन में है अ़न्क़रीब आ ही जाएगा। क़ासिद थोड़ी देर इन्तिज़ार में रुके रहे। आख़िरे कार वोह (जिन्न) उस औ़रत के पास ह़ाज़िर हुवा तो उस ने कहा : "तुम दोबारा जाओ और ह़ज़रत अमीरुल मुअमिनीन के मु-तअ़ल्लिक़ ख़बर दो क्यूं कि वोह

हमारे सरदार हैं और उन की ख़बर में ताख़ीर ने हमें बहुत परेशान कर दिया है।" शैत़ान ने कहा : "ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ऐसी शान वाले शख़्स हैं जिन के क़रीब जाने की हम त़ाक़त नहीं रखते। अल्लाह तआ़ला ने जितने भी शैत़ान पैदा फ़रमाए जब भी वोह ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की आवाज़ सुनते हैं तो मुंह के बल गिर जाते हैं।" (लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, فی جوز سؤال الجن عن الاحوال...الخ, स. 192)

रव़ौफ़ज़दा जिन्न

ह़ैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ से बयान है : اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मुझे चन्द इस्लामी भाइयों के साथ अपने पीरो मुर्शिद ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की ज़ियारत और उन से मुसा-फ़ह़ा करने का श-रफ़े अ़ज़ीम नसीब हुवा। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में रात गए तक मुलाक़ात फ़रमाते रहे। जब स-ह़री के वक़्त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ जाने लगे तो आप ने अपने गले से हार उतारा (जो किसी अ़क़ीदत मन्द ने आप को पहनाया था) और चाहा कि किसी इस्लामी भाई को दे दें तो दीवाने उस हार को लेने के लिये लपके। फूलों से झड़ने वाली चन्द पत्तियां हमारे साथ मौजूद एक इस्लामी भाई के हाथ में भी आईं जो उन्हों ने बड़ी अ़क़ीदत से अपनी बाईं जेब में रख लीं।

वापसी पर हमारा इरादा ठट्ठा शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह शाह अस्ह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िरी देने का था। लिहाज़ा नमाज़े फ़ज्र अदा कर के हम ठट्ठा शरीफ़ के लिये रवाना हो गए। जब हम मज़ार शरीफ़ में दाख़िल हुए तो हमारी नज़र मज़ार के

इह़ाते में मौजूद एक नौ जवान पर पड़ी जो बुरी त़रह़ चिल्ला रहा था। हमें येह सब कुछ बड़ा अ़जीब लगा मगर हम ख़ामोश रहे। देखते ही देखते उस नौ जवान ने (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) साह़िबे मज़ार को गालियां देना शुरूअ़ कर दी। येह हमारे लिये ना क़ाबिले बरदाश्त था।

वोह इस्लामी भाई जिन के पास फूलों की पत्तियां बत़ौरे तबर्रुक मौजूद थीं, कहने लगे : "ऐसा लगता है इस नौ जवान पर किसी ख़बीस जिन्न का ग़-लबा है लिहाज़ा इस के साथ उलझना बेकार है, मैं इस का इ़लाज करने की कोशिश करता हूं।" येह कहने के बा'द उन्हों ने फूल की पत्तियां उस नौ जवान की त़रफ़ बढ़ाते हुए इन्हें खा लेने की दर-ख़्वास्त की। फूल की पत्तियां देखते ही वोह नौ जवान डर के मारे भाग खड़ा हुवा और ज़ोर ज़ोर से कहने लगा : "नहीं मैं येह नहीं खाऊंगा, मैं मर जाऊंगा, मैं मर जाऊंगा।" उस वक़्त हमारी ह़ैरत की इन्तिहा न रही जब उस ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का नाम लेते हुए येह कहा : "येह इल्यास क़ादिरी के हार की पत्तियां हैं।" इस के बा'द वोह हमारी निगाहों से ओझल हो गया। हम अपनी क़िस्मत पर रश्क करने लगे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का करोड़ हा करोड़ एह़सान है कि उस ने हमें ऐसा "**कामिल पीर**" अ़त़ा फ़रमाया जिस से निस्बत रखने वाली फूल की पत्ती में भी ऐसी तासीर आ गई कि जिन्न ख़ौफ़ज़दा हो कर भाग खड़ा हुवा।

डरपोक जिन्न

एक इस्लामी भाई ने बताया कि एक बार (बाबुल मदीना कराची) में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه आ़म मुलाक़ात फ़रमा रहे थे। दरीं अस्ना पंजाब से आए हुए एक उ़म्र रसीदा इस्लामी भाई (जो काफ़ी अ़र्से से आसेब ज़दा थे) यकायक इस त़रह़ चीख़ने लगे : "मुझे छोड़ दो ! मैं चला

जाऊंगा, मुझे मत मारो, मुझे आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के शहज़ादा हुज़ूर مدظله العالی ने भी बहुत मारा है, मैं अब नहीं आऊंगा, मुझे छोड़ दो ।'' **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उस पर अपनी पुर जलाल निगाह डाली और चीख़ो पुकार करने से सख़्ती से मन्अ़ किया, वोह ज़ोर से चीख़ा : ''मुझे मुआ़फ़ कर दो, मैं जा रहा हूं, मुझे मुआ़फ़ कर दो, मैं जा रहा हूं।'' येह कहते कहते वोह इस्लामी भाई नीचे गिर पड़े और वोह जिन्न वहां से फ़िरार हो गया और येह उ़म्र रसीदा बुज़ुर्ग ठीक हो गए।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जिन्नात से न डरिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जैसा कि अगले स-फ़ह़ात में गुज़रा कि **जिन्नात** इन्सान को डराते हैं बल्कि इग़वा कर के भी ले जाते हैं और बा'ज़ अवक़ात क़त्ल भी कर डालते हैं। लेकिन हर **जिन्न** इग़वा या क़त्ल करने की त़ाक़त नहीं रखता, **जिन्नात** की मु-तअ़द्दद अक़्साम आगे बयान हुई। बेशतर **जिन्नात** इन्सानों से डरते हैं। ऐसे भी **जिन्नात** होते हैं जो लोगों से मानूस होते हैं। काफ़ी **जिन्नात** इन्सानों के घरों और उन की छतों पर रिहाइश पज़ीर भी होते हैं मगर वोह सताते नहीं हैं। जिस त़रह़ इन्सानों में, बहादुर और डरपोक हर त़रह़ के अफ़्राद होते हैं इसी त़रह़ **जिन्नात** में भी होते हैं। बहर ह़ाल **जिन्नात** से डरना नहीं चाहिये, जो डरता है उस को आ़म त़ौर पर ज़ियादा डराया जाता है और जो हिम्मत वाला होता है उस से ख़ुद **जिन्न** भी डर जाते हैं। अगर्चे बा'ज़ **जिन्नात** बहुत त़ाक़त वर होते हैं। ख़ुसूसन **जिन्नात** की एक क़िस्म ''**इफ़रीत**'' येह सब से ख़त़रनाक मानी जाती है मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे तो येह कुछ

भी नहीं बिगाड़ सकते ।

(माख़ूज़ अज़ "जिन्नात की हिकायात", स. 30)

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की तल्क़ीन :

शहज़ादए अ़त्तार अलहाज मौलाना अबू उसैद अहमद उ़बैद रज़ा अल अ़त्तारिय्युल म-दनी (مدظلہ العالی) ने एक बार कुछ इस त़रह़ इर्शाद फ़रमाया कि मेरे बचपन का ज़माना था । हमारे घर के बराबर वाले प्लाज़ा की छत से कोई शख़्स गिर कर इन्तिक़ाल कर गया । उस के बारे में मशहूर हो गया कि इसे **जिन्नात ने मारा है ।** चुनान्चे हर त़रफ़ ख़ौफ़ व ह़िरास फैल गया । हम भी ख़ौफ़ज़दा हो गए । जब बापा (या'नी अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ) को मा'लूम हुवा तो आप ने हम दोनों भाइयों को बुलाया और हमारी हिम्मत बंधाई और मज़ाह़न येह भी इर्शाद फ़रमाया कि अगर कभी किसी **जिन्न** से तुम्हारा सामना हो जाए तो मुझे येह सुनने को न मिले कि जिन्न पीछे पीछे भाग रहा था और आप लोग आगे आगे, बल्कि मैं येह सुनूं कि जिन्न आगे आगे भाग रहा था और आप दोनों उस के पीछे भाग रहे थे ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुह़ाफ़िज़ फ़िरिश्ते :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं : "हर इन्सान पर मुह़ाफ़िज़ फ़िरिश्ते मुअक्किल हैं जो सोने जागने की ह़ालत में **जिन्नात** और ह़श्रातुल अर्द़ (या'नी कीड़े मकोड़ों) से इन्सान की ह़िफ़ाज़त करते हैं अगर कोई सताने वाली चीज़ आती है तो उस को हटा देते हैं मगर जिस को अल्लाह عزوجل इजाज़त दे ।"

जिन्नात के शर से बचने के त़रीक़े

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जिन्नात से हिफ़ाज़त के लिये इन उ़मूर का इख़्तियार करना बे ह़द मुफ़ीद साबित होगा, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

(1) अल्लाह तआ़ला की पनाह त़लब करना

(2) तिलावते क़ुरआने करीम

(3) ज़िक्रुल्लाह की कस्रत

(4) अज़ान देना

(5) इस कलिमे को सो मर्तबा पढ़ना

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْر

(6) जिन्नात और जादू से हिफ़ाज़त के लिये चन्द अवराद

(7) जिन्नात से हिफ़ाज़त के चन्द वज़ाइफ़

(8) चिक्नाई वाली चीज़ें जल्द धो डालिये

(9) घर में लीमूं रखिये

(10) घर में सफ़ेद मुर्ग़ा रख लीजिये

(11) ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या का इस्ति'माल

﴾1﴿ अल्लाह तआ़ला की पनाह त़लब करना

जिन्नात के शर से बचने के लिये **अल्लाह** तआ़ला की पनाह त़लब की जाए। क़ुरआने पाक में है :

وَاِمَّا یَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّیْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ0

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ सुनने वाले अगर शैत़ान तुझे कोई कोंचा दे तो अल्लाह की पनाह मांग बेशक वोही सुनता जानता है।

(पारह : 9, अल आ'राफ़ : 200)

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन सरद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अक्रम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास दो आदमी एक दूसरे को बुरा भला कहने लगे ह़त्ता कि उन में से एक का चेहरा सुर्ख़ हो गया तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मुझे एक ऐसे कलिमे का इ़ल्म है कि अगर येह इसे कहे तो इस का ग़ुस्सा चला जाए : اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْم या'नी मैं शैत़ान मरदूद से अल्लाह की पनाह में आता हूं। (सह़ीह़ मुस्लिम, کتاب البر و الصلة،باب فضل من یملك نفسه...الخ, अल ह़दीस : 2610, स. 1406)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾2﴿ तिलावते क़ुरआने करीम

मोमिन जिन्नात का बसेरा :

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम अपने घरों के लिये क़ुरआने पाक का कुछ ह़िस्सा ज़ख़ीरा कर लो इस लिये कि

जिस घर में **क़ुरआन की तिलावत** की जाएगी वोह घर वालों के लिये मानूस बन जाएगा और उस की ख़ैरो ब-र-कत बढ़ जाएगी और उस में **मोमिन जिन्न** रिहाइश इख़्तियार करेंगे और जब उस घर में तिलावत नहीं की जाएगी तो वोह घर उस के रहने वालों पर वह्शत बन जाएगा और उस की ख़ैरो ब-र-कत भी कम हो जाएगी और उस में **काफ़िर जिन्नात** बसेरा कर लेंगे। (कन्ज़ुल उम्माल, किताबिल मई-शतह वल आ़दात, अल ह़दीस : 41518, जि. 15, स. 167)

जिन्नात भाग गए :

ह़ज़रते अबू ख़ालिद अल वालिबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं क़ाफ़िले के साथ ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास जाने के लिये निकला। मेरे साथ मेरे घर वाले भी थे। हम एक जगह पर पहुंचे और मेरे घर वाले मेरे पीछे थे तो मैं ने बच्चों के चीख़ने की आवाज़ सुनी। मैं ने बुलन्द आवाज़ से क़ुरआन पढ़ना शुरूअ़ कर दिया तो किसी चीज़ के गिराए जाने की आवाज़ सुनी। मैं ने बच्चों से (उन के चीख़ने के मु-तअ़ल्लिक़) पूछा तो उन्हों ने कहा कि हमें शैत़ानों ने पकड़ा और हमारे साथ खेलना शुरूअ़ कर दिया था। जब आप ने **बुलन्द आवाज़ से क़ुरआन पढ़ा** तो वोह हमें छोड़ कर भाग गए।

(लुक़्त़ुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ذکرمایعتصم بہ منہم, स. 152)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

यूं तो पूरा **क़ुरआन** ही मज्मूअ़ए फ़ैज़ है लेकिन चन्द सूरतों और आयात का ख़ुसूसिय्यत से रिवायात में ज़िक्र आया है। जिन में चन्द येह हैं :

(1) आ-यतुल कुरसी

(2) यासीन शरीफ़

(3) सूरए मुअमिनून की आख़िरी आयात

(4) सूरए मुअमिन की इब्तिदाई आयात

(5) सू-रतुल ब-क़रह

(6) सूरए आले इमरान

(7) सू-रतुल आ'राफ़

(8) सूरए ह़श्र की आख़िरी आयात

(9) सूरए इख़्लास

(10) मुअ़व्वि-ज़तान (या'नी सू-रतुल फ़लक़ और सू-रतुन्नास)

(1) आ-यतुल कुरसी पढ़ना

मुह़ाफ़िज़ मुक़र्रर हो जाएगा :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) बयान फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने र-मज़ान की ज़कात की ह़िफ़ाज़त मेरे ज़िम्मे लगाई। एक शख़्स आया और ग़ल्ला को भरने लगा तो मैं ने उसे पकड़ लिया और कहा कि मैं तुझे नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ले जाऊंगा। उस ने मुझे पेशकश की के मैं तुझे कुछ कलिमात सिखाता हूं अल्लाह तआ़ला तुझे इन से नफ़्अ़ देगा। मैं ने कहा : "वोह कौन से कलिमात हैं ?" तो कहने लगा कि जब तुम अपने बिस्तर पर आओ तो येह आयत पढ़ा करो "اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ۬" ह़त्ता कि आयत ख़त्म की, तो बेशक अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से सुब्ह़ तक एक मुह़ाफ़िज़ मुक़र्रर कर दिया जाएगा और शैत़ान तेरे क़रीब नहीं आएगा।

जब मैं बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा तो रसूले अक्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''तुम्हारे क़ैदी ने रात क्या किया ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! उस ने मुझे एक चीज़ सिखाई और उस का गुमान था कि **अल्लाह** तआ़ला मुझे इस के साथ फ़ाएदा देगा।'' आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने पूछा : ''वोह क्या है ?'' मैं ने कहा : ''उस ने मुझे बताया कि जब मैं बिस्तर पर आऊं तो आ-यतुल कुरसी पढ़ा करूं उस का गुमान था कि सुब्ह़ तक मेरे पास शैत़ान नहीं आएगा और मेरे लिये **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से एक मुह़ाफ़िज़ मुक़र्रर हो जाएगा।'' येह सुन कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''उस ने तेरे साथ सच बोला है ह़ालां कि वोह झूटा है और वोह शैत़ान था।'' (सह़ीहुल बुख़ारी, کتاب الوکالۃ،باب اذا وکل رجلا فترک...الخ, अल ह़दीस : 2311, जि. 2, स. 82, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इफ़्रीत से ह़िफ़ाज़त :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام मेरे पास आए और उन्हों ने कहा कि इफ़्रीत जिन्नों में से है जो आप के साथ मक्र (अ़य्यारी) करता है लिहाज़ा आप जब भी अपने बिस्तर पर तशरीफ़ ले जाएं तो आ-यतुल कुरसी पढ़ लिया करें।''

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ذکر مایعتصم بہ منھم, स. 155)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दो फ़िरिश्ते सुब्ह़ तक ह़िफ़ाज़त करेंगे :

ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : ''जो शख़्स अपने बिस्तर पर टेक लगाते वक़्त आ-यतुल कुरसी पढ़ लेगा तो उस के लिये दो फ़िरिश्ते मुक़र्रर कर दिये जाएंगे जो सुब्ह़ तक उस की ह़िफ़ाज़त करते रहेंगे।'' (लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ذکر ما یعتصم بہ منھم, स. 156)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फलों को नुक़्सान पहुंचाने वाले जिन्नात :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक रात अपने बाग़ की त़रफ़ गए तो वहां शोरो ग़ुल सुनाई दिया। आप की ज़बान से बे साख़्ता निकला : ''येह क्या मुआ-मला है ?'' आप को एक जिन्न की आवाज़ सुनाई दी जो कह रहा था : ''हमें दो त़रफ़ा कुल्हाड़ी ने तक्लीफ़ पहुंचाई है लिहाज़ा मैं ने इरादा किया कि मैं इस बाग़ के फलों को नुक़्सान पहुंचाऊं, तुम इस बाग़ को हमारे लिये ह़लाल कर दो।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस का मुत़ा-लबा मान लिया। दूसरी रात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दोबारा शोरो ग़ुल सुना और कहने लगे : ''येह क्या मुआ-मला है ?'' एक जिन्न ने जवाब दिया : ''हमें दो त़रफ़ा कुल्हाड़ी ने तक्लीफ़ पहुंचाई है, लिहाज़ा हम ने इरादा किया कि हम तुम्हारे फलों को नुक़्सान पहुंचाएं तुम इन फलों को हमारे लिये ह़लाल कर दो।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''ठीक है।'' और उस से दर्याफ़्त किया : ''क्या तुम हमें ऐसी चीज़ के बारे में नहीं बताओगे जो हमें तुम से नजात दे दे?'' उस जिन्न ने कहा : ''वोह आ-यतुल कुरसी है।''

(किताबिल अ़-ज़मह, ذکر الجن وخلقھم, अल ह़दीस : 1126, स. 427)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

खजूरें खाने वाले जिन्न :

ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हमारा खजूरों का बाग़ था। मैं उन की देख भाल किया करता, मुझे ऐसा लगा जैसे खजूरें रोज़ बरोज़ कम हो रही हों। चुनान्चे मैं ने रात के वक़्त उस पर पहरा देना शुरूअ़ कर दिया। इसी दौरान बालिग़ लड़के से मुशाबा एक चौपाया मुझे नज़र आया। उस ने मुझे सलाम किया। मैं ने उस के सलाम का जवाब देने के बा'द पुछा : "तुम कौन हो ? जिन्न हो या इन्सान ?" मेरे इस्तिफ़्सार पर उस ने बताया : "मैं जिन्नों में से हूं।" मैं ने कहा : "मुझे अपना हाथ दिखाओ।" जब उस ने मुझे अपना हाथ दिखाया तो उस का हाथ कुत्ते की त़रह़ था जिस पर बाल उगे हुए थे। मैं ने पूछा : "क्या जिन्न ऐसे होते हैं ?" वोह कहने लगा : जिन्नात में मुझ से भी त़ाक़त वर जिन्न मौजूद हैं। मैं ने पूछा : "तुम जो कुछ कर रहे थे इस काम पर तुम्हें किस चीज़ ने उभारा ?" वोह कहने लगा : "मुझे पता चला कि तुम्हें सदक़ा करना बहुत पसन्द है, लिहाज़ा मुझे अच्छा लगा कि मैं भी तुम्हारी खजूरों तक रसाई ह़ासिल करूं।" मैं ने उस से दर्याफ़्त किया : "वोह कौन सी चीज़ है जो हमें तुम से बचा सकती है ?" उस ने कहा : "आ-यतुल कुरसी।"

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि फिर मैं ने उसे छोड़ दिया और सुब्ह़ के वक़्त जब मैं हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा (और रात का माजरा सुनाया) तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ख़बीस (शैत़ान) ने सच्ची बात कही।"

(किताबिल अ़-ज़मह, ذکر الجن وخلقهم, अल ह़दीस : 1104, स. 420)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शैत़ान अह़मक़ गधे की त़रह़ भाग जाएगा :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के किसी सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की एक जिन्न से मुडभेड़ हुई तो उन्हों ने उसे पछाड़ दिया। जिन्न ने उन से फ़रियाद की के मुझे एक मौक़अ़ और दो तो आप ने उसे दोबारा मौक़अ़ दिया। दोबारा मुक़ाबला हुवा तो आप ने उसे फिर चारों शाने चित कर दिया और फ़रमाया : "मैं तेरी कमज़ोरी और चेहरे की उड़ी हुई रंगत देख रहा हूं तेरी दोनों कलाइयां कुत्ते की कलाइयों की त़रह़ हैं तू मुझे जिन्नों में से लगता है, क्या तू जिन्न ही है ?" उस ने घिघया कर कहा : "नहीं ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उन में से नहीं हूं, मैं तो मज़्बूत़ पस्लियों वाला हूं, लेकिन आप मुझे तीसरी मर्तबा फिर मौक़अ़ दें, अगर आप ने मुझे ज़मीन पर गिरा दिया तो मैं आप को एक मुफ़ीद चीज़ सिखाऊंगा।" उस की दर-ख़्वास्त पर आप ने उसे दोबारा मौक़अ़ दिया और ह़स्बे साबिक़ पछाड़ दिया। फिर फ़रमाया : हां ! अब तू मुझे वोह शै सिखा दे। उस ने कहा : क्या आप "आ-यतुल कुरसी" पढ़ते हैं ? फ़रमाया : "क्यूं नहीं।" उस ने कहा : "आप इस को घर में पढ़ें तो शैत़ान अह़मक़ गधे की त़रह़ उस घर से भाग जाएगा और सुब्ह़ तक उस में दाख़िल नहीं होगा।"

लोगों में से किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पूछा : "वोह सहाबी कौन थे ?" फ़रमाया : "उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सिवा कौन हो सकता है।"

(अल मो'जमुल कबीर, अल ह़दीस : 8826, जि. 9, स. 166)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2) यासीन शरीफ़

तमाम चराग़ बुझ गए :

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद साह़िब एक मर्तबा ऐसे रास्ते से गुज़रे जहां जिन्न, भूत का बसेरा था ह़ालां कि वोह दूसरों को उस रास्ते से गुज़रने से रोका करते थे। वालिदे मोह़तरम का बयान है : मैं वहां से गुज़र रहा था कि अचानक मुझे एक औ़रत दिखाई दी जो पीले रंग के कपड़े पहने एक तख़्त पर बैठी थी। उस के इर्द गिर्द चराग़ जल रहे थे। उस औ़रत ने मुझे आवाज़ दी। मैं ने फ़ौरन यासीन शरीफ़ पढ़ना शुरूअ़ कर दी। जैसे ही मैं ने सूरए यासीन शरीफ़ पढ़ना शुरूअ़ की तमाम चराग़ बुझ गए। वोह औ़रत मुझ से कहने लगी : ''ऐ अल्लाह के बन्दे ! येह तुम ने मेरे साथ क्या किया ?'' इस त़रह़ मैं उस से मह़फ़ूज़ रहा।

(किताबिल अ़-ज़मह, ذکر الجن وخلقھم, अल ह़दीस : 1106, स. 420)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शैत़ान अन्धा हो गया :

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'लबा बिन सुहैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''एक मर्तबा मैं ने स-ह़री में पीने के लिये कुछ पानी रखा मगर जब मैं स-ह़री के वक़्त पानी लेने के लिये गया तो वहां कुछ न था। दूसरे दिन मैं ने दोबारा पानी रखा और उस पर यासीन शरीफ़ पढ़ी। जब स-ह़री का वक़्त हुवा तो मैं ने देखा कि पानी इसी त़रह़ रखा हुवा है जब कि शैत़ान अन्धा हो कर घर के इर्द गिर्द चक्कर लगा रहा है।''

(मकाइदुश्शैत़ान लि इब्ने अबिद्दुन्या, रक़म : 11, जि. 4, स. 532)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3) सूरए मुअमिनून की आख़िरी आयात मिर्गी वाले का इलाज :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने एक (मिर्गी वाले) के कान में तिलावत की तो उस को इफ़ाक़ा हो गया । रसूले अक्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि तुम ने उस के कान में क्या पढ़ा है ? मैं ने अ़र्ज़ की : ''मैं ने اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ۝ (पारह : 18, अल मुअमिनून : 115) आख़िर सूरत तक (मुकम्मल सूरत) तिलावत की । हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है अगर कोई मोमिन शख़्स इस आयत को किसी पहाड़ पर तिलावत करे तो वोह भी टल जाए ।'' (मुस्नदो अबी या'ला अल मूसिली, मुस्नदो अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द, अल ह़दीस : 5023, जि. 4, स. 345)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(4) सूरए मुअमिन की इब्तिदाई आयात सुब्ह़ तक ह़िफ़ाज़त की जाएगी :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो शख़्स सुब्ह़ के वक़्त सूरए मुअमिन की आयात

حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝

(पारह : 24, अल मुअमिन : 1 ता 3) और आ-यतुल कुरसी की तिलावत करेगा उस की शाम तक इन के ज़रीए ह़िफ़ाज़त की जाएगी और जो इन

दोनों को शाम के वक़्त तिलावत करेगा उस की इन के ज़रीए सुब्ह तक हिफ़ाज़त की जाएगी।" (जामिइ़त्तिरमिज़ी, किताब फ़ज़ाइलिल कुरआन, बाब माजा-इ फ़ी सू-रतुल ब-क़रह व आ-यतुल कुरसी, अल ह़दीस : 2888, जि. 4, स. 402)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(5) सू-रतुल ब-क़रह की क़िराअत

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अपने घरों को क़ब्रें मत बनाओ, बेशक शैत़ान उस घर से भागता है जिस में सू-रतुल ब-क़रह पढ़ी जाए।" (सह़ीह़ मुस्लिम, كتاب الصلاة المسافرين،باب استحباب صلاة النافلة ...الخ अल ह़दीस : 780, स. 393)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मस्ऊ़द अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान फ़रमाते हैं कि इमामुल आ़बिदीन, सुल्त़ानुस्साजिदीन, सय्यिदुस्सालिह़ीन, सय्यिदुल मुर-सलीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने रात को सू-रतुल ब-क़रह की आख़िरी दो आयतें पढ़ीं तो वोह उसे किफ़ायत करेंगी।" (सह़ीह़ मुस्लिम, كتاب الصلاة المسافرين،باب فضل الفاتحه وخواتيم...الخ, अल ह़दीस : 807, स. 404)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(3) और ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि नबिय्ये मकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अक्रम, शहन्शाहे

बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक अल्लाह तआ़ला ने आस्मान व ज़मीन बनाने से दो हज़ार साल पहले एक किताब लिखी और उस में से दो आयतें उतारीं जिन से सू-रतुल ब-क़रह को ख़त्म किया तो जिस घर में येह दोनों आयतें तीन रातें पढ़ी जाएं वहां शैतान नहीं रहता।" (सु-ननुत्तिरमिज़ी, किताब फ़ज़ाइलिल कुरआन, बाब माजा-इ फ़ी आख़िर सू-रतुल ब-क़रह, अल ह़दीस : 2891, जि. 4, स. 404)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि जो शख़्स सूरए ब-क़रह की इब्तिदाई चार आयतें और आ-यतुल कुरसी और इस के बा'द की दो आयतें और सूरए ब-क़रह की आख़िरी तीन आयतें पढ़ेगा तो उस दिन न उस के क़रीब शैतान आएगा न उस के अहले ख़ाना के पास आएगा और उस के घर वालों को कोई तक्लीफ़ देह चीज़ ज़ाहिर न होगी और अगर इन्ही आयतों को किसी मज्नून पर पढ़ा जाए (या'नी दम किया जाए) तो उस को जुनून से इफ़ाक़ा हो जाएगा। (सु-ननुद्दारिमी, किताब मिन फ़ज़ाइलिल कुरआन, अल ह़दीस : 3383, जि. 2, स. 541)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(5) ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : शरीर जिन्न के लिये सूरए ब-क़रह की इन दो आयतों से ज़ियादा सख़्त और कोई आयत नहीं है :

وَاِلٰـهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝ اِنَّ فِى خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِىْ تَجْرِىْ فِى الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۖ وَّتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝

तर-जमए कन्जुल ईमान : और तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं मगर वोही बड़ी रह़मत वाला महरबान। बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और रात व दिन का बदलते आना और किश्ती कि दरिया में लोगों के फ़ाएदे ले कर चलती है और वोह जो **अल्लाह** ने आस्मान से पानी उतार कर मुर्दा ज़मीन को उस से जिला दिया और ज़मीन में हर क़िस्म के जानवर फैलाए और हवाओं की गर्दिश और वोह बादल कि आस्मान व ज़मीन के बीच में हुक्म का बांधा है इन सब में अ़क़्ल मन्दों के लिये ज़रूर निशानियां हैं।

(पारह : 2, अल ब-क़रह : 163,164)

(6) सूरए आले इमरान

जान बच गई :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा ज़य्यात رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं कि एक रात मैं कूफ़ा जाने के इरादे से निकला। रात की तारीकी ने मुझे एक वीरान इमारत में पनाह लेने पर मजबूर कर दिया। अभी मैं वहीं था कि दो ख़बीस जिन्न मेरे पास आए। उन में से एक ने अपने रफ़ीक़ से

कहा : ''येह ह़म्ज़ा ज़य्यात है जो कूफ़ा के लोगों को धोका देता है।'' येह सुन कर वोह कहने लगा : ''अच्छा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इसे ज़रूर क़त्ल करूंगा।'' जब मैं ने उस के ख़त़रनाक इरादे देखे तो मैं ने सूरए आले इ़मरान की येह आयत पढ़ी :

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًۢا بِالْقِسْطِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और फ़िरिश्तों ने और आ़लिमों ने इन्साफ़ से क़ाइम हो कर उस के सिवा किसी की इ़बादत नहीं इ़ज़्ज़त वाला हिक्मत वाला। (पारह : 3, आले इ़मरान : 18)

और कहा : ''मैं इस पर गवाह हूं।'' येह सुन कर वोह दूसरे जिन्न से कहने लगा : ''तेरा नास हो, अब ज़लीलो ख़्वार हो कर सुब्ह़ तक इस की हिफ़ाज़त करो।''

(किताबिल अ़-ज़मह, ذکر الجن وخلقهم, अल ह़दीस : 1107, स. 420)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(7) सू-रतुल आ'राफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन इस्ह़ाक़ बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि जब सू-रतुल आ'राफ़ की आयत नम्बर 54 (اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ) नाज़िल हुई तो एक बहुत बड़ी जमाअ़त ह़ाज़िर हुई जो नज़र तो नहीं आती थी लेकिन इतना मा'लूम हो रहा था कि येह अ़-रबी हैं। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने उन से पूछा : ''तुम लोग कौन हो ?'' उन्हों ने कहा : ''हम **जिन्नात**

हैं मदीनए मुनव्वरह से निकल चुके हैं और हमें यहां से इसी आयत ने निकाला है।''

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ذکرمایعتصم بہ منھم, स. 157)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(8) सूरए ह़श्र की आख़िरी आयात

70 हज़ार फ़िरिश्ते ह़िफ़ाज़त करेंगे :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो शख़्स तीन मर्तबा शैत़ान से **अल्लाह** की पनाह मांगे फिर सूरए ह़श्र की आख़िरी आयतें तिलावत कर ले तो **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते भेज देता है जो उस से जिन्न व इन्स के शैत़ानों को धक्का देते रहेंगे अगर रात को पढ़ेगा तो सुब्ह़ तक और अगर दिन को पढ़ेगा तो शाम तक।''

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ذکرمایعتصم بہ منھم, स. 158)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

खजूरें चुराने वाले जिन्न :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने घर में खजूर ख़ुश्क करने के लिये एक जगह मख़्सूस कर रखी थी। आप को खजूर की ता'दाद में कुछ कमी महसूस हुई। जब रात के वक़्त आप ने उस की निगरानी फ़रमाई तो अचानक आप को वहां एक शख़्स दिखाई दिया। आप ने उस से पूछा : ''तुम कौन हो ?'' वोह कहने लगा : ''मैं जिन्न हूं, हम ने इधर का रुख़ इस लिये किया कि हमारा तोशा ख़त्म हो

गया था, चुनान्चे हम ने आप की कुछ खजूरें ले लीं। लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो तुम्हें खजूरें कम नहीं पड़ेंगी। आप ने उस से फ़रमाया : ''अगर तुम (जिन्न होने के दा'वे में) सच्चे हो तो मुझे अपना हाथ दिखाओ।'' उस ने आप को अपना हाथ दिखाया जिस पर कुत्ते के बाज़ू की त़रह़ बाल थे। आप ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''तुम हमारी जितनी खजूरें ले चुके हो वोह तुम पर ह़लाल हैं, क्या तुम मुझे उस अफ़्ज़ल तरीन अ़मल के बारे में नहीं बताओगे जिस के ज़रीए़ इन्सान जिन्नों से पनाह ह़ासिल कर सकें। तो उस ने जवाब दिया : ''वोह सूरए ह़श्र की आख़िरी आयात हैं।''

(अद्दुर्रुल मन्शूर, जि. 8, अल ह़श्र, तह़्तिल आयह : 21, स. 122)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(9) सूरए इख़्लास दस मर्तबा पढ़ लीजिये

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''जो शख़्स सुब्ह़ की नमाज़ अदा करे और बात चीत न करे यहां तक कि वोह सूरए इख़्लास दस मर्तबा पढ़ ले तो उस को उस दिन कोई तक्लीफ़ और नुक़्सान न पहुंचेगा और शैत़ान से भी उस की ह़िफ़ाज़त होगी।''

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ذکرمایعتصم بہ منھم, स. 158)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(10) मुअ़व्विज़तान (या'नी सू-रतुल फ़लक़ और सू-रतुन्नास)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिन्नों और इन्सान की नज़र से पनाह मांगा करते थे ह़त्ता कि मुअ़व्वि-ज़तान (या'नी सू-रतुल फ़लक़ और अन्नास) नाज़िल हुईं तो आप ने उन्हें ले कर बाक़ी को छोड़ दिया। (सु-ननुत्तिरमिज़ी, किताबुत्तिब, باب ما جاء فى الرقية بالمعوذتين, अल ह़दीस : 2065, जि. 4, स. 13)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बिस्मिल्लाह शरीफ़ की त़ाक़त

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ मस्जिदे न-बवी में अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक जमाअ़त के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे और आपस में फ़ज़ाइले क़ुरआन पर मुज़ा-करा कर रहे थे। उन में से एक सह़ाबी ने कहा : "सूरए तौबा का आख़िरी ह़िस्सा अफ़्ज़ल है।" दूसरे सह़ाबी ने कहा : "सूरए बनी इस्राईल का आख़िरी ह़िस्सा अफ़्ज़ल है।" एक तीसरे सह़ाबी ने कहा : "सूरए كٓهٰيٰعٓصٓ और طٰهٰ अफ़्ज़ल है।" इसी त़रह़ से हर एक ने अपने अपने इ़ल्म के मुत़ाबिक़ मुख़्तलिफ़ अक़्वाल बयान किये और इन ह़ज़रात में ह़ज़रते अ़म्र बिन मा'दी कर्ब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ भी मौजूद थे। उन्हों ने कहा : "ऐ अमीरल मुअमिनीन ! आप लोगों ने "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم" के अ़जीबो ग़रीब फ़ज़ाइल को कैसे भुला दिया, अल्लाह की क़सम "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم" के अ़जाइबात में से एक बहुत ही अ़जीब चीज़ है।" ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ सीधे हो कर बैठ गए और फ़रमाया : "ऐ अबू मासूर ! (येह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मा'दी कर्ब की कुन्यत है) हम से "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم" के फ़ज़ाइले अ़जीबा बयान करो।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मा'दी कर्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बयान करना शुरूअ़ किया : ''ऐ अमीरल मुअमिनीन ! ज़मानए जाहिलिय्यत में हम पर सख़्त क़ह़त आ पहुंचा तो मैं ने कुछ रिज़्क़ की तलाश के लिये जंगल में घोड़ा डाल दिया। मैं इसी ह़ालत में जा रहा था कि मेरे सामने एक घोड़ा, कुछ मवेशी और एक ख़ैमा नज़र आया। जब मैं ख़ैमे के पास पहुंचा तो वहां मुझे एक ख़ूब सूरत औ़रत नज़र आई। ख़मे के सामने एक बूढ़ा टेक लगाए हुए था। मैं ने कहा : ''जो कुछ तूने अपने लिये मख़्सूस किया है वोह सब मुझे दे दे तेरी मां तुझ पर रोए।'' उस ने कहा : ''ऐ शख़्स ! अगर तुम मेहमानी चाहते हो तो उतर आओ और अगर मदद चाहते हो तो हम तुम्हारी मदद करेंगे।'' मैं ने फिर कहा : ''तेरी मां तुझ पर रोए, येह सब मुझे दे दे।'' तो वोह बूढ़ा ब मुश्किल तमाम खड़ा हुवा और بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ते हुए मेरे क़रीब हुवा। उस ने मुझे ज़मीन पर गिरा लिया और मेरे ऊपर सुवार हो गया और मुझ से कहने लगा : ''मैं तुझे क़त्ल कर दूं या छोड़ दूं ?'' मैं ने कहा : ''छोड़ दो।'' तो वोह मेरे ऊपर से उठ गया।

मैं ने अपने दिल में कहा : ''ऐ अ़म्र ! तू अ़रब का शह सुवार है इस बूढ़े कमज़ोर से भागने से ज़ियादा बेहतर मर जाना है।'' चुनान्चे मेरे दिल ने फिर मुक़ाबले के लिये उक्साया और भड़काया तो मैं ने उस बूढ़े से दोबारा कहा : ''येह सब माल मुझे दे दे तेरी मां तुझ पर रोए।'' वोह एक बार फिर بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ते हुए मेरे क़रीब हुवा और मुझे ऐसा खींचा कि मैं उस के नीचे आ गया और वोह मेरे सीने पर चढ़ कर बैठ गया और पूछा : ''क्या तुझे क़त्ल कर दूं या छोड़ दूं ?'' मैं ने कहा : ''मुआ़फ़ कर दे.'' चुनान्चे उस ने मुझे छोड़ दिया। न जाने मेरे जी में क्या आई कि मैं ने उस को मुख़ात़ब करते हुए तीसरी मर्तबा कहा : ''अपना सब माल मुझे दे दे तेरी मां

तुझ पर रोए।'' अब की बार फिर वोह بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ते हुए मेरे क़रीब आया तो मुझ पर रो'ब त़ारी हो गया और उस ने मुझे ऐसा खींचा कि मैं उस के नीचे आ पड़ा। मैं ने उस से दर-ख़्वास्त की : ''मुझे छोड़ दो।'' उस ने कहा : ''अब तीसरी बार तो मैं तुझे नहीं छोड़ूंगा।'' उस ने कनीज़ को आवाज़ दी : ''तेज़ धार की तलवार ले आ।'' वोह उस के पास तलवार ले आई तो उस बूढ़े ने मेरे सर का अगला ह़िस्सा (या'नी चोटी को) काट दिया और मेरे सीने से उतर गया।

ऐ अमीरल मुअमिनीन ! हम अ़-रबों में येह रवाज है कि जब हमारी चोटी काट दी जाती है तो उस के उगने से पहले हमें अपने घर लौट जाने में ह़या व शर्म आती थी। चुनान्चे मैं एक साल तक उस की ख़िदमत करने पर राज़ी हो गया। जब पूरा साल गुज़र गया तो उस ने मुझ से कहा : ''ऐ अ़म्र ! मैं चाहता हूं कि तुम मेरे साथ जंगल की त़रफ़ चलो।'' मैं उस के साथ चल पड़ा यहां तक कि हम एक वादी में पहुंचे। उस ने जंगल वालों को بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ कर आवाज़ लगाई तो तमाम परिन्दे अपने अपने घोंसले छोड़ कर निकल गए। एक परिन्दा भी बाक़ी न रहा। फिर दोबारा आवाज़ लगाई तो तमाम दरिन्दे अपने इह़ातों से बाहर चले गए। तीसरी बार आवाज़ लगाई तो एक लम्बे खजूर के दरख़्त की त़रह़ लम्बा काला आदमी नज़र आया जो ऊनी लिबास पहने हुए था। उसे देख कर मुझ पर रो'ब त़ारी हो गया। उस बूढ़े ने कहा : ''ऐ अ़म्र ! घबराओ मत अगर हम हार गए तो तुम कहना मेरा साथी (या'नी बूढ़ा) بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم की ब-र-कत से उस पर ग़ालिब आ जाएगा। लेकिन मुक़ाबला में वोह लम्बा काला आदमी ग़ालिब आ गया तो मैं ने झट से कहा कि मेरा साथी लात व उ़ज़्ज़ा की वजह से

ग़ालिब होगा तो उस बूढ़े ने मुझे एक ऐसा थप्पड़ मारा कि मेरा सर उखड़ जाता। मैं ने कहा : मैं दोबारा ऐसा नहीं करूंगा। फिर जब हम जीत गए तो मैं ने कहा मेरा साथी بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم की ब-र-कत से ग़ालिब आ गया। उस बूढ़े ने उस को उठा कर ज़मीन में इस त़रह़ गाड़ दिया जिस त़रह़ घास को गाड़ा जाता है फिर उस के पेट को फाड़ कर उस से सियाह लालटेन की त़रह़ कोई चीज़ निकाली और मुझ से कहा : ''ऐ अम्र ! येह इस का धोका और कुफ़्र है।'' मैं ने कहा : ''आप का और इस पलीद का क्या क़िस्सा है ?'' उस ने कहा वोह लड़की जिस को तुम ने ख़ैमे में देखा वोह फ़ारिआ़ बिन्ते मस्तूरद है। हर साल एक जिन्न मेरे साथ जंग लड़ता था तो अल्लाह तआ़ला بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم की ब-र-कत से मुझे उन पर फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाता था।

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, فی ذکر اخبار الجن...الخ, स. 211)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿3﴾ ज़िक्रुल्लाह की कस्रत

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिस अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी एक त़वील ह़दीस में येह भी है कि ''मैं तुम्हें हुक्म देता हूं कि अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करो। बेशक इस की मिसाल उस आदमी की है जिस के पीछे दुश्मन लगा हुवा हो तो वोह एक क़ल्ए़ के पास आए तो उस में अपने आप को उन से महफ़ूज़ कर ले। तो ऐसे ही बन्दा अपने आप को शैत़ान से नहीं बचा सकता जब तक वोह अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र न करे।''

(सु-ननुत्तिरमिज़ी, किताबिल इम्साल, बाब माजाइस्सलाह...., अल ह़दीस : 2872, जि. 4, स. 394, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾4﴿ अज़ान देना

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अबू सालेह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि मुझे मेरे वालिद ने बनू ह़ारिसा की त़रफ़ भेजा और मेरे साथ हमारा ग़ुलाम या दोस्त था। बाग़ में से किसी ने उस का नाम ले कर पुकारा। उस ने दीवार के ऊपर से झांका तो कुछ भी नज़र न आया। मैं ने इस बात का अपने वालिद से ज़िक्र किया तो उन्हों ने कहा कि अगर मुझे मा'लूम होता कि तेरे साथ येह मुआ़-मला पेश आएगा तो मैं तुझे न भेजता लेकिन जब आवाज़ सुनो तो नमाज़ की अज़ान दो क्यूं कि मैं ने सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ह़दीस बयान करते हुए सुना है कि रसूले अक्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब नमाज़ के लिये अज़ान दी जाए तो शैत़ान मुंह फैर कर भागता है और उस की हवा ख़ारिज हो रही होती है।" (सह़ीह़ मुस्लिम, کتاب الصلاۃ،باب فضل الآذان وھرب...الخ, अल ह़दीस : 389, स. 205)

इन्सानों का शिकार करने वाले जिन्नात

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को क़बीला बनी सुलैम की कान (ख़ज़ाना) पर निगरां मुक़र्रर किया गया था और येह कान ऐसी थी जिस में जिन्नात इन्सानों का शिकार कर लेते थे। जब ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उस के वाली हुए तो लोगों ने आप से शिकायत की। आप ने उन को बुलन्द आवाज़ से अज़ान देने का हुक्म फ़रमाया। लोगों ने ऐसा ही किया तो येह मुसीबत टल गई।

(लुक्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ذکر المصطفین من عباد الجن, स. 244)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾5﴿ दर्जे ज़ैल कलिमा को पढ़ना

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْر (तरजमा : "**अल्लाह** तआ़ला के इ़लावा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं वोह अकेला है और उस का कोई शरीक नहीं उसी की बादशाहत है और उसी की ता'रीफ़ और ह़म्द है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।")

(**1**) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान फ़रमाते हैं कि बेशक नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स एक दिन में सो मर्तबा **لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْر** पढ़ता है उसे दस गरदनों के बराबर सवाब मिलता है और उस के लिये सो नेकियां लिखी जाती और सो बुराइयां मिटाई जाती हैं और शाम तक उस के लिये शैत़ान से ह़िफ़ाज़त रहती है। और इस से बेहतर कोई अ़मल नहीं करता ह़त्ता कि कोई इस से ज़ियादा करे। (सह़ीह़ मुस्लिम, کتاب الذکر والدعاء...الخ،باب فضل التهلیل والتسبیح والدعاء, अल ह़दीस : 2691, स. 1445)

(**2**) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मारह बिन शबीब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْر

नमाज़े मग़्रिब के बा'द दस बार पढ़ेगा तो अल्लाह तआ़ला उस के

लिये मुसल्लह़ फ़िरिश्ते (मुह़ाफ़िज़) भेज देगा जो उस की सुब्ह़ तक शैत़ानों से निगहबानी करेंगे । (जामिइ़त्तिरमिज़ी, كتاب الدعوات،باب ماجاء فی عقد التسبیح بالید, अल ह़दीस : 3545, जि. 5, स. 315)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾6﴿ जिन्नात और जादू से ह़िफ़ाज़त के लिये चन्द अवराद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तह़रीर फ़रमाते हैं : ''मा'लूम हुवा कि **जिन्नात** इन्सानों को इग़वा भी कर जाते हैं और येह इन्तिहाई तशवीश की बात है इन से ह़िफ़ाज़त के लिये दुन्यवी अस्लिह़ा नहीं बल्कि इन्सानी फ़ौज़ भी कार आमद नहीं । इस के लिये ''**म-दनी हथियार**'' दरकार हैं । दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की त़रफ़ से शाएअ़ कर्दा 16 स-फ़ह़ात पर मुश्तमिल जेबी साइज़ के रिसाले **40 रूह़ानी इलाज** में से चार ''म-दनी हथियार'' ह़ाज़िर हैं ﴾1﴿ **يَامُهَيْمِنُ 29** बार (दिन में किसी भी वक़्त) रोज़ाना पढ़ने वाला اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ हर आफ़त व बला से मह़फ़ूज़ रहे ﴾2﴿ **يَاوَكِيْلُ** सात बार जो रोज़ाना अ़स्र के वक़्त पढ़ लिया करे اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ हर आफ़त से पनाह पाएगा । ﴾3﴿ **يَا مُمِيْتُ** सात बार रोज़ाना पढ़ कर जो अपने ऊपर दम कर लिया करे اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ उस पर जादू असर नहीं करेगा । ﴾4﴿ **يَا قَادِرُ** जो वुज़ू के दौरान हर उ़ज़्व धोते हुए पढ़ने का मा'मूल बना ले اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ दुश्मन (जिन्न और इन्सान) इस को इग़वा नहीं कर सकेगा । (वुज़ू में हर उ़ज़्व धोते वक़्त दुरूद शरीफ़ भी पढ़िये कि

मुस्तह़ब है और يَا قَادِرُ भी पढ़ते रहिये) अपने अपने पीरो मुर्शिद की इजाज़त से ह़िफ़ाज़त के अवराद भी पढ़ते रहिये।"

﴾7﴿ जिन्नात से ह़िफ़ाज़त के मुख़्तलिफ़ वज़ाइफ़

(1) जिन्नात के शर से ह़िफ़ाज़तः

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि बनी तमीम का एक आदमी बहुत जुरअत मन्द और बहादुर था। एक रात वोह सफ़र पर रवाना हुवा और जिन्नात की ज़मीन पर जा उतरा। जब उस ने वह़शत और ख़ौफ़ सा मह़सूस किया तो उस ने अपनी सुवारी की टांगें बांधी और उस के साथ टेक लगा कर बैठ गया और कहने लगा : मैं इस वादी के सरदार से इस के रहने वालों के शर से पनाह मांगता हूं। तो जिन्नात में से एक बूढ़े ने उसे पनाह दे दी। उस के क़बीले का एक जवान जो जिन्नात का सरदार भी था, इन्तिहाई ग़ज़ब नाक हुवा। उस ने ज़हर में बुझा हुवा अपना नेज़ा उठाया और उस आदमी की ऊंटनी मारने के इरादे से आगे बढ़ा। मगर उस बूढ़े ने उसे उठा कर ऊंटनी के क़रीब पटख़ दिया और उसे कुछ इस त़रह़ समझाया :

"ऐ मालिक बिन महलहल ! रुक जाओ, येह शख़्स मेरी जाए ह़िफ़ाज़त और मेरी पनाह में है, इस की ऊंटनी को कुछ न कहो और तुम मुझ से नील गाएं ले लेना। ऐ अबू यक़्त़ारी ! अगर ह़या न होती कि तेरे घर वाले मेरे पड़ोसी हैं तो मैं तुझे अपने नाख़ुनों से चीर फाड़ देता।"

जवाबन उस नौ जवान ने कहा : "ऐ अबुल ईज़ार ! क्या तू चाहता है कि तू बुलन्द हो और हमारा ज़िक्र बग़ैर किसी ऐ़ब के पस्त कर दे, तू यहां से चलता बन क्यूं कि शरफ़ व बुज़ुर्गी उन के लिये है जो गुज़रे

हुए ज़माना में सरदार थे, बिला शुबा अफ़्ज़ल व आ'ला वोही हैं जो आ'ला लोगों की औलाद हैं। ऐ दोबारा ह़म्ला करने वाले ! अपने इरादे में ए'तिदाल पैदा कर। बेशक पनाह देने वाला महलहल बिन वबार है।"

तो बूढ़े ने कहा : तूने सच कहा है। तेरा बाप हमारा सरदार और हम से अफ़्ज़ल व आ'ला था। तू इस आदमी को छोड़ दे मैं इस के बा'द किसी के बारे में तुझ से तनाज़ोअ़ और झगड़ा नहीं करूंगा तो उस नौ जवान ने उसे छोड़ दिया।

फिर वोह आदमी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िर हुवा और आप को सारा क़िस्सा सुनाया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम में से किसी को वह़शत हो और ख़ौफ़ पहुंचे या जिन्नात की ज़मीन में कोई पड़ाव करे तो उसे चाहिये कि येह कलिमात कहे :

اَعُوْذُبِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ الَّتِیْ لَا یُجَاوِزُهُنَّ بِرٌّوَّلَا فَاجِرٌمِنْ شَرِّ مَایَلِجُ فِی الْاَرْضِ،وَمَا یَخْرُجُ مِنْهَا،وَمَایَنْزِلَ مِنَ السَّمَآءِ وَمَایَعْرِجُ فِیْهَاوَمِنْ فِتَنِ الَّیْلِ،وَمِنْ طَوَارِقِ النَّهَارِاِلَّا طَارِقًایَّطْرُقُ بِخَیْرٍ

या'नी मैं अल्लाह तआ़ला के उन मुकम्मल कलिमात के साथ जिन्हें कोई नेक व बद तजावुज़ नहीं कर सकता जो ज़मीन में दाख़िल होता है और जो इस से निकलता है और जो आस्मान से नाज़िल होता है और जो आस्मान की त़रफ़ चढ़ता है और रात के फ़ित्ने से और दिन के ह़वादिस से पनाह मांगता हूं बजुज़ उस ह़ादिसा के जो भलाई के साथ आए।

(अद्दुर्रुल मन्शूर, जि. 8, अल जिन्न, तह़्तिल आयह : 6, स. 299)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) नज़रे बद से हिफ़ाज़त का नुस्ख़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन ह़सीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो शख़्स सूरए फ़ातिह़ा और आ-यतुल कुरसी अपने घर में पढ़ेगा तो उस दिन उस को न तो किसी इन्सान की नज़रे बद लगेगी और न किसी जिन्न की।''

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, ذکر مایعتصم بہ منھم, स. 156)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3) जिन्न के फ़रेब से बचने का नुस्ख़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जिन्नों में से एक मक्कार मुझे फ़रेब देता है।'' तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह कलिमात पढ़ लो :

اَعُوْذُ بِکَلِمَا تِ اللّٰہِ التَّا مَّاتِ الَّلاتِیْ لَا یُجَاوِزُ ھُنَّ بِرٌّ وَّ لَا فَا جِرٌ مِّنْ شَرِّمَا ذَرَاَ فِی الْاَرْضِ وَمِنْ شَرِّ مَا یَخْرُجُ مِنْھَا وَمِنْ شَرِّ مَا یَعْرِجُ فِی السَّمَاءِ وَّ مِنْ شَرِّ مَا یَنْزِلُ مِنْھَا وَ مِنْ شَرِّ کُلِ طَا رِقٍ اِلَّا طَارِقاً یَطْرُقُ بِخَیْرٍ یَّا رَحْمٰنُ

तरजमा : अल्लाह के उन कामिल कलिमात के ज़रीए पनाह मांगता हूं जिन से कोई नेक और कोई बुरा तजावुज़ व सब्क़त नहीं कर सकता उस के शर से जो ज़मीन में दाख़िल हो और उस शर से जो ज़मीन से ख़ारिज हो और उस शर से जो आस्मान से उतरते हैं और जो आस्मान में चढ़ते हैं और हर क़िस्म के शर से मगर भलाई लाने वाले की भलाई

से ऐ बड़ी रह़मत वाले (अल्लाह) ।" (दलाइलुन्नुबुव्वह लिल बैहक़ी, جماع ابواب،باب ما جاء فی تحرز النبی ﷺ....الخ, जि. 7, स. 96)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(4) ह़िफ़ाज़त का एक वज़ीफ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ज़ैद बिन अस्लम علیہ رحمۃ اللہ الاکرم कहते हैं कि अश्जअ़ क़बीले के दो आदमी किसी शादी में शिर्कत के लिये जा रहे थे कि अचानक एक औ़रत उन के सामने आ गई और पूछने लगी : "कहां का इरादा है ?" उन्हों ने कहा : "एक शादी है, हमें उस में जहेज़ देना है ।" उस ने दा'वा किया : मुझे इन तमाम बातों का ख़ूब इ़ल्म है, जब तुम्हें वक़्त मिले तो मेरे पास आ जाना । जब वोह फ़ारिग़ हो गए तो उस के पास पहुंचे । वोह कहने लगी : "मैं तुम दोनों के साथ चलती हूं ।" चुनान्चे उन्हों ने उसे एक ऊंट पर सुवार किया और दूसरे ऊंट पर ख़ुद सुवार हो गए और उस के पीछे पीछे चलना शुरूअ़ कर दिया ।

जब वोह रैत के एक टीले के पास पहुंचे तो वोह कहने लगी मुझे कुछ ह़ाजत है । उन्हों ने वहीं ऊंट बिठा दिये और उस का इन्तिज़ार करने लगे । जब उस औ़रत ने लौटने में बहुत ताख़ीर कर दी तो उन में से एक उस के पीछे गया । काफ़ी वक़्त गुज़र गया मगर वोह भी वापस न आया तो दूसरा शख़्स भी उन दोनों को बुरा भला कहते हुए उन्हें ढूंडने निकला ।

उस ने देखा कि एक जगह वोह औ़रत उस शख़्स के पेट पर बैठी उस का जिगर खा रही है । जब उस ने येह ख़ूनी मन्ज़र देखा तो उल्टे क़दमों वापस हो लिया और अपनी सुवारी पर सुवार हो कर जल्दी

से भाग निकलने की कोशिश करने लगा। मगर वोह औ़रत उस की राह में ह़ाइल हो गई और कहने लगी तू तो बहुत जल्दी चल दिया। वोह कहने लगा मैं ने देखा कि तूने बहुत देर कर दी है, लिहाज़ा मैं चला आया। जब उस औ़रत ने देखा कि वोह इस से जान छुड़ाने की कोशिश कर रहा है तो कहने लगी : तुम्हें इतनी जल्दी क्यूं है ? मैं ने घबरा कर कहा हमारे सामने एक ज़ालिम शैत़ान है। वोह कहने लगी : क्या मैं तुम्हें ऐसी दुआ़ न बताऊं कि जिस से तुम उसे हलाक कर सको और उस से अपना ह़क़ ले सको ? मैं ने पूछा : "वोह कौन सी दुआ़ है ?" वोह कहने लगी :

يَا رَبَّ السَّمٰوٰتِ وَمَا اَظَلَّتْ وَرَبَّ الْاَرْضِيْنَ وَمَا اَقَلَّتْ وَرَبَّ الرِّيَاحِ وَمَا اَذْرَتْ وَرَبَّ الشَّيَاطِيْنِ وَمَا اَضَلَّتْ اَنْتَ الْمَنَّانِ بَدِيْعُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ ذُوْالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ، تَاْ خُذُ لِلْمَظْلُوْمِ مِنَ الظَّالِمِ حَقَّهٗ وَخُذْلِيْ حَقِّيْ مِنْ فُلَانٍ فَاِنَّهٗ ظَلَمَنِيْ

(तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आस्मानों और उन चीज़ों के रब जिन पर आस्मानों ने साया किया, ज़मीनों और उन के रब जिन को ज़मीनों ने उठा रखा है और हवाओं के रब और उन के जिन को हवाओं ने उड़ा दिया है शैत़ानों और उन चीज़ों के रब जिन को शैत़ान ने गुमराह किया, तू एह़सान फ़रमाने वाला है, आस्मानों और ज़मीन को ईजाद करने वाला है, जलाल और बुज़ुर्गी वाले ऐ अल्लाह ! तू ज़ालिम से मज़्लूम का ह़क़ दिलाता है, मेरा ह़क़ भी फ़ुलां से दिला दे क्यूं कि उस ने मुझ पर ज़ुल्म किया है।)

मैं ने उस औ़रत से कहा : एक मर्तबा फिर पढ़ो। उस ने वोह दुआ़ मेरे सामने दोहरा दी। मैं ने उसी वक़्त वोह दुआ़ मांगी और कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस औ़रत ने मुझ पर ज़ुल्म किया और मेरे भाई को

खा लिया।'' इतना कहना था कि आस्मान से एक आग आई और उस के कपड़ों को जलाना शुरूअ़ कर दिया और उसे दो हिस्सों में चीर दिया, एक हिस्सा एक त़रफ़ और दूसरा हिस्सा दूसरी त़रफ़ गिर गया। वोह उन जिन्नों में से थी जो लोगों का गोश्त खाते हैं।

(किताबिल अ़-ज़मह, ذکر الجن وخلقهم, अल ह़दीस : 1124, स. 426)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(5) जिन्नात से हिफ़ाज़त का नुस्ख़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन नस्र बिन मालिक ख़ज़ा-ई رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ फ़रमाते हैं कि एक अ़-जमी कनीज़ को कोई (जिन्न) ऐसी अज़िय्यत देता कि वोह तक्लीफ़ के मारे ज़मीन पर गिर जाती। मैं ने उस (जिन्न) से कहा : ''ऐ मख़्लूक़े ख़ुदा ! तुम इस कनीज़ को नहीं बल्कि दर ह़क़ीक़त हमें अज़िय्यत देते हो।'' (इस पर) कनीज़ ने (अ़-जमी होने के बा वुजूद) फ़सीह़ अ़-रबी ज़बान में गुफ़्त-गू शुरूअ़ की और कहने लगी : ''ऐ अह़मद बिन नस्र ! ठीक है मैं चला जाता हूं और कभी लौट कर नहीं आऊंगा लेकिन ह़ज़रत जब आप रात को नमाज़ के लिये उठते हैं और वुज़ू करते हैं तो अपना हाथ दीवार पर न रखा करें क्यूं कि आप का हाथ हमारे जिन्न भाइयों पर जा पड़ता है जिस से हमें तक्लीफ़ पहुंचती है नीज़ अपनी बेटी से कहिये कि रात के वक़्त अपने बाल न खोला करे।'' आप رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ ने उस का शुक्रिया अदा करते हुए फ़रमाया : ''तुम ने हमें भलाई की बातें बताईं, अब कोई ऐसा त़रीक़ा भी बताओ जिस के ज़रीए हम तुम से छुटकारा ह़ासिल कर सकें।'' उस जिन्न ने काग़ज़ क़लम लाने का मुत़ा-लबा किया। जब येह दोनों चीज़ें फ़राहम कर दी गईं तो उस ने कहा : लिखिये

اَلْحَمْدُلِلّٰهِ الَّذِی رَفَعَ السَّمَآءِ وَوَضَعَ الْاَرْضَ وَنَصَبَ الْجِبَالَ وَاَجْرٰی الْجَارَ، وَاَظْلَمَ اللَّیْلَ وَاَضَاءَ النَّهَارَ وَخَلَقَ مَایُرٰی وَمَالَا یُرٰی لَمْ یَحْتَجْ فِیْهِ اِلٰی عَوْنِ اَحَدٍ مِّنْ خَلْقِهٖ وَفَرَّقَ الْاَدْیَانَ فَجَعَلَ اَخَصَّ الْاَدْیَانِ الْاِسْلَامَ ، فَسُبْحَانَكَ مَا اَعْظَمَ شَانَكَ لِمَنْ تَفَكَّرَ فِیْ قُدْرَتِكَ عَلَوْتَ بِعُلُوِّكَ وَدَنُوْتَ بِدُنُوِّی ، وَقَهَرْتَ خَلْقَكَ بِسُلْطَانِكَ فَالْمُعَادِی لَكَ مِنْهُمْ فِی النَّارِ وَالْمُذَلِّلُ لَكَ نَفْسَهٗ مِنْهُمْ فِی الْجَنَّةِ ، اَمَرْتَ بِالدُّعَاءِ وَضَمِنْتَ الْاِجَابَةَ اَنْتَ الْقَوِیُّ فَلَا اَحَدٌ اَقْوٰی مِنْكَ ، وَاَنْتَ الرَّحِیْمُ فَلَیْسَ اَحَدٌ اَرْحَمُ مِنْكَ وَرَحِمْتَ یُوْسُفَ فَنَجَّیْتَهٗ مِنَ الْجُبِّ وَرَحِمْتَ یَعْقُوْبَ فَرَدَدْتَ عَلَیْهِ بَصَرَهٗ وَرَحِمْتَ اَیُّوْبَ فَكَشَفْتَ عَنْهُ بَلَاءَهٗ وَرَحِمْتَ یُوْنُسَ فَنَجَّیْتَهٗ مِنْ بَطْنِ الْحُوْتِ اَسْئَالُكَ وَاَرْغَبُ اِلَیْكَ فَاِنَّكَ مَسْئُوْلٌ لَمْ یُسْاَلْ مِثْلُكَ ، یَا قَاصِمَ الْجَبَابِرَةِ وَ یَا دَیَّانَ الدِّیْنِ الَّذِیْ یُحْیِ الْعِظَامَ وَهِیَ رَمِیْمٌ وَیَا مُجِیْبَ الْمُضْطَرِیْنَ قَضِیَّةٌ لِخَلْقِكَ عَلٰی اَنْ یَّمُرُّوْا عَلٰی اَدَقٍّ مِّنَ الشَّعْرِ وَاحِدٌ مِّنَ السَّیْفِ عَلٰی وَادِیْ جَهَنَّمَ ، فَاَنْقَذْتَ مَنْ شِئْتَ وَاَغْرَقْتَ مَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ فِیْ نَارِ جَهَنَّمَ اَنْتَ ابْتَلَیْتَ فُلَانَ اِبْنَ فُلَانَةِ بِهٰذِهِ الْاَوْجَاعِ وَالْاَسْقَامِ وَالرِّیَاحِ وَاَنْتَ الْقَادِرُ عَلَی الذِّهَابِ بِهٖ فَاذْهَبْ بِهٖ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ۔

(तरजमा : तमाम ता'रीफ़ें उस अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के लिये हैं जिस ने आस्मान को बुलन्द किया और ज़मीन को बिछाया, पहाड़ों को खड़ा किया, समुन्दरों को रवां किया, रात को तारीक और दिन को रोशन

किया, हर नज़र आने वाली और नज़र न आने वाली चीज़ को तख़्लीक़ किया, वोह इन कामों में मख़्लूक़ में से किसी का मोह़ताज नहीं, जिस ने अदियान में फ़र्क़ किया और उन में सब से ख़ास दीन, दीने इस्लाम को बनाया, ऐ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ! तू हर ऐ़ब से पाक है, तेरी क़ुदरत के बारें तफ़क्कुर करने वाला तुझे बड़ी अ़-ज़-मतो शान वाला पाता है, तू अपनी बुलन्द शान की वजह से हर एक पर ग़ालिब है और तू मेरे क़रीब भी है, तू अपनी मख़्लूक़ पर अपनी बादशाही की वजह से क़ाहिर है, तेरी मख़्लूक़ में से तेरे साथ दुश्मनी करने वाला जहन्नमी है और तेरी बारगाह में झुक जाने वाला जन्नती है, तूने दुआ़ मांगने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया और साथ ही क़बूलिय्यत की ज़मानत भी दी। तुझ से बढ़ कर कोई क़ुव्वत वाला नहीं है, तू सब से ज़ियादा रह़्म फ़रमाने वाला है, तूने ह़ज़रते यूसुफ़ (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) पर रह़मत नाज़िल की और उन्हें गहरे कूंएं से नजात दिलाई, तूने ह़ज़रते या'क़ूब (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) पर रह़मत फ़रमाई तो उन्हें बसारत लौटा दी, तूने ह़ज़रते अय्यूब (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) पर रह़मत की तो उन्हें मसाइब व आलाम से छुटकारा दिलाया, तूने ह़ज़रते यूनुस (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) पर रह़म फ़रमाया तो उन्हें मछली के पेट से नजात अ़ता फ़रमाई, ऐ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) मैं भी तुझ से सुवाली हूं और तेरी बारगाह में ह़ाज़िर हूं। तू ऐसा मस्ऊल (जिस से मांगा जाए) है कि तुझ से बढ़ कर किसी और से नहीं मांगा जाता। ऐ मग़रूर और सरकश लोगों का ग़ुरूर ख़ाक में मिला देने वाले ! ऐ बरोज़े महशर ह़िसाब किताब लेने वाले जो बोसीदा हड्डियों को ज़िन्दा करेगा। ऐ परेशान ह़ालों को सुनने वाले, तूने अपनी मख़्लूक़ पर लाज़िम किया है कि वोह जहन्नम की वादी पर बाल से ज़ियादा बारीक और तलवार से

ज़ियादा तेज़ (पुल सिरात़) पर से गुज़रे। अब तू जिसे चाहे बचा ले और जिसे चाहे जहन्नम की आग में ग़र्क़ कर दे। ऐ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ! तूने फ़ुलां बिन फ़ुलाना को इन मसाइब व आलाम और बीमारियों में मुब्तला किया है। ऐ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ! तू इन मसाइब व आलाम को ख़त्म करने पर क़ादिर है। या अर-ह़मर्राह़िमीन ! इस शख़्स की तमाम तकालीफ़ को दूर फ़रमा।)

फिर उस ने हमें कुछ आयात बताईं और कहा : येह आयात पढ़ने के बा'द लोहे के एक बरतन में पानी लीजिये और उस पर दम करने के बा'द उस शख़्स को एक या दो घूंट पिला दें जिसे **नज़र** लगी हो या **जुनून** हो या उसे कोई **जिन्न** वग़ैरा नुक़्सान पहुंचाते हों। पानी के चन्द छींटे उस के मुंह पर भी मारिये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से वोह ठीक हो जाएगा।

(किताबिल अ़-ज़मह, ذکر الجن وخلقهم, अल ह़दीस : 1159, स. 434)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सुब्ह़ शाम पढ़े जाने वाले कलिमात

एक शख़्स रात के दरमियानी ह़िस्से में कूफ़ा के नवाह़ की त़रफ़ निकला तो अचानक उस ने एक ख़ैमा नुमा चीज़ देखी जिसे एक मज्मअ़ ने घेरा हुवा था। वोह शख़्स उन्हें छुप कर देखता रहा इतने में कोई आया और उस ख़ैमे के ऊपर बैठ गया। कहते हैं कि वोह शख़्स सुनता रहा। तो मज्मअ़ में से एक शख़्स ने उठ कर कहा : ''येह मैं करूंगा।'' उस ने कहा : ''अभी मेरे पास (लाओ)।'' तो वोह मदीने की त़रफ़ चल पड़ा। थोड़ी देर के बा'द वापस आ कर सामने खड़ा हो गया और कहा :''मैं उ़रवह पर क़ाबू नहीं पा सकता।'' ख़ैमे पर बैठे हुए शख़्स ने उसे मलामत

की तो वोह कहने लगा कि वोह सुब्हो शाम ऐसा कलाम पढ़ता है (जिस की वजह से) उस पर कोई क़ाबू नहीं पा सकता। मज्मअ़ बरखा़स्त हो गया और वोह शख़्स अपने घर की त़रफ़ चल पड़ा। दूसरे दिन सुब्ह़ सवेरे वोह कनास गया और ऊंट ख़रीद कर मदीने की जानिब चल दिया। मदीने में ह़ज़रते उ़रवह बिन मुग़ीरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मिल कर उस कलाम के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल किया जो वोह सुब्हो शाम पढ़ते थे और उन्हें येह क़िस्सा भी बयान किया। आप ने फ़रमाया : "मैं सुब्हो शाम येह कलिमात तीन मर्तबा पढ़ता हूं :

اٰمَنْتُ بِاللّٰہِ وَحْدَہٗ وَکَفَرْتُ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ وَاسْتَمْسَکْتُ بِالْعُرْوَۃِ الْوُثْقٰی لَا انْفِصَامَ لَھَا وَاللّٰہُ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ

तरजमा : या'नी मैं एक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाया बुत, काहिन और जादूगरऔर ग़ैरुल्लाह का इन्कार किया और मज़्बूत़ रस्सी (इस्लाम) को थाम लिया जो टूटने वाली नहीं और अल्लाह तआ़ला सुनता जानता है।"

(किताबिल हवातिफ़ लि इब्ने अबिद्दुन्या, रक़्म : 154, जि. 2, स. 514)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾8﴿ चिक्नाई वाली चीज़ें जल्द धो डालिये

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स इस ह़ाल में रात बसर करता है कि उस के हाथ में (चिक्नाई की) बू हो (और बग़ैर हाथ धोए सो जाए) और उसे इस से कुछ तक्लीफ़ पहुंच जाए तो वोह ख़ुद अपने ही को मलामत करे।" (सु-ननो अबी दावूद, كتاب الاطعمة،باب فى غسل اليد من الطعام, अल ह़दीस : 3852, जि. 3, स. 514)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾9﴿ घर में लीमूं रखिये

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मशहूरे ज़माना तालीफ़ ''**फ़ैज़ाने सुन्नत**'' जिल्द अव्वल के सफ़ह़ा 333 पर लिखते हैं :

क़ाज़ी अ़ली बिन ह़सन ख़ल्ई की ''**सवानेह़े ह़यात**'' में है कि जिन्नात उन के पास आते रहते थे । एक मर्तबा अ़र्सए दराज़ तक नहीं आए तो क़ाज़ी साह़िब ने उन से इस की वजह पूछी तो जिन्नों ने बताया कि **आप के घर में लीमूं था और हम ऐसे घर में नहीं आते जिस में लीमूं होता है ।** (लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, स. 47)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾10﴿ घर में सफ़ेद मुर्ग़ा रख लीजिये

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मशहूरे ज़माना तालीफ़ ''**फ़ैज़ाने सुन्नत**'' जिल्द अव्वल के सफ़ह़ा 333 पर लिखते हैं :

दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : (**1**) सफ़ेद मुर्ग़ रखा करो इस लिये कि जिस घर में सफ़ेद मुर्ग़ हो तो न शैत़ान उस घर के क़रीब होगा और न जादूगर उन घरों के क़रीब होगा जो उस घर के इर्द गिर्द हैं । (अल मो'जमुल औसत़, अल ह़दीस : 677, जि. 1, स. 201) (**2**) सफ़ेद मुर्ग़ को बुरा भला मत कहो इस लिये कि येह मेरा दोस्त है और मैं इस का दोस्त हूं और इस का दुश्मन मेरा दुश्मन है जहां तक इस की आवाज़ पहुंचती है येह जिन्नात को दफ़्अ़ करता है । (किताबुल अ़-ज़मह, ذكر ساعات الليل والنهار...الخ, अल ह़दीस : 1269, स. 459) (लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, स. 125)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जिन्नात से नजात की हिकायात

(1) हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रवत़ की ब-र-कत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दजाना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं अपने बिस्तर पर सोता हूं तो अपने घर में चक्की चलने की आवाज़ जैसी आवाज़ सुनता हूं और शहद की मक्खी की भिनभिनाहट जैसी भिनभिनाहट सुनता हूं और बिजली की चमक जैसी चमक देखता हूं फिर जब मैं घबरा कर और मरऊ़ब हो कर सर उठाता हूं तो मुझे एक (काला) साया नज़र आता है जो बुलन्द हो कर मेरे घर के सेह़न में फैल जाता है। फिर मैं उस की त़रफ़ माइल होता हूं और उस की जिल्द छूता हूं तो उस की जिल्द सेही (एक जानवर है जिस के बदन पर कांटे होते हैं) की जिल्द की त़रह़ मा'लूम होती है। वोह मेरी त़रफ़ आग के शो'ले फेंकता है मेरा गुमान होता है कि वोह मुझे भी जला देगा और मेरे घर को भी। तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अबू दजाना ! तुम्हारे घर में रहने वाला बुरा (जिन्न) है रब्बे का'बा की क़सम ! ऐ अबू दजाना ! क्या तुम जैसे को भी कोई ईज़ा देने वाला है ?'' फिर फ़रमाया : ''तुम मेरे पास दवात और काग़ज़ ले आओ।'' जब येह दोनों चीज़ें लाई गईं तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन को ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को दे दिया और फ़रमाया : ''ऐ अबुल ह़सन ! जो मैं कहता हूं लिखो।'' ह़ज़रते अली كَرَّمَ اللّٰه تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अ़र्ज़ की : ''क्या लिखूं ?'' हुज़ूरे अक्रम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ هٰذَا كِتَابٌ مِّنْ مُّحَمَّدٍ رَّسُوْلِ رَبِّ
الْعَالَمِيْنَ اِلٰى مَنْ طَرَقَ الدَّارَ مِنَ الْعُمَّارِ وَالزُّوَّارِ وَالصَّالِحِيْنَ ○ اِلَّا طَارِقًا
يَّطْرُقُ بِخَيْرٍ يَا رَحْمٰنُ اَمَّا بَعْدُ ○ فَاِنَّ لَنَا وَلَكُمْ فِى الْحَقِّ سَعَةً فَاِنْ تَكُ
عَاشِقًا مُوْلِعًا ○ اَوْ فَاجِرًا مُقْتَحِمًا ○ اَوْ رَاغِبًا حَقًّا ○ اَوْ مُبْطِلًا ○ هٰذَا كِتَابُ
اللّٰهِ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى يَنْطِقُ عَلَيْنَا وَعَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ○ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○ وَرُسُلُنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ○ اُتْرُكُوْا صَاحِبَ كِتَابِىْ
هٰذَا ○ وَانْطَلِقُوْا اِلٰى عَبَدَةِ الْاَصْنَامِ ○ وَاِلٰى مَنْ يَّزْعَمُ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا
آخَرَ ○ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ
تُرْجَعُوْنَ ○ يُغْلَبُوْنَ حٰمٓ لَا يُنْصَرُوْنَ ○ حٰمٓ عٓسٓقٓ ○ تَفَرَّقَ اَعْدَاءُ اللّٰهِ
○ وَبَلَغَتْ حُجَّةُ اللّٰهِ ○ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ فَسَيَكْفِيْكَهُمْ وَهُوَ
السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ○

तरजमा : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा महरबान निहायत रह़म वाला येह ख़त़ तमाम जहानों के परवर्द गार के रसूल मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से घरों के दरवाज़ा खट-खटाने वाले या'नी इमारतों में रहने वाले जिन्नात और कसरत से आने जाने वालों और सालिह़ीन मगर भलाई लाने वाले इस के बा'द ! बेशक हमारे और तुम्हारे लिये ह़क़ बात में वुस्अ़त है लिहाज़ा अगर तू बहुत गिरवीदा होने वाला आ़शिक़ है या मशक़्क़त में डालने वाला बदकार है या ह़क़ की त़रफ़ राग़िब है या फ़साद पैदा करने वाला है तो येह अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला की हम पर और तुम पर ह़क़ बोलने वाली किताब है बेशक

हम ख़त्म कर देते हैं जो कुछ तुम करते हो और हमारी जमाअ़त (हमारी भेजी हुई जमाअ़त) लिखती है जो कुछ तुम फ़रेब देते हो मेरी इस किताब वाले को तुम लोग छोड़ दो और बुतों की पूजा और अल्लाह के साथ दूसरे मा'बूद को शरीक ठहराने वाले की त़रफ़ भाग जाओ उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं उस की ज़ात के सिवा हर चीज़ फ़ानी है उसी का हुक्म है और उस की त़रफ़ फैरे जाओगे मग़्लूब हो जाओगे तुम्हारी मदद नहीं की जाएगी अल्लाह के दुश्मन जुदा हो जाएंगे और अल्लाह की दलील पहुंच गई। और गुनाह से बचने की त़ाक़त नहीं और न नेकी की क़ुव्वत मगर अल्लाह की तौफ़ीक़ से। फिर येह आयत लिखी : "तो ऐ महबूब अ़न्क़रीब अल्लाह उन की त़रफ़ तुम्हें किफ़ायत करेगा और वोही सुनता जानता है।"

ह़ज़रते अबू दजाना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने उस ख़त़ को लिया और लपेट लिया और अपने घर ले गया और अपने सर के नीचे रख कर रात अपने घर में गुज़ारी तो एक चीख़ने वाले की चीख़ से ही मैं बेदार हुवा जो येह कह रहा था : "ऐ अबू दजाना ! लात व उ़ज़्ज़ा की क़सम इन कलिमात ने हमें जला डाला तुम्हें तुम्हारे नबी का वासित़ा अगर तुम येह ख़त़ मुबारक यहां से उठा लो तो हम तेरे घर में कभी नहीं आएंगे।" और एक रिवायत में है कि हम न तुम्हें ईज़ा देंगे न तुम्हारे पड़ोसियों को और न उस जगह पर जहां येह खत मुबारक होगा। ह़ज़रते अबू दजाना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "मैं ने जवाब दिया मुझे मेरे महबूब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वासित़ा की क़सम मैं इस ख़त़ को यहां से उस वक़्त तक नहीं उठाऊंगा जब तक कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस की इजाज़त न ह़ासिल कर लूं।" ह़ज़रते अबू

दजाना फ़रमाते हैं रात भर जिन्नों की चीख़ो पुकार और रोना धोना जारी रहा। जब सुब्ह़ हुई तो मैं ने नमाज़े फ़ज्र रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ अदा की और हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस बात की इत्तिलाअ़ दी जो मैं ने रात में जिन्नों से सुनी थी और जो मैं ने जिन्नों को जवाब दिया था। हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अबू दजाना ! (वोह ख़त़ अब तुम) जिन्नों से उठा लो क़सम है उस ज़ात की जिस ने मुझे ह़क़ के साथ नबी बना कर भेजा वोह जिन्न क़ियामत तक अ़ज़ाब की तक्लीफ़ पाते रहेंगे।"

(دلائل النبوۃ لابی نعیم, کتاب جماع ابواب نزول الوحی...الخ, جز. 7, ص. 118)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) क़त्ल की धमकी देने पर जिन्न भाग गया

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं अपने घर के सेह़न में था कि अचानक मेरे पास मेरी बीवी की त़रफ़ से बुलावा आया। मैं ने घर जा कर उस से पूछा : "क्या बात है ?" मेरी बीवी ने कहा : "येह सांप है जब मैं घर से बाहर जंगल में क़ज़ाए ह़ाजत के लिये गई तो इस को देखा था फिर मैं कुछ देर ठहरी रही लेकिन मुझे येह नज़र नहीं आया, अब मैं इस को देख रही हूं येह वोही सांप है मैं इस को पहचानती हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ख़ुत्बा पढ़ा और अल्लाह तआ़ला की ह़म्दो सना बयान की फिर फ़रमाया : "तूने मुझे तक्लीफ़ पहुंचाई है और मैं अल्लाह की क़सम खाता हूं अगर मैं ने इस के बा'द तुझ को देखा तो यक़ीनन तुझे क़त्ल कर डालूंगा।" तो वोह सांप निकला और घर के दरवाज़े से चला गया यहां तक कि वोह सांप मस्जिदे न-बवी में रसूलुल्लाह

صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मिम्बर के पास आया और उस पर चढ़ कर आस्मान की त़रफ़ चला गया और ग़ाइब हो गया। (येह एक जिन्न था जो सांप की शक्ल में ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बीवी के सामने ज़ाहिर हुवा था।)

(किताबिल हवातिफ़ लि इब्ने अबिदुन्या, रक़म : 132, जि. 2, स. 508)

अगर जिन्न सांप की ह़ालत में मिल जाए तो क्या किया जाए ?

अगर कभी सांप दिखाई दे और उस पर जिन्न होने का शक गुज़रे तो उसे इस त़रह़ से तम्बीह की जाए ,

एक : येह कि यूं कहा जाए मैं तुम को क़सम दिलाता हूं उस अ़हद की जो तुम से सुलैमान बिन दावूद عَلَیْہِمُ السَّلَام ने लिया कि हमें ईज़ा मत दो और हमारे सामने ज़ाहिर मत हो।

दूसरे : येह कि इस त़रह़ कहा जाए हम तुझ से सुवाल करते हैं ब वसीलए अ़हदे नूह़ व अ़हदे सुलैमान इब्ने दावूद عَلَیْہِمُ السَّلَام के कि हमें ईज़ा मत दे।

तीसरे : येह कि मैं तुम्हें क़सम दिलाता हूं उस अ़हद की जो तुम से नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام ने लिया मैं तुम्हें क़सम दिलाता हूं उस अ़हद की जो तुम से सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام ने लिया कि ईज़ा मत दो।

चौथे : येह कि लौट जा ख़ुदा के हुक्म से।

पांचवें : येह कि मुसल्मान की राह छोड़ दे।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या तख़्रीज शुदा, जि. 24, स. 651)

(3) अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से ह़िफ़ाज़त का रुक़्आ़

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यि-दतुना रबीअ़ बिन्ते मुअ़व्वज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की

ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और उन से कुछ सुवाल किये तो उन्हों ने फ़रमाया : ''मैं अपनी निशस्त पर बैठी थी कि घर की छत फटी और ऊंट की त़रह़ या गधे की मिस्ल काला कोई जानवर मेरे ऊपर गिरा। मैं ने उस जैसा काला और ख़ल्क़त और घबराहट के ए'तिबार से कोई जानवर नहीं देखा। फिर वोह मेरे क़रीब हुवा वोह मुझे पकड़ना चाहता था लेकिन उस के पीछे एक छोटा सा काग़ज़ का रुक़्आ़ आया जब उस को उस (जिन्न जानवर) ने खोला और पढ़ा तो उस में येह लिखा हुवा था : مِنْ رَبِّ عَكْبٍ اِلٰى عَكْبٍ اَمَّا بَعْدُ فَلَا سَبِيْلَ لَكَ عَلَى الْمَرْاَةِ الصَّالِحَةِ بِنْتِ الصَّالِحِيْن या'नी येह रुक़्आ़ रब्बे अ़कब की जानिब से अ़कब की त़रफ़ है इस के बा'द तुम्हें हुक्म है कि तुम्हें नेक वालिदैन की नेक बेटी पर (शरारत की) कोई इजाज़त नहीं है।'' ह़ज़रते सय्यि-दतुना रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि इस के बा'द वोह जहां से आया था वहीं वापस चला गया और मैं उस का वापस होना देख रही थी। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं फिर उन्हों ने मुझे वोह रुक़्आ़ दिखाया जो उन के पास अभी तक मौजूद था।

(आकामुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, अल बाबिस्सानी वस्सलासून, स. 74)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) ह़ज़रते यह़या बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं जब ह़ज़रते अ़म्रह बिन्ते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की वफ़ात का वक़्त आया तो उन की ख़िदमत में बहुत से ताबिईने किराम जम्अ़ हुए। उन में ह़ज़रते उ़रवह बिन ज़ुबैर, ह़ज़रते क़ासिम बिन मुह़म्मद और ह़ज़रते अबू स-लमह बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم भी थे। येह ह़ज़रात उन के पास ही थे कि ह़ज़रते उ़मरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को ग़शी त़ारी हो गई। उन

ह़ज़रात ने छत फटने की आवाज़ सुनी फिर एक काला सांप (अज़्दहा) गिरा जो खजूर के बड़े तने की मिस्ल (मोटा और लम्बा) था। वोह उस ख़ातून की त़रफ़ लपकने लगा तो अचानक एक सफ़ेद रुक़्आ़ गिरा जिस में येह लिखा हुवा था :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ oمِنْ رَّبِّ عَكْبٍ اِلٰى عَكْبٍ oلَيْسَ لَكَ عَلٰى بَنَاتِ الصَّالِحِيْنَ سَبِيْلٌ o

या'नी अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो महरबान निहायत रह़्म वाला रब्बे का'ब की त़रफ़ से का'ब की त़रफ़, तुम्हें नेक लोगों की बेटियों पर हाथ बढ़ाने की इजाज़त नहीं है।

जब उस अज़्दहे ने येह सफ़ेद काग़ज़ देखा तो ऊपर चढ़ा और जहां से उतरा था वहीं से निकल गया। (دلائل النبوۃ, کتاب جماع ابواب نزول الوحی...الخ،باب ماذکر فی حرز الربیع...الخ, جز. 7, ص. 116)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन अ़फ़रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की साह़िबा जादी अपने बिस्तर पर लैटी हुई थीं। उन को इ़ल्म भी न हुवा कि एक ह़ब्शी (सियाह फ़ाम आदमी) उन के सीने पर चढ़ गया और उस ने अपना हाथ उन के ह़ल्क़ में डाल दिया तो अचानक पीले रंग का एक काग़ज़ आस्मान की त़रफ़ से गिर रहा था यहां तक कि उन के सीने पर आ गिरा तो उस (काले आदमी) ने उस रुक़्एु को ले लिया और पढ़ा तो उस में येह लिखा हुवा था : مِنْ رَّبِّ لَكِيْنٍ اِلٰى لَكِيْنٍ: اِجْتَنِبِ ابْنَةَ الْعَبْدِ الصَّالِحِ oفَاِنَّ لَاسَبِيْلَ لَكَ عَلَيْهَا o या'नी येह ह़ुक्म नामा लकीन के रब की जानिब से लकीन की त़रफ़ है कि नेक इन्सान की बेटी से दूर हो इस लिये कि तुम्हारा

इस पर कोई ह़क़ नहीं है।

वोह फ़रमाती हैं कि वोह सियाह फ़ाम आदमी उठा और अपना हाथ मेरे ह़ल्क़ से हटाया और अपना हाथ मेरे घुटने पर मारा। मेरा घुटना बकरी के सर की त़रह़ (सूज) गया। फिर मैं उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई और येह वाक़िआ़ उन से बयान किया तो उन्हों ने फ़रमाया : "ऐ मेरे भाई की बेटी ! जब तू ह़ैज़ में हो तो अपने कपड़ों को समेट कर रखा कर तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह तुम्हें हरगिज़ कभी तक्लीफ़ नहीं देगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने उस लड़की की उस के वालिद की वजह से ह़िफ़ाज़त फ़रमाई क्यूं कि वोह जंगे बद्र में शहीद हुए थे। (दलाइलुन्नुबुव्वह, کتاب جماع ابواب نزول الوحی...الخ،باب ماذکر فی حرزالربیع...الخ, जि. 7, स. 116)
(आकामुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, अल बाबिस्सानी वस्सलासून, स. 74)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(4) जिन्न को पछाड़ दिया

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! एक मर्तबा हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़मानए अक़्दस में ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की एक जिन्न के साथ लड़ाई हो गई। अ़र्ज़ की गई : "इन्सान की लड़ाई तो इन्सान से होती है जिन्न से लड़ाई किस त़रह़ हुई ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तफ़्सील से बताते हुए इर्शाद फ़रमाया कि एक मर्तबा हम हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हमराही

में एक सफ़र पर थे तो आक़ाए रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को पीने के लिये पानी लाने को कहा। चुनान्चे वोह पानी लेने के लिये चल दिये। इसी दौरान शैत़ाने लईन एक सियाह फ़ाम ग़ुलाम की शक्ल में आया और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और पानी के दरमियान रुकावट बन कर बैठ गया। ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उसे पछाड़ दिया। वोह कहने लगा : मेरी जान बख़्शी कर दीजिये मैं आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और पानी के दरमियान रुकावट नहीं बनूंगा। ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उसे छोड़ दिया लेकिन उस ने फिर अपना वा'दा पूरा न किया और फिर से आप और पानी के दरमियान ह़ाइल हो गया। दूसरी मर्तबा आप ने उसे फिर पछाड़ दिया, उस ने फिर अमान चाही और चले जाने का वा'दा किया चुनान्चे आप ने उसे दूसरी मर्तबा छोड़ दिया। तीसरी मर्तबा भी येही माजरा हुवा। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने एक मर्तबा फिर उसे ज़मीन पर दे मारा। उस मल्ऊ़न ने एक मर्तबा फिर वोही वा'दा किया अलबत्ता इस बार उस ने अपना वा'दा पूरा किया।

दूसरी जानिब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (अपने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से) इर्शाद फ़रमाया कि शैत़ान एक सियाह फ़ाम ग़ुलाम की सूरत में अ़म्मार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और पानी के दरमियान ह़ाइल हो गया था, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अ़म्मार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को शैत़ान पर फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमा दी है।

ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि (जब ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ पानी ले कर वापस हुए तो) हम ने ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का इस्तिक़्बाल येह कहते हुए किया : ऐ अबू यक़्ज़ान !

आप काम्याब हो गए, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें इस इस त़रह़ बयान फ़रमाया है। येह सुन कर ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ कहने लगे : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मुझे मा'लूम होता कि वोह शैत़ान है तो मैं उसे क़त्ल कर देता।

(किताबिल अ़-ज़महु, ذکر الجن و خلقهم, अल ह़दीस : 1102, स. 419)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(5) इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْهُ ने जिन्न निकाला

इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ की ख़िदमत में मु-तवक्किल (बादशाह) ने अपना एक वज़ीर इस पैग़ाम के साथ भेजा कि उस की शहज़ादी को मिर्गी हो गई है और उस की सिह़्ह़त व आ़फ़िय्यत के लिये दुआ़ की दर-ख़्वास्त की। ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने वुज़ू करने के लिये खजूर के पत्ते का तस्मा लगा हुवा लकड़ी का जूता (जिस का पट्टा खजूर के पत्ते का था) निकाला और उस वज़ीर से फ़रमाया : "अमीरुल मुअमिनीन के घर जाओ उस लड़की के सर के पास बैठो और उस जिन्न को मेरी त़रफ़ से कहो कि तुम्हें क्या पसन्द है? आया इस लड़की से निकल जाना पसन्द करते हो या मेरे जूते से 70 जूते खाना पसन्द करते हो?" वोह वज़ीर उस जिन्न के पास गया और उसे येह पैग़ाम पहुंचा दिया। उस सरकश जिन्न ने लड़की की ज़बान से कहा हम सुनेंगे और इत़ाअ़त करेंगे, अगर इमाम अह़मद हमें इ़राक़ में न रहने का हुक्म फ़रमाएंगे तो हम इ़राक़ में भी नहीं रुकेंगे वोह तो अल्लाह तआ़ला के फ़रमां बरदार बन्दे हैं और जो अल्लाह की फ़रमां बरदारी करता है सारी काएनात उस की फ़रमां बरदार हो जाती है।

येह कह कर वोह जिन्न उस लड़की से निकल गया । वोह लड़की तन्दुरुस्त हो गई और उस की शादी कर दी गई उस के यहां औलाद भी हुई । जब इमाम अह़मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का विसाल हो गया तो वोह सरकश जिन्न उस लड़की पर दोबारा आ गया । मु-तवक्किल बादशाह ने अपने वज़ीर को इमाम अह़मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के शागिर्द ह़ज़रते अबू बक्र मरूज़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में भेजा तो उस ने पूरे वाक़िआ़ से मुत्तलअ़ किया चुनान्चे ह़ज़रते अबू बक्र मरूज़ी ने जूता लिया और उस लड़की के पास गए तो उस सरकश जिन्न ने उस लड़की की ज़बान से गुफ़्त-गू की और कहा : मैं इस लड़की से नहीं निकलूंगा और मैं तुम्हारी इत़ाअ़त नहीं करूंगा और तुम्हारी बात न मानूंगा इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तो अल्लाह तआ़ला के फ़रमां बरदार बन्दे थे इस लिये उन्हों ने हमें अपनी इत़ाअ़त का हुक्म दिया (या'नी हम ने उन की फ़रमां बरदारी की वजह से उन की इत़ाअ़त की) ।

(लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, طرد الامام احمد للجن...الخ, स. 136)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(6) मिर्गी की बीमारी बग़दाद से भाग गई

एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़्युद्दीन शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में आया और अ़र्ज़ करने लगा कि "मैं अस्बहान का रहने वाला हूं मेरी एक बीवी है जिस को अक्सर मिर्गी का दौरा रहता है और उस पर किसी ता'वीज़ का असर नहीं होता।" ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, क़ुत़्बे रब्बानी, ग़ौसे स-मदानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि "येह एक जिन्न है जो

वादिये सरांदीप का रहने वाला है, उस का नाम ख़ानिस है और जब तेरी बीवी पर मिर्गी आए तो उस के कान में येह कहना कि ''ऐ ख़ानिस ! तुम्हारे लिये शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर (जो बग़दाद में रहते हैं) का पैग़ाम है कि ''आज के बा'द फिर न आना वरना हलाक हो जाएगा।'' तो वोह शख़्स चला गया और दस साल तक ग़ाइब रहा फिर वोह आया और हम ने उस से दर्याफ़्त किया तो उस ने कहा कि ''मैं ने शैख़ के हुक्म पर अ़मल किया फिर अब तक उस पर मिर्गी का असर नहीं हुवा।''

(बह्जतुल असरार, स. 140)

فَحُكْمِیْ نَافِذٌ فِیْ كُلِّ حَالٍ से हुवा ज़ाहिर
तसर्रुफ़ इन्सो जिन्न सब पर है आक़ा ग़ौसे आ'ज़म का
हुई इक देव से लड़की रिहा उस नाम लेवा की
पढ़ा जंगल में जब उस ने वज़ीफ़ा ग़ौसे आ'ज़म का

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(7) शयातीन से मुक़ाबला

शैख़ उ़स्मान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''मैं ने शहन्शाहे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़बाने मुबारक से सुना कि ''मैं शबो रोज़ बियाबानों और वीरान जंगलों में रहा करता था मेरे पास शयातीन मुसल्लह् हो कर हैबत नाक शक्लों में क़ितार दर क़ितार आते और मुझ से मुक़ाबला करते, मुझ पर आग फेंकते मगर मैं अपने दिल में बहुत ज़ियादा हिम्मत और ताक़त महसूस करता और ग़ैब से कोई मुझे पुकार कर कहता : ''ऐ अ़ब्दुल क़ादिर ! उठो इन की त़रफ़ बढ़ो, मुक़ाबला में हम तुम्हें साबित क़दम रखेंगे और तुम्हारी मदद करेंगे।'' फिर जब मैं उन की त़रफ़ बढ़ता तो वोह दाएं बाएं या जिधर से आते उसी त़रफ़ भाग

जाते, उन में से मेरे पास सिर्फ़ एक ही शख़्स आता और डराता और मुझे कहता कि ''यहां से चले जाओ।'' तो मैं उसे एक त़मांचा मारता तो वोह भागता नज़र आता फिर मैं لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ पढ़ता तो वोह जल कर ख़ाक हो जाता।'' (बह्जतुल असरार, ज़िक्रे त़रीक़ह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه, स. 165)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(8) श-जरए क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या की ब-र-कत

बाबुल मदीना (कराची) के एक म-दनी इस्लामी भाई (दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना के सनद याफ़्ता आलिम म-दनी कहलाते हैं) ने बताया कि मरयम मस्जिद में **म-दनी क़ाफ़िला** ठहरा हुवा था। शु-रकाए क़ाफ़िला में से एक इस्लामी भाई अ़र्सए दराज़ से आसेब ज़दा थे। वोह जिन्न उन्हें तंग करने लगा। उन की त़बीअ़त ख़राब होने की बिना पर सारा **म-दनी क़ाफ़िला** परेशान हो रहा था। उस म-दनी इस्लामी भाई ने बुलन्द आवाज़ से जूंही **मन्ज़ूम श-जरए आ़लिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या** पढ़ना शुरूअ़ किया तो जिस इस्लामी भाई पर जिन्न था वोह चीख़ने लगे और इधर उधर हाथ पाउं मारने लगे। मगर पढ़ने वाले ने **श-जरए आ़लिया** पढ़ने का सिल्सिला जारी रखा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से उन की ह़ालत बेहतर होने लगी। श-जरए आ़लिया पढ़ने वाले म-दनी इस्लामी भाई का ह़-लफ़िया बयान है कि मैं ने देखा कि क़िब्ला शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हाथ मुबारक में ''**अ़सा**'' है और आप के आगे आगे एक अ़जीबुल ख़ल्क़त शख़्स या'नी सताने वाला **जिन्न** बद ह़वासी के आ़लम में भाग रहा है। यहां तक कि वोह **जिन्न** मस्जिद से बाहर निकल कर भाग गया और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ

उस इस्लामी भाई की त़बीअ़त संभल गई।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(9) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल

ह़ैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई ने कुछ इस त़रह़ बताया कि हमारा घर **क़ब्रिस्तान** के इतना क़रीब है कि अगर कोई उस की छत से **क़ब्रिस्तान** में उतरना चाहे तो उतर सकता है। मेरे छोटे भाई (उ़म्र तक़रीबन **22** बरस) के साथ अ़जीब मुआ़-मला पेश आया, उसी के बयान का ख़ुलासा है कि

''**शदीद** ग़र्मी का मौसिम था, जिस की वजह से घर वाले छत पर सोया करते थे। एक रात तक़रीबन **2:00** बजे मेरी आंख खुल गई। हर त़रफ़ ख़ौफ़नाक सन्नाटा छाया हुवा था। हवा की सर-सराहट, दरख़्तों के पत्तों की खड़-खड़ाहट और कहीं दूर से आने वाली कुत्तों के भोंकने की आवाज़ें माह़ोल को मज़ीद वह़शत नाक बना रही थीं। अचानक मेरी नज़र **क़ब्रिस्तान** की दीवार के क़रीब एक दरख़्त पर पड़ी तो मुझे वहां किसी की **मौजूदगी** का एह़सास हुवा, मैं हड़बड़ा कर उठ बैठा। जब मैं ने हिम्मत कर के दरख़्त की त़रफ़ ग़ौर से देखा तो मुझे सफ़ेद कपड़ों में मल्बूस एक ह़सीन व जमील लड़की एक शाख़ पर बैठी दिखाई दी जो मेरी जानिब देख कर मुस्करा रही थी। मैं ने ऐसी ह़सीन लड़की ज़िन्दगी में पहली बार देखी थी। मैं उस के ह़ुस्न में ऐसा गुम हुवा कि मुझे किसी चीज़ का होश न रहा। मैं इसी कैफ़िय्यत में उठा और छत पर चलते हुए उस दरख़्त की त़रफ़ बढ़ने लगा। जूंही मैं उस के क़रीब पहुंचा, यकायक वोह पुर असरार लड़की **ग़ाइब** हो गई। उस के इस त़रह़ अचानक ग़ाइब हो जाने की वजह से मैं हक्का

बक्का रह गया और डर के मारे **थर थर कांपने लगा,** बिल आख़िर बेहोश हो गया।

जब सुब्ह़ हुई तो घर वालों ने मुझे संभाला और इ़लाज की तरकीब बनाई। इस के बा'द मेरी ह़ालत अ़जीब हो गई। मुझे तो अपने आप का होश न था मगर मेरे घर वालों का कहना है : "मैं बहकी बहकी बातें करता, घन्टों छत पर बैठा रहता, घर से भागने की भी कोशिश करता, डॉक्टर नींद की दवा देते तो कुछ देर के लिये सो जाता जब बेदार होता तो फिर वोही कैफ़िय्यत त़ारी हो जाती।" सारे घर वाले परेशान थे कि आख़िर अचानक मुझे क्या हो गया है ? इसी ह़ालत में कमो बेश 15 दिन गुज़र गए।

मेरी खुश नसीबी कि एक दिन किसी इस्लामी भाई ने फूल की एक पत्ती मेरे बड़े भाई को दी और कहा कि येह उस हार के **फूल की पत्ती** है जो **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को रबीउ़न्नूर शरीफ़ के **जुलूसे मीलाद** में पहनाया गया था, आप अपने आसेब ज़दा भाई को खिला दें اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ सब बेहतर हो जाएगा। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने जैसे ही **फूल की पत्ती** खाई, मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे जिस्म से कोई चीज़ निकल कर भागी हो। वोह दिन और आज का दिन, तक़रीबन एक साल होने वाला है اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरी त़बीअ़त दोबारा ख़राब नहीं हुई।"

(उन के बड़े भाई के तअस्सुरात कुछ यूं हैं कि) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **वली** से निस्बत रखने वाले **फूल की पत्ती** की ब-र-कत से न सिर्फ़ मेरे भाई को "**क़ब्रिस्तान की चुड़ैल**" से नजात मिली, बल्कि मेरे भाई के एह़सासे ज़िम्मादारी और ज़हानत में भी ख़ातिर

ख़्वाह इज़ाफ़ा हो गया ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(10) आ़शिक़े ना शाद जिन्न

महमूदआबाद (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई ने कुछ इस त़रह़ बताया कि मेरे बच्चों की अम्मी (या'नी मेरी अहलिया) पर जिन्न का असर हो गया जिस की वजह से बारहा उस की त़बीअ़त अचानक बिगड़ जाती थी । वोह जिन्न सिर्फ़ अहलिया को नज़र आता और उसे धमकी देता : अपने शोहर को छोड़ कर मुझ से शादी कर लो, तुम्हें दुन्या की दौलत से मालामाल कर दूंगा वरना तुम्हें, तुम्हारे बच्चों और शोहर को ख़त्म कर दूंगा । इस के इ़लावा भी त़रह़ त़रह़ की धम्कियां देता । मगर कोई ग़ैबी त़ाक़त उसे अहलिया के क़रीब न आने देती थी, चुनान्चे वोह येह सब कुछ दूर दूर से कहता ।

एक रात अहलिया की त़बीअ़त ज़ियादा ख़राब हुई तो मैं ने घबरा कर मन्ज़ूम श-जरए आ़लिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्त़ारिय्या पढ़ना शुरूअ़ कर दिया और अपने पीरो मुर्शिद **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में इस्तिग़ासा पेश किया और ख़ूब फ़रियादें कीं । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कुछ ही देर बा'द त़बीअ़त संभल गई और सारी रात अम्न रहा । सुब्ह़ अहलिया को वोह जिन्न नज़र आया, उस का मुंह सूजा हुवा था । उस ने कराहते हुए ब मुश्किल तमाम कहा : "आज आख़िरी बार आया हूं, तुम्हारे **पीर** ने मुझे बहुत मारा है, रात भर ज़ख़्मी ह़ालत में छत पर पड़ा रहा हूं, मेरे "**जिन्न नाना**" ने भी समझाया है कि बेटा बाज़ आ जा, येह लोग बहुत त़ाक़त वर हैं, जान की सलामती चाहता है तो दोबारा मत जाना ।" येह कह कर वोह जिन्न ग़ाइब हो गया और

आज तक दोबारा नज़र नहीं आया।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(11) ज़ौजा जिन्नात के असर से महफ़ूज़ हो गई

अन्दरूने सिन्ध के एक शहर पीर जो गोठ के एक इस्लामी भाई का तहरीरी बयान कुछ इस त़रह़ से है : मेरी शादी के थोड़े ही अ़र्से बा'द मेरी अहलिया में एक **जिन्न** ज़ाहिर हुवा और हमें त़रह़ त़रह़ से तंग करने लगा। इस सूरते ह़ाल को देख कर मैं बे ह़द परेशान हुवा और जगह जगह इ़लाज के लिये पहुंचा मगर किसी आ़मिल के इ़लाज से कोई इफ़ाक़ा न हुवा। मेरी ज़ौजा की ह़ालत दिन ब दिन बिगड़ती चली गई, वोह उम्मीद से होतीं मगर कुछ दिन बा'द ही सिल्सिला ख़त्म हो जाता। इसी परेशानी में एक त़वील अ़र्सा गुज़र गया।

इसी दौरान बाबुल मदीना (कराची) भी जाना हुवा। वहां मैं ने शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में ह़ाज़री के लिये भी बहुत कोशिश की मगर ना काम रहा। इसी दौरान नवाब शाह (बाबुल इस्लाम सिन्ध) में इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त मुन्अ़क़िद हुवा, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी उस इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में शरीक हुए। मैं वहां भी मुलाक़ात करने से महरूम रहा।

मैं बहुत परेशान था मगर उम्मीद की कोई किरन दिखाई न देती थी। इसी परेशानी के आ़लम में एक दिन मैं अपने पीरो मुर्शिद को याद कर के बहुत रोया और उन की बारगाह में इस्तिग़ासा करते करते सो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मुझे ख़्वाब में शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ियारत नसीब हुई। **आप** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया : "क्यूं परेशान हो ! उठ कर देखो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **आप की ज़ौजा ठीक**

हो चुकी हैं।'' येह सुन कर मेरी आंख खुल गई।

नमाज़े फ़ज्र अदा करने के बा'द मैं ने जब ब ग़ौर अपनी ज़ौजा को देखा तो मुझे तब्दीली के आसार महसूस हुए और ऐसा लगा कि वोह वाक़ेई ठीक हो चुकी हैं। मैं ने जब येह ख़ुश ख़बरी अपनी वालिदा को सुनाई तो वोह बोलीं : ''बेटा तुम्हें मा'लूम है कि उस की ह़ालत कितनी ख़राब रहती है, देखना कुछ देर बा'द फिर ख़राब हो जाएगी।'' शायद इस की वजह येह थी कि अ़र्सए दराज़ तक इ़लाज कराने के बा वुजूद आज तक हम ने उसे मुकम्मल तन्दुरुस्त ह़ालत में एक बार भी नहीं देखा था। मगर मेरी वालिदा के शुकूक व शुब्हात ग़लत़ साबित हुए और اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अहलिया की त़बीअ़त ठीक हो गई और यूं हमें **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की तवज्जोह और करम से उस **जिन्न** से नजात ह़ासिल हुई और आज मैं एक प्यारे से म-दनी मुन्ने का बाप हूं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(12) चुड़ैलों से जान छूट गई

सूबए पंजाब (पाकिस्तान) अटक के मुक़ीम इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है कि सि. 2003 ई. में मुझ पर जिन्नात के अ-सरात हो गए। एक चुड़ैल आ कर मुझे परेशान किया करती थी। मैं ने बाबुल मदीना (कराची) ह़ाज़िर हो कर अपने पीरो मुर्शिद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की बारगाह में तह़रीरी रुक़्आ़ लिख कर ह़ालात पेश कर दिये। आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने रुक़्आ़ पर कुछ लिखा और तसल्ली दी। उस दिन से मेरी त़बीअ़त बेहतर होना शुरूअ़ हो गई। कमो बेश 2 साल बा'द सि. 2005 ई. में तरबिय्यती कोर्स में शिर्कत के लिये मुज़फ़्फ़र आबाद (कशमीर) पहुंचा। 10 मई सि. 2005 ई. बरोज़ मंगल इन्तिहाई

सियाह रंग की एक बद सूरत औ़रत जिस के सर के बाल खुले हुए थे मेरे सामने आ कर खड़ी हो गई । वोह इन्तिहाई ग़ुस्से के आ़लम में कहने लगी : ''मेरी दोस्त चुड़ैल को तुम्हारे कराची वाले पीर ने पकड़ लिया है अब मैं तुम्हें और तमाम तरबिय्यती कोर्स वालों को मार दूंगी ।'' येह सुन कर मैं ख़ौफ़ के मारे ज़ोर ज़ोर से चीख़ें मारने लगा ।

इस्लामी भाइयों ने मेरी ह़ालत देख कर श-जरए आ़लिया पढ़ना शुरूअ़ किया । जब तक वोह श-जरा शरीफ़ पढ़ते रहते तो त़बीअ़त संभल जाती मगर जब रुक जाते तो फिर वैसी ह़ालत हो जाती । नमाज़े इशा के बा'द त़बीअ़त ज़ियादा ख़राब हो गई तो सब ने मिल कर अपने पीरो मुर्शिद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में इस्तिग़ासा पेश करना शुरूअ़ कर दिया, ''या अ़त्तार पीर हर बला चीर'' तो अचानक इस्लामी भाइयों ने देखा कि कमरे की खिड़कियां हवा के ज़ोर से खुल गईं और दीवार गीर घड़ी ज़ोर ज़ोर से हिलने लगी । हम घबरा गए कि न जाने येह जिन्नात अब हमारा क्या ह़श्र करेंगे । यकायक दरवाज़े से क़िब्ला **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मुस्कराते हुए तशरीफ़ ले आए । वोह चुड़ैल रोहांसी हो कर कहने लगी : ''मुझे मुआ़फ़ कर दो मैं चली जाऊंगी ।'' अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उसे कमरे से बाहर निकाल दिया । मेरी त़बीअ़त भी संभल गई मगर दूसरे दिन कुछ और चुड़ैलें पहुंच गईं और धमकी देने लगीं : ''तुम 80 तु-लबा हो अगर 80,000 भी हों तो मेरा कुछ नहीं कर सकते, तुम्हारे फ़ैज़ाने मदीना के कुछ अ़त्तारी जिन्न हैं जिन के बाइ़स हम मजबूर हैं वरना हम तुम सब का गला दबा देते । हम ने फिर से श-जरए आ़लिया पढ़ना शुरूअ़ किया तो सब चुड़ैलों ने येह कहते हुए भागना शुरूअ़ कर दिया कि हम सिर्फ़

तुम्हारे कराची वाले पीर अ़त्तार से डरते हैं।''

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(13) 500 सालह आ़मिल जिन्न की बद ह़वासी

बाबुल इस्लाम सिन्ध के मशहूर शहर (ह़ैदरआबाद) के मुक़ीम इस्लामी भाई की ह़-लफ़िया तह़रीर कुछ इस त़रह़ से है :

मेरे दो भाइयों की शादी सि. **2001** ई. में अपने ताया जान की बेटियों से और हमारी इक्लौती बहन की शादी ताया के बेटे से त़ै कर दी गई। दोनों त़रफ़ से शादी की तय्यारियां शुरूअ़ कर दी गईं। लेकिन शादी से तक़रीबन 3 माह क़ब्ल ताया की दोनों बेटियों ने अचानक बग़ैर कोई वजह बताए शादी से इन्कार कर दिया। उन के इस त़रह़ इन्कार करने से सब दम बख़ुद रह गए। बहर ह़ाल हम ने दुआ़एं करने और **श-जरए अ़त्तारिय्या** से वज़ाइफ़ वग़ैरा पढ़ने का सिल्सिला जारी रखा और मुख़्तलिफ़ ज़राएअ़ से रूह़ानी इ़लाज भी कराया। बिल आख़िर वोह दोनों शादी के लिये ख़ुद ही राज़ी भी हो गईं।

शादी वाले दिन मेरी भाभी (या'नी मेरी ताया ज़ाद बहन) के हाथ पाउं मुड़ गए और वोह बेहोश हो गई। जैसे तैसे उसे होश में लाया गया और रुख़्सती कर दी गई। शादी के तीसरे दिन मेरे ताया ज़ाद भाई (या'नी बहनोई) का वलीमा था। उस दिन भी दोनों दुल्हनें (या'नी मेरी भाभी और बहन) बेहोश हो गईं, बड़ी मुश्किल से उन को होश में लाया गया।

येह सिल्सिला इसी त़रह़ चलता रहा। बा'ज़ अवक़ात तो उन की ह़ालत ऐसी हो जाती कि आठ आठ अफ़राद से भी नहीं संभल पातीं। हम ने उन का मुख़्तलिफ़ आ़मिलों से इ़लाज भी करवाया मगर

काफ़ी रक़म ख़र्च करने के बा वुजूद फ़ाएदा होने के बजाए उन की ह़ालत मज़ीद ख़राब होती चली चई । अक्सर आ़मिल तो इ़लाज करने से ही मन्अ़ कर देते कि (इ़लाज करने की सूरत में) हमारी **जान को ख़त़रा** है, हम तो ह़ैरान हैं कि तुम लोग अब तक कैसे बचे हुए हो ? लगता है, **तुम किसी पीरे कामिल से मुरीद हो** जिस की नज़र ने तुम्हें अब तक बचा रखा है ।

फिर हमारा राबित़ा **मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के इस्लामी भाई से हुवा । उन्हों ने ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या के ज़रीए़ इ़लाज शुरूअ़ कर दिया । اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या की ब-र-कत से दोनों (या'नी मेरी भाभी और बहन) की त़बीअ़त संभल गई । तक़रीबन **4 साल** यूंही बीत गए ।

एक दिन दोनों की त़बीअ़त ऐसी बिगड़ी कि उन्हों ने खाना पीना और बोलना बन्द कर दिया । तक़रीबन इसी ह़ालत में **72 घन्टे** गुज़र गए । सारे घर वाले इन्तिहाई परेशान थे । सिह़्ह़त याबी की कोई सूरत नज़र नहीं आ रही थी । हमारी ख़ुश क़िस्मती कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बड़े शहज़ादे अलह़ाज मौलाना अबू उसैद **उ़बैद रज़ा अल अ़त्तारिय्युल म-दनी** مدظله العالی से फ़ोन पर राबित़ा हो गया । आप مدظله العالی ने फ़रमाया कि **26 मिनट** बा'द पानी पिलाना اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ पी लेंगी । हमारी नज़रें घड़ी पर जम गईं । हम ने एक एक मिनट गिन कर गुज़ारा । ठीक **26 मिनट** बा'द दोनों को होश आ गया और उन्हों ने पानी मांगा फिर खाना भी खाया । इस के बा'द उन्हों ने बताया कि हमें दो **ख़ौफ़नाक बलाएं** हंस हंस कर अज़िय्यत दे रही थीं । मगर तवज्जोहे मुर्शिद की ब-र-कत से ठीक **26 मिनट** बा'द उन के

जिस्म गलने सड़ने लगे और उन से पीप बहने लगी। उन में से एक **बला** ने (जिस के लम्बे लम्बे काले काले ख़ौफ़नाक बाल और बड़े बड़े पीले दांत और लम्बे लम्बे नाख़ुन थे) अपने गन्दे हाथों से हमारे दिलों को पकड़ रखा था, घबरा कर कमरे से बाहर निकल कर भागी। दूसरी बला ने भी भागने की कोशिश की लेकिन वोह गिर गई। वोह बड़ी बे बसी के आलम में इल्तिजाएं कर रही थी कि मुझे छोड़ दो मैं अब नहीं आऊंगी। यूं हमारी तबीअत बेहतर हो गई।

इस गुफ़्त-गू को थोड़ी ही देर गुज़री थी कि कोई और बला उन दोनों पर ज़ाहिर हो गई। हम ने दोबारा **शहज़ादए अ़त्तार** अलहाज मौलाना अबू उसैद उ़बैदुर्रज़ा अल अ़त्तारिय्युल म-दनी مدظلہ العالی से फ़ोन पर राबिता किया। सारा माजरा सुनने के बा'द आप ने फ़रमाया **363** मर्तबा قَلَّتْ حِيْلَتِىْ اَنْتَ وَسِيْلَتِىْ اَدْرِكْنِىْ يَارَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़िये और इस अ़मल को **12** दिन तक जारी रखिये। हम ने उन की हिदायत पर अ़मल किया اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इस से काफ़ी इफ़ाक़ा हुवा लेकिन बलाओं से मुकम्मल तौर पर जान न छूटी। वोह अब भी मुख़्तलिफ़ ख़ौफ़नाक शक्लों में उन दोनों के सामने आतीं। ऐसा लगता था कि कोई मुसल्सल अ़-मलिय्यात के ज़रीए़ येह सारा मुआ-मला कर रहा है। कुछ दिन बा'द फिर उन दोनों की तबीअत बिगड़ी और बिगड़ती ही चली गई।

मेरी बहन की तो ऐसी ह़ालत थी कि मग़्रिब के बा'द उस को **ख़ौफ़नाक शक्ल वाली बलाएं** नज़र आतीं और डराना शुरूअ़ कर देतीं। इस सूरते ह़ाल से मजबूर हो कर हम एक दिन बाबुल मदीना (कराची) **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में ह़ाज़िरी के

लिये रवाना हुए। जब हम घर से रवाना होने लगे तो बहन और भाभी की त़बीअ़त मज़ीद बिगड़ना शुरूअ़ हो गई। मेरी बहन इसरार करने लगी कि आप **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुलाक़ात के लिये मत जाइये। मगर हम सुनी अन सुनी करते हुए **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में ह़ाज़िरी के लिये बाबुल मदीना पहुंच गए।

(बा'दे सिह़्ह़त बहन ने बताया कि जिस वक़्त आप लोग **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुलाक़ात के लिये निकल रहे थे उस वक़्त वोह **आ़मिल जिन्न** जो इन तमाम **शैत़ानी कुव्वतों का सरदार** था (जो वक़्तन फ़ वक़्तन हमें तंग कर रही थीं) ख़ुद ज़ाहिर हुवा और शदीद परेशानी के आ़लम में कहने लगा अपने भाइयों को रोको, हम सब चले जाएंगे। नीज़ येह बताया कि उस की उ़म्र तक़रीबन **500** साल है और वोह ज़बर दस्त आ़मिल है।)

जब हम **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुलाक़ात के लिये क़ित़ार में लगे तो ह़ैदरआबाद से मोबाइल फ़ोन पर घर वालों ने बताया कि दोनों की ह़ालत इन्तिहाई तशवीश नाक हो चुकी है, ऐसा लगता है कि अब येह ज़िन्दा नहीं बचेंगी। दोनों बराबर येही मुत़ा-लबा कर रही हैं कि **उन्हें वापस बुला लो।** येह जान कर हम परेशान तो बहुत हुए मगर हिम्मत कर के मुलाक़ात के लिये आगे बढ़ते रहे। इस दौरान बार बार फ़ोन पर उन की त़बीअ़त ख़राब से ख़राब तर होने की इत्तिलाअ़ दी जाती रही।

(बा'द में बहन ने बताया कि उस वक़्त हमें आप तमाम क़ित़ार में नज़र आ रहे थे और वोह **500** सालह आ़मिल जिन्न अपने तमाम क़बीले के साथ मौजूद था। वोह सब इन्तिहाई परेशान और घबराए हुए थे और एक दूसरे से कह रहे थे। "भाग चलो

वरना हम सब मारे जाएंगे हम ने ग़लत़ जगह हाथ डाल दिया है।")

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुलाक़ात होने पर हम ने उन से अपनी परेशानी बयान की तो आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने बड़ी शफ़्क़त दी और फ़रमाया कि हौसला रखिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ कुछ नहीं होगा घबराइये नहीं। फिर हम ने एक थैली में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से दम करवा कर उस का मुंह धागे से बांध दिया।

जब हम दम की हुई थैली ले कर बाबुल मदीना (कराची) से हैदरआबाद रवाना हो रहे थे तो (फ़ोन पर बताया गया कि) हैदरआबाद में दोनों मरीज़ाएं बहुत घबरा रही हैं और कह रही थीं कि उन को रोको और यहां मत आने देना **वरना येह ख़ौफ़नाक जिन्नात हमें मार देंगे।**

जब हम घर पहुंचे और थैली खोल कर आधी फूंक एक मरीज़ा और आधी दूसरी मरीज़ा पर छोड़ी तो दोनों मरीज़ाओं का कहना है कि हमारा दिमाग एक लम्हे के लिये सुन हो गया और एक **खुश गवार** खुश्बू फैली जिस का सुरूर दिल में भी महसूस हुवा। इस के बा'द दोनों मरीज़ाओं को दम किया हुवा पानी पिलाते रहे और **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** भी इस्ति'माल कराते रहे। बिल आख़िर हमारा वोह मस्अला जिस के ह़ल के लिये तमाम आ़मिलों ने मा'ज़िरत कर ली थी और हम तक़रीबन मायूस हो चुके थे, اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ज़माने के वली शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की निगाहे करम की ब-र-कत से ह़ल हो गया और हमें उस आफ़त से नजात मिल गई। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अब उन दोनों की त़बीअ़त बिल्कुल सह़ीह़ है। (ता दमे तह़रीर इस वाक़िए़ को कमो बेश दो साल हो चुके हैं)।

हमारे एक अ़ज़ीज़ जो ख़ुद भी आ़मिल हैं। उन्हों ने हमें बताया कि आप ने जिन बुज़ुर्ग से इ़लाज कराया है वोह रूहा़नी त़ौर पर **बहुत त़ाक़त वर हैं** और जिस आ़मिल ने आप के ख़िलाफ़ काम किया था वोह ग़ैर मुस्लिम था जो अपनी शैत़ानी क़ुव्वत, जादू और काले इ़ल्म वग़ैरा की महारत में **बैनल अक़्वामी शोहरत** रखता है। उस के घर के बाहर गाहकों की कारों का तांता बंधा रहता है। आप के **पीरो मुर्शिद** के तुफ़ैल अब उस **आ़मिल की गन्दे अ़मल करने की शैत़ानी त़ाक़त छिन चुकी है** और वोह शदीद बीमार हो चुका है। उस के पास तीन गन्दी त़ाक़त वर चीज़ें थीं जो उस से छिन चुकी हैं। वोह आ़मिल अब सख़्त परेशान है, उस का कहना है कि **मुझे मा'लूम नहीं था कि येह किन लोगों का मुआ़-मला है वरना मैं कभी इस काम में हाथ नहीं डालता।**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(14) बद सूरत बला

मक-त-बतुल मदीना (बाबुल मदीना कराची) के एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई ने बताया कि एक रोज़ मैं अपने कमरे में लैटा हुवा था कि किसी ने बाहर से दरवाज़ा खट-खटाया। मैं ने पूछा : "कौन ?" मगर कोई जवाब न मिला, मैं ने उठ कर दरवाज़ा खोल दिया। मेरी निगाहों के सामने एक दिल हिला देने वाला मन्ज़र था और वोह येह कि **एक अ़जीबो ग़रीब और इन्तिहाई करीहस्सूरत शख़्स खड़ा था जिस के चेहरे और जिस्म से ख़ून और पीप बह रहा था और कहीं कहीं कीड़े भी कुलबुला रहे थे।** यकायक उस ने हाथ बढ़ा कर मेरा गला दबाना चाहा तो बे साख़्ता मेरे मुंह से निकला : **या अ़त्तार पीर !** उसे एक दम झटका लगा और वोह धड़ाम से पीछे की त़रफ़ गिरा। मैं ने

फ़ौरन दरवाज़ा बन्द कर लिया। मेरे ह़वास गुम थे, काफ़ी देर तक जागता रहा फिर आंख लग गई। रात कमो बेश **3:00** बजे किसी अन्जाने ख़ौफ़ के सबब दोबारा मेरी आंख खुल गई और मैं उठ बैठा। इतने में सामने बन्द दरवाज़े से उसी **बद वज़्अ़ शख़्स** को अपनी त़रफ़ बढ़ते हुए पाया। ख़ौफ़ के मारे मेरी घिग्गी बन्ध गई और हिलने जुलने की क़ुव्वत गोया सल्ब हो गई। उस ने क़रीब आ कर जैसे ही मुझे दबोचने के लिये मेरी त़रफ़ हाथ बढ़ाए दोबारा मेरे मुंह से **या अ़त्तार पीर** निकला। ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर वोह **बद सूरत इन्सान नुमा बला** मुज़्त़रिबाना आ़लम में उल्टे क़दम पलटी और बन्द दरवाज़े से बाहर निकल गई।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(15) अ़क़ीदत मन्द जिन्न

म-दनी तरबिय्यती कोर्स के ज़िम्मादार इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है कि मुझे आ़रिफ़ वाला (पंजाब) में जुमा'रात के दिन हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में शिर्कत और बयान करने की सआ़दत मिली। दौराने ज़िक्र एक इस्लामी भाई की अ़जीबो ग़रीब आवाज़ें आना शुरूअ़ हो गईं लेकिन हम ने ख़ास तवज्जोह न दी। इज्तिमाअ़ के बा'द वहां के ज़िम्मादारों से मश्वरा था। दौराने मश्वरा तरबिय्यती कोर्स के एक उस्ताज़ एक इस्लामी भाई को लाए जो लंगड़ा कर चल रहा था और उस को तक़रीबन **3** इस्लामी भाइयों ने सहारा दिया हुवा था। उसे बिठाने के बा'द इस्लामी भाई कहने लगे कि येह अ़जीबो ग़रीब ह़-र-कतें कर रहा है और मुसल्सल चीख़ रहा है। क़ाफ़िला कोर्स के एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई उस के क़रीब गए और उस को ग़ौर से देखा तो उस की आंखें घूमी हुई थीं और हाथ पाउं टेढ़े थे। इतने में उस ने गुर्रा कर कहा :

"हट जाओ।" मैं ने ज़िम्मादार इस्लामी भाई को मश्वरा दिया कि उस के सामने श-जरए अ़त़ारिय्या पढ़ो, शायद येह चला जाए।

अभी उन्हों ने श-जरए अ़त़ारिय्या निकाला ही था कि वोह जिन्न उन को घूरने लगा। इस्लामी भाई ने उस से पूछा : तुम कौन हो और इसे क्यूं तंग कर रहे हो। उस जिन्न ने चिल्ला कर कहा : "मैं इस का दोस्त हूं और इस से मिलने आया हूं और मैं भी अ़त़ारी हूं।" इस्लामी भाई ने उस से कहा : "अ़त़ारी हो कर अपने पीर भाई को तंग करते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती, मैं अभी शहज़ादए अ़त़्तार مدظله العالی को फ़ोन करता हूं।" उस ने कहा : "नहीं ! मैं चला जाऊंगा।" मैं ने इस्लामी भाई को आवाज़ दी : "अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का बाल मुबारक इस के सामने करो, शायद येह चला जाए।" जैसे ही उस इस्लामी भाई ने अपनी जेब से अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का बाल निकाला उस जिन्न ने शोर करना शुरूअ़ कर दिया : "मुझे दे दो मुझे दे दो।" इस्लामी भाई ने उस से पूछा : "क्या तुम्हारे पास येह नहीं है ?" उस ने कहा : "मेरे पास भी है।" इस्लामी भाई ने उस से मुत़ा-लबा किया : "तो दिखाओ।" उस जिन्न ने गरदन झुकाई और मुट्ठी बन्द कर ली जब उस ने मुट्ठी खोली तो उस में बाल मुबारक नज़र आ रहा था। उस इस्लामी भाई ने वोह बाल मुबारक उस के हाथ से उठा लिया था। उस ने चीख़ना शुरूअ़ कर दिया : "मुझे दे दो मुझे दे दो।" इस्लामी भाई ने कहा : "एक शर्त़ पर दूंगा अगर तुम वापस चले जाओगे।" वोह जिन्न हार मानते हुए बोला : "ठीक है।" जैसे ही उस को बाल दिया गया तो जिन्न के ज़ेरे असर इस्लामी भाई बैठे बैठे सर के बल ज़मीन पर गिर गया। जब उसे उठाया गया तो नॉर्मल लोगों की त़रह़ बातें करना

शुरूअ़ हो गया।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(16) जिन्न से खुलासी हो गई

नवाब शाह (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि मेरी बेटी दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना (लिल बनात) में दर्से निज़ामी करने की सआ़दत ह़ासिल कर रही है। एक रोज़ उस पर कोई ख़बीस जिन्न क़ाबिज़ हो गया और उसे रोज़ाना तंग करने लगा। वोह कभी उस का हाथ मरोड़ देता तो कभी उसे बेहोश कर देता। सर में शदीद दर्द के बाइ़स वोह चीख़ें मारती। सारा घर परेशान था। मुख़्तलिफ़ त़रीक़े से इ़लाज की कोशिश की मगर कोई इफ़ाक़ा न हुवा। यूं कमो बेश 15 दिन गुज़र गए 2 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1428 (16-08-2007) बरोज़ जुमा'रात वोह जिन्न बेटी को सख़्त तक्लीफ़ देने लगा। हमारा सारा घर चूंकि ज़माने के वली शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद है इस लिये मेरी बेटी जिस पर जिन्न क़ाबिज़ था, बुलन्द आवाज़ से **अल मदद या अ़त्तार, अल मदद या अ़त्तार** पुकारने लगी। कुछ ही देर बा'द उस की त़बीअ़त में इफ़ाक़ा हुवा और वोह ठीक हो गई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अब तक उस की त़बीअ़त दोबारा ख़राब नहीं हुई। मेरी बेटी ने बताया : "जब मैं ने **अल मदद या अ़त्तार, अल मदद या अ़त्तार** कहना शुरूअ़ किया तो मुझे एक आवाज़ सुनाई दी : "बेटी घबराओ मत मैं ने उन्हें भगा दिया اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ येह अब तुम्हें तंग नहीं करेंगे।" यूं उस जिन्न से मेरी जान छूट गई।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(17) 4 जिन्नात की ह़िकायात

सूबए पंजाब के एक इस्लामी भाई के तह़रीरी बयान का ख़ुलासा है कि एक रोज़ मैं किसी अ़ज़ीज़ की तदफ़ीन के सिल्सिले में क़ब्रिस्तान गया। दौराने तदफ़ीन एक अज्नबी शख़्स मेरे क़रीब आया और बड़े ही पुर असरार अन्दाज़ में कहने लगा : "मुझे आप से कुछ बात करनी है।" येह कह कर वोह मुझे लोगों से अलग ले गया और कहने लगा : "मेरी त़बीअ़त ख़राब हो रही है, मुझ पर दम कर दो।" मैं ने जैसे ही उन पर दम किया तो यकायक मुझे यूं लगा जैसे कई मन वज़्न मेरे ऊपर लाद दिया गया हो। मैं जब वापस घर लौटा तो सारा जिस्म दर्द से टूट रहा था। घर आ कर मैं लैट गया यहां तक कि अज़ाने मग़्रिब होना शुरूअ़ हुई। मैं बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने की निय्यत से हिम्मत कर के जैसे तैसे उठा और इ़मामा बांध कर जैसे ही बाहर जाने के लिये कमरे के दरवाज़े के क़रीब पहुंचा तो अचानक मुझे किसी अनदेखे वुजूद ने पकड़ा और उठा कर कमरे की दीवार पर दे मारा। मेरा सर चकरा गया। मेरे ह़वास बह़ाल हुए तो मैं ने अपने सामने **4 ख़ौफ़नाक जिन्नात** को पाया। वोह बड़ी बड़ी सुर्ख़ आंखों से मुझे घूर रहे थे। उन के सर के बाल ज़मीन तक लटक रहे थे। उन में से एक ने मेरे दोनों हाथ पकड़ लिये और दूसरे ने दोनों पाउं जकड़ लिये, तीसरे ने मेरी ज़बान पर क़ाबू पा लिया और चौथा जिन्न मेरे जिस्म में दाख़िल हो गया।

वोह मुझे सख़्त तक्लीफ़ दे रहे थे और मैं चीख़ो पुकार कर रहा था। मेरी चीख़ो पुकार सुन कर दूसरे कमरे से घर वाले और चन्द मह़ल्ले के लोग आ गए। मुझे लग रहा था कि येह **जिन्नात** मुझे जान से मार देंगे। बे इख़्तियार मैं ने **ग़ौसे पाक** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और अपने पीरो

मुर्शिद **शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में मदद के लिये इस्तिग़ासा पेश करना शुरूअ़ कर दिया। ख़ुदा की क़सम ! मैं ने बेदारी के आ़लम में देखा कि यकायक कमरे के दरवाज़े से **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इन्तिहाई जलाल के आ़लम में मेरे कमरे में दाख़िल हुए और जिस **जिन्न** ने मेरे पाउं जकड़ रखे थे उसे ठोकर मारी तो उस **जिन्न** के जिस्म पर आग भड़क उठी। वोह बुरी त़रह़ चीख़ रहा था। दूसरे को आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उठा कर ज़मीन पर पटख़ दिया। येह देख कर जो **जिन्न** जिस्म में दाख़िल था वोह जान बचा कर भाग निकला। चौथा जिस ने मेरी ज़बान को क़ाबू किया हुवा था वोह **जिन्न** भी उल्टे क़दमों वापस भाग गया। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मुझे सीने से लगा लिया और तसल्ली देते हुए फ़रमाया : "बेटा मत घबराओ, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन से तुम्हारी जान छूट गई है।" येह फ़रमा कर आप जाने लगे तो मैं रोने लगा और अ़र्ज़ की : आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के जाने के बा'द येह दोबारा आ कर मुझे क़त्ल न कर दें। आप ने मुझे दिलासा दिया और फ़रमाया : "اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ अब येह दोबारा नहीं आएंगे। घबराते क्यूं हो, मैं जो हूं। मुझे बुला लेना اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ मैं आ जाऊंगा।" यूं करम फ़रमाने के बा'द आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه वापस लौट गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज इस बात को एक साल से ज़ाइद अ़र्सा गुज़र चुका है मेरी त़बीअ़त बिल्कुल सह़ीह़ है उन **जिन्नात** ने दोबारा आने की जुरअत नहीं की।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(18) बद सूरत बुढ़िया

सूबए पंजाब के एक इस्लामी भाई की ह़-लफ़िया तह़रीर का

ख़ुलासा है कि मैं शाम के वक़्त सो रहा था। मेरी आंख खुली तो साढ़े पांच बजे का वक़्त था। सूरज ग़ुरूब होने में तक़रीबन आठ से दस मिनट बाक़ी थे। मैं ने जूंही बिस्तर से उठना चाहा सामने बन्द दरवाज़े से एक निहायत **बद सूरत बुढ़िया** दाख़िल हुई। उस ने आनन फ़ानन मेरे गुर्दों में उंग्लियां डाल कर मुझे ख़ूब ऊपर उठा लिया। अब मेरा आधा जिस्म ऊपर था और आधा नीचे। मैं इतना ख़ौफ़ज़दा था की आ-यतुल कुरसी और लाहौल शरीफ़ वग़ैरा पढ़ना भी भूल गया। मैं ने अपने मां बाप और दादी जान को (जिन्हों ने मुझे बचपन से पाला था) मदद के लिये पुकारा। लेकिन उन में से किसी ने मेरी पुकार न सुनी। इतने में उस बुढ़िया ने मेरे होंटों को नाख़ुन मार कर चीर दिया। मैं शदीद तक्लीफ़ में था और बुरी त़रह़ चीख़ रहा था, मगर लगता था कि मेरी चीख़ो पुकार किसी को सुनाई नहीं दे रही थी। उसी वक़्त मेरे दिल में अपने पीरो मुर्शिद ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का ख़याल आया। मेरी ह़ैरत की इन्तिहा न रही कि मेरे **पीरो मुर्शिद** ब नफ़्से नफ़ीस तशरीफ़ ले आए। जैसे ही उस बुढ़िया ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को आते देखा तो मुझे छोड़ कर फ़ौरन भाग गई। यूं मुझे उस बद सूरत बुढ़िया से नजात मिली। फिर اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ज़ख़्म भी सह़ीह़ हो गए और तक्लीफ़ भी ख़त्म हो गई।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(19) लम्बे बालों वाला जिन्न

बाबुल मदीना (कराची) अ़लाक़ा नया आबाद के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि मक-त-बतुल मदीना (कराची) के अजीर इस्लामी भाई एक रोज़ ड्यूटी पर आए तो उन को बुख़ार था।

ज़िम्मादार के दर्याफ़्त करने पर उन्हों ने जो कुछ बताया उस का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है :

''कल रात जब मैं घर जाने के लिये अपने स्कूटर पर बैठ कर रवाना हुवा तो गार्डन चौरंगी पर मुझे किसी ने लिफ़्ट का इशारा किया। मैं ने स्कूटर रोक कर उन्हें बिठा लिया। जब गाड़ी तीन हटी के पुल पर पहुंची तो मुझे यूं महसूस हुवा कि मेरे पीछे कोई लम्बी लम्बी सांसें ले रहा है। मैं ने घबरा कर गाड़ी रोक दी और जैसे ही मुड़ कर देखा तो मेरी चीख़ निकल गई। पीछे बैठे हुए शख़्स की शक्ल बदल चुकी थी। लम्बे लम्बे बाल, बड़ी बड़ी सुर्ख़ आंखें, चौड़े दांत और इन्तिहाई ख़ौफ़नाक सियाह चेहरा। वोह सख़्त ग़ुस्से में लग रहा था और उस की सांस बहुत तेज़ चल रही थी। वोह कुछ देर मुझे घूरता रहा फिर सामने फ़ुटपाथ पर जा बैठा। मैं भी मारे दहशत के वहीं खड़ा उसे देख रहा था। अचानक वोह उठा और ग़ुस्से के आ़लम में मेरी जानिब लपका। मैं पीछे हटा। उस ने दोनों हाथ बढ़ा कर मेरी गरदन पकड़ना चाही तो बे इख़्तियार मेरे मुंह से ''**या अ़त्तार पीर**'' निकला। हैरत अंगेज़ त़ौर पर उस ख़ौफ़नाक बला को झटका लगा और वोह यूं लरज़ते हुए पीछे होते हुए फ़ुटपाथ पर जा पड़ा जैसे उसे करन्ट लग गया हो। मैं ने घबराहट के आ़लम में स्कूटर स्टार्ट की और वहां से भाग निकला। घर पहुंच कर मारे ख़ौफ़ के मुझे बुख़ार चढ़ गया। जब से त़बीअ़त कुछ ना साज़ है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(20) भगोड़ा जिन्न

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर पाकिस्तान) के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि मेरे भाई के यहां पहला बच्चा पैदा

हुवा तो उस के सर के बालाई हि़स्से पर जिल्द नहीं थी। जिस की वजह से उस का मग़्ज़ बिल्कुल साफ़ दिखाई दे रहा था। डॉक्टर हैरान थे कि इस नौइ़य्यत का केस हम ने पहली बार देखा है। बच्चा तक़्रीबन 3 दिन ज़िन्दा रहा फिर **इन्तिक़ाल** कर गया। कुछ अ़र्से बा'द एक और बेटे की विलादत हुई तो उस के सर के बालाई हि़स्से की खाल ग़ाइब थी और मग़्ज़ नज़र आ रहा था। येह भी चन्द घन्टे बा'द **इन्तिक़ाल** कर गया।

मेरी भाभी भी **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से ही बैअ़त थीं और अपने **पीरो मुर्शिद** से बड़ी अ़क़ीदत रखती थीं। एक रात उन्हों ने तसव्वुर ही तसव्वुर में अपने पीरो मुर्शिद **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में इस्तिग़ासा पेश किया। फिर वोह सो गईं। उन का कहना है कि रात अचानक मेरी आंख खुली तो मैं ने दो नूरानी चेहरों वाले बुज़ुर्गों को देखा जिन्हों ने **सब्ज़ इ़मामा शरीफ़** सर पर सजाया हुवा था। वोह कमरे में किसी को तलाश कर रहे हैं। कुछ ही देर में कमरे के कोने से एक **ख़ौफ़नाक जिन्न** घबराया हुवा ज़ाहिर हुवा और बाहर की त़रफ़ भागा। वोह दोनों बुज़ुर्ग भी उस के पीछे दौड़े। वोह जिन्न मुख़्तलिफ़ कमरों से होता हुवा वहां से भाग निकला। फिर वोह बुज़ुर्ग मेरे पास तशरीफ़ लाए और तसल्ली देते हुए फ़रमाने लगे कि "बेटी घबराओ मत हम ने उसे इस घर से **भगा** दिया है। اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ अब वोह दोबारा नहीं आएगा।"

येह सब आ़लमे बेदारी की बात है। सुब्ह़ जब भाभी ने येह बात घर में बताई तो मेरी बहन ने भी तस्दीक़ करते हुए कहा : "रात मेरी भी शोर की वजह से आंख खुली तो **मैं ने भी दो सब्ज़ इ़मामे वाले**

बुज़ुर्गों को घर में आते देखा था ।'' इस बात को कमो बेश दस साल का अ़र्सा गुज़र चुका है । इस के बा'द मेरी भाभी के यहां **सह़ीह़ सलामत औलाद** पैदा हुई । कमो बेश 6 माह क़ब्ल जब भाभी ने किसी त़रह़ **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ियारत की तो चोंक उठी और कहने लगी : ''जिन दो बुज़ुर्गों ने बेदारी के आ़लम में तशरीफ़ ला कर ख़ौफ़नाक **जिन्नात** को भगाया था उन में से एक शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه थे ।''

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(21) सींगों वाली दुल्हन

बाबुल इस्लाम (सिन्ध) के एक घर में शादी की तय्यारी उ़रूज पर थीं । बेटी को बियाहने का अरमान पूरा होने को था । सुब्ह़ बारात आनी थी, बहनें ख़ुशी से फूले नहीं समा रही थीं । घर को बर्क़ी कुमकुमों से दुल्हन की त़रह़ सजाया गया था । आज ''रत जगा'' की रस्म थी । दुल्हन के लिये उस रात बेश क़ीमत जोड़ा तय्यार किया गया था । दुल्हन को तय्यार कर के सहेलियां झुरमट में लिये शोर शराबे में मस्रूफ़ थीं कि अचानक दुल्हन ने सर से दुपट्टा उतार डाला । कमरे में मौजूद औ़रतों की चीख़ें निकल गईं । दुल्हन का चेहरा तब्दील हो रहा था । बड़ी बड़ी सुर्ख़ आंखें इधर उधर घूम रही थीं और गले से ग़ुर्राहट की आवाज़ आ रही थी । देखते ही देखते दुल्हन के बाल आपस में सख़्ती से मिल कर ख़ौफ़नाक सींगों की सूरत इख़्तियार कर गए । शायद येह किसी सरकश जिन्न की शरारत थी । शादी की ख़ुशियां मनाने वालों के चेहरों

पर ख़ौफ़ व ग़म के आसार दिखाई देने लगे। सुब्ह़ बात आने वाली है, पूरा घर मेहमानों से भरा हुवा है। वक़्ती त़ौर पर बात को दबा दिया गया। दुल्हन की मां और बहनें ज़ारो क़ित़ार रो रही थीं कि अब क्या होगा ? दुल्हन के भाई को किसी ने मश्वरा दिया कि फ़ैज़ाने मदीना में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ता'वीज़ात मुफ़्त दिये जाते हैं, वोह ले लीजिये। उन्हों ने फ़ौरन मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ात अ़त्तारिय्या के मक्तब से राबित़ा किया। जिन्हों ने ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या देने के साथ काट वाला अ़मल भी किया। घर आ कर जब ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या दुल्हन को पहनाया गया और काट वाला पानी पिलाने के बा'द कुछ बालों पर भी छिड़का गया तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर दुल्हन की त़बीअ़त संभलने लगी और सर के बाल जो ख़ौफ़नाक सींगों की सूरत इख़्तियार कर चुके थे, दुरुस्त हो गए, पूरे घर ने सुकून का सांस लिया और दुआ़एं देने लगे। दूसरे दिन दुल्हन को बख़ैरो आ़फ़िय्यत रुख़्सत कर दिया गया।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आसान तरीन इलाज

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

बच्चों या बड़ों को ता'वीज़ पहनना बिल्कुल जाइज़ है जब कि वोह ता'वीज़ आयाते क़ुरआनिया या अस्माए इलाहिय्यह या दुआ़ओं पर मुश्तमिल हो। बा'ज़ अह़ादीस में ता'वीज़ की जो मुमा-न-अ़त आई है इस से मुराद वोह ता'वीज़ात हैं जो ना जाइज़ अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल हों जैसा कि ज़मानए जाहिलिय्यत के ता'वीज़ात होते थे। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 252, रद्दुल मुह़तार, کتاب الحظر والاباحة، فصل فی اللبس, जि. 9, स. 600)

ता'वीज़ात अस्माए इलाही व कलामे इलाही से होते हैं, इन में असर न मानने का जवाब वोही बेहतर है जो ह़ज़रते शैख़ अबू सईद अबुल ख़ैर قدس سرہ العزیز ने एक मुल्ह़िद (या'नी बे दीन) को दिया, जिस ने ता'वीज़ात के असर में कलाम किया। ह़ज़रत قدس سرہ ने फ़रमाया, "तू अ़जीब गधा है।" वोह दुन्यवी त़ौर पर बड़ा मुअ़ज़्ज़ज़ बनता था येह लफ़्ज़ सुनते ही उस का चेहरा सुर्ख़ हो गया और गरदन की रगें फूल गई और बदन ग़ैज़ से कांपने लगा और ह़ज़रत से इस फ़रमाने का शाकी हुवा, फ़रमाया मैं ने तो तुम्हारे सुवाल का जवाब दिया है, गधे के नाम का असर तुम ने मुशा-हदा कर लिया कि तुम्हारे इतने बड़े जिस्म की क्या ह़ालत कर दी लेकिन मौला عزوجل के नामे पाक से मुन्किर हो। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 207 मुलख़्ख़सन)

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عزوجل तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की **मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के तह़त दुखियारे मुसल्मानों का शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** مدظلہ العالی के अ़त़ा कर्दा ता'वीज़ात के ज़रीए फ़ी सबीलिल्लाह इलाज किया जाता है नीज़ इस्तिख़ारा करने का सिल्सिला भी है। रोज़ाना हज़ारों मुसल्मान इस से मुस्तफ़ीज़ होते हैं। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عزوجل इस वक़्त मजलिस की त़रफ़ से बिला मुबालग़ा लाखों ता'वीज़ात और ता'ज़िय्यत, इयादत और तसल्ली नामे भेजे जा चुके हैं और ता दमे तह़रीर (22 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. 1428 हि.) एक अन्दाज़े के मुत़ाबिक़ मजलिस की त़रफ़ से **माहाना सवा दो लाख** और सालाना कमो बेश **26 लाख** से ज़ाइद "ता'वीज़ात" व "अवराद" दिये और कमो बेश

20 से 25 हज़ार मक्तूबात भेजे जाते हैं इन में **E-mail** के जवाबात भी शामिल हैं । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ माहाना **2500 से ज़ाइद ऑन लाइन इस्तिख़ारा** की तरकीब भी होती है। ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या की मु-तअ़द्दद बहारें हैं जो मक-त-बतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा **''ख़ौफ़नाक बला'', ''पुर असरार कुत्ता'' और ''सींगो वाली दुल्हन''** नामी रसाइल में मुला-ह़ज़ा की जा सकती हैं। ता'वीज़ात लेने वाले इस्लामी भाइयों को चाहिये कि वोह अपने शहर में होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाएं और वहां ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या के बस्ते (स्टॉल) से ता'वीज़ ह़ासिल करें।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(22) आ़मिल जिन्न से रव़लासी

एक शख़्स ने बताया कि एक ख़त़रनाक जिन्न मेरी बच्ची के पीछे पड़ गया। कभी कभी मेरे सामने भी ज़ाहिर हो जाता और मुत़ा-लबा करता : ''अपनी बेटी की शादी मेरे साथ कर दो और जितना चाहो माल ले लो।'' मैं बे ह़द ख़ौफ़ज़दा और परेशान था, कई आ़मिलीन से रुजूअ़ किया। पेशावर आ़मिलीन मेरे घर आते, पढ़ाई वग़ैरा करते मगर वोह जिन्न भी ग़ालिबन आ़मिल था अपने अ़-मलिय्यात से आ़मिलों को उल्टा लटका देता। मैं हज़ारों रुपै ख़र्च कर चुका था और सख़्त मायूसी के आ़लम में था कि किसी ने बताया **फ़ैज़ाने मदीना** चले जाओ वहां ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या मिलते हैं। मैं ने वहां जा कर अपना मस्अला बयान किया। उन्हों ने मुझे लटकाने और पहनने के लिये ता'वीज़ात दिये।

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ जब मैं ने ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या मजलिस के मश्वरे

के मुत़ाबिक़ इस्ति'माल किये । चन्द दिनों बा'द जब दोबारा जिन्न ज़ाहिर हुवा तो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या की ब-र-कत से क़रीब नहीं आया बल्कि दूर ही से कहने लगा, **''येह ता'वीज़ उतार दो, तुम येह ता'वीज़ कहां से लाए हो ?''** और वहीं खड़े खड़े मेरे बांधे हुए ता'वीज़ की त़रफ़ इशारा कर के ता'वीज़ात उतारने या उस का असर ज़ाइल करने के लिये कुछ पढ़ता भी रहा मगर اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह ना काम रहा और वोह ता'वीज़ न उतार सका, कुछ रोज़ वोह ख़त़रनाक जिन्न इसी त़रह़ ज़ाहिर होता रहा फिर बिल आख़िर थक हार कर **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** की ब-र-कत से ग़ाइब हो गया ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(23) रव़ौफ़नाक बला

एक इस्लामी भाई का ह़-लफ़िया बयान कुछ यूं है कि एक रात मैं अपनी गाड़ी पर क़दरे सुनसान अ़लाक़े से गुज़र रहा था। एक छोटे से पुल पर से गुज़रते हुए अचानक ऐसा लगा जैसे कोई बहुत ज़ियादा वज़्नी चीज़ गाड़ी पर लाद दी गई हो। फ़ुल स्पीड देने के बा वुजूद गाड़ी बहुत आहिस्ता आहिस्ता चल रही थी। किसी न किसी त़रह़ घर पहुंच कर जैसे ही गाड़ी से उतरा तो मुझे अपने कन्धों पर किसी अनदेखी शै का वज़्न महसूस हुवा। जैसे तैसे मैं ने कमरे में पहुंच कर दरवाज़ा बन्द किया और बिस्तर पर जा गिरा। रात के कमो बेश 1:30 बजे का वक़्त था कि मेरी आंख खुली। मुझ पर एक अ़जीब ख़ौफ़ त़ारी था। बहर ह़ाल मैं हिम्मत कर के वॉश रूम जाने के लिये उठा, तो किसी ना दीदा क़ुव्वत ने मेरा हाथ मोड़ कर कमर पर लगा दिया। मेरी चीख़ निकल गई। उस अनदेखी शै ने सारी रात मुझे अज़िय्यत में मुब्तला रखा। कभी मेरी टांग

मोड़ दी जाती तो कभी उठा कर पटख़ दिया जाता। मैं ख़ौफ़ व तक्लीफ़ में चिल्लाता और घर वालों को बुलाता रहा मगर ह़ैरत की बात येह थी कि घर वालों को मेरी आवाज़ नहीं पहुंच रही थी। अज़ाने फ़ज्र होने पर वोह ना दीदा क़ुव्वत चली गई। मेरा पूरा जिस्म फोड़े की त़रह़ दुख रहा था।

सुब्ह़ इस ख़याल से घर में कुछ न बताया कि ख़्वाह म ख़्वाह परेशान होंगे। गली में रहने वाले एक बा रीश नमाज़ी (जो दम वग़ैरा करते थे) के पास पहुंचा। उन्हों ने इस्तिख़ारा कर के बताया कि सख़्त जान लेवा चीज़ तुम्हारे साथ है। लगता है कि तुम किसी कामिल पीर के मुरीद हो इस लिये जान बच गई। इस का इ़लाज मेरे बस में नहीं है। दूसरी रात फिर उसी त़रह़ 2:00 बजे के क़रीब किसी ना दीदा क़ुव्वत ने नींद की ह़ालत में बिस्तर से उठा कर नीचे फेंक दिया और सारी रात मुझे अज़िय्यत दी जाती रही। मदद के लिये पुकारता रहा मगर बे सूद।

दिन के वक़्त मैं ने क़रीबी मज़ार पर ह़ाज़िरी दी और आंखें बन्द कर के अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मेरे मुर्शिद का वासित़ा ! कम अज़ कम इतना तो हो कि जो ना दीदा क़ुव्वत मुझे तक्लीफ़ देती है नज़र आए।" येह अ़र्ज़ कर के जैसे ही आंखें खोलीं तो बराबर में भयानक चेहरे वाली एक ख़ौफ़नाक बला खड़ी दिखाई दी। जिस के दांत सीने तक निकले हुए थे और सर छत को छू रहा था। उस का चेहरा बे ह़द सियाह था। दो बड़ी बड़ी सुर्ख़ आंखें मुझे घूर रही थीं। मैं घबरा कर वहां से चल दिया तो वोह बला भी मेरे साथ हो ली। बाहर आ कर जब मैं ने मज़ार के इह़ाते में निगाह दौड़ाई तो मुझे अ़जीबुल ख़ल्क़त मख़्लूक़ दिखाई दी जिन में बच्चे भी थे और लम्बे क़द वाले मर्द भी जिन के बाल घुटनों तक और

चेहरे इन्सानों से मुख़्तलिफ़ थे। अब चूंकि वोह ना दीदा क़ुव्वत ज़ाहिर हो चुकी थी। लिहाज़ा सामने आ कर मेरी पिटाई किया करती।

एक सुब्ह़ मैं ने सब्ज़ इमामा बांधे हुए इस्लामी भाई को येह तमाम मुआ़-मला बताया तो उन्हों ने पूछा : "तुम अपने पीरो मुर्शिद शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा श-जरा शरीफ़ में से अवराद व वज़ाइफ़ पढ़ते हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "पढ़ना तो दूर की बात, मेरे पास तो श-जरा भी नहीं है।" उन्हों ने मुझे श-जरए अ़त्तारिय्या दिया और ताकीद की के इसे अपने पास रखिये और इस में दिये गए अवराद व वज़ाइफ़ पढ़ने का मा'मूल भी बना लीजिये और फ़ैज़ाने मदीना से मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या के मक्तब से ता'वीज़ात भी लो, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस ख़ौफ़नाक बला से नजात मिल जाएगी।

उस रात जब मैं सोया तो **श-जरए अ़त्तारिय्या** मेरी जेब में था। अ़जीब क़िस्म की पुर असरार आवाज़ से मेरी आंख खुली तो देखा कि वोह भयानक बला मेरे कमरे में खड़ी है। मैं चूंकि अब आ़दी हो चुका था, लिहाज़ा ख़ौफ़ में कमी आ गई थी। मैं ने महसूस किया आज वोह मुझ से दूर दुर है और क़रीब आने से कतरा रही है। वोह बला दूर ही से भयानक आवाज़ में कहने लगी : "तुम्हारी जेब में क्या है ? इस को निकाल दो मैं तुझे कुछ नहीं कहूंगी।" अब मुझ पर इन्किशाफ़ हुवा कि मेरी जेब में **श-जरए अ़त्तारिय्या** है और इसी की वजह से इस बला को मेरे क़रीब आने की हिम्मत नहीं हो रही। सारी रात वोह बला दूर दूर कमरे में टहलती रही और जेब से श-जरए अ़त्तारिय्या निकालने का मश्वरा देती रही। रात मैं सो तो न सका मगर उस की अज़िय्यत से बहर

ह़ाल मह़फ़ूज़ रहा।

दूसरे दिन फ़ैज़ाने मदीना में **मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के मक्तब से ता'वीज़ात लिये और ला कर एक ता'वीज़ कमरे में लटका दिया। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता'वीज़ लटकाने की ब-र-कत से उस भयानक बला का कमरे में दाख़िला भी बन्द हो गया। चन्द दिन मुख़्तलिफ़ रूप में आ कर बाहर दालान से, कभी खिड़की से, आवाज़ देती रही : "ता'वीज़ हटा दे..... तेरे बहुत काम आऊंगी..... मुझ से दोस्ती कर ले..... तुझे अब नहीं मारूंगी। वग़ैरा वग़ैरा।" इस के बा'द मैं ने बाहर भी ता'वीज़ात लटका दिये और ख़ुद भी ता'वीज़ पहन लिया काट का पानी भी पीता रहा। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ कुछ ही अ़र्से में **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** की ब-र-कत से उस ख़ौफ़नाक बला से नजात मिल गई।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(24) जिन्नात से नजात

एक इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है कि मेरे मामूं की बेटी तक़रीबन अढ़ाई साल से बीमार थी, बहुत इ़लाज करवाया लेकिन किसी को अस्ल मरज़ का पता नहीं चल रहा था। डॉक्टरों की दी हुई त़रह़ त़रह़ की दवाइयां भी खिलाई गईं और रूह़ानी इ़लाज के लिये मुख़्तलिफ़ आ़मिलों के पास भी ले कर गए मगर कोई ख़ास फ़र्क़ न पड़ा। एक दिन अचानक एक जिन्न ने उस की ज़बान से बोलना शुरूअ़ कर दिया जो त़रह़ त़रह़ की ख़ुराफ़ात बक रहा था, उस ने घर भर में तूफ़ाने बद तमीज़ी बरपा कर दिया। घर वाले बहुत ज़ियादा घबरा गए मैं ने उन को मश्वरा दिया कि आप कहीं और न जाएं बल्कि हमारे प्यारे शैख़े त़रीक़त, अमीरे

अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ता कर्दा ता'वीज़ात ले कर इस्ति'माल करें । मेरे मामूं अगर्चे दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल के बारे में ग़लत़ फ़हमी में मुब्तला थे मगर उन पर ऐसा मुश्किल वक़्त आन पड़ा था कि मानते ही बनी ।

चुनान्चे वोह मेरे साथ मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या के ज़िम्मादार इस्लामी भाई के पास गए और उन से अपना मस्अला बयान किया । उस इस्लामी भाई ने ता'वीज़ दिया जिसे प्लास्टिक लेमीनेशन करवा कर दरवाज़े पर लटकाना था । हम ता'वीज़ ले कर घर वापस आए और जैसे ही ता'वीज़ लटकाने लगे तो जिन्न दोबारा ह़ाज़िर हो गया । उस ने रोना शुरूअ़ कर दिया और हाथ जोड़ कर मिन्नतें करने लगा : "ख़ुदा के लिये मुझ पर येह ज़ुल्म न करना, इल्यास क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तो मेरा बेड़ा ग़र्क़ कर दिया है ।" वोह इसी त़रह़ काफ़ी देर तक मुआ़फ़ियां मांगता रहा । लेकिन मामूं ने ता'वीज़ लटका दिया और वोह जिन्न वहां से टल गया । दूसरे दिन जब मामूं के हां गया और सूरते ह़ाल दर्याफ़्त की तो मामूं कहने लगे : "अब तक तो सब ठीक है ।" मुझे मामूं के घर आए हुए चन्द ही मिनट गुज़रे होंगे कि वोह जिन्न दोबारा ज़ाहिर हो गया । और कहने लगा कि आप ने इस लड़की को इल्यास क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की हि़फ़ाज़त में दे कर हम पर बड़ा ज़ुल्म किया है, इस के इ़लावा भी वोह बहुत कुछ कहता रहा । फिर वोह वहां से रुख़्सत हो गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरे मामूं की बेटी जिस की उ़म्र अब तक़रीबन **17** साल है, बिल्कुल ठीक हो चुकी है ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(25) T.V. देखने से इन्कार

कशमीर (पाकिस्तान) के मुक़ीम इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है कि एक रात मैं अपने कमरे में सो रहा था। रात तक़रीबन बारह बजे किसी आहट की वजह से मेरी आंख खुली तो मुझे कमरे की खिड़की में एक बूढ़ी औ़रत का चेहरा दिखाई दिया। वोह मुझ से कहने लगी : ''तू T.V नहीं देखता, चल मैं टी वी ऑन करती हूं और मिल कर टी वी देखते हैं।'' मैं एक दम घबरा गया कि न जाने येह कौन है और डर के मारे अपने छोटे भाई को आवाज़ दी तो वोह ग़ाइब हो गई।

इस वाक़िए़ के कुछ दिन बा'द मुझे सीने में दर्द शुरूअ़ हुवा और त़बीअ़त ख़राब रहने लगी। मेरे डिवीज़्नल निगरान ने मुझे ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या इस्ति'माल करने का मश्वरा दिया। मैं ने **मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ात** के बस्ते से **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** ह़ासिल कर के इस्ति'माल किये। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ चन्द ही दिनों के बा'द मैं बिल्कुल ठीक हो गया। कुछ दिन के बा'द वोह आसेब नुमा औ़रत फिर ज़ाहिर हुई। मैं ने **श-जरए अ़त्तारिय्या** भी जेब में रखना शुरूअ़ कर दिया था। लिहाज़ा ! वोह दूर ही से बोली : ''येह जो तुम ने जेब में रखा हुवा है इसे निकाल दे।'' मैं ने कहा : ''हरगिज़ नहीं।'' उस ने दो तीन मर्तबा श-जरा शरीफ़ निकालने पर इस्रार किया मगर मैं मन्अ़ करता रहा। तंग आ कर उस ने कहा : ''अगर तुम नहीं निकालते तो मैं जा रही हूं।'' اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह दिन और आज का दिन उस ने दोबारा मुझे तंग नहीं किया।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(26) जिन्न का पागल पन

एक इस्लामी भाई का बयान है कि मेरे बड़े भाई के हां बच्चा

पैदा होता और कुछ ही अ़र्सा बा'द अचानक इन्तिक़ाल कर जाता। डॉक्टर भी बहुत परेशान थे कि बग़ैर किसी बीमारी और ज़ाहिरी सबब के बिल्कुल सिह़ह़त मन्द बच्चे कैसे फ़ौत हो जाते हैं ? घर वाले अलग परेशान थे। मेरी ज़ौजा की गोद हरी होने के आसार नुमूदार हुए तो उसे भी जिन्नात मुख़्तलिफ़ शक्लों में आ कर डराते थे और धमकी देते थे कि तुम बहुत ख़ुश हो रहे हो मैं तुम्हारे बच्चे को मार दूंगा। हम ने **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** ह़ासिल किये और काट वाला अ़मल भी करवाया।

एक रात वोह जिन्न दोबारा ज़ाहिर हुवा, पहले मेरी ज़ौजा को नज़र आता था मगर अब की बार मैं ने भी उस को देखा। उस की शक्ल बन्दर की त़रह़ थी। वोह हमें धम्काने लगा : "मैं तुम्हारे बच्चे को मरवा दूंगा, तुम मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते मैं **10** साल से तुम्हारे पीछे लगा हुवा हूं।" दूसरे दिन अ़स्र की नमाज़ के बा'द मैं ने **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के ज़िम्मादार इस्लामी भाई से राबित़ा किया। उन्हों ने तसल्ली देते हुए मुझे तीन नक़्श और पहनने के लिये ता'वीज़ात भी दिये। इस मर्तबा जब वोह जिन्न ज़ाहिर हुवा तो उस की अ़जीब ह़ालत थी। वोह पागलों की त़रह़ कभी दीवारों पर सर मारता तो कभी घर की चीज़ें उठा उठा कर फेंकने लगता। बिल आख़िर थक हार कर चला गया। दूसरी रात वोह फिर आया और हमें तंग करने लगा। मैं ने जोशे अ़क़ीदत में उस जिन्न से कहा : "तू मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता क्यूं कि मेरा पीर कामिल है।"

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह दिन और आज का दिन, हमारे घर में दोबारा कोई जिन्न वग़ैरा नहीं आया। अल्लाह तआ़ला ने मुझे प्यारी सी म-दनी मुन्नी से भी नवाज़ा जो अब तीन माह की हो चुकी है। मेरे भाई के यहां

बेटा पैदा हुवा है जो اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़ूब सिह़्ह़त मन्द है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(27) जिन्नों की दुन्या

बाबुल इस्लाम (सिन्ध) लत़ीफ़ आबाद नम्बर 07 ह़ैदरआबाद के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मेरा 16 सालह बेटा क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ कर रहा था। उस ने 26 पारे ह़िफ़्ज़ कर लिये थे मगर बक़िय्या पारे ह़िफ़्ज़ करने में शदीद दुश्वारी पेश आ रही थी। वोह किसी न किसी बहाने मद्रसे से छुट्टी कर लेता। एक सुब्ह़ जब घर वाले जागे तो देखा कि मेरा बेटा घर में मौजूद नहीं है। उस के इस त़रह़ अचानक ग़ाइब होने पर घर वाले शदीद परेशान थे। हर कोई उस की तलाश में लग गया लेकिन वोह नहीं मिला। दो पहर तक़्रीबन एक बजे वोह घर में दाख़िल हुवा। जब उस से पूछा गया कि कहां गए थे ? लाख जतन के बा वुजूद उस ने कोई जवाब न दिया।

दूसरी सुब्ह़ फिर वोह ग़ाइब था। घर में कोहराम मच गया। मेरी बेटी ने इन्किशाफ़ करते हुए बताया : "भाई मुझे कह रहा था कि मैं **जिन्नों की दुन्या** में जाता हूं, वहां जिन्नों के बच्चों के साथ खेलता हूं, वोह मुझे नाश्ता भी कराते हैं और खाना भी खिलाते हैं, वहां पर बड़े बड़े ख़ूब सूरत तालाब हैं, जिन में बहुत ही प्यारी रंग बिरंग की मछलियां होती हैं। वहां दीगर **जिन्नात** भी मेरा दिल बहलाते हैं।"

बहर ह़ाल इस मर्तबा भी वोह ख़ुद ही घर लौट आया। अब तो उस का मा'मूल बन गया कि रात के किसी ह़िस्से में ग़ाइब हो जाता और फिर दिन में किसी वक़्त लौट आता, कुछ पता नहीं चलता था कि वोह कहां जाता है ? हम ने घर के दरवाज़े पर ताला भी डाला मगर कोई

फ़ाएदा न हुवा। एक रात मैं जाग कर इन्तिज़ार करता रहा कि देखूं तो सही येह किस त़रह़ ग़ाइब होता है। रात के कमो बेश 2:00 बजे वोह हड़बड़ा कर उठ बैठा जैसे किसी अनजाने वुजूद ने बेदार किया हो। वोह अपने बिस्तर से उठा और पुर असरार अन्दाज़ में इधर उधर देखते हुए धीमे क़दमों के साथ खिड़की की त़रफ़ बढ़ा। खिड़की के पास पहुंच कर वोह एक दम रुक गया और ख़ौफ़ज़दा निगाहों से खिड़की को देखने लगा। मैं ने उस के क़रीब होते हुए पूछा : "रुक क्यूं गए।" जवाबन उस ने मुझे अ़जीब नज़रों से देखा और मेरे सुवाल का जवाब दिये बग़ैर सर झुका कर अपने बिस्तर की त़रफ़ चल दिया।

मैं उस की रुकावट का मुआ़-मला समझ गया कि खिड़की पर ह़ैदरआबाद के मशहूर बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वह्हाब अल मा'रूफ़ सख़ी सुल्त़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان के मज़ारे मुबारक की चादर शरीफ़ लगी हुई थी, शायद इसी सबब जिन्नात अपने साथ ले जाने से क़ासिर रहे। उस से अगली रात कमो बेश साढ़े तीन बजे जब मेरी आंख खुली तो वोह फिर ग़ाइब था। मैं उसी वक़्त उस की तलाश में निकल खड़ा हुवा। और मुख़्तलिफ़ जगहों पर तलाश करता हुवा, लत़ीफ़ आबाद नम्बर 4 के एक गोठ के क़रीब पहुंचा जिस के लिये मशहूर है कि यहां एक पुराने बड़ के दरख़्त पर **जिन्नात का बसेरा** है। मैं बेटे की फ़िक्र में उस वीरान जगह पहुंच तो गया मगर अब मुझे बे ह़द ख़ौफ़ महसूस हो रहा था। मेरी ह़ालत ऐसी थी कि पत्ता खड़के दिल धड़के मगर बेटे की महब्बत ने मुझे रोक रखा था। मैं मायूस हो कर लौटना ही चाहता था कि कुछ फ़ासिले पर मुझे मेरा बेटा दिखाई दिया। वोह सर झुकाए ख़ामोश खड़ा था। मैं उसे ले कर घर पहुंचा।

हम ने मुख़्तलिफ़ आ़मिलीन से इ़लाज करवाया मगर कोई पाएदार ह़ल न निकल सका। एक दिन मेरी मुलाक़ात **मद्रसतुल मदीना** के नाज़िम साहिब से हुई। मैं ने उन्हें अपनी परेशानी के बारे में आगाह किया तो उन्हों ने **मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के बस्ते से राबिते़ का मश्वरा दिया।

मैं फ़ैज़ाने मदीना आफ़न्दी टाऊन (ह़ैदर आबाद) पहुंचा और बस्ते के ज़िम्मादारान को सारा मुआ़-मला बताया। उन्हों ने **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** देने के साथ काट की तरकीब भी बनाई और प्लेटें भी लिख कर दीं। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या की ब-र-कत से मेरा बेटा उस दिन के बा'द से घर से ग़ाइब नहीं हुवा और उस ने बा क़ाइ़दगी से मद्रसे जाना भी शुरूअ़ कर दिया। और क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ करने के बा'द जामिअ़तुल मदीना ह़ैदरआबाद में आ़लिम कोर्स की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(28) ख़ौफ़नाक दांत वाला बच्चा

बाबुल मदीना के एक इस्लामी भाई **मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के बस्ते पर अपने एक 14 सालह बेटे के साथ तशरीफ़ लाए और कुछ इस त़रह़ बताया कि मेरा येह बेटा कुछ अ़र्सा पहले रात कमो बेश अढ़ाई बजे एक शादी में शिर्कत के बा'द घर वालों के साथ वापस आ रहा था। एक वीरान गली में दरख़्त के क़रीब से गुज़रते हुए येह एक दम घबरा गया और बे ह़द ख़ौफ़ज़दा दिखाई दे रहा था। जब इस से ख़ौफ़ का सबब पूछा गया तो कोई जवाब देने के बजाए ख़ामोशी से इधर उधर देखते हुए चलने लगा। घर पहुंच कर

सब सो गए। थोड़ी ही देर बा'द एक पुर असरार चीख़ की आवाज़ से सब की आंख खुल गई ।

किसी फ़ोरी ख़याल के तहूत मैं ने बेटे के बिस्तर की त़रफ़ देखा तो वोह वहां नहीं था। सारे घर में देख लिया मगर वोह न मिला। बच्चे की अम्मी (या'नी मेरी ज़ौजा) ने रोना शुरूअ़ कर दिया। अचानक किसी ने तवज्जोह दिलाई की छत पर तो देखो। ऊपर पहुंचे तो मेरा बेटा दीवार की मुंडेर पर सर झुकाए बैठा था । मैं ने फ़ौरन उसे संभाला । वोह गुमसुम मेरे साथ नीचे चला आया और सो गया। बा'द में उस ने बताया कि मेरे पास जिन्न आता है जो अपने साथ चलने का कहता है। वोह अक्सर छत पर चला जाता, खाना पीना भी कम कर दिया और ज़ियादा तर ख़ामोश रहता । हम ने डॉक्टरों के इलावा कई आ़मिलीन को भी दिखाया मगर कोई इफ़ाक़ा न हुवा ।

एक रोज़ वोह सोया हुवा था कि अचानक उस की आंख खुली, उस की सांस बहुत तेज़ चल रही थी, वोह गुस्से में इधर उधर घूमने लगा। घर वालों ने संभालने की कोशिश की तो उस ने हर एक को उठा उठा कर फेंकना शुरूअ़ कर दिया। न जाने उस में इतनी त़ाक़त कहां से आ गई थी। ख़ुद मुझे उस ने सिर्फ़ एक झटके में गिरा दिया। देखते ही देखते उस का चेहरा इन्तिहाई **ख़ौफ़नाक** हो गया और ऊपर के दो दांत निकल आए जो इन्तिहाई नोकीले और भयानक थे। येह मन्ज़र देख कर सारे घर वालों की चीख़ें निकल गईं कि येह क्या उफ़्ताद आन पड़ी। मैं भी इन्तिहाई परेशान था मगर क्या करता। जैसे तैसे रात गुज़री। सुब्ह़ जब अज़ाने फ़ज्र हुई तो उस की आवाज़ पर उस के **ख़ौफ़नाक दांत** अन्दर हो गए और वोह पुर सुकून हो गया फिर सो गया। **अब** तो येह

रोज़ का मा'मूल बन गया है कि रात इस के दो ख़ौफ़नाक दांत निकल आते हैं और एक अन्जानी त़ाक़त इस में आ जाती है।

उस इस्लामी भाई ने अपने बेटे के नीचे के होंटों पर काले काले निशानात भी दिखाए जो बार बार दांत निकलने के बाइ़स बन चुके थे। "हर जगह से मायूस हो कर बड़ी उम्मीद के साथ आप के पास ह़ाज़िर हुए हैं।" येह कहते हुए उस के वालिद की आवाज़ भर्रा गई। मजलिस के ज़िम्मादार इस्लामी भाई ने उसे तसल्ली देते हुए कहा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **शिफ़ा देने वाला है**, घबराइये नहीं। और पहनने के लिये **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** देने के साथ कुछ ता'वीज़ात लटकाने के लिये भी दिये और काट की भी तरकीब बनाई।

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ चन्द दिनों बा'द उस इस्लामी भाई ने आ कर बताया कि न सिर्फ़ मेरे बेटे के दांत बाहर निकलना बन्द हो गए हैं बल्कि त़बीअ़त भी अब तक ख़राब नहीं हुई है। (سُبْحٰنَ اللّٰہ)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(29) पुर असरार बच्ची

बाबुल मदीना (कराची) के एक इस्लामी भाई का ह़-लफ़िया बयान कुछ यूं है कि मेरे घर वाले एक शादी में शिर्कत के बा'द रात तक़रीबन 2 बजे घर वापस आ रहे थे। जब वोह एक वीरान जगह से गुज़र रहे थे तो मेरी बहन ने वहां मौजूद कचरे के ढेर से एक **पुर असरार बच्ची** को निकल कर अपनी त़रफ़ बढ़ते हुए देखा। मेरी बहन ख़ौफ़ज़दा हो कर पीछे हटी मगर वोह **पुर असरार बच्ची** क़रीब आ कर बहन से टकराई और ग़ाइब हो गई। घर आते ही बहन की ह़ालत ख़राब होना शुरूअ़ हो गई और वोह बदली हुई आवाज़ में अ़जीब अ़जीब बातें करने

लगी। बक़ौल उस के उसे **सेंकड़ों जिन्नात** नज़र आते। कई आ़मिलीन से इ़लाज करवाया गया मगर त़बीअ़त बिगड़ती ही चली गई। परेशान हो कर सुसराल वाले बहन को मेरे घर छोड़ गए। मैं ने भी जगह जगह इ़लाज के लिये आ़मिलीन से राबित़ा किया मगर बहन की त़बीअ़त सह़ीह़ होना तो एक त़रफ़ रहा ख़ुद मेरी अहलिया भी उस की लपेट में आ गई। मैं इन्तिहाई परेशान था कि क्या करूं।

एक दिन मेरी सास मिलने के लिये आई और अपनी बेटी के साथ कमरे में सो गई। सुब्ह़ जब मैं जागा तो अहलिया की त़बीअ़त ख़राब थी और वोह बार बार हंस रही थी। घर वाले जब मेरी सास को बेदार करने के लिये कमरे में पहुंचे तो वोह **दम तोड़ चुकी थी।** इस वाक़िए़ के बा'द मैं ने **मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के बस्ते से राबित़ा कर के काफ़ी अ़र्सा इ़लाज करवाया और श-जरए अ़त्तारिय्या पढ़ने का भी मा'मूल रखा। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से इन आफ़तों और बलाओं से हमें नजात मिल गई और अब घर में सुकून है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(30) ख़ौफ़नाक बच्ची

बाबुल इस्लाम (सिन्ध) के मशहूर शहर ह़ैदरआबाद के अ़लाक़ा दौलत आबाद के **17** सालह मुक़ीम इस्लामी भाई के ह़-लफ़िया बयान का ख़ुलासा है कि मेरा दूध सप्लाय का काम था। मैं एक रोज़ सुब्ह़े सादिक़ से कुछ देर क़ब्ल भेंसों के बाड़े से मोटर साइकिल पर दूध ले कर निकला। मैं सड़क पर जा रहा था कि एक गली के कोने पर सुर्ख़ लिबास में मल्बूस एक **बच्ची** को रोते हुए देखा। मैं ने मोटर साइकिल रोक ली मगर आगे बढ़ने में कुछ ख़ौफ़ मह़सूस हुवा। उस गली में पुराने ज़माने का एक मसान (या'नी

ग़ैर मुस्लिमों के मुर्दे जलाने की जगह) थी।

ख़ैर मैं हिम्मत कर के बच्ची के क़रीब पहुंचा। वोह बड़ी प्यारी बच्ची थी। उस के लम्बे लम्बे बाल खुले हुए थे और हाथ से ख़ून बह रहा था। मैं उसे संभालने के लिये जैसे ही मोटर साइकिल से उतर कर उस की त़रफ़ बढ़ा तो अचानक उस बच्ची के सर के लम्बे लम्बे बाल **खड़े** हो गए। उस का चेहरा इन्तिहाई **ख़ौफ़नाक** हो गया। उस के होंट **ग़ाइब** हो गए और दांत दिखाई देने लगे। वोह **भयानक** अन्दाज़ में मुंह खोले, ख़ौफ़नाक आवाज़ें निकालती हुई और शो'ले बरसाती आंखों से मुझे घूरने लगी। उसे इस ह़ालत में देख कर मेरी चीखें निकल गईं। जैसे तैसे मैं ने मोटर साइकिल स्टार्ट की और वहां से **भाग** निकला। जब मैं अपने मह़ल्ले में पहुंचा तो बेहोश हो कर गिर गया। लोगों ने मुझे उठा कर घर पहुंचाया। उस दिन से मैं बीमार और ख़ौफ़ज़दा रहने लगा। ख़्वाब में **ख़ौफ़नाक जिन्नात** आ कर मुझे डराते।

इसी दौरान मैं **शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद हो कर अ़त्तारी बन गया। इस निस्बत की ब-र-कत से **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माह़ोल भी नसीब हो गया। मेरे जीने का ढंग बदल गया। चेहरे पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ **दाढ़ी** और सर पर सब्ज़ **इमामा शरीफ़** का ताज सज गया। मैं **फ़राइज़ व वाजिबात** की अदाइगी के साथ साथ **सु-नन व नवाफ़िल** का पाबन्द बनने की भी कोशिश करने लगा। मेरी त़बीअ़त भी क़दरे बेहतर हो गई।

मेरे वालिद किसी और फ़िर्क़े से तअ़ल्लुक़ रखते थे और करामाते औलिया के मुन्किरीन में से थे। उन्हें मेरा म-दनी माह़ोल में आना जाना पसन्द न था। लेकिन वोह मेरी साबिक़ा बे राह रवी से परेशान थे इस लिये

मेरी बदली हुई ज़िन्दगी देख कर ख़ामोश थे। मैं पहले वालिदैन की बात सुनने के बजाए उन से न सिर्फ़ **ज़बान दराज़ी** करता बल्कि مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **गालियां** तक बक दिया करता था और अब اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपने **पीरो मुर्शिद** की तरबिय्यत की ब-र-कत से उन के डांटने पर ख़ामोश रहता।

एक दिन मेरी ह़ालत **पहले की त़रह़** हो गई और मैं **ख़ौफ़ज़दा** रहने लगा। खाना पीना बन्द हो गया। जो खाता फ़ौरन कै आ जाती। डॉक्टरों ने बताया कि इसे मे'दे में ज़ख़्म हो चुके हैं जो ख़त़रनाक हो सकते हैं। डॉक्टरों ने तक़रीबन जवाब दे दिया था। होमियो पेथिक का इ़लाज जारी था। रोज़ाना 100 रुपै की दवा आती। ग़ुरबत के बाइ़स वालिद साहिब ने किसी से क़र्ज़ लिया था। पन्दरह दिन इसी त़रह़ गुज़र गए। अब मैं चलने के क़ाबिल भी न रहा। इस ह़ालत में देख कर **दा'वते इस्लामी** के एक ज़िम्मादार ने **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के बस्ते से राबित़ा करने का मश्वरा दिया। मैं ने बड़ी मुश्किल से वालिद साहिब को **फ़ैज़ाने मदीना** चलने के लिये तय्यार किया क्यूं कि वोह ता'वीज़ात वग़ैरा पर यक़ीन नहीं रखते थे। जब मैं ने **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** इस्ति'माल किये और काट का पानी इस्ति'माल किया तो ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर दो दिन बा'द ही मैं ने **खाना** शुरूअ़ कर दिया और मे'दे की तक्लीफ़ भी **दूर** हो गई। जिस पर तमाम घर वाले बिल ख़ुसूस वालिद साहिब इन्तिहाई मु-तअस्सिर हुए।

हमारे घर में तंगदस्ती थी। बहनों की शादी के कोई अस्बाब नज़र नहीं आ रहे थे। एक दिन सुब्ह़ जब घर वाले सो कर उठे तो वालिदा ने बताया कि रात मैं ने एक **अ़जीब ख़्वाब** देखा। येह सुन कर वालिद साहिब बोले **ख़्वाब** तो रात मैं ने भी देखा है। वालिदा ने कहा पहले आप अपना ख़्वाब सुना दें। वालिद साहिब ने बताया कि मैं ने ख़्वाब में एक **नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग** को देखा जिन के सर पर सब्ज़ **इमामा** था और

उन की **निगाहें** झुकी हुई थीं। और भी लोग हाज़िर थे। किसी ने तआ़रुफ़ कराते हुए कहा कि येह ज़माने के वली अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हैं। इन से **दुआ़** करवा लें, इन से **मुरीद** भी हो जाइये और **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो जाएं اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **परेशानियां** दूर होने के साथ **दुन्या व आख़िरत** की बे शुमार भलाइयां नसीब होंगी।

वालिद साह़िब के ख़ामोश होने से पहले ही वालिदा बोल उठीं : "बिल्कुल येही सब कुछ तो मैं ने भी ख़्वाब में देखा है।" फिर वालिद साह़िब ने मुझे इर्शाद फ़रमाया कि तमाम घर वालों को **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुरीद बनवा दो। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारे घर में तमाम अफ़राद बुरे अ़क़ीदों से तौबा कर के **अ़त्तारी** बन चुके हैं। रबीउ़न्नूर शरीफ़ में वालिद साह़िब ने (जो पहले नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत के जश्न को शिर्क बताते थे) ख़ुद अपने हाथों से चोक पर **जश्ने विलादत** की ख़ुशी में एक बड़ा परचम लगाने की तरकीब बनाई और **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गए। मेरी बहन न सिर्फ़ म-दनी बुरक़अ़ पहनने लगी हैं बल्कि अपने अ़लाक़ा की ज़िम्मादार भी हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(31) जामिआ़ का जिन्न

जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने मदीना ह़ैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के ख़ादिम के बयान का ख़ुलासा है कि एक मर्तबा दो पहर तक़रीबन 11:00 बजे दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) के त़-लबा द-रजा में मा'मूल के मुत़ाबिक़ पढ़ाई में मस्रूफ़ थे। अचानक एक **17** सालह त़ालिबे इ़ल्म ने

चीख़ मारी और **बेहोश** हो गया। उस के मुंह से अ़जीब अ़जीब सी आवाज़ें निकल रही थीं और वोह अपने हाथ पाउं इधर उधर पटख़ रहा था। दीगर त़-लबा ने संभालने की बहुत कोशिश की मगर वोह किसी के क़ाबू में नहीं आ रहा था। ख़ादिम इस्लामी भाई का कहना है कि मैं ने **मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के बस्ते से अपने बच्चे के लिये "**नज़रे बद**" से बचने का ता'वीज़ लिया था जो उस वक़्त मेरी जेब में मौजूद था। मैं ने एक त़ालिबे इ़ल्म को ता'वीज़ दे कर कहा : "ख़ामोशी से इस के जेब में डाल दो। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ त़बीअ़त संभल जाएगी।" उस ने आगे बढ़ कर जैसे ही ता'वीज़ बीमार त़ालिबे इ़ल्म की जेब में डालना चाहा, उस ने हाथ बढ़ा कर उसे रोक दिया ह़ालां कि उस की आंखें बन्द थीं। मैं ने इशारा किया कि ता'वीज़ उस के जिस्म या हाथ पर मस कर दो। जैसे ही ता'वीज़ उस के जिस्म से मस हुवा तो उस ने चिल्लाना शुरूअ़ कर दिया : **"मैं जा रहा हूं, मुझे मत जलाओ, मुझे छोड़ दो। फिर ज़ोर ज़ोर से चीख़ने लगा। छोड़ दे इल्यास ! छोड़ दे इल्यास!"** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कुछ ही देर में त़बीअ़त संभल गई। इस बात को नौ दस माह हो चुके हैं, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ जिन्नात ने कभी दोबारा आने की जुरअत नहीं की।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पुर असरार तितली

दा'वते इस्लामी की मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या के एक इस्लामी भाई ने बताया कि किसी ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के नाम मक्तूब भेजा, जिस में कुछ यूं तह़रीर था : मेरी चन्द बरस पहले शादी हुई और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे एक प्यारी सी म-दनी मुन्नी से नवाज़ा जिस का नाम हम ने "**दुआ**" रखा। येह बच्ची हमारी मह़ब्बतों का मह़वर थी, हमारे घर की रोनक़ें इसी के दम से थीं। एक रोज़ म-दनी

मुन्नी ने अपनी अम्मी का दूध पीते पीते अचानक ज़ोरदार चीख़ मारी और देखते ही देखते अपनी अम्मी की गोद में दम तोड़ दिया। उस की अचानक मौत पर घर के दरो दीवार पर उदासी ने डेरे डाल दिये, अहले ख़ाना शिद्दते ग़म से निढाल थे। सोगवार फ़ज़ा में नन्ही सी बच्ची "दुआ" को क़ब्र में उतार दिया गया।

तदफ़ीन के चन्द दिनों बा'द मर्हूमा **दुआ** की अम्मी ने बताया कि सुब्ह़ कमो बेश 10:00 बजे का वक़्त था, मैं अपने कमरे में उदास बैठी थी मुझे मेरी म-दनी मुन्नी **दुआ** बड़ी शिद्दत से याद आ रही थी जिस के नतीजे में मेरी आंखों से सैले अश्क रवां हो गया। इतने में मेरी नज़र एक **ख़ूब सूरत तितली** पर पड़ी, मैं कुछ देर यूंही उसे देखती रही फिर मेरी ज़बान से बे इख़्तियार "दुआ" का नाम निकल गया! "दुआ" कहते ही ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर वोह पुर असरार तितली मेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुई और उड़ती हुई मेरे क़रीब आ गई। मैं ने ह़ैरान हो कर दोबारा "दुआ!" पुकारा तो वोह **पुर असरार तितली** मेरे कन्धे पर आ बैठी। अब तो घर में एक अ़जीब तमाशा बन गया! सभी ह़ैरान थे क्यूं कि कभी वोह **पुर असरार तितली** मर्हूमा म-दनी मुन्नी "दुआ" के कपड़ों पर जा कर बैठती तो कभी उस के झूले पर मंडलाने लगती। पूरा दिन इसी त़रह़ गुज़रा। नमाज़े मग़्रिब के वक़्त वोह **पुर असरार तितली** उड़ते हुए जैसे ही ट्यूब लाइट की त़रफ़ बढ़ी तो एक **छिपकली** ने उस पर ह़म्ला किया और **पुर असरार तितली** ज़ख़्मी हो कर नीचे आ गिरी और कुछ देर तड़प कर ठन्डी हो गई। हम बहुत परेशान और तशवीश में हैं कि आख़िर माजरा क्या है? **वोह पुर असरार तितली कौन थी?**

मजलिस के इस्लामी भाई का कहना है कि हम ने वोह मक्तूब **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में पेश किया ताकि आप इस का कोई जवाब तजवीज़ फ़रमाएं। इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त दा'वते इस्लामी के माह़ोल से वाबस्ता चन्द मुफ़्तियाने किराम भी साथ तशरीफ़ फ़रमा थे। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मक्तूब दिखा

कर उन ह़ज़रात से वज़ाह़त चाही मगर उन्हों ने फ़ोरी तौ़र पर कोई जवाब देने से मा'ज़िरत ज़ाहिर की।

फिर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपना इन्दिया बयान फ़रमाया जिस का लुब्बे लुबाब येह है कि **पुर असरार तितली** की ह़-र-कतों से **अन्दाज़ा** होता है कि वोह कोई **हिन्दू जिन्न** था। जो कि मर्ह़ूमा म-दनी मुन्नी **दुआ** के घर वालों को "**आवागोन**" का तअस्सुर दे रहा था कि मैं आप लोगों की फ़ौत शुदा **बच्ची** हूं जिस ने مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **तितली** के रूप में "दोबारा जनम" लिया है और यूं वोह मुसल्मानों का ईमान बरबाद करने के लिये आया था क्यूं कि हिन्दू मज़्हब का एक कुफ़्रिया अ़क़ीदा "आवागोन" भी है, इस को "तनासुख़" भी बोलते हैं। उन का बात़िल ख़याल है कि मरने के बा'द रूह़ किसी इन्सान या ह़ैवान वग़ैरा के जिस्म में مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बार बार जनम लेती है। **तितली** बन कर मर्ह़ूमा बेटी का नाम लेने पर मज़्कूरा अन्दाज़ इख़्तियार कर के वोह (हिन्दू जिन्न म-दनी मुन्नी के वालिदैन को) येह बावर करवाना चाहता था कि येह उन की **मर्ह़ूमा बेटी** ही है जो **तितली** के रूप में वापस आई है। लेकिन ख़ुश नसीबी से उस घर में कोई सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा मुसल्मान जिन्न भी था, जिस ने छिपकली के रूप में आ कर उस बद बख़्त काफ़िर जिन्न को मौत के घाट उतार दिया।

واللّٰہ تعالٰی اعلمُ وَ رسولُہٗ اعلم عزوجل وصلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

म-दनी माह़ोल अपना लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

गुनाहों से बचने और नेक बनने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से आ'ला अख़्लाक़ी औसाफ़ ग़ैर महसूस तौ़र पर आप के किरदार का ह़िस्सा बनते चले जाएंगे।

अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये। इन म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की ब-र-कत से अपने साबिक़ा तर्ज़े ज़िन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मिलेगा और दिल हुस्ने आ़क़िबत के लिये बे चैन हो जाएगा जिस के नतीजे में इर्तिकाबे गुनाह की कसरत पर नदामत महसूस होगी और तौबा की तौफ़ीक़ मिलेगी। आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत में राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में बार बार सफ़र करने के नतीजे में ज़बान पर फ़ोहूश कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह दुरूदे पाक जारी हो जाएगा, येह तिलावते क़ुरआन, हम्दे इलाही और ना'ते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दी बन जाएगी, ग़ुसीला पन रुख़्सत हो जाएगा और इस की जगह नर्मी ले लेगी, बे सब्री की आ़दत तर्क कर के साबिर व शाकिर रहना नसीब होगा, बद गुमानी की आ़दते बद निकल जाएगी और हुस्ने ज़न की आ़दत बनेगी, तकब्बुर से जान छूट जाएगी और एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा मिलेगा, दुन्यावी मालो दौलत की लालच से पीछा छूटेगा और नेकियों की हिर्स मिलेगी, अल ग़रज़ बार बार राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा।

आंखें रोशन हो गईं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मशहूरे ज़माना तालीफ़ **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** जिल्द अव्वल के सफ़ह़ा **66** पर लिखते हैं :

लियाक़त कॉलोनी ह़ैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध पाकिस्तान) में दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ ने एक नौ जवान को **म-दनी क़ाफ़िले** की दा'वत पेश की जिस पर वोह बरहम हो कर कहने लगे, आप लोग किसी की परेशानी का ख़याल भी फ़रमाया करें, मेरी वालिदा की आंखों का

ऑपरेशन डॉक्टरों ने ग़लत़ कर दिया जिस की बिना पर उन की बीनाई चली गई, हमारे घर में सफ़े मातम बिछी है और आप कहते हैं, **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करो। मुबल्लिग़ ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए हम दर्दाना अन्दाज़ में दुआ़ देते हुए कहा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की वालिदा को शिफ़ा अ़ता फ़रमाए। डॉक्टर क्या कह रहे हैं? वोह बोले, डॉक्टर्ज़ कहते हैं, अब अमरीका ले जाओगे तब भी इ़लाज मुम्किन नहीं। येह कहते हुए उस की आवाज़ भर्रा गई। मुबल्लिग़ ने बड़ी मह़ब्बत से उस की पीठ थपकते हुए तसल्ली आमेज़ लहजे में कहा, भाई! डॉक्टरों ने जवाब दे दिया है इस पर मायूस क्यूं होते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा अ़ता फ़रमाने वाला है, मुसाफ़िर की दुआ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़बूल फ़रमाता है आप आ़शिक़ाने रसूल के साथ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र कीजिये और इस दौरान वालिदा के लिये दुआ़ भी मांगिये।

उस मुबल्लिग़ की दिल जूई भरी इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में ग़मज़दा नौ जवान ने सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया, दौराने सफ़र वालिदा के लिये ख़ूब दुआ़ मांगी। जब घर लौटा तो येह देख कर उस की ख़ुशी की इन्तिहा न रही कि म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत से उस की वालिदा की आंखों का नूर वापस आ चुका था। اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
चश्मे बीना मिले सुख से जीना मिले पाओगे राह़तें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल), बाब फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह, स. 66)

म-दनी इन्आ़मात

اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ! सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये इ़बादात व अख़्लाक़ियात के तअ़ल्लुक़ से अमीरे अहले सुन्नत, शैख़े त़रीक़त, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के

लिये 63 और त़-लबए इल्मे दीन के लिये 92, दीनी त़ालिबात के लिये 83 और म-दनी मुन्नों और मुन्नियों के लिये 40 **म-दनी इन्आ़मात** सुवालात की सूरत में मुरत्तब किये हैं। इन म-दनी इन्आ़मात को अपना लेने के बा'द नेक बनने की राह में ह़ाइल रुकावटें अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम से ब तदरीज दूर हो जाती हैं और इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनता है। हम सब को चाहिये कि बा किरदार मुसल्मान बनने के लिये मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से म-दनी इन्आ़मात का कार्ड ह़ासिल करें और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना (या'नी अपना मुह़ा-सबा) करते हुए कार्ड पुर करें और हर म-दनी या'नी क़-मरी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के म-दनी इन्आ़मात के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लें।

रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने का इन्आ़म :

एक इस्लामी भाई की तह़रीर का ख़ुलासा है : اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे **म-दनी इन्आ़मात** से प्यार है और **रोज़ाना फ़िक्रे** मदीना करने का मा'मूल है। एक बार मैं तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ बलूचिस्तान (पाकिस्तान) के सफ़र पर था। इसी दौरान मुझ गुनहगार पर बाबे करम खुल गया। हुवा यूं कि रात को जब सोया तो क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए, अभी जल्वों में गुम था कि लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : **''जो म-दनी क़ाफ़िले में रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हैं मैं उन्हें अपने**

साथ जन्नत में ले जाऊंगा।''

शुक्रिया क्यूंकर अदा हो आप का या मुस्त़फ़ा
कि पड़ोसी ख़ुल्द में अपना बनाया शुक्रिया

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने र-मज़ान, फ़ैज़ाने लै-लतुल क़द्र, जि. 1, स. 931)

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमें आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए म-दनी इन्आ़मात का कार्ड पुर करने और हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने की तौफीक अ़त़ा फ़रमा। या **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। या **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ उम्मते मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बख़्शिश फ़रमा। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

म-दनी मश्वरा

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम मुसल्मान हैं और एक मुसल्मान के लिये उस की सब से क़ीमती शै उस का ईमान है। इस की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र हमें दुन्यावी अश्याअ से कहीं ज़ियादा होनी चाहिये। इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत **आ'ला ह़ज़रत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن का इर्शाद है : उ़-लमाए किराम फ़रमाते हैं जिस को (ज़िन्दगी में) सल्बे ईमान का ख़ौफ़ नहीं होता, नज़्अ़ के वक़्त उस का ईमान सल्ब हो जाने का शदीद ख़त़रा है।

(अल मल्फ़ूज़, ह़िस्सा : 4, स. 390, ह़ामिद एन्ड कम्पनी मर्कजुल औलिया लाहोर)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेक आ'माल पर इस्तिक़ामत के इलावा ईमान की ह़िफ़ाज़त का एक ज़रीआ़ किसी **''मुर्शिदे**

कामिल'' से बैअ़त हो जाना भी है। **शैख़े** त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में मुरीद करते हैं और क़ादिरी सिल्सिले की अ़-ज़मत के तो क्या कहने कि इस के अ़ज़ीम पेशवा हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ क़ियामत तक के लिये (ब फ़ज़्ले ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ) अपने मुरीदों के तौबा पर मरने के ज़ामिन हैं। (बह्जतुल असरार, स. 191, मत़्बूआ दारुल कुतुबिल इल्मिय्या बैरूत) **जो** किसी का मुरीद न हो उस की ख़िदमत में म-दनी मश्वरा है कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **के वुजूदे मस्ऊ़द को ग़नीमत जानते हुए बिला ताख़ीर इन का मुरीद हो जाए।** यक़ीनन मुरीद होने में नुक़्सान का कोई पहलू ही नहीं, दोनों जहां में اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा ही फ़ाएदा है।

मुरीद बनने का त़रीक़ा

बहुत से इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस बात का इज़्हार करते रहते हैं कि हम **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद या त़ालिब होना चाहते हैं। मगर त़रीक़े कार मा'लूम नहीं, तो अगर आप मुरीद बनना चाहते हैं तो अपना और जिन को **मुरीद या त़ालिब** बनवाना चाहते हैं उन का नाम एक सफ़्हे पर तरतीब वार बमअ़ वल्दिय्यत व उ़म्र लिख कर ''**मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या म-दनी मर्कज़ दा'वते इस्लामी शाही मस्जिद शाहे आ़लम दरवाज़ा के सामने अह़मद आबाद गुज़रात**'' के पते पर रवाना फ़रमा दें तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी सिल्सिलए **क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या** में दाख़िल कर लिया जाएगा। (पता अंग्रेज़ी के केपीटल हुरूफ़ में लिखें)

मआख़ज़ो मराजेअ़

(1) क़ुरआने मजीद	कलामे बारी तआ़ला	ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़ लाहोर
(2) कन्ज़ुल ईमान फ़ी तर-ज-मतिल क़ुरआन	आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान मु-तवफ़्फ़ा 1340 हि.	ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़ लाहोर
(3) अद्दुर्रुल मन्सूर	इमाम अ़ब्दुर्रहमान अस्सुयूती मु-तवफ़्फ़ा 911 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
(4) रूहुल मआ़नी	अ़ल्लामा अबुल फ़ज़्ल शहाबुद्दीन आलोसी मु-तवफ़्फ़ा 1270 हि.	दारो एह़याइत्तुरासिल अ़-रबी बैरूत
(5) अत्तफ़्सीरुल कबीर	इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी मु-तवफ़्फ़ा 606 हि.	दारो एह़याइत्तुरासिल अ़-रबी बैरूत
(6) तफ़्सीरुत्त-बरी	अबू जा'फ़र मुहम्मद बिन जरीर त़-बरी मु-तवफ़्फ़ा 310 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(7) अल जामिउ़ लि अह़कामिल क़ुरआन	अबू अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अह़मद अल अन्सारी क़ुरतुबी मु-तवफ़्फ़ा 671 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
(8) तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी	शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी मु-तवफ़्फ़ा 1239 हि.	
(9) सही़हुल बुख़ारी	इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी मु-तवफ़्फ़ा 256 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(10) सही़ह़ मुस्लिम	इमाम मुस्लिम बिन ह़ज्जाज बिन मुस्लिम अल क़ुशैरी मु-तवफ़्फ़ा 261 हि.	दारो इब्ने ह़ज़्म बैरूत
(11) सु-ननुत्तिरमिज़ी	इमाम अबू ई़सा मुहम्मद बिन ई़सा अत्तिरमिज़ी मु-तवफ़्फ़ा 289 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
(12) सु-ननो अबी दावूद	इमाम अबू दावूद सुलैमान बिन अश्अ़स मु-तवफ़्फ़ा 275 हि.	दारो एह़याइत्तुरासिल अ़-रबी
(13) सु-ननो इब्नु माजह	इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद बिन यज़ीद अल क़ज़्वेनी मु-तवफ़्फ़ा 273 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
(14) अल मुस्नदो लिल इमाम अह़मद बिन ह़म्बल	इमाम अह़मद बिन ह़म्बल मु-तवफ़्फ़ा 241 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
(15) अल मुस्नदो अबी या'ला अल मूसिली	शैख़ुल इस्लाम अबू या'ला अह़मद अल मूसिली मु-तवफ़्फ़ा 307 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(16) अल मुस्तदरक अ़लस्सही़हैन	इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह नैशापूरी मु-तवफ़्फ़ा 405 हि.	दारुल मा'रिफ़ह बैरूत
(17) अल मो'जमुल कबीर	इमाम सुलैमान बिन अह़मद त़-बरानी मु-तवफ़्फ़ा 360 हि.	दारो एह़याइत्तुरासिल अ़-रबी
(18) अल मो'जमुल औसत़	इमाम सुलैमान बिन अह़मद त़-बरानी मु-तवफ़्फ़ा 360 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(19) शु-अ़बुल ईमान	इमाम अह़मद बिन हुसैन बैहक़ी मु-तवफ़्फ़ा 458 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(20) मज्मउ़ज़्ज़वाइद	ह़ाफ़िज़ नूरुद्दीन अ़ली बिन अबू बक्र हैसमी मु-तवफ़्फ़ा 807 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
(21) फ़िरदौसुल अख़्बार	ह़ाफ़िज़ शैरूया बिन शहरदार दैलमी मु-तवफ़्फ़ा 509 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
(22) अल बह़रुज़्ज़ुख़ार मुस्नदुल बज़्ज़ार	इमाम अबू बक्र अह़मद बिन अ़म्र बिन अ़दी मु-तवफ़्फ़ा 292 हि.	मक-त-बतुल उ़लूमि वल हि़कम अल मदीनतुल मुनव्वरह
(23) इब्नो अबिदुन्या	इमाम अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद अल क़-रशी मु-तवफ़्फ़ा 281 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(24) हि़ल्यतुल औलिया	इमाम अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी मु-तवफ़्फ़ा 420 हि.	अल मक-त-बतुल अ़स्रिय्यह बैरूत
(25) कन्ज़ुल उ़म्माल	अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन अ़लल मुत्तक़ी अल हिन्दी मु-तवफ़्फ़ा 975 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(26) अल कामिलो फ़ी दु-अ़फ़ाइर्रिजाल	इमाम अबू अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़दी जरजानी मु-तवफ़्फ़ा 365 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(27) मुस्नदुद्दारिमी	इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रहमान मु-तवफ़्फ़ा 255 हि.	बाबुल मदीना कराची
(28) अश्शमाइलु मुहम्मदिय्यह	इमाम अबू ई़सा मुहम्मद बिन ई़सा अत्तिरमिज़ी मु-तवफ़्फ़ा 289 हि.	दारो एह़याइत्तुरासिल
(29) उ़म्दतुल क़ारी	इमाम बदरुद्दीन अबी मुहम्मद मह़मूद बिन अह़मद अल ऐ़नी मु-तवफ़्फ़ा 855 हि.	मदीनतुल औलिया मुल्तान शरीफ़
(30) नुज़्हतुल क़ारी	ह़ज़रत शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी मु-तवफ़्फ़ा 1421 हि.	फ़रीद बुक स्टॉल लाहोर
(31) फ़तावा ह़दीसिया	शैख़ुल इस्लाम अह़मद बिन मुहम्मद बिन अ़ली बिन ह़जर मु-तवफ़्फ़ा 974 हि.	बाबुल मदीना कराची

(32) अल ह़दी-क़तुन्नदिय्यह	अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबल्सी मु-तवफ़्फ़ा 1143 हि.	पिशावर
(33) बहारे शरीअ़त	सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी मु-तवफ़्फ़ा 1376 हि.	ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़ लाहोर
(34) फ़तावा र-ज़विय्या	आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा मु-तवफ़्फ़ा 1340 हि.	रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर
(35) फ़तावा अफ़्रीक़ा	आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा मु-तवफ़्फ़ा 1340 हि.	
(36) बह़रुद्दुमूअ़	अ़ब्दुर्रहमान बिल अ़ली बिन अल जूज़ी मु-तवफ़्फ़ा 255 हि.	मक-त-बतुल फ़ज्र दिमिश्क़
(37) मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत	मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान मु-तवफ़्फ़ा 1402 हि.	फ़रीद बुक स्टॉल लाहोर
(38) दलाइलुन्नुबुव्वह	अबू बक्र अह़मद बिन अल हुसैन अल बैहक़ी मु-तवफ़्फ़ा 458 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(39) अल असाबह फ़ी तमीज़िस्सह़ाबह	ह़ाफ़िज़ अह़मद बिन अ़ली बिन ह़जर अल अ़स्क़लानी मु-तवफ़्फ़ा 852 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(40) तज़्किरतुल औलिया	शैख़ फ़रीदुद्दीन अ़त्तार मु-तवफ़्फ़ा 606/616 हि.	इन्तिशाराते गन्जीना
(41) किताबिल अ़-ज़मह	अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मु-तवफ़्फ़ा 396 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(42) आकामुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न	अ़ल्लामा बदरुद्दीन अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद ह़-नफ़ी मु-तवफ़्फ़ा 769 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(43) लुक़्तुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न	इमाम अ़ब्दुर्रह़मान जलालुद्दीन अस्सयूत़ी मु-तवफ़्फ़ा 911 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(44) सि-फ़तुस्सफ़्वह	इमाम जमालुद्दीन अबिल फ़र्ज बिन जूज़ी मु-तवफ़्फ़ा 597 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(45) ह़यातुल ह़ैवानिल कुब्रा	कमालुद्दीन मुह़म्मद बिन मूसा बिन ईसा मु-तवफ़्फ़ा 808 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(46) अ़जाइबुल क़ुरआन	अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी मु-तवफ़्फ़ा 1406 हि.	मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची
(47) अन्नहा-यतु फ़ी ग़रीबिल ह़दीस	इमाम मजदुद्दीन अबिस्सआ़दात मु-तवफ़्फ़ा 606 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत

नमाज़े अ़स्र की फ़ज़ीलत

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "जब मुर्दा क़ब्र में दाख़िल होता है, तो उसे सूरज डूबता हुवा मा'लूम होता है, वोह आंखें मलता हुवा उठ बैठता है और कहता है دَعُوْنِیْ اُصَلِّیْ ज़रा ठहरो ! मुझे नमाज़ तो पढ़ने दो।" (सु-ननो इब्ने माजह, किताबुज़्ज़ोह्द, باب ذکر القبر و البلی, अल ह़दीस : 4272, स. 2736)

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी علیه رَحْمَةُ اللهِ القوی इस ह़दीसे पाक के इस हिस्से دَعُوْنِیْ اُصَلِّیْ (ज़रा ठहरो ! मुझे नमाज़ तो पढ़ने दो।) के बारे में फ़रमाते हैं : या'नी ऐ फ़िरिश्तो ! सुवालात बा'द में करना, अ़स्र का वक़्त जा रहा है मुझे नमाज़ पढ़ लेने दो। येह वोह कहेगा जो दुन्या में नमाज़े अ़स्र का पाबन्द था, **अल्लाह** नसीब करे। मज़ीद फ़रमाते हैं : मुम्किन है कि इस अ़र्ज़ पर सुवाल व जवाब ही न हों और हों तो निहायत आसान, क्यूं कि उस की येह गुफ़्त-गू तमाम सुवालों का जवाब हो चुकी। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 143)

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुत़ा-लआ़ कुतुब
(शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत)

(1) राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (रद्दिल कहूत़ि वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फ़ु-क़राअ) (कुल सफ़ह़ात : 40)

(2) दुआ़ के फ़ज़ाइल (अह़सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ मअ़ह़ू ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़सनिल विआ़अ) (कुल सफ़ह़ात : 140)

(3) ईदैन में गले मिलना कैसा ? (विशाहुल जीद फ़ी तह़लीलि मुआ़नि-क़तिल ईद) (कुल सफ़ह़ात : 55)

(4) करन्सी नोट के मसाइल : (किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी अह़कामि क़िर्त़ासिद्दराहिम) (कुल सफ़ह़ात : 199)

(5) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के ह़ुक़ूक़ (अल ह़ुक़ूक़ लि तर्ह़िल उ़क़ूक़) (कुल सफ़ह़ात : 125)

(6) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (इज़्हारिल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़ह़ात : 100)

(7) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (अल याक़ूतितुल वासित़ह़) (कुल सफ़ह़ात : 60)

(8) शरीअ़त व त़रीक़त (मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ व उ़-लमाअ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

(9) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

(10) सुबूते हिलाल के त़रीक़े (तु-रक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़ह़ात : 63)

(11) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

अ़-रबी कुतुब : अज़ इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान علیہ رحمۃ الرحمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़ह़ात : 74) । (13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़ह़ात : 77) । (14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़ह़ात : 62) । (15) इक़ा-मतुल क़ियामह (कुल सफ़ह़ात : 60) । (16) अल फ़ज़्लुल मौहबी (कुल सफ़ह़ात : 46) । (17) अज़्ल ए'लाम (कुल सफ़ह़ात : 70) । (18) अज़्ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्यह (कुल सफ़ह़ात : 93) । (19,20,21) जद्दुल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुह़तार (अल मुजल्लद अल अव्वल वस्सानी) (कुल सफ़ह़ात : 672,570)

(शो'बए इस्लाही कुतुब)

(22) ख़ौफ़े ख़ुदा (कुल सफ़ह़ात : 160)

(23) इन्फ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 200)

(24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़ह़ात : 33)

(25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात : 164)

(26) इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़ह़ात : 32)

(27) नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 39)

(28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़ह़ात : 152)

(29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़ह़ात : 43)

(30) निसाबे म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 196)

(31) काम्याब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़ह़ात : तक़रीबन 63)

(32) फ़ैज़ाने एह़याउल उ़लूम (कुल सफ़ह़ात : 325)

(33) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़ह़ात : 96)

(34) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़ह़ात : 50)

(35) तह़क़ीक़ात (कुल सफ़ह़ात : 142)

(36) अर-बईने ह़-नफ़िय्यह (कुल सफ़ह़ात : 112)

(37) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़ह़ात : 24)

(38) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 30)

(39) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़ह़ात : 124)

(40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़ह़ात : 48)

(41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 275)

(42) टी वी और मूवी (कुल सफ़हात : 32)
(43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से)
(50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़हात : 24)
(51) ग़ौसे पाक رضی اللہ عنہ के हालात (कुल सफ़हात :106)
(52) तआरुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 100)
(53) रहनुमाए जदवल बराए म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़हात : 255)
(54) म-दनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़हात : 68)
(55) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)
(56) तरबिय्यते औलाद (कुल सफ़हात : 187)
(57) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़हात : 62)
(58) अहादीसे मुबा-रका के अन्वार (कुल सफ़हात : 66)
(59) फ़ैज़ाने चहल अहादीस (कुल सफ़हात : 120)
(60) बद गुमानी (कुल सफ़हात : 57)
(61) ग़ाफ़िल दरज़ी (कुल स-फ़हात : 36)
(62) बद नसीब दूल्हा (कुल स-फ़हात : 32)
(63) गूंगा मुबल्लिग़ (कुल स-फ़हात : 55)
(64) क्रिस्चेन मुसलमान हो गया (कुल स-फ़हात : 32)
(65) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल स-फ़हात : 24)

शो'बए तराजिमे कुतुब

(66) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (अल मुत्जरुर्राबेह फ़ी सवाबिल अ़-मलिस्सालेह़) (कुल सफ़हात : 743)
(67) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल सफ़हात : 36)
(68) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़)(कुल सफ़हात : 74)
(69) म-दनी आक़ा () के रोशन फ़ैसले (कुल स-फ़हात : 103)
(70) बेटे को नसीहत (अय्युहल वलद) (कुल सफ़हात : 64)
(71) अद्दा'वति इल्ल फ़िक्र (कुल सफ़हात : 148)
(72) आंसूओं का दरिया (बहरुद्दुमूअ़) (कुल सफ़हात : 300)
(73) जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (कुल सफ़हात : 847)
(74) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (क़ुर्रतुल उ़यून व मुफ़र्रिहुल क़ल्बिल महज़ून) (कुल सफ़हात : 133)
(75) राहे इल्म (ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम तरीक़ुत्तअ़ल्लुम) (कुल सफ़हात : 102)

शो'बए दर्सी कुतुब

(76) ता'रीफ़ाते नह़विय्यह (कुल सफ़हात : 45)
(77) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़हात : 64)
(78) नुज़्हतुन्नज़र शर्हे नख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़हात : 175)
(79) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़हात : 121)
(80) निसाबुत्तजवीद (कुल सफ़हात : 79)
(81) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़हात : 180)
(82) वक़ा-यतिन्नह़्व फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नह़्व
(83) शर्हे मायअे आ़मिल (कुल स-फ़हात : 38)
(84) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ हाशिया सर्फ़ बनाई (कुल स-फ़हात : 55)
(85) अल मुहादि-सतुल अ़-रबिय्यह (कुल स-फ़हात : 101)
(86) शर्हे अर-बईनुन न-वविय्यह फ़िल अहादीसुस्सहीहतुन न-बविय्यह (कुल स-फ़हात : 155)

शो'बए तख़्रीज

(87) अ़जाइबुल क़ुर्आन मअ़ ग़राइबुल क़ुर्आन (कुल सफ़हात : 422)
(88) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़हात : 679)
(89 ता 95) बहारे शरीअ़त (सात हिस्से, हिस्सा : 16)
(96) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़हात : 170)
(97) आईनए क़ियामत (कुल सफ़हात : 108)
(98) सहाबए किराम رضی اللہ عنہم का इश्क़े रसूल ﷺ (कुल सफ़हात : 274)
(99) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़हात : 59)
(100) इल्मुल क़ुरआन (कुल स-फ़हात : 244)
(101) अख़्लाक़ुस्सालिहीन (कुल स-फ़हात : 78)
(102) अच्छे माहोल की ब-र-कतें (कुल स-फ़हात : 56)

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़हा नम्बर	उ़न्वान	सफ़हा नम्बर
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	8	अच्छे और बुरे जिन्नात	55
जिन्नात को नेकी की दा'वत	8	मख़्लूक़ की दो क़िस्में	55
जिन्नो इन्स के रसूल	11	ह़ज की दा'वते इब्राहीमी पर लब्बैक	55
जिन्नात की बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी	12	मुअज़्ज़िन के ह़क़ में गवाही	56
जिन्नों का क़ासिद	12	तिलावत सुनने वाले जिन्नात	56
सज्दा करने वाले जिन्नात	13	जान से गुज़रने वाले जिन्नात	57
जिन्नात कौन हैं ?	13	तहज्जुद गुज़ार जिन्नात	57
जिन्नात के वुजूद का इन्कार करना कैसा ?	13	जिन्नों के नमाज़ पढ़ने की जगह	59
जिन्न को जिन्न क्यूं कहते हैं ?	14	उ़म्रह की अदाएगी करने वाले जिन्नात	59
जिन्नात किस से पैदा किया गया ?	14	त़वाफ़ करने वाली जिन्न औ़रतें	60
जिन्नात किस दिन पैदा हुए ?	15	नेक जिन्नात और बद मज़्हब	61
ज़मीन पर इन्सान से पहले जिन्नात आबाद थे	16	जिन्न की तौबा	62
इब्लीस भी जिन्नात में से है	16	जिन्नात में म–दनी काम की बहारें	63
जिन्नात का बाप	17	अ़त्तारी जिन्नात	64
जिन्नात की औलाद	17	जिन्नात की उ़म्रें	66
जिन्नात की त़ाक़त	18	जिन्नात की मौत	67
तख़्ते बिल्क़ीस लाने की पेशकश	19	सह़ाबी जिन्न की वफ़ात	67
नबिय्ये करीम ﷺ की तशरीफ़ आ–वरी की ख़बर	19	सह़ाबी जिन्न का क़त्ल	68
ख़बर रसां जिन्न	20	मक़्तूल जिन्न	69
जिन्नात के मुख़्तलिफ़ काम	20	उ़म्रह अदा करने वाले जिन्न का क़त्ल	70
बैतल मुक़द्दस की ता'मीर	21	गुस्ताख़ जिन्न का अन्जाम	70
जिन्नात की ता'दाद	22	जिन्नात के दफ़्न की ह़िकायात	71
जिन्नात क्या खाते हैं ?	23	अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित	73
शैत़ान की क़ै	24	जिन्नात मैदाने मह़शर में	76
लौबिया खाने वाले जिन्नात	25	जिन्नात को सवाब व अ़ज़ाब	77
मुसल्मान के दस्तर ख़्वान पर जिन्नात	25	क्या जिन्नात को हूरें मिलेंगी ?	80
जिन्नात कहां रहते हैं ?	26	जिन्नात और इन्सान	81
जिन्नात की अक़्साम	30	इन्सान और जिन्न का आपस में निकाह़	82
जिन्नात अस्ली शक्ल में नज़र क्यूं नहीं आते ?	31	जिन्नात अपनी ह़क़त–लफ़ी पर पत्थर मारते हैं	82
जिन्नात की मुख़्तलिफ़ शक्लें	33	जिन्नात का इन्सान को क़ाबू कर लेना	83
जिन्न शैख़े नज्दी की शक्ल में	39	जिन्न की जान बचाने का सिला	83
जिन्नात अपनी शक्लें किस त़रह़ तब्दील करते हैं ?	43	नरगिस का फूल	85
सांप से लड़ाई	43	जिन्न ने शैत़ानों से बचाया	86
छिपकली थी या...... ?	45	रास्ता बताने वाला जिन्न	87
वोह कौन था ?	46	पानी की त़रफ़ रहनुमाई करने वाला जिन्न	87
क्या जिन्नात शरीअ़त के मुकल्लफ़ हैं ?	48	जिन्नात ने ग़म ख़्वारी की	89
जिन्नात में मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब	49	नेक जिन्न की नसीह़त	90
इब्लीस के पोते की तौबा	50	जिन्नात ने नेकी की दा'वत दी	91
जिन्न मुसल्मान हो गया	52	पत्थर का मह़ल	93

उ़न्वान	सफ़्हा नम्बर	उ़न्वान	सफ़्हा नम्बर
जिन्नात का हल्क़ा	94	जिन्नात से शर से बचने के त़रीक़े	154
बुज़ुर्गाने दीन से अ़क़ीदत व महब्बत	95	अल्लाह तआ़ला की पनाह त़लब करना	155
विलादते सरकार ﷺ की ख़ुशी मनाने वाले जिन्नात	95	तिलावते क़ुरआने करीम	155
ग़ौसे पाक के हमराह ह़ज को जाने वाला जिन्न	96	मोमिन जिन्न का बसेरा	155
ग़ौसे पाक का बयान सुनने वाले जिन्नात	97	जिन्नात भाग गए	156
इब्राहीम ख़व्वास और क़ौमे जिन्नात	98	आ-यतुल कुरसी पढ़ना	157
जिन्नात का इमामे आ'ज़म के विसाल पर रोना	101	इफ़रीत से हिफ़ाज़त	158
एक मुह़द्दिस की बारगाह में ह़ाज़िर होने वाला जिन्न	102	फलों को नुक़्सान पहुंचाने वाले जिन्नात	159
जिन्नात भी वा'ज़ो नसीहत सुनते हैं	103	खजूरें खाने वाले जिन्न	160
जिन्नों ने इल्मे नहूव सैबूया से पढ़ा	104	सूरए यासीन शरीफ़	162
शहन्शाहे जिन्नात	104	तमाम चराग़ बुझ गए	162
ह़ाज़िरात की ह़क़ीक़त	106	शैत़ान अन्धा हो गया	162
झूटा जिन्न	107	सूरए मुअमिनून की आख़िरी आयात	163
ह़ाज़िरात से मुस्तक़्बिल का ह़ाल मा'लूम करना?	109	मिर्गी वाले का इलाज	163
आ़मिल और साइल दोनों मु-तवज्जेह हों	109	सूरए ब-क़रह की क़िराअत	164
जिन्नात गुज़श्ता ह़ालात कैसे बता देते हैं?	110	सूरए आले इमरान	166
हमज़ाद कौन होता है?	111	सू-रतुल आ'राफ़	167
हमज़ाद जिन्न की तस्ख़ीर के लिये अ़मल करना कैसा?	113	सू-रतुल ह़श्र	168
दस्ते ग़ैब और मुसल्ला के नीचे से अश्रफ़ी निकलना	113	70 हज़ार फ़िरिश्ते हिफ़ाज़त करेंगे	168
जिन्न की दी हुई रक़म का हुक्म	114	खजूरें चुराने वाले जिन्न	168
जिन्नात को क़ाबू करना	115	सू-रतुल इख़्लास	169
क्या जिन्नात इन्सानों को तक्लीफ़ दे सकते हैं?	117	मुअ़व्विज़तान	169
जिस्म से बाहर रह कर तक्लीफ़ देना	117	बिस्मिल्लाह शरीफ़ की त़ाक़त	170
पैदाइश के वक़्त बच्चे के रोने की वजह	117	ज़िक्रुल्लाह की कसरत	173
त़ाऊ़न क्या है?	117	अज़ान देना	174
जिन्नात का जिस्म में दाख़िल हो कर नुक़्सान पहुंचाना	118	इन्सानों का शिकार करने वाले जिन्नात	174
पेट से जिन्न निकला	119	जिन्नात और जादू से हिफ़ाज़त के अवराद	176
ऐ दुश्मने ख़ुदा निकल जा	119	जिन्नात से हिफ़ाज़त के मुख़्तलिफ़ वज़ाइफ़	177
ज़िन्दगी भर दोबारा न आया	119	नज़रे बद से हिफ़ाज़त का नुस्ख़ा	179
तन्दुरुस्त हो गया	120	जिन्न के फ़रेब से बचने का नुस्ख़ा	179
कभी कोई चीज़ नहीं भूला	121	सुब्ह़ो शाम पढ़े जाने वाले कलिमात	185
जिन्नात इन्सान को इग़वा भी करते हैं	122	चिकनाई वाली चीज़ें जल्द धो डालिये	186
जिन्नात इन्सानों को क़त्ल भी करते हैं	130	घर में लीमूं रख लीजिये	187
ख़ुदकुशी या क़त्ल	133	घर में सफ़ेद मुर्ग़ा रख लीजिये	187
इन्सानों के हाथों क़त्ल होने वाले जिन्नात	134	अगर जिन्न सांप की ह़ालत में मिल जाए तो?	192
ग़ार के जिन्नात	145	अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से हिफ़ाज़त का रुक़्आ़	192
जिन्नात भी इन्सानों से डरते हैं	147	जिन्न को पछाड़ दिया	195
छलांग मार कर भाग निकला	147	इमाम अह़मद बिन ह़म्बल ने जिन्न निकाला	197
ख़ौफ़ज़दा जिन्न	150		

उ़न्वान	सफ़्हा नम्बर	उ़न्वान	सफ़्हा नम्बर
मिर्गी की बीमारी बग़्दाद से भाग गई	198	जिन्नात से नजात	228
शयातीन से मुक़ाबला	199	T.V. देखने से इन्कार	229
श-जरए क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या की ब-र-कतें	200	जिन्न का पागल पन	230
क़ब्रिस्तान की चुड़ैल	201	जिन्नों की दुन्या	232
आशिक़े ना शाद जिन्न	203	ख़ौफ़नाक दांत वाला बच्चा	234
ज़ौजा जिन्नात के असर से महफ़ूज़	204	पुर असरार बच्ची	236
चुड़ैलों से जान छूट गई	205	ख़ौफ़नाक बच्ची	237
500 सालह आ़मिल जिन्न की बद ह़वासी	207	जामिआ़ का जिन्न	240
बद सूरत बला	212	म-दनी माह़ोल अपना लीजिये	242
अ़क़ीदत मन्द जिन्न	213	आंखें रोशन हो गईं	244
जिन्न से ख़ुलासी	215	रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने का इन्आ़म	246
सींगों वाली दुल्हन	221	म-दनी मश्वरा	247
आसान तरीन इलाज	222	मआख़ज़ो मराजेअ़	249
आ़मिल जिन्न से ख़ुलासी मिल गई	224	अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की कुतुब	251
ख़ौफ़नाक बला	225		

लोगों से सुवाल न करने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

''مَنْ تَكَفَّلَ لِیْ اَنْ لَّا یَسْاَلَ النَّاسَ شَیْئًا، فَاَتَكَفَّلَ لَهٗ بِالْجَنَّةِ''

या'नी ''जो शख़्स मुझे इस बात की ज़मानत दे कि लोगों से कोई चीज़ न मांगे, तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।'' ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अ़र्ज़ गुज़ार हुए कि मैं इस बात की ज़मानत देता हूं। चुनान्चे वोह किसी से कुछ नहीं मांगा करते थे। (सु-ननो अबी दावूद, كتاب الزكاة، باب كراهية المسألة, अल ह़दीस : 1643, स. 1346)